सर्मन आउटलाइन्स

परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह

अनुवादकः अरनेस्ट गिल

लेखकः लुइस रशमोर

Hindi Translation of

Preaching The Whole Counsel of God to the Whole World (1)

2022

परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह

written By: Louis Rushmore

Translated by: Earnest Gill

लेखकः लुइस रशमोर
अनुवादकः अरनेस्ट गिल

For copies Contact:
Earnest Gill
hindibiblecourse@gmail.com
whatsapp No. 8284850007

विषय सूची

अपनी कलीसिया का सिर (Head), अपनी देह का सिर और
अपने घर का मुखिया (Head) यीशु 98
उत्तम गुरू यीशु 46
उद्धारकर्त्ता यीशु 78
क्रूस पर यीशु 52
खाली क़ब्र का सुसमाचार 140
तीन क्रूस 59
देहधारी होने से पहले परमेश्वर 10
देहधारी हुआ परमेश्वर 23
दूसरा यीशु, कोई और आत्मा तथा कोई और सुसमाचार 147
न्यायी यीशु 102
ठोकर का पत्थर 152
प्रभु मेरे जीवन की सामर्थ 134
प्रमाण कि परमेश्वर है! 166
परमेश्वर की कृपा और उसकी कड़ाई 159
परमेश्वर है 162
पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का वादा 179
पवित्र आत्मा का बपतिस्मा 191
बिचवई, सिफ़ारिश करना वाला और सहायक यीशु 89
मसीह की दीनता 120
मसीहा और राजा यीशु 81
महायाजक यीशु 86
मसीह का प्रतिनिधिक दुःख सहना 62
यीशु मसीह एक ऐतिहासिक व्यक्ति 73
यीशु मसीह का जन्म 28
यीशु मसीह का बचपन 33
यीशु मसीह का पृथ्वी पर का जीवन और सेवकाई 39
यीशु मसीह का बलिदान 65
हमारे पापों के लिए कुचला गया 68
यीशु मसीह का अधिकार 111
यीशु मसीह का पुनरुत्थान 114
यीशु मसीहः दीनता का हमारा नमूना 125
यीशु पर ध्यान लगाए रखो 117
यीशु मसीह परमेश्वर (Deity) है 18

यीशु मसीहः हमारा नमूना 129
यीशु मेरा सब कुछ! 132
यीशु से घृणा क्यों की गई 157
व्यवस्था देने वाला और भविष्यद्वक्ता यीशु 93
सृष्टिकर्त्ता यीशु 7
श्रेष्ठ मसीह 109
श्रेष्ठ यीशु 105
हे यहोवा मेरे साथ हो 138

यीशु के दृष्टांत

अधर्मी न्यायाधीश का दृष्टांत 199
असाधारण दृष्टांत 195
जंगली बीज का दृष्टांत 214
तोड़ों का दृष्टांत 220
दस कुंवारियों का दृष्टांत 206
दाख की बारी में मज़दूरों का दृष्टांत 210
दाखलता और डालियों का दृष्टांत 227
बीज बोने वाले का दृष्टांत 217
भेड़शाला का दृष्टांत 202
विवाह के भोज का दृष्टांत 223

भूमिका

मैंने अपना पहला सर्मन 1973 के अक्तूबर महीने के तीसरे रविवार को देने की कोशिश की थी। उसके कुछ समय के बाद, मैं छोटी छोटी कलीसियाओं में रविवार के दिन प्रचार करने लगा और फिर 1974 में मुझे मण्डली में पूर्णकालिक सेवकाई की जिम्मेदारी मिल गई। जल्द ही मैंने महसूस किया कि अपनी रोमन कैथोलिक पृष्ठभूमि के कारण मैं साप्ताहिक बाइबल अध्ययन तथा संडे सर्मन के लिए अच्छे से तैयारी नहीं कर पा रहा था। परन्तु यह पता चलने पर अच्छा लगता था कि अपने कमज़ोर अध्ययन में मैं उन्हीं निष्कर्षों पर पहुंचता था जिन पर दूसरे भाई और बाइबल के निष्कपट छात्र पहुंचते थे। उसके बाद, परिपक्व प्रचारक भाइयों की छत्र छाया में अध्ययन करते करते, खुद के बाइबल के लम्बे अध्ययन के साथ-साथ, परिश्रमी मसीहियों की लिखी पुस्तकों में से और अच्छी तरह से पढ़कर, मुझे परमेश्वर के वचन को और अच्छी तरह से समझने में सहायता मिली।

इस भूमिका को लिखते समय, सुसमाचार प्रचार के मेरे पहले कमज़ोर प्रयास को 40 से अधिक वर्ष बीत चुके हैं। तब से लेकर अब तक मुझे अमेरिका के साथ-साथ पांच अन्य देशों में प्रचार करने का सुख प्राप्त हुआ है।

मेरी दिलचस्पी सर्मन तैयार करने है और मुझे रहता है कि मेरा सर्मन दिए गए पाठ के प्रसंग के साथ मेल खाता हो। प्रचारकों के लिए मेरा सुझाव है कि लय टूटने से बचने और सर्मन के **परिचय** से **मुख्य भाग**, से **निष्कर्ष** और अंत में **निमंत्रण** तक पहुंचने के लिए, हिचकोलों से बचने के लिए आवश्यक है कि एक से दूसरे भाग और एक से दूसरे बिंदु तक आगे बढ़ते हुए लय को बनाए रखें।

मेरा पक्का मानना है कि प्रचार **पुस्तक**, **अध्याय** और **आयत**, या **यहोवा यों कहता है** के आधार पर ही होना चाहिए। फिर भी बिना पर्याप्त व्याख्या के ढेर सारी आयतें बताने से बचा जाना चाहिए। बाइबल के अनुसार और प्रभावी प्रचार के लिए ''परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक से पढ़कर अर्थ समझाना; और लोगों को पाठ समझ में आना'' आवश्यक है (देखें नहेमायाह 8:8)। नहेमायाह 8 अध्याय की पहली 7 आयतों से उन खूबियों का पता चलता है जो प्रचार करने वालों और सुनने वालों, दोनों के लिए मानना (लोगों के बीच पढ़ते समय परमेश्वर के वचन को कैसे पकड़ना है, परमेश्वर के वचन का घण्टों मनन करना, प्रचारकों तथा सुनने वालों द्वारा परमेश्वर और उसके वचन के प्रति सम्मान दिखाया जाना) आवश्यक है।

सर्मन तैयार करने का सबसे कठिन और उबाऊ भाग विषय का चयन होता है। ऐसा सर्मन चुनने के लिए जो सुनने वालों के लिए आवश्यक हो, घण्टों लग जाते हैं। परन्तु प्रचारकों को यह चिंता छोड़कर कि पूरी मण्डली को सुनाना है या किसी विशेष व्यक्ति को, सर्मन का विषय चुनने में नहीं बल्कि सर्मन की तैयारी पर अधिक समय देना चाहिए।

जो भी विषय आप चुनते हैं, वह दूसरों के बजाय कुछ लोगों के लिए अच्छा रहेगा। अच्छा परिणाम प्राप्त करने के लिए कोई भी प्रचारक, कोई ऐसी बात बताएगा जो उसके कुछ सुनने वालों को पहले से पता न हो और उनके लिए जिन्हें वे बातें पहले से पता थीं, और पुष्टि हो जाए। सुसमाचार के सच्चे प्रचारक कभी ऐसी बातों का प्रचार नहीं करते जो उनके सुनने वालों के लिए बिल्कुल नई हों। क्योंकि हमारा काम भाइयों को परमेश्वर की उन सच्चाइयों को याद दिलाना है जिन्हें वे पहले से जानते सा मानते हों। इसलिए यह चिंता किए बिना कि क्या प्रचार करना है, जो प्रचार करना है उसे अच्छी तरह से बताने की तैयारी करने पर ध्यान दो। महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर के वचन में से जब भी सुनाया जाए, सुसमाचार का प्रचार सच्चाई और ईमानदारी से हो।

परमेश्वर की सारी मंशा बताई जानी आवश्यक है, परन्तु सारी की सारी मंशा एक ही बार में नहीं! प्रचार करने के इस पहलू पर एक व्यंग्य भरी कहानी जो मैंने बहुत पहले सुनी थी।

> एक रविवार, आराधना में केवल एक किसान ही आया। जवान प्रचारक को समझ में नहीं आ रहा था कि एक ही आदमी को वचन सुनाए या न। उसने उस किसान से पूछा। किसान ने उत्तर दिया कि अगर उसकी गायों में से केवल एक गाय चारा खाने के लिए आती है तो क्या अकेली होने के कारण वह उसे चारा न डाले। प्रचारक को किसान की बात अच्छी लगी। वह प्रचार करने लगा। प्रचार करता गया, करता गया। बाद में, प्रचारक ने किसान से पूछा कि उसे उसका प्रचार कैसा लगा। किसान का उत्तर था कि यह बात तो सही है कि एक ही गाय के आने के बावजूद वह उसे चारा डालेगा। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि वह सारी गायों का चारा उसी को डाल दे।

यह मानते हुए आगे भी अवसर मिलेंगे, परमेश्वर की सारी मंशा को कई अवसरों तक फैला देना चाहिए जो हो सकता है कि कई सालों में आएं। याद रखने वाली एक महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर के वचन का प्रचार करो, पूरे वचन का प्रचार करो, पर ज़रूरी नहीं कि एक ही समय पर सारा सुना दो। यह सच है कि सुनने वालों के लिए प्रचार किए गए वचन पर ध्यान देना आवश्यक है, परन्तु कोई भी प्रचारक वास्तव में सफल नहीं हो सकता यदि उसके श्रोता उसके बोलना आरम्भ करने से पहले उठ कर चले जाएं।

सर्मन तैयार करने को संक्षेप में, रिक्त स्थान भरना कहा जा सकता है (उदाहरण के लिए, इसे **शीर्षक, बाइबल पाठ, प्रसंग, गीत, परिचय, मुख्य भाग, निष्कर्ष** और **निमंत्रण** को ध्यान में रखते हुए भरा जा सकता है)। सर्मन का सबसे कठिन भाग **प्रसंग** यानी थीसिस का होता है। सर्मन की हर बात प्रसंग के लक्ष्य से मेल खाती होनी आवश्यक है। सर्मन के बीच में ऐसी कोई बात न डाली जाए जो प्रसंग से सीधे तौर पर जुड़ी हुई **न** हो। **परिचय** से सामने वाले को समझ में आ जाता है कि क्या कहा जाने वाला है और इससे वह सर्मन में बताई जाने वाली मुख्य बात को सुनने के लिए तैयार हो जाता है और उसे दिए जाने वाले पाठ के मुख्य भाग का पता चल जाता है। **मुख्य भाग** में परमेश्वर के वचन में से बताई जा रही बात पर ज़ोर दिया जाता है। **निष्कर्ष** में संक्षेप में उन बातों को दोहराया जाता है जो मुख्य भाग में कही गई होती हैं। इसमें कोई नई बात नहीं जोड़ी जाती।

निमंत्रण सबसे प्रभावशाली होता है जब यह स्वाभाविक रूप में सर्मन से जुड़ते हुए लय में लगे। किसी सर्मन के उपयोगी होने के लिए उसका ज्ञानवर्धक होना तो आवश्यक है ही, इसमें सुनने वालों को अपने जीवनों में सुधार लाने के लिए जो भी बदलाव करने की आवश्यकता हो, लाने की चुनौती होना भी आवश्यक है। पाप की समस्या को कोई कार्यवाही करने की आश्यकता या हमारे जीवनों में पाप का इलाज बताए बिना, केवल ज्ञानवर्धक सर्मन पूरी तरह से अधूरा है।

सुसमाचार का प्रचार करने के लिए आप इन सर्मनों को, अपनी आवश्यकता के अनुसार बदल सकते हैं। इसके अलावा इनसे आप अपने खुद के सर्मन तैयार करना और लिखना सीख सकते हैं। मेरी प्रार्थना है कि सर्मन आऊटनाईन्स का यह संग्रह पाठकों के लिए उपयोगी हो और इनसे उन्हें थोड़ी बहुत जो भी सहायता मिले, उससे हमारे प्रभु यीशु मसीह को महिमा मिले।

लुईस रशमोर

आओ

सृष्टिकर्त्ता यीशु

से मिलो

यूह. 1:1-3

प्रसंग: बाइबल में से, मज़बूती से दिखाना कि यीशु मसीह सब का सृजनहार है।

परिचय:

1. यीशु मसीह मुख्यतया उस सब का, जो अस्तित्व में है, बनाने वाला है।
2. इसके अलावा यीशु मसीह सारी सृष्टि के निरंतर अस्तित्व का बनाने वाला है।
3. बहुत से वचन हैं जो सीधे तौर पर सृजनहार के रूप में यीशु की भूमिका को दिखाते हैं।

मुख्य भाग:

I. परमेश्वरत्व, जिसमें तीन ईश्वरीय व्यक्ति हैं, ने सब कुछ रचा।

क. परमेश्वरत्व में तीन व्यक्ति हैं।

1. सामान्यत: बाइबल की शिक्षा को त्रिएकता या त्रिएक परमेश्वर के रूप में जाना जाता है। इसलिए त्रिएकता पर बाइबल अध्ययन होना आवश्यक है, चाहे इसमें हमारे पास केवल इसका परिचय देने का ही समय है।
2. नये नियम के कई वचनों में एक परमेश्वरत्व के तीन व्यक्ति मिलते हैं (मत्ती 3:16-17; 28:19; मरकुस 1:10-11; लू. 1:30-35; 3:21; 22; 24:49; यूह. 14:16-17, 25-26; प्रेरि. 2:32-33; 1 कुरिं 12:4-6; 2 कुरिं. 13:14; इफि. 4:4-6; 5:18-20; 1 थिस्स. 1:2-5; 2 थिस्स. 2:13-14; तीतु. 3:4-6; 2 तीमु. 1:3, 13-14; इब्रा. 2:3-4, 6:4-6; 10:29-31; 1 पत. 1:2; 1 यूह. 3:4-6; यहू. 20- 21)।
3. पुराने नियम के वचनों में भी एक परमेश्वरत्व में तीन ईश्वरीय व्यक्तियों को स्वीकारा गया है (यशा. 42:1; 61:1-2; लू. 4:18; इब्रा. 1:10; भजन 102:25-27)।
4. अन्यथा बाइबल एक परमेश्वर के तीन व्यक्तियों को परमेश्वरत्व कहती है (प्रेरि. 17:29; रोमि. 1:20; कुलु. 2:9)।
5. लग सकता है कि हमारे लिए समझना कठिन है, परन्तु परमेश्वरत्व में पिता और पुत्र (यीशु मसीह) एक हैं (यूह. 10:30)।

ख. जो कुछ भी अस्तित्व में है, उस सब की सृष्टि उस एक परमेश्वरत्व के ईश्वरीय व्यक्तियों का सामूहिक सहयोग है।

1. बाइबल में बहुवचन सर्वनाम सृष्टि के लिए ज़िम्मेदार ईश्वरीय व्यक्तियों की बहुतायत का प्रमाण देते हैं (उत्प. 1:26; 3:22; 11:7)।
2. बाइबल में परमेश्वर के लिए बहुवचन संज्ञा शब्द [एलोहीम] सृष्टि के लिए ज़िम्मेदार ईश्वरीय व्यक्तियों की बहुतायत का संकेत देता है (उत्प. 1:26)।

सृष्टि की रचना का सर्वोत्तम क्षण तब आया, जब परमेश्वर ने मुनष्य को सृजा। यह विवरण परमेश्वर को सारा ध्यान इसी घटना पर लगाने के लिए स्वर्गीय

दरबार या त्रिएकता के दो अन्य सदस्यों को कहते हुए दिखाता है। (विक्लिफ़)

वचन हमें बताता है कि वह ELOHIYM (OT:430) अर्थात ईश्वरीय बहुलता का काम था, जिसे यहां और विशिष्ट रूप से बहुवचन सर्वनामों **हम** और **अपने** से चिह्नित किया गया और यह दिखाने के लिए कि वह परमेश्वर की सृष्टि की अति उत्तम रचना था, इस अद्‌भुत सृष्टि को बनाने के लिए सम्मति और प्रयास में परमेश्वरत्व के सभी व्यक्तियों को एक दिखाया गया है। (क्लार्क)

यह बहुवचन रूप में है, परन्तु इसका अर्थ निश्चय ही एकसमान रूप से एकवचन है यानी यह एकवचन क्रिया या विशेषण को चलाता है, जब तक इसका इस्तेमाल मूर्तियों के देवी-देवताओं के लिए नहीं होता (भजन 96:5; 97:7)। इब्रानी भाषा की यह विशेषता है कि इसमें वास्तविक बहुतायत के साथ-साथ आयाम, कद आकार और प्रतिष्ठा को बहुवचन के द्वारा दी दिखाया जाता है। (ISBE)

II. बाइबल सृष्टि में यीशु मसीह की भूमिका पर जोर देती है।

क. नये नियम के बहुत से हवाले खुलकर यीशु मसीह को सृष्टि की रचना करने वाला बताते हैं।

1. यीशु मसीह परमेश्वर पिता के साथ सह-सनातन था और उस सब को जो सृजा गया है, मसीह ने सृजा (यूह. 1:1-3)।
2. यीशु मसीह सब कुछ बनाने वाली परमेश्वर पिता की सामर्थ था (1 कुरिं. 6:6; इफि. 3:9)।
3. संसार का सृजनहार यीशु मसीह जगत में आया (यूह. 1:10)।

ख. बाइबल यह भी स्पष्ट करती है कि यीशु मसीह सारी सृष्टि को बनाए रखता है।

1. यीशु उसी सामर्थ का इस्तेमाल, जिससे उसने सब कुछ रचा, उस सृष्टि को बनाए रखने के लिए करता है (कुलु. 1:16-17; इब्रा. 1:2-3)।
2. इस लिए, यीशु मसीह अपनी सृष्टि का शासक है (प्रका. 3:14)

''और लौदीकिया की सभा के दूत को यह लिख 'जो आमीन और विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह है, और परमेश्वर की सृष्टि का प्रधान है, वह यह कहता है'' [*young's literal translation*]।

''लौदीकिया की कलीसिया के स्वर्गदूत को यह लिख 'जो आमीन और विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह है, और परमेश्वर की सृष्टि का शासक है, वह यह कहता है' '' (प्रका. 3:14 NIV)।

परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण ... न कि सृष्टि का पहला, जैसा कि एरिसवादियों का विचार था और एकेश्वरवादियों का अब विचार है, बल्कि सृष्टि का मूल कारण जिसके द्वारा परमेश्वर काम करता है (कुलु. 1:15,18; एक वचन जिसे लौदीकिया के लोग जानते होंगे, यूह. 1:3; इब्रा. 1:2, जैसा कि प्रका. 1:18; 2:8; 03:21; 5:13 से स्पष्ट होता है)। (रॉबर्टसन)

आरम्भ करने वाला या, कर्त्ता ... (विन्सेंट'स)

निष्कर्ष:

1. देह में परमेश्वर या देहधारी हुआ यीशु मसीह उत्तम गुरु, बलिदान, उद्धारकर्त्ता, राजा और न्यायी के रूप में कई भूमिकाएं हैं।
2. यीशु मसीह सृष्टि का सृजनहार भी है, और पालनहार भी।

निमन्त्रण:

1. यीशु मसीह जिसने सब वस्तुओं की रचना की, उसी के द्वारा मनुष्यों की पहुंच छुटकारे और पिता तक होती है (मर. 16:16; यूह. 14:6)।
2. पाप में गिर गए या भटक गए मसीही, एक और शुद्ध किए जाने के लिए प्रभु के पास लौट सकते हैं (यशा. 44:22; यिर्म. 24:7; इब्रा. 8:10-12)।

आओ

देहधारी होने से पहले परमेश्वर

यीशु से मिलो

फिलि. 2:5–11

प्रसंग: यीशु मसीह के देहधारी होने से पहले (पूर्व–अस्तित्व) को समझना।

परिचय:

1. यीशु मसीह के पूर्व–अस्तित्व का जैसा कि इसे आम तौर पर बताया जाता है, सम्बन्ध उससे है जिसे हम देहधारी होने (अर्थात जब उसने कुंवारी से जन्म के द्वारा देह धारण की या शारीरिक रूप में आया) से पहले यीशु मसीह के रूप में जानते हैं।
2. बेशक परमेश्वरत्व के दूसरे व्यक्ति ने, तकनीकी रूप में देहधारी होने की अपनी पूर्व–अवस्था में अभी, यीशु मसीह की भूमिकाएं नहीं निभाई थीं।

   अगस्तुस कैसर के शासन से पहले न तो कोई यीशु, न मसीहा, न ख्रिस्तुस, न परमेश्वर का पुत्र, न कोई इकलौता ही था। मसीही युग से पहले वाला सम्बन्ध, पिता और पुत्र वाला नहीं था। इन शब्दों के अर्थ में हमेशा अंतर है परन्तु यूहन्ना द्वारा विचाराधीन वाक्य में इसे व्यक्त किया गया है [यूह. 1:1]। यह सम्बन्ध परमेश्वर और ''परमेश्वर का वचन'' वाला था (इस शब्द रचना से एक बिल्कुल अलग सम्बन्ध का पता चलता है जो पिता और पुत्र के सम्बन्ध से बिल्कुल अलग है और पूरी तरह से घनिष्ठ, समान और प्रतापी है (मोशेर 313 में उद्धृत अलग्ज़ैंडर कैम्पबेल)।

3. यीशु मसीह का पूर्व–अस्तित्व संसार और जो कुछ इसमें है, सब की सृष्टि में पिता और पवित्र आत्मा के साथ अपने योगदान से स्वयं ही सिद्ध होता है (उत्प. 1:26–27, कुलु. 1:15–17)।
4. ''यीशु मसीह के पूर्व–अस्तित्व या देहधारी होने से पहले को भी निश्चित रूप में बाइबल में'' बताया गया है।

   यीशु मसीह के किसी भी वास्तविक अध्ययन में न केवल उसके पृथ्वी पर के 33 वर्षों के समय को, बल्कि उसके सनातन अस्तित्व को भी जोड़ा जाना आवश्यक है। बाइबल साफ़ बताती है कि उद्धारकर्त्ता, पृथ्वी पर अपने देहधारी होने से पहले, अनन्तकाल से अस्तित्व में था (जैक्सन 1)

5. यहां पर आपको निमन्त्रण दिया जाता है, ''आओ देहधारी होने से पहले परमेश्वर के रूप में यीशु से मिलो।''

मुख्य भाग:

I. पुराने नियम वाला पवित्र शास्त्र जिसमें परमेश्वरत्व के, उस सदस्य के पूर्व–अस्तित्व या देहधारी होने से पहले के बारे में बताया गया है जिसे हम यीशु मसीह के रूप में अधिक जानते हैं।

क. सृष्टि की रचना ही, जिसमें पिता और पवित्र आत्मा के साथ परमेश्वरत्व के दूसरे सदस्य

ने भाग लिया, पहले से हमारे प्रभु के पूर्व-अस्तित्व को बताती दिखती है।

1. परमेश्वरत्व ने संसार को रचा (उत्प. 1:26-27; रोमि. 1:20)।
2. संसार की रचना में परमेश्वरत्व के भीतर माध्यम यीशु मसीह था (1 कुरिं. 3:6; इफि. 3:9; कुलु. 1:15-17; यूह. 1:1-3)।

ख. *पुराने नियम की भविष्यद्वाणी* यीशु मसीह के पूर्व-अस्तित्व का संकेत देती है।

1. मीका 5:2 सबसे स्पष्ट भविष्यद्वाणियों में से एक है, जो यीशु मसीह के देहधारी होने से पहले की अवस्था अर्थात अनादि परमेश्वर के शारीरिक रूप में कुंवारी से जन्म को बताता है।

   जब मीका ने बैतलहम में यीशु के जन्म की भविष्यद्वाणी की, तो उसने यह ज़ोर देने पर ध्यान दिया कि मसीह का निकलना प्राचीनकाल से वरन अनादिकाल से था (मीका 5:2)। संदर्भ से यह स्पष्ट होता है कि प्रभु के अनादिकाल से निकलने की बात को यहूदिया के बैतलहम में एक बालक के रूप में उसके आने से अलग रखा गया है। यदि उनका अर्थ मसीह के अनादिकाल से पूर्व-अस्तित्व से कुछ कम होता, तो नबी के ऐसी शब्दावली इस्तेमाल करने की मंशा की कल्पना करना कठिन होना था (वेस्टल 129)।

2. पुराने और नये नियमों के वचनों की तुलना करने से पता चलता है कि दानि. 7:13-14 का सम्बन्ध कुंवारी से जन्म से, यानी उस माध्यम से है जिसके द्वारा परमेश्वर पृथ्वी पर वास करने के लिए आया (तु. यशा. 7:14; यूह. 1:1-3, 14; गला. 4:4); इसलिए दानि. 7:13-14 यीशु मसीह के पूर्व-अस्तित्व का संकेत है।
3. यीशु मसीह के पूर्व-अस्तित्व या देहधारी होने से पहले को ध्यान में रखते हुए प्रेरित पतरस ने भविष्यद्वक्ताओं को उद्धृत किया (1 पत. 1:10-17)।

   मसीह का आत्मा भविष्यद्वक्ताओं में था, जिसका अर्थ यह है कि भविष्यद्वक्ताओं के समयों के दौरान उसका अस्तित्व था और प्रभु यीशु के परमेश्वर होने और पूर्व-अस्तित्व के समर्थन में, यह वचन एक महत्वपूर्ण हवाला बन जाता है। (वुडस)

II. नये नियम वाला पवित्र शास्त्र जिसमें परमेश्वरत्व के उस सदस्य के पूर्व-अस्तित्व या देहधारी होने से पहले के बारे में बताया गया है, जिसे हम यीशु मसीह के रूप में अधिक जानते हैं।

क. **यीशु ने स्वयं** अपने स्वयं के पूर्व-अस्तित्व या देहधारी होने की पुष्टि की।

1. *ISBE* के एक लेख में जल्दी से कई संदर्भों में से बाइबल का प्रमाण इकट्ठा किया जाता है जिसमें यीशु मसीह अपने पूर्व-अस्तित्व या देहधारी होने के पहले की अवस्था का दावा करता है।

   उसने बार-बार इसका दावा किया कि वह सांसारिक मूल और स्वभाव से कहीं ऊपर था। यहूदियों से वह कहता है, ''तुम नीचे के हो'' (यूह. 8:23), ''मैं ऊपर का हूं; तुम संसार के हो, मैं संसार का नहीं'' (तुलना यूह. 17:16)। इसलिए उसने बताया कि वह अर्थात परमेश्वर का पुत्र, ''स्वर्ग से उतरा'' था (3:13), जहां उसका असली निवास था। बेशक इसमें अपने आप में पूर्व-

अस्तित्व का दावा है और उसके पूर्व-अस्तित्व का साफ़-साफ़ दावा किया गया है। वह पूछता है, ''यदि तुम मनुष्य के पुत्र को जहां वह पहले था, वहां ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा?'' (यूह. 6:62)। *परन्तु यह केवल पूर्व-अस्तित्व की नहीं, बल्कि सनातन काल से पूर्व-अस्तित्व की बात है जिसका उसने अपने लिए दावा किया।* वह प्रार्थना करता है, ''अब हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे साथ थी'' (यूह. 17:5; आयत 24 से तुलना करें); और फिर सबसे प्रभावशाली लगने वाली भाषा में वह घोषणा करता है, ''मैं तुम से सच कहता हूं, कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूं'' (यूह. 8:58), जहां पर उसने अस्तित्व के अपने माध्यम के रूप में अनन्तकाल के समयविहीन वर्तमान का दावा किया। पहले दिए गए दो हवालों में, उसके पूर्व-अस्तित्व वाले जीवन का संकेत था, जबकि इसमें उसने अनन्तकाल से (''जगत की उत्पत्ति से पहले'') पिता की महिमा के साथ अपनी महिमा बता दी कि पिता की महिमा में साथी के रूप में वह उसके साथ खड़ा था (''मसीह का व्यक्तित्व'')।

2. वेयन जैक्सन उन कुछ अवसरों पर ज़ोर देता है जिसमें यीशु ने अपने पूर्व-अस्तित्व (यानी देह में आने से पहले) की स्थिति का दावा किया।

   प्रभु ने अपने स्वर्ग से होने का दावा किया, जब यहूदियों के साथ बहस में उसने कहा, ''तुम नीचे के हो मैं ऊपर का हूं, तुम संसार के हो और मैं संसार का नहीं'' (यूह. 8:23)। और अपनी मृत्यु से थोड़ा पहले, वह यह प्रार्थना कर पाया, ''अब हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे साथ थी'' (यूह. 17:5) (जैक्सन 2)

3. रॉय एच. लेनियर, सीनियर ने *द टाइमलैस ट्रिनिटी फ़ॉर द सीज़लेस सैंचुरीज़* में यूहन्ना 16:28 पर टिप्पणियां कीं; गला. 4:4 से तुलना करें।

   जिस प्रकार से उसका संसार को छोड़कर पिता के पास जाने का अर्थ यह है कि वह पिता के पास जाने से पूर्व, संसार में था, उसी प्रकार से उसका पिता की ओर से संसार में आने का अर्थ यह है कि बैतलहम में मरियम से जन्म के द्वारा संसार में आने से पहले, वह स्वर्ग में पिता के साथ था। (मोशेर 311 में उद्धृत किया लेनियर)

ख. प्रेरित यूहन्ना ने यीशु मसीह के पूर्व-अस्तित्व या देहधारी होने से पहले की प्रकृति पर बिल्कुल साफ़-साफ़ बताया है।

1. बाइबल के अधिकतर छात्र यह मान लेते हैं कि सुसमाचार का यूहन्ना का विवरण, सुसमाचार के उन विवरणों का जो यीशु मसीह के पूर्व-अस्तित्व की बात करते हैं, एकमात्र इतिहासकार है। ''सुसमाचार के विवरणों में यूहन्ना अकेला है जो हमें यीशु के पूर्व-अस्तित्व की समझ देता है'' (विंक्लर 32); ''यूहन्ना का सुसमाचार मसीह के पूर्व-अस्तित्व की शिक्षा देता है'' (''क्रिस्टोलोजी'')।
2. यूहन्ना द्वारा यूनानी शब्द ''लोगोस'' का इस्तेमाल, यीशु मसीह के देहधारी होने से

पहले के बारे में बताता है (यूह. 1:1–3, 14)।

बाइबल में सुसमाचार के प्रचारक यूहन्ना द्वारा दिए गए देहधारी होने के विवरण में ''लोगोस'' शब्द एक अर्थ में पवित्र शास्त्र में नया है, नये नियम के लेखकों में यह विशेष रूप से उसी से जुड़ा है। कइयों ने माना है कि इसमें वचन के स्पष्ट [निर्विवाद] निजी अस्तित्व के जोड़े जाने की बात है, जो कि कुछ अर्थ में सर्वोच्च पिता के निजी अस्तित्व से अलग है; कि यह वचन नये नियम का लोगोस है और इस कारण यह वाक्यांश पूर्व–अस्तित्व में, व्यक्तिगत कार्यों तथा मसीहा के परमेश्वर होने अर्थात ''वचन जो देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया'' के प्राचीन यहूदियों के विश्वास का प्रमाण है। (''देहधारी होना'')

''परमेश्वर के साथ'' (आयतें 1, 2) का दोहराया जाना, हमें लोगोस को परमेश्वर से अलग करने को विवश करता है; ''देहधारी हुआ'' (आयत 14) शब्दों को परमेश्वर के लिए नहीं कहा जा सकता; और बपतिस्मा देने वाले की गवाही, आयत 15, जो इस परिचय के साथ सीधे जुड़ी हुई है (मसीह की और ऐसी बातों के साथ भी मिलाएं, जैसे अध्याय 8:58; 17:5), साफ़ दिखाते हैं कि यूहन्ना ने लोगोस के निजी पूर्व–अस्तित्व की बात की। इसी प्रकार से लोगों की इस गहरी समझ को समझाने की कोई भी कोशिश अधूरी है, जबकि अधिकतर कोशिशें अव्याकरणीय हैं (''लोगोस'')

3. यूहन्ना के ज़ोरदार ढंग से ''लोगोस'' के इस्तेमाल और यीशु मसीह के पूर्व–अस्तित्व के बीच सम्बन्ध की बात करते हुए, वेयन जैक्सन याद दिलाता है।

   लोगोस के अनन्तकाल से अस्तित्व तथा परमेश्वर के पुत्र के देहधारी होने के पड़ाव के बीच एक दिलचस्प भेद है। ''आदि में वचन था'' (निरंतर समय विहीन अस्तित्व का क्रिया शब्द)। फिर भी ''वचन देहधारी हुआ'' (समय में उसके मानवीय अस्तिव के आरम्भ का संकेत देता क्रिया शब्द)। इसी प्रकार से मसीह ने अपने लिए कहा, ''पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ (स्पष्ट आरम्भ), मैं हूं (सदा से अस्तित्व में)'' (यूह. 8:58)। इस लिए **लोगोस** का अस्तित्व मनुष्य बनने से पहले था, यानी समयहीन था (जैक्सन 1)।

4. प्रेरित यूहन्ना ने यीशु के बपतिस्मे के समय यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के शब्दों को लिखा, जो पुष्टि हमारे प्रभु मसीह के पूर्व–अस्तित्व का संकेत है, यूह. 1:15.

   जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझ से बढ़कर है क्योंकि वह मुझ से पहले था। [मनुष्य के रूप में यूहन्ना यीशु से छह महीने बड़ा था, परन्तु यीशु अनादि वचन था। इसलिए यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यहां पर हमारे प्रभु के पूर्व–अस्तित्व का दावा किया।] (मैक्गार्वे)

5. 1 यूह. 1:2 में, प्रेरित ने यीशु मसीह के देहधारी होने से पहले और देहधारी होने दोनों, की बात की।

यह जीवन देहधारी होने से पहले पिता के साथ था और इस कारण अनादि है। परमेश्वरत्व के दूसरे व्यक्ति से सम्बन्धित पवित्र लेखों में यहां चार में से पहले चरण का संकेत है और यह उसके परमेश्वर होने की बात ज़बर्दस्त ढंग से कहता है: (1) सृष्टि की रचना से पहले वचन के रूप में अनादिकाल में उसका पूर्व-अस्तित्व (वुडस)

ग. हर वह वचन जिसमें यीशु मसीह को **परमेश्वर कहा गया** है उसे परमेश्वरत्व के अन्य दो सदस्यों की तरह उसी अनादिकाल से मिलाता है, और क्योंकि यीशु मसीह ने शारीरिक रूप धारण किया, इसलिए उसके पूर्व-अस्तित्व या देहधारी होने से पहले की बात की गई (यूह. 20:28; प्रेरि. 20:28)।

घ. प्रेरित पौलुस ने बार-बार यीशु मसीह के पूर्व-अस्तित्व या देहधारी होने के पहले की अवस्था बताई।

1. प्रेरित पौलुस ने समझाया कि अपने देहधारी होने से पहले यीशु मसीह की एक सांसारिक भूमिका थी (1 कुरिं. 10:4, 9)।

1 कुरिं 10:4 की टिप्पणी में मैंने पहले ही यह मान लिया है कि 1 कुरिं. 10:9 में मसीह को उनके पीछे-पीछे चलने वाली आत्मिक चट्टान कहा गया। और यह कि जंगल में इस्राएलियों के पीछे-पीछे या साथ-साथ चलने वाला वही था न कि चट्टान। जैसा कि प्रेरितों 7:38 और 39 में स्तिफनुस कहता है, जंगल में कलीसिया के साथ परमेश्वर की उपस्थिति का स्वर्गदूत ही था, जिसकी हमारे बाप दादों ने नहीं मानी।

1 कुरिं.10:4 मसीह ही वह चट्टान था का अर्थ ''सच्ची दाखलता मैं हूं'' (यूह. 15:1) के जितना ही शाब्दिक है। परन्तु यहां पर **है** के बजाय **था**, मसीह के पूर्व-अस्तित्व की ओर ध्यान दिलाता है (तुलना 2 कुरिं. 8:9; गला. 4:4)। (विक्लिफ़)

जिस चट्टान की बात पौलुस ने कही उसके लिए यहां साफ़-साफ़ कहा गया कि ''वह चट्टान मसीह था।'' जंगल में मूसा के चट्टान से पानी निकालने के आश्चर्यकर्म (निर्ग. 17:5 सेट) से इस्राएलियों को सचमुच में पानी मिला; परन्तु जो कुछ यहां दिखाया गया इसका अर्थ इससे कहीं बढ़कर है। जैसा कि मार्श ने कहा है, ''वह चट्टान मसीह था, यह नहीं कि 'है,' या 'के जैसा है' ... और यह मसीह के पूर्व-अस्तित्व की स्पष्ट बात है'' (1 कुरिं. 10:4 पर कॉफ़मैन में उद्धृत पॉल डब्ल्यू. मार्श)

यहां पर जिस विचार को प्राथमिकता दी गई है, वह यह है कि पौलुस के कहने का अर्थ था कि ''मसीह'' जो कि उसके पूर्व-अस्तित्व का एक और हवाला है और यह संकेत देता है कि हमारे प्रभु के देहधारी होने की गतिविधि में जंगल में चुने हुए लोगों की चरवाही करना शामिल था (1 कुरिं. 10:9 पर कॉफ़मैन)।

2. 2 कुरिं. 8:9 पर विचार करो।

   आत्मा द्वारा, पौलुस से मसीह के सम्बन्ध में लिखवाया गया, ''वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया'' (2 कुरिं. 8:9)। यदि अपने जन्म से पहले, यीशु महिमा और प्रताप में, पहले से अस्तित्व में नहीं था, तो वह धनी कब था? निश्चय ही पृथ्वी पर रहने के समय पर तो नहीं था! वह किसी दूसरे के तबेले में जन्मा, किसी दूसरे की नाव में गलील की झील में घूमा, किसी दूसरे से भोजन मांगकार उसने हज़ारों को खिलाया, किसी दूसरे के जानवर पर यरूशलेम में घूमा, किसी दूसरे के कमरे में अंतिम भोज खाया और अंत में किसी दूसरे की क़ब्र में दफ़ना दिया गया। एक बार उसने कहा था, ''लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नही'' (लूका 9:58)। (जैक्सन 2)

3. कोई और वचन इतने स्पष्ट और इतने नाटकीय ढंग से यीशु मसीह के पूर्व-अस्तित्व या देहधारी होने से पहले की स्थिति की पुष्टि नहीं करता, जितना फिलि. 2:5-11 करता है।

   इस संदर्भ में, अपनी कलम की एक शानदार बुहार से पौलुस मसीह के 1. *पूर्व-अस्तित्व* (परमेश्वर के साथ समानता), 2. *देहधारी होने* (मुनष्य की समानता में बनाए जाने), 3. *राज्याभिषेक* (परमेश्वर ने उसे अत्यधिक महिमा दी) को दिखा देता है। ... इसी प्रकार से इब्रानियों का लेखक लिखता है: 1. उसने सारी सृष्टि की रचना की- उसके पूर्व-अस्तित्व का संकेत। 2. पापमय शरीर की समानता में और पाप के लिए भेजे जाने पर उसने पापों को धोया (रोमि. 8:3)- इसमें देहधारी होने की बात है। 3. वह ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा (इब्रा. 1:2, 3)।

III. देहधारी होने से पहले की यीशु मसीह की भूमिका को यीशु मसीह की अन्य भूमिकाओं के साथ सही सही कैसे माना जाए?

क. परमेश्वरत्व के उस सदस्य की जिसे हम यीशु मसीह के रूप में जानते हैं, देहधारी होने से पहले क्या भूमिका थी?

1. यीशु मसीह ने सृष्टि की रचना में भाग लिया (उत्प. 1:26-27, यूह. 1:1-3; इब्रा. 1:2-3)।
2. यीशु मसीह जंगल में घूमते इस्राएलियों को प्रभावित करता था (1 कुरिं. 10:4, 9)।

   पौलुस तथा यूहन्ना द्वारा इन वचनों में, मसीह को संसार में आने से पहले पूर्व-अस्तित्व में होने के रूप में और जंगल में इस्राएलियों के सफर में उनकी अगुआई करते हुए दिखाया गया है। ... यहां वह उसे उसके रूप में दिखाता है जो बादल में इस्राएलियों के साथ जंगल में गया और जिसने उन्हें आवश्यकता पड़ने पर छुटकारा दिलाया। (लिप्स्कॉम्ब ऐंड शैफर्ड)

   यह हो सकता है कि पौलुस यह कह रहा हो कि मसीह अपने लोगों के साथ

जंगल में उनके साथ-साथ रहा और यह कि हर उस वचन के द्वारा जो उन्हें दिशा देने, उनकी रक्षा करने और प्रोत्साहन देने के लिए उसके मुंह से निकलता था, वह आत्मिक रूप में उनकी रक्षा कर रहा था। (ऐपलबरी 183)

ख. अपने देहधारी होने के बाद यीशु मसीह की भूमिका क्या थी?
   1. यीशु ''खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया'' (लू. 19:10)।
   2. इस कार्य को उसकी सेवकाई, क्रूस पर मृत्यु, पुनरुत्थान तथा स्वर्गारोहण के द्वारा पूरा किया गया (1 कुरिं. 15:3-4; मरकुस 16:19)।
   3. यीशु मसीह संसार का उद्धारकर्त्ता बना (1 यूह. 4:14)।

ग. स्वर्ग में अपने वापस उठा लिए जाने के बाद से यीशु मसीह की भूमिका क्या है?
   1. यीशु मसीह मध्यस्थ और सिफ़ारिश करने वाला है (1 तीमु. 2:5; इब्रा. 7:25)।
   2. यीशु मसीह उद्धार पाए हुओं को वापस लेने के लिए फिर आएगा (यूह. 14:3)।
   3. यीशु मसीह आज्ञा न मानने वालों को दण्ड देने के लिए फिर आएगा (इब्रा. 10:29-30; 2 थिस्स. 1:7-9)।
   4. यीशु मसीह हर युग के सब लोगों का न्याय करने आएगा (यूह. 5:28-29)।

निष्कर्ष:

1. फ़्लेविल निकोल्स ने संक्षेप में यीशु के पूर्व-अस्तित्व का सार दिया है:

   अतीत की दिशा में पूरे अनंतकाल से, अपने देहधारी होने से पहले की अवस्था में यीशु स्वयं, परमेश्वर ''के स्वरूप में'' (फिलि. 2:6) ही नहीं, बल्कि वह (स्वयं) भी ''परमेश्वर [पिता और पवित्र आत्मा] के साथ'' परमेश्वर ''था'' (यूह. 1:1-3)। उसकी ''महिमा'' पिता के साथ ''जगत की सृष्टि से पहले थी'' (यूह. 17:5)- जिसे उसने हमारा उद्धारकर्त्ता बनने के लिए छोड़ दिया! (25)

2. और विस्तृत रूप से कहा जाए तो बाइबल से यीशु मसीह के पूर्व-अस्तित्व या देहधारी होने से पहले का अनुमान लगाना ठीक है (चाहे हम दिए गए संदर्भ के अनुसार उसकी ईश्वरीय आत्मा के अलावा मसीह की मानवीय आत्मा से सहमत नहीं हैं)।

   1. *मसीह को अपने देहधारी होने से बहुत पहले, अपने पिता से अलग, अपने पिता के दूत या स्वर्गदूत के रूप में उसके पिता द्वारा भेजा गया, दिखाया गया है।* पुरखाओं को दिए गए मसीह के दर्शनों को किसी स्वर्गदूत या मनुष्य के दर्शन की तरह, जो सचमुच में परमेश्वर से अलग है, परन्तु वह जिसमें परमेश्वर, या यहोवा का विशेष निवास था, या जिसके साथ ईश्वरीय स्वभाव की निजी एकता थी, बताया गया है। 2. *बाइबल में कई जगह पर मसीह के, संसार में आने के समय अपने आपको उस महिमा से वंचित करते हुए बताया गया है, जो देहधारी होने से पहले उसके पास थी।* ... (यूह. 17:4, 5; 2 कुरिं. 8:9)। ... यदि मसीह पृथ्वी पर वास से पहले धनवान नहीं था, तो मनुष्य के रूप में उसके लिए यह नहीं कहा जा सकता कि वह धनवान था। 3. ... यीशु मसीह की आत्मा का पहले से अस्तित्व में होना आवश्यक है, *जिससे इसे मनुष्य के पापों के लिए बनने वाले प्रायश्चित के उस बड़े और पीड़ादायक काम के लिए अपनी पहली वास्तविक सहमति देने का अवसर मिल पाता।* ... इसलिए पिता और

पुत्र के बीच छुटकारे की वाचा को संसार की नींव रखे जाने से पहले बांधा गया दिखाया गया है (''यीशु मसीह का पूर्व-अस्तित्व'' जोर दिया गया)।

3. यहूदियों को, जो सदियों तक पवित्र शास्त्र के संरक्षक बने रहे और उससे पहले पुरखाओं के मौखिक निर्देश पाने वालों का, मसीह के पूर्व-अस्तित्व के बारे में पक्का विश्वास: ''... यहूदियों ने बराबर मसीहा के पूर्व अस्तित्व को बनाए रखा'' (''यीशु मसीह का पूर्व-अस्तित्व'')।
4. हर बात की समीक्षा बड़े ही ध्यान से करने के बाद, हम बाइबल में से यीशु मसीह के पूर्व अस्तित्व और तब और उसके बाद से उसकी अलग-अलग भूमिकाओं से आश्वस्त हो सकते हैं। ''कोई भी विचार जो मरियम के पुत्र के ईश्वरीय अस्तित्व को शामिल करने में नाकाम रहता है वह यकीनन गलत है'' (जैक्सन 2)।

निमन्त्रण:

1. पहली बार यीशु मसीह इस संसार में आया, ''परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए'' (यूह. 3:17)।
2. परन्तु यीशु मसीह के द्वितीय आगमन पर, हमारा प्रभु उद्धार पाए हुओं या आज्ञा मानने वालों को वापस ले लेगा और आज्ञा न मानने वालों को दण्ड देगा (इब्रा. 5:9; 1 थिस्स. 4:13-18; 2 थिस्स. 1:7-9)।
3. वापस आने पर यीशु आपके साथ क्या करेगा (मर. 16:16; 1 यूह. 1:9)?

यीशु मसीह परमेश्वर (Deity) है

कुलु. 2:8-10

प्रसंग:

यह साबित करना कि यीशु मसीह ईश्वरीय है या उसमें परमेश्वर का स्वभाव, गुण और विशेषता है, और इस कारण वह परमेश्वर (Deity) है।

परिचय:

1. सम्भव है कि आज हर व्यक्ति इस बात को मानता है कि बाइबल परमेश्वर का निर्णायक, सम्पूर्ण, ईश्वरीय प्रेरणा से दिया हुआ अचूक वचन है।
   - क. इसी कारण बाइबल मसीही व्यक्ति के लिए मानक है, जिसके द्वारा वह नाशवान और अमरता या मनुष्य तथा परमेश्वर के बीच अंतर कर सकता है।
   - ख. यह साबित करने के लिए कि यीशु मसीह परमेश्वर है, बाइबल के हर निष्कपट छात्र के लिए बाइबल की गवाही ही काफ़ी है।
2. सम्भवतया आज के सब या कम से कम अधिकतर लोग यीशु मसीह के परमेश्वर होने को पहले से मानते हैं।
   - क. इसलिए आज का अध्ययन उन सब के विश्वास को मज़बूत करने के लिए होगा जो पहले से यीशु के परमेश्वर होने को मानते हैं।
   - ख. इसके अलावा कोई भी व्यक्ति, जो आज के समय में इस बात से अनिश्चित हो या उसके मन में किसी प्रकार का संदेह हो, यह पाठ यीशु मसीह के परमेश्वर होने के बारे में उसके विश्वास को मज़बूत करेगा।
   - ग. हम जानते हैं कि कुछ लोग यीशु मसीह के ख़ुदा होने का इनकार करते हैं। आज के कुछ लोगों के लिए इस बात पर उलझन में पड़ना सम्भव है (उदाहरण के लिए, यहोवा विटनस, मुस्लिम, बुद्धिस्ट आदि)
3. कुछ लोगों के लिए ''यीशु परमेश्वर है'' जैसी बात कठिन और परेशान करने वाली घोषणा हो सकती है।
   - क. यह शब्दावली (या शब्द) उन लोगों के लिए भी, जो पहले से यीशु के परमेश्वर होने को मानते हैं, नई हो सकती है।
   - ख. ईश्वरत्व के बारे में ''परमेश्वर'' शब्द "deity" शब्द के समान ही है।
   - ग. इस कारण यीशु मसीह परमेश्वरत्व के तीन सदस्यों में से एक है, परमेश्वर पुत्र है (तुलना परमेश्वर-पिता और परमेश्वर-पवित्र आत्मा, मत्ती 28:18-20; 3:16-17; इफि. 4:4-6)।
   - घ. इसलिए एक शब्द जो हमारे अनुवादों में नहीं मिलता है (चाहे यह बाइबल विरोधी हवाला नहीं है) ''त्रिएकता'', आम तौर पर एक परमेश्वरत्व के तीन व्यक्तियों के लिए इस्तेमाल होता है।

मुख्य भाग:

I. मसीहा से सम्बन्धित भविष्यद्वाणियां और भविष्यद्वाणियों का पूरा होना साबित करता है कि यीशु मसीह परमेश्वर है।

क. भविष्यद्वाणी में पहले से बताया गया था कि परमेश्वर (''सर्वशक्तिमान परमेश्वर'') राजा दाऊद के वंश में से मसीहा के रूप में प्रकट होगा (यशा. 9:6-7)।

ख. सुसमाचार के विवरणों में ऐसी भविष्यद्वाणियों के पूरा होने की पुष्टि होती है और वे यीशु नासरी पर लागू होती थीं (मत्ती 1:23; लूका 1:31-33)।

ग. यशा. 9:6-7 की भविष्यद्वाणी पहली सदी ईसवी में अपने पूरा होने से लगभग 700 वर्ष पहले की गई थी।

II. यीशु मसीह का शरीर में आने से पहले का अस्तित्व साबित करता है कि यीशु मसीह परमेश्वर या ख़ुदा है।

क. यीशु ने अब्राहम के समय से पहले होने का दावा किया (यूह. 8:58)।

ख. यीशु सृष्टि से पहले था और उसने सृष्टि की रचना में योगदान दिया और वह सृष्टि को बनाए रखता है (कुलु. 1:14-17; यूह. 1:1-3, 14; उत्प. 1:26)।

ग. परमेश्वर के ठहराए हुए समय पर, परमेश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति मनुष्यजाति के रूप में पृथ्वी पर आया (गला. 4:4)।

III. यीशु मसीह ने परमेश्वर या ख़ुदा होने का दावा किया।

क. कई अवसरों पर यीशु मसीह ने परमेश्वर होने का दावा किया।

1. पहली सदी के धार्मिक अगुओं को यह समझ थी कि यीशु ने दावा किया कि वह परमेश्वर है (यूह. 5:17-18)।
2. कुएं पर सामरी स्त्री के सामने यीशु ने माना कि वह परमेश्वर है (यूह. 4:24-26)
3. इसी प्रकार से, यीशु ने महासभा के सामने साफ़-साफ़ कहा कि वह परमेश्वर का पुत्र मसीहा है यानी स्वयं परमेश्वर है (मर. 14:61-62)।

ख. जैसे कि कुछ लोग यीशु नासरी के सम्बन्ध में दावा करते हैं कि यीशु परमेश्वर का अच्छा भविष्यद्वक्ता और परमेश्वर का पुत्र (ख़ुदा) नहीं हो सकता था।

1. यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया और अपने आप को परमेश्वर माना।
2. इसलिए, या तो वह, वह सब था, जो उसने कहा कि वह है, या वह परमेश्वर की ओर से भेजा गया अच्छा भविष्यद्वक्ता नहीं, बल्कि एक फ़रेबी या जालसाज़ था।

IV. दूसरों की गवाही, पुष्टि करती है कि यीशु मसीह परमेश्वर है

क. यीशु मसीह के शत्रुओं ने गवाही दी कि वह परमेश्वर है, जो गवाही उनके यीशु के शत्रु होने के कारण विशेष रूप से, यीशु के परमेश्वर होने की ज़बर्दस्त गवाही थी।

1. गैर सांसारिक राज्य का राजा होने के बावजूद पिलातुस को ''उसमें कोई दोष नहीं मिला'' (यूह. 18:33-38)।
2. यहूदा जिसने यीशु को पकड़वाया था उसने माना कि यीशु निर्दोष था (मत्ती 27:4)।
3. क्रूस के नीचे सूबेदार ने टिप्पणी की कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती 27:54)।

4. दुष्टात्माओं ने माना कि यीशु नासरी परमेश्वर का पुत्र है (लूका 4:34)।

ख. यीशु मसीह के मित्रों ने भी माना कि वह परमेश्वर या ख़ुदा है।

1. यूहन्ना डुबकी देने वाले ने पुष्टि की कि यीशु नासरी परमेश्वर का पुत्र अर्थात परमेश्वर है (यूह. 1:29, 34)।
2. प्रेरित यूहन्ना ने परमेश्वर होने का दावा करने वाले यीशु के शब्दों को लिखा (प्रका. 1:8)।
3. प्रेरित पतरस ने पुष्टि की कि यीशु ही मसीह है, इसलिए वह परमेश्वर है (मत्ती 16:16)।
4. प्रेरित थोमा ने यीशु को साफ़-साफ़ परमेश्वर का पुत्र कहा (यूह. 20:28)।
5. दमिश्क के मार्ग पर (प्रेरि. 22:6-10) और बाद में भी (फिलि. 3:7-11) प्रेरित पौलुस ने यीशु मसीह के परमेश्वर होने को माना।
6. स्वर्गदूतों ने घोषणा की कि यीशु ही मसीह है, इसलिए वह परमेश्वर है (लूका 2:10-11)।
7. परमेश्वर पिता ने पुष्टि की कि वह यीशु परमेश्वर का पुत्र है, इसलिए वह परमेश्वर है (मत्ती 3:17, 17:5)।
8. शमौन नबी ने घोषणा की कि यीशु परमेश्वर है (लूका 2:25-32)।
9. भविष्यद्वक्तिन हन्नाह ने भी घोषणा की कि यीशु परमेश्वर है (लूका 2:36-38)।

V. पुराने नियम का यहोवा परमेश्वर, जिसके कुछ हवाले या तो परमेश्वरत्व के दूसरे व्यक्ति पर लागू होते हैं या उसके लिए भी हैं।

क. यहोवा सिरजनहार है (यशा. 40:28; यूह. 1:3)।
ख. यहोवा उद्धारकर्त्ता है (यशा. 43:11; यूह. 4:42)।
ग. यहोवा मरे हुओं को जिलाता है (1 शमू. 2:6; यूह. 5:21)।
घ. यहोवा महान न्यायी है (योए. 3:11-12; यूह. 5:27; मत्ती 25:31-33)।
ङ. यहोवा सदैव की ज्योति है (यशा. 60:19-20; यूह. 8:12)।
च. यहोवा महान मैं हूं है (निर्ग. 3:14-15, यूह. 8:58)।
छ. यहोवा महान चरवाहा है (भजन 23:1; यूह. 10:11)।
झ. परमेश्वर की महिमा है (यशा. 42:8; यूह. 17:1, 5)।
ञ. यहोवा पहला और अंतिम है (यशा. 41:4; 44:6; प्रका. 1:17:2:8)।
ट. यहोवा छुटकारा दिलाने वाला है (होशे 13:4, 14; गला. 4:5; इफि. 1:7; ती. 2:14)।
ठ. यहोवा दूल्हा है (यशा. 62:3-5; होशे 2:16-19; मत्ती 25:1-13; प्रका. 21:2)।
ड. यहोवा चट्टान है (भजन 18:2; 1 कुरिं. 10:4)।
ड. यहोवा पाप क्षमा करता है (यिर्म. 31:34; मरकुस 2:7, 10)।
ढ. यहोवा की आराधना स्वर्गदूत करते हैं (भजन 148:1-2; इब्रा. 1:6)।
ण. यहोवा स्वर्ग में वास करता है और मनुष्य उससे बात करते हैं (प्रेरि. 7:59)।
त. यहोवा स्वर्गदूतों का सृजने वाला है (भजन 148:2, 5; कुलु. 1:16)।
थ. यहोवा को परमेश्वर करके माना जाता है (यशा. 45:21-23; फिलि. 2:11)।

VI. यीशु मसीह का जी उठना, साबित करता है कि वह परमेश्वर है।

क. क़ब्र में से जी उठने वाला यीशु मसीह न तो पहला था और न केवल वही।

1. सारपत की विधवा का पुत्र क़ब्र में से जी उठा था (1 राजा 17:22)।
2. शूनेमी स्त्री का पुत्र मरे हुओं में से जी उठा था (2 राजा 4:35)।
3. एलीशा की हड्डियों को छूने वाला मुर्दा उठ खड़ा हुआ था (2 राजा 13:21)।
4. याईर की बेटी मुर्दों में से जी उठी थी (मत्ती 9:18-25; मरकुस 5:22-43)।
5. नाईन की विधवा का बेटा मरे हुओं में से जी उठा था (लू. 7:11-15)।
6. यीशु ने लाज़र को जिलाया था (यूह. 11:44)।
7. प्रेरित पतरस ने दोरकास को जिलाया था (प्रेरि. 9:36-41)।
8. परन्तु ये सब के सब दूसरी बार मरे और क़ब्र में फिर लौट गए, जो कि यीशु मसीह के साथ नहीं हुआ।

ख. यीशु मसीह क़ब्र में से जी उठा फिर कभी न मरने वाला सबसे पहला था (1 कुरिं. 15:20, 23)।

1. यीशु ने अपनी ही मृत्यु और जी उठने की भविष्यद्वाणी की (मत्ती 16:21: मर. 9:9)।
2. यीशु मसीह जी के उठने की घोषणा स्वर्गदूतों के द्वारा की गई (मत्ती 28:1-6; मरकुस 16:1-7; लू. 24:1-9; यूह. 20:12)।

ग. सैकड़ों लोगों ने जी उठे मसीह को देखा (प्रेरि. 3:14-15):

1. मरियम मगदलीनी (यूह. 20:1-18; मर. 16:9)।
2. मरियम नाम की एक और चेली (मत्ती 28:9-10)।
3. दो चेले (लूका 24:13-31)।
4. प्रेरित पतरस (लूका 24:34)।
5. प्रेरित जिनमें थोमा और यहूदा नहीं थे (यूह. 20:19-24)।
6. थोमा और चेले (यूह. 20:26-28)।
7. एक ही समय 500 से अधिक भाइयों ने (1 कुरिं. 15:6)।
8. प्रेरित पौलुस (1 कुरिं. 15:15; प्रेरि. 9:3- 22; 22:6-11)।

घ. हमारा जी उठा प्रभु मसीह परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ बैठा है (इफि. 1:20)।

VII. यीशु मसीह का कुंवारी से जन्म, साबित करता है कि वह परमेश्वर है।

क. कुंवारी से जन्म की भविष्यद्वाणी की गई थी (यशा. 7:14)।

ख. कुंवारी से जन्म की भविष्यद्वाणी यीशु नासरी में पूरी हुई (मत्ती 1:23)।

ग. यीशु मसीह का सिद्ध, पाप-रहित जीवन साबित करता है कि वह परमेश्वर है (गला. 4:4)।

VIII. यीशु मसीह का सिद्ध अर्थात पाप-रहित जीवन, साबित करता है कि वह परमेश्वर है।

क. यीशु ने कोई पाप नहीं किया (इब्रा. 4:15; 1 पत. 2:22)।

ख. हमारे प्रभु के शत्रुओं को उसमें कोई दोष नहीं मिला (लूका 23:4)।

IX. पिता परमेश्वर के साथ एक होना, साबित करता है कि यीशु मसीह परमेश्वर है।

क. पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक परमेश्वरत्व के व्यक्ति हैं (मत्ती 28:18-20)।

ख. पिता और पुत्र एक हैं (यूह. 10:30:14:9:17:21)।

X. यीशु मसीह का अलौकिक ज्ञान, साबित करता है कि वह परमेश्वर है।

क. यीशु मसीह के पास अलौकिक ज्ञान था (यूह. 1:47-49; 2:24-25; 4:28-29)।

ख. कुछ और लोगों के पास अलौकिक ज्ञान था, क्योंकि वह जानकारी उन्हें परमेश्वर की ओर से दी गई थी (प्रेरि. 9:10-17; 21:10-11)।

ग. अलौकिक ज्ञान का होना और परमेश्वर होने का दावा करना, मसीह के परमेश्वर होने को साबित करता है।

X. यीशु मसीह के आश्चर्यकर्म, साबित करते हैं कि वह परमेश्वर है।

क. यीशु ने आश्चर्यकर्म किए (यूह. 3:2; 5:36)।

ख. आश्चर्यकर्म करने की शक्ति परमेश्वर के कई सेवकों को भी दी गई (प्रेरि. 2:4; 3:4-8)।

ग. आश्चर्यकर्म करने की शक्ति का होना और अपने आपको परमेश्वर होने का दावा करना, मसीह के परमेश्वर होने को साबित करता है (यूह. 20:30-31)।

निष्कर्ष:

1. बाइबल बार-बार पुष्टि करती है कि यीशु मसीह परमेश्वर है।
2. यीशु मसीह, देहधारी हुआ परमेश्वर, पृथ्वी पर चला, हमारे लिए मरा, क़ब्र में से जी उठा और अब वापस स्वर्ग में है।

निमन्त्रण:

1. यीशु मसीह देहधारी हुआ परमेश्वर, जो हमारे लिए मर गया और फिर से जी उठा, उन सब का उद्धार करेगा जो उसकी आज्ञा मानते हैं (इब्रा. 5:8-9)।
2. भटक गए मसीही लोग मन फिराकर अपने हाल के पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना करें (प्रेरि. 8:22)।
3. बपतिस्मा-हीन विश्वासी, मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिए डुबकी लें (प्रेरि. 2:38)।

आओ

देहधारी हुआ परमेश्वर

यीशु से मिलो

1 तीमु. 3:16

प्रसंग: बाइबल में से यह दिखाना कि परमेश्वर संसार में मनुष्य बनकर आया।

परिचय:

1. यीशु मसीह का देहधारी होना (या मनुष्य बनना) मसीहियत के लिए अनिवार्य और बुनियादी बात है यानी यीशु मसीह के देहधारी होने की बात इतनी महत्वपूर्ण है।
2. देहधारी हुए परमेश्वर के हमारे बदले में कल्वरी के क्रूस पर दिए जाने वाले बलिदान के बिना, पापों की क्षमा नहीं हो सकती थी।
3. देहधारी हुए परमेश्वर के मरे हुओं में से जी उठने के बिना, जिससे हम भी एक दिन मरे हुओं में से जी उठ सकते, मृत्यु पर जय नहीं पाई जा सकती थी।
4. यीशु मसीह का देहधारी होना मसीहियत के लिए इतना महत्वपूर्ण है कि यह संगति की सबसे बड़ी परीक्षा है!

मुख्य भाग:

1. **पहले तो, हमें यह परिभाषित करना आवश्यक है कि यीशु मसीह के देहधारी होने का क्या अर्थ है?**

   क. देहधारी के लिए अंग्रेजी शब्द ''incarnation'' हमारे अनुवादों में नहीं मिलता है।

   न तो संज्ञा शब्द ''देहधारण'' और न विशेषण शब्द ''देहधारी'' ही बाइबल का है, परन्तु लातीनी का समानांतर यूनानी शब्द in carne ('देह में') यीशु मसीह के रूप और काम के बारे में नये नियम के कुछ महत्वपूर्ण वाक्यों में मिलता है। (न्यू बाइबल डिक्शनरी)।

   INCARNATION (देहधारण) परमेश्वर के पुत्र के मनुष्य बनकर संसार में आने के लिए एक धर्मशास्त्रीय (थियोलोजिकल) शब्द है। इस शब्द का इस्तेमाल भी बाइबल में नहीं हुआ है परन्तु यह ''देह में'' व्यक्ति के रूप में यीशु के लिए नये नियम के स्पष्ट हवालों पर आधारित है (रोम. 8:3; इफि. 2:15; कुलु. 1:22)। (नैल्सन'स)

   ख. ''देहधारण'' शब्द संक्षेप में बाइबल की निर्विवाद शिक्षा को दिखाता है।

   वही जो आदि में था यानी जो परमेश्वर के साथ था और जो परमेश्वर था (यूह. 1:1), समय के पूरा होने पर मनुष्य बना यानी कुंवारी के गर्भ में पवित्र आत्मा की सामर्थ से देहधारी हुआ। इस प्रेरित को ईश्वरीय प्रेरणा से लिखने की अनुमति देकर, क्या यूह. 1:1 के सम्बन्ध में ली गई यह आयत, यीशु मसीह के उपयुक्त और अनादि परमेश्वरत्व का पक्का और प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है? (क्लार्क)।

1. कुंवारी से जन्म वह माध्यम था जिसके द्वारा यीशु मसीह का देहधारण हुआ, मत्ती 1:18-25; लूका 1:31-35; 2:11; गला. 4:4; तुलना उत्प. 3:15.

   यीशु का जन्म ''शरीर के भाव से'' हुआ (रोमि. 1:3), ताकि ''मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु

पर शक्ति मिली थी, अर्थात शैतान को निकम्मा कर दे'' (इब्रा. 2:14); और इसलिए भी, ताकि वह ''अपने भाइयों के समान बने'' ताकि वह दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने (इब्रा. 2:17)। यीशु मसीह के लिए इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए देहधारण करना आवश्यक था। मनुष्य रूपधारण करने के लिए उसका कुंवारी से जन्म लेना आवश्यक था। (हायरस 22)

मसीही पद्धति के लिए सबसे आवश्यक बात मसीह का देहधारण करना और कुंवारी से जन्म देहधारी होने का कारण और समय बताता है। (केटस 301)

2. यूह. 1:1, 14 यह स्पष्ट कर देता है कि ''कुंवारी मरियम से बैतलहम में जन्म लेकर'' ''वचन देहधारी हुआ'' (मैक्गार्वे ऐंड पेनडलेटन)।
3. संक्षेप में, देहधारण करना परमेश्वर के मानवीय देह में आने (यानी, सचमुच में देह में होने, इब्रा. 10:5) से सम्बन्धित है।

ग. यीशु मसीह का देहधारण करना (या मनुष्य रूप लेना) यानी यीशु मसीह का देहधारी होना मसीहियत का सार और बुनियाद है।

देहधारी होने की शिक्षा (डॉक्ट्रिन) मसीहियत की बुनियाद और यह वह आधार है जिस पर प्रकट धर्म का पूरा ताना बाना टिका हुआ है। चमत्कार के जहाज़ में से इसे हमारे विश्वास के सामने प्रस्तुत किया जाता है और इसे मसीहियत के एक सर्व-समावेशी आश्चर्यकर्म के रूप में माना जाना चाहिए। *(मैक्लिन्टॉक ऐंड स्ट्रॉन्ग)*

घ. यीशु मसीह के देहधारी होने का विषय यीशु मसीह के पूर्व अस्तित्व को अनिवार्य बना देता है।

उद्धारकर्त्ता का देहधारी होना। परमेश्वर देह में प्रकट हुआ। यीशु के जीवन का आरम्भ बैतलहम मे नहीं हुआ। वह वहां तब था जब बैतलहम की जगह का निर्माण हुआ था (यूह. 1:1-14)। वह अनन्तकाल से परमेश्वर था और उतना ही परमेश्वर था। यूहन्ना उसके देहधारण का वर्णन चार शब्दों में करता है जहां लूका ने सैकड़ों शब्दों का इस्तेमाल किया (इब्रा. 5:7-8)। ''अपनी देह में रहने के दिनों में।'' (क्लार्क, ''मैंबरस'' 262)

अपने पूर्व-अस्तित्व वाली अवस्था में यानी देहधारी होने से पहले तक मसीह पुत्र नहीं बल्कि वचन था (लूका 1:35; यूह. 1:1) ... (मोशेर 312)

ङ. हम जल्दी से यह मान लेते हैं कि देहधारी होने के बावजूद, यीशु मसीह ने अपने पूर्णतया परमेश्वर होने को बनाए रखा।

1. थोमा ने जी उठे प्रभु के मनुष्य और परमेश्वर होने को माना (यूह. 20:27-28)।
2. प्रेरित पौलुस ने यीशु मसीह के मनुष्य होने के साथ-साथ परमेश्वर होने की पुष्टि की (रोमि. 9:5; फिलि. 2:6-11; कुलु. 2:9)।

II. बाइबल के दोनों नियमों में यीशु मसीह का देहधारी होना पवित्र शास्त्र का विषय है।

क. पुराने नियम में यीशु मसीह के देहधारण की भविष्यद्वाणी की गई।

1. प्रेरित पौलुस ने पुष्टि की कि ''शरीर के भाव से दाऊद के वंश से'' सम्बन्ध होने के नाते यीशु मसीह का देहधारण होना ''जिसकी उसने पहले ही से अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्र शास्त्र में प्रतिज्ञा की थी'' (रोमि. 1:2-4)।
2. उत्प. 3:15 यीशु मसीह के भविष्य में देहधारण होने की सबसे पहली सूचना।

परमेश्वर के देहधारण करने की पहली घोषणा आदम और हव्वा के पाप में गिरने से पहले तक नहीं बल्कि उनके अपने सृजनहार से बगावत करने पर की गई थी। (पिंक)

3. अब्राहम के वंश के द्वारा सारी मनुष्यजाति को आशीष देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा, यीशु मसीह के देहधारी होने की अगली सूचना लगी (उत्प. 12:3; प्रेरि. 3:22-26)।
4. एक और भविष्यद्वक्ता। व्यवस्था के देने वाले (नये नियम की) के इस्राएलियों में से आने वाले का आदर करना परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई मूसा की भविष्यद्वाणी यीशु मसीह के देहधारी होने की एक और सूचना बन गई है (व्यवस्था. 18:15, 18; प्रेरि. 3:22-26)।
5. ''पराक्रमी परमेश्वर'' के कुंवारी से जन्म के पुराने नियम के हवाले, यीशु मसीह के देहधारी होने की भविष्यद्वाणी हैं (यशा. 7:14; 9:6)।

   हमारे प्रभु के कुंवारी से जन्म की बात करने वाला व्यक्ति यीशु के देहधारी होने की बात कर रहा होता है। (क्लार्क, ''वर्जिन बर्थ'' 188)

6. पुराने नियम की भविष्यद्वाणी कि जिसने ''अनादिकाल से'' ''इस्राएलियों में प्रभुता'' करनी थी और बैतलहम से निकलना था, यीशु मसीह के देहधारी होने की बात करता है (मीका 5:2)।

   पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों में, जो मसीह को मनुष्य और ईश्वरीय दोनों दिखाती हैं, उसे स्त्री से ''जन्मा'' अब्राहम का, यहूदा का और दाऊद का वंश, ''दु:खी पुरुष'' बताया गया। परन्तु उसे ''पराक्रमी परमेश्वर,'' ''अनन्तकाल का पिता,'' ''परमेश्वर का पुत्र,'' ''यहोवा हमारी धार्मिकता'' भी कहा गया है। इससे मेल खाती आयतें चाहे औपचारिक रूप में देहधारी होने की शिक्षा नहीं देतीं, परन्तु शुद्ध रूप में वे इसका सुझाव देती हैं। (न्यू अंगर'स)

ख. नया नियम यीशु मसीह के देहधारी होने की डॉक्ट्रिन की बातों से भरा पड़ा है।

इस डॉक्ट्रिन या शिक्षा का आधार चाहे वचन के इधर-उधर पड़े प्रमाण नहीं है परन्तु पूर्ण रूप में मिले प्रकाश पर आधारित होने के बजाय उन में फिर भी ऐसी बड़ी-बड़ी बातें हैं जिनमें सच्चाई विलक्षण रूप में है और हम औपचारिक रूप में कह सकते हैं कि बताई गई (यूह. 1:1-14, तुलना 1 यूह. 1:1-3; 4:2-3; रोमि. 1:2-5; फिलि. 2:6-11; 1 तीमु. 3:16; इब्रा. 2:14) इन शिक्षाओं के बल को खारिज करने या उन्हें कम करने का एकमात्र ढंग बाइबल के अधिकार को कम साबित करना है (न्यू अंगर'स)।

1. यीशु मसीह के देहधारण के सम्बन्ध में यूह. 1:1 और 14 अतुलनीय हैं।

   बहुत सरसरी पढ़ने वाले पाठक भी इस अनूठे अध्याय की आयत 1 और आयत 14 के बीच न्यायसंगत और शाब्दिक सम्बन्ध से प्रभावित होंगे। वचन (सदा से अस्तित्व में) था और देहधारी हुआ (अनादिकाल से अनंतकाल के बीच, समय में, एक विशेष समय पर) और हमारे बीच डेरा किया। (वुडस)

2. फिलि. 2:7-8 दृढ़ता से कहता है कि यीशु मसीह ''मनुष्य की समानता में हो गया''

और ''मनुष्य के रूप में प्रकट'' हुआ।

3. ''मनुष्य का पुत्र'' वाले वचन यीशु मसीह के देहधारी होने की पुष्टि करते हैं (दानि. 7:13; मत्ती 8:20; 9:6; 10:23; 11:19; 12:8, 40; 16:27-28; 17:9, 12; 19:28; 20:18; 24:27, 30; 25:31-46; 26:24, 64; मरकुस 10:45; 14:61-62; लूका 9:43-44; 19:10; यूह. 1:51; 3:13-14, 6; :27, 53, 12:23; प्रेरि. 7:56; प्रका. 1:13; 14:14)।
4. मसीह के देहधारण को मानने वाले वचनों की पहेली ऐसी है कि शायद ही किसी अन्य शिक्षा को बाइबल का इतना सपोर्ट हो।

III. यीशु मसीह का देहधारी होना एक निर्विवाद तथ्य है।

क. प्रेरित पौलुस ने पुष्टि की कि यीशु मसीह के देहधारी होने ''में संदेह नहीं'' था (1 तीमु. 3:16)।

पौलुस ज़ोर देकर कहता है कि इस सच्चाई पर जिसे वह बताने वाला था कोई विवाद नहीं। यानी ''इसमें संदेह नहीं'' है। उसने आगे कहा, ''भेद गम्भीर है।'' जो सच्चाई बताई जाने वाली थी, वह एक बड़ा भेद था, परन्तु अब यह भेद बिल्कुल नहीं रहा। (कुक 116)

ख. मरियम के बालक को दिए जाने वाले ईश्वरीय नाम भी यीशु मसीह के देहधारी होने का संकेत देते हैं।

यीशु नाम उद्धार पर बल देने के लिए (वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करता है), और इम्मानुएल नाम देहधारी होने (परमेश्वर हमारे साथ है) पर बल देने के लिए दिया गया। (वेबस्टर 478)

ग. यीशु मसीह के देहधारी होने का इनकार करना विधर्म है!

1. राल्फ़ गिलमोर ने बाइबल का सही मूल्यांकन किया जब उसने लिखा कि ''यीशु के देहधारी होने की शिक्षा वह विषय है जो संगति की परीक्षा को दिखाता है'' (207)

   प्रेरिताई के लेखक साफ़-साफ़ देखते हैं कि यीशु परमेश्वर और मनुष्य होना दोनों ही, उद्धार के उसके काम की बुनियाद हैं। ... इसलिए हमें नये नियम से हर उस इनकार को कि यीशु मसीह सचमुच में ईश्वरीय और सचमुच में मनुष्य था, दोष लगाने वाला विधर्म, सुसमाचार को बिगाड़ने वाला बताने वाला कहने की उम्मीद करनी चाहिए! और यही यह करता है *(न्यू बाइबल डिक्शनरी)।*

2. यह इनकार करने वाला कि ''यीशु मसीह शरीर में होकर आया है ...'' कोई भी व्यक्ति ''मसीह के विरोधी की आत्मा है'' (1 यूह. 4:2-3; 2 यूह. 7)।
3. यीशु मसीह ने स्वयं यह दावा किया कि वह शरीर में आया (लूका 24:39)।
4. प्रेरित पौलुस ने पुष्टि की कि मनुष्यजाति ने यीशु मसीह को ''शरीर के अनुसार जाना'' (2 कुरिं. 5:16)।
5. प्रेरित यूहन्ना ने पुष्टि की कि उसने और दूसरों ने यीशु मसीह के शरीर को ''आंखों से देखा'' और ''हाथों से छुआ'' था, जिसका उसने प्रचार भी किया (1 यूह. 1:1-3)।

IV. यीशु मसीह के देहधारी होने के उद्देश्य बहुत से थे।

क. यीशु मसीह के देहधारी होने से परमेश्वर को उन परीक्षाओं को सहने को मिल गया जो मनुष्यों के ऊपर आती हैं (इब्रा. 2:18; 4:15)।

देहधारी होने का भेद बेकार और बेफायदा होना था यदि उसका मनुष्य होना इसके सभी अधिकारों तथा सामान्य परिस्थितियों के अधीन न होता। (एडरशम)

ख. यीशु मसीह के देहधारी होने से मनुष्यजाति को मनुष्य और परमेश्वर के बीच सिद्ध प्रधान याजक मिल गया (इब्रा. 2:17)।

ग. यीशु मसीह के देहधारी होने से संसार के पापों का सिद्ध बलिदान मिल गया (इब्रा. 9:26, 10:12)।

1. यीशु मसीह को ''शरीर के भाव से घात किया गया'' और उस ''ने शरीर में होकर दुःख उठाया'' (1 पत. 3:18; 4:1)।
2. ''उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा'' मनुष्यजाति से मिला दिया गया (कुलु. 1:21–22; तुलना इफि. 2:15–16)।

घ. यीशु मसीह का देहधारी होना खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन्हें बचाने का परमेश्वर का विशेष माध्यम था (मत्ती 1:21; लूका 19:10; 1 तीमु. 1:15; इब्रा. 9:26, 28; 1 यूह. 3:5)।

ङ मनुष्यजाति पर मृत्यु की सामर्थ को यीशु मसीह के देहधारी होने और फिर उसके बाद क़ब्र में उसे उसके जी उठने के द्वारा नष्ट कर दिया गया (2 तीमु. 1:10; इब्रा. 2:14–15)।

च. यीशु मसीह का देहधारी होना ''शैतान के कामों का नाश'' करने का, परमेश्वर का माध्यम था (1 यूह. 3:8)।

छ. मनुष्यजाति को यीशु के देहधारी होने के द्वारा 'बहुतायत का जीवन' पाने का अवसर मिला है (यूह. 10:10)।

झ. यीशु मसीह के देहधारी होने से शरीर पर विजय पाई गई, जबकि शेष मनुष्यजाति में शरीर में कमी थी (रोमि. 8:3)।

निष्कर्ष:

1. एडरशेम के साथ हमें दिल से यह कहना आवश्यक है कि ''मसीह का देहधारी होना वह कड़ी थी जिसने पृथ्वी को स्वर्ग से जोड़ दिया ...''

   देहधारी होना संप्रेषण का सर्वोत्तम कार्य था। यह परमेश्वर के अपनी सृष्टि तक पहुंचने के लिए उसके प्रेम की हद की पुष्टि करता है। उसने केवल अपने श्रोताओं को जाना ही नहीं, बल्कि वह उन्हीं के जैसा बन गया। (एडकॉक्स 5)

2. यीशु मसीह के देहधारी होने के कमाल की कल्पना करें।

   यीशु मसीह का देहधारी होना सारी मनुष्यजाति के इतिहास का सबसे बड़ा आश्चर्यकर्म था। कि सर्वसामर्थी परमेश्वर, जिसने इस संसार को बनाया और मनुष्य को बनाया, मनुष्य के स्तर तक इतना नीचे तक गया, कि परमेश्वर का पुत्र अपने आपको मनुष्य के रूप में ढालकर सेवक बन जाए और मनुष्यों के बीच रहे, कि स्त्री से जन्मे, जिसे उसने सृजा था कि अपने आपको अपनी ही व्यवस्था के अधीन करे और फिर उसके अनुसार जीवन बिताए, सचमुच में विचार किए जाने वाली विलक्षण बातें हैं (लॉस 2)।

निमन्त्रण:

1. परमेश्वर ने यीशु मसीह के लहू के द्वारा अपनी कलीसिया को खरीदा (प्रेरि. 20:28))।
2. ''नये जन्म के स्नान'' (बपतिस्मा) के द्वारा हम यीशु मसीह के उद्धार दिलाने वाले लहू के सम्पर्क में आ सकते हैं (तीतु. 3:5; प्रका. 1:5)।
3. उद्धार दिलाने वाला लहू मसीही लोगों के लिए भी उपलब्ध है (1 यूह. 1:7–10)।

यीशु मसीह का जन्म

लूका 1:26-35

प्रसंग:

अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता से और अच्छी तरह से परिचित होना।

परिचय:

1. बाइबल तथा सांसारिक इतिहास दोनों ही यीशु के जन्म की जानकारी देते हैं।
2. जानकारी के लिए हम कुछ सीमा तक सांसारिक इतिहास को देख सकते हैं, क्योंकि यीशु मसीह एक ऐतिहासिक व्यक्ति था।
   - क. वह एक वास्तविक मनुष्य था (अपने ईश्वरीय पहलू के अलावा)।
   - ख. वह एक वास्तविक स्थान पर रहता था।
   - ग. वह समय की वास्तविक, निश्चित तथा पहचाने जा सकने वाली अवधि में रहता था।
   - घ. यीशु मसीह का अन्य लोगों पर वास्तविक और यथार्थ प्रभाव था और आज भी है।
3. परन्तु बाइबल और सांसारिक प्रभाव यीशु मसीह के जीवन तथा जन्म की केवल सीमित जानकारी देते हैं।
   - क. मसीही व्यक्ति के लिए यीशु मसीह की निष्कपट जानकारी है।
   - ख. परन्तु यथार्थ तथा मिथ्या या अप्रामाणिक परम्परा (यह कि यीशु की तस्वीरें, यीशु द्वारा चमत्कारी ढंग से किसी के खिलौने ठीक कर देने की बातें, आदि वास्तविक नहीं है) के बीच अंतर करने के लिए हमें सांसारिक इतिहास की जांच बारीकी से कर लेना आवश्यक है।

मुख्य भाग:

I. यीशु का जन्म स्वाभाविक में से हुआ, यानी वह कुंवारी से जन्मा (यशा. 7:14)।

- क. सुसमाचार के लेखकों ने मसीह के कुंवारी से जन्म की पुराने नियम की भविष्यद्वाणी के पूरा होने की पुष्टि की।
  1. मत्ती 1:18-25 में यूसुफ़ के सामने स्वर्गदूत की ओर से की गई वह घोषणा मिलती है कि यशा. 7:14 द्वारा की गई कुंवारी से जन्म की भविष्यद्वाणी, उसकी मंगेतर मरियम के द्वारा पूरी होने वाली थी।
  2. लूका 1:26-38 स्वर्गदूत द्वारा मरियम से यशायाह 7:14 में की गई कुंवारी से जन्म की भविष्यद्वाणी के उसके द्वारा पूरा होने की घोषणा करता है।
- ख. यीशु मसीह का जन्म चमत्कार या अलौकिक तो था, परन्तु केवल चमत्कार ही नहीं बल्कि इससे भी बढ़कर था।
  1. चमत्कार या आश्चर्यकर्म परमेश्वर के द्वारा की गई दिखाई दिए जा सकने वाली अलौकिक घटना को कहा जाता है।
  2. यीशु मसीह का कुंवारी से जन्म एक प्रकार से चमत्कारी था जो दूसरों के जन्म (उदाहरण, इसहाक और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का जन्म, उत्प. 12; 15; 17; 21:1-7; लूका 1:5-25, 36) से जुड़े चमत्कारों से बढ़कर था।

ग. यीशु मसीह का कुंवारी से जन्म मसीहियत की बुनियादी शिक्षा है।

1. यीशु मसीह का कुंवारी से जन्म यीशु के परमेश्वर होने से सम्बन्धित है।
2. कुंवारी से जन्म वह वाहन या माध्यम था जिसके द्वारा परमेश्वर मनुष्यों के बीच रहने के लिए संसार में आया (यूह. 1:1-3, 14; 1 तीमु. 3:16; इब्रा. 2:16-17; फिलि. 2:6-8)।

घ. यीशु मसीह का कुंवारी से जन्म पाप में गिरी हुई मनुष्यजाति को छुड़ाने के लिए परमेश्वर की योजना का आधार है।

1. मसीहा या उद्धारकर्त्ता से सम्बन्धित भविष्यद्वाणी का विषय लम्बे समय से मनुष्यजाति का छुटकारा रहा है (उत्प. 3:15; 49:10; यशा. 7:14)।
2. नया नियम यह पुष्टि करता है कि यीशु मसीह का उद्देश्य मनुष्यजाति को पाप से बचाना था (मत्ती 1:21: लूका 19:10)।
3. यीशु मसीह संसार का उद्धारकर्त्ता है, यदि इस प्रसंग को बाइबल में से निकाल दिया जाए, तो बाइबल असम्बद्ध तथा महत्वहीन शब्दों का समूह रह जाएगा।
4. पाप के सिद्ध बलिदान दिए जाने की राह आसान हुई, जिसके द्वारा वास्तव में पाप मिटाए जाने थे (यूह. 3:16; 2 कुरिं. 5:21)।
5. यीशु मसीह ही वह एक ढंग है, जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति अपने पापों से उद्धार पा सकता है (प्रेरि. 4:12; रोमि. 10:13; प्रेरि. 2:38)।

II. मसीहियत के वैरी कुंवारी से जन्म की सत्यता पर आपत्ति करते और इसका खण्डन करते हैं।

क. मसीहियत के वैरियों में नास्तिक और आधुनिकतावादी लोग शामिल हैं। एक ओर जहां नास्तिक परमेश्वर के अस्तित्व तथा धर्म के उसके प्रबन्ध को नकारते हैं, वहीं आधुनिकतावादी लोग वे धार्मिक लोग हैं जो बाइबल में दर्ज परमेश्वर के अलौकिक हस्तक्षेप को कम करके बताते हैं।

1. जिससे वे मसीहियत के वैरी बाइबल के हर आश्चर्यकर्म को काल्पनिक बताकर इस पर हमला करते हैं।
2. मसीहियत के वैरी विशेष तौर पर कुंवारी से जन्म तथा यीशु मसीह के पुनरुत्थान पर हमला करते हैं, क्योंकि मसीहियत के वैध होने के लिए आश्चर्यकर्म की ये दोनों घटनाएं महत्वपूर्ण हैं।
3. मसीहियत के वैरी बाइबल को मिथ्या और परी कथाएं बताते हैं।
4. 18वीं सदी तक यीशु मसीह के कुंवारी से जन्म पर कथित उच्च विवेचना के द्वारा हमला नहीं हुआ था।

ख. आधुनिकतावादी तथा उदारवादी लोग नास्तिकों से अधिक खतरनाक हैं।

1. फ्रांसिस वोलटेयर तथा थॉमस पेयन जैसे नास्तिकों को मसीहियत के विरोधी घोषित कर दिया गया है और उन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है।
2. परन्तु आधुनिकतावादी तथा उदारवादी लोग मसीहियत के समर्थक होने का दावा करते हैं, जबकि वास्तव में वे इसे अन्दर से खोखला करते हैं।
3. बाइबल पर अपने गुप्त तथा अप्रत्यक्ष हमलों के द्वारा, आधुनिकतावादी और उदारवादी लोग अधिक खतरनाक हैं क्योंकि वे बाइबल तथा मसीहियत का खुला विरोध नहीं

करते हैं।

ग. आधुनिकतावादी लोग इस आधार पर यीशु मसीह के कुंवारी से जन्म पर, आपत्ति करते हैं कि जीव विज्ञान के अनुसार यह असम्भव है।

1. अनिषेकजनन (भ्रूण के बिना प्रजनन) केवल छोटे छोटे पौधों तथा कमज़ोर पशुओं तक सीमित है, और मनुष्य जैसे जीवन के उच्च रूपों में यह असम्भव है।
2. आधुनिकतावादी लोग बाइबल के आश्चर्यकर्मों पर विश्वास नहीं करते, इसलिए वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि कुंवारी से जन्म नहीं हुआ होगा।
3. जबकि मसीही लोग बाइबल के आश्चर्यकर्मों में विश्वास करते हैं (कुंवारी से जन्म सहित), क्योंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर के लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं है (लूका 1:37)।

घ. आधुनिकतावादी लोग तर्क देते हैं कि सुसमाचार का यूहन्ना का विवरण यीशु मसीह के परमेश्वर होने की बात तो करता है, परन्तु यीशु मसीह के कुंवारी से जन्म की कोई बात नहीं करता।

1. वास्तव में यीशु मसीह के देहधारण का हर हवाला कुंवारी से जन्म का ही हवाला है (यूह. 1:1–3, 10, 14–15, 18)।
2. प्रेरित यूहन्ना ने यीशु मसीह के देहधारी होने के हवालों को यीशु मसीह के परमेश्वर होने के हवालों के साथ मिला दिया (यूह. 1:1–3, 10, 14–15, 18)।
3. परमेश्वरत्व के दूसरे व्यक्ति के देहधारण करने को मानते हुए, यूहन्ना 1:14 विशेषकर सुसमाचार के अन्य विवरणों (मत्ती और मरकुस) के साथ कुंवारी से जन्म की पुष्टि करते हुए सुर से सुर मिलाता है।

ङ आधुनिकतावादी लोग दावा करते हैं कि यीशु, न तो मसीह है और न किसी प्रेरित ने मसीह के कुंवारी से जन्म की बात की।

1. रोमि. 1:3–4 परमेश्वरत्व के एक सदस्य के मनुष्य रूप धारण करने (देहधारी होने) की बात करता है और कुंवारी से जन्म का हवाला देता है।
2. इसी प्रकार से, गला. 4:4 देहधारण करने की बात करता है और इसलिए अपने आप में यह कुंवारी से जन्म की बात करता है।

ङ आधुनिकतावादी लोग दावा करते हैं कि यूसुफ़ यीशु का पिता था।

1. आधुनिकतावादी लोग मरियम को यह कहते हुए उद्धृत करते हैं कि यूसुफ़ यीशु का पिता था (लूका 2:48)।
2. आधुनिकतावादी लोग हमें यह भी याद दिलाते हैं कि यहूदी लोग आम तौर पर यीशु को यूसुफ़ का पुत्र मानते थे (लूका 2:41; मत्ती 13:55: लूका 3:23; 4:22)।
3. सच है कि यूसुफ़ यीशु का पालक या सौतेला–पिता था, और संसार को यीशु के आश्चर्यकर्मों के साथ आरम्भ की गई सेवकाई से पहले उसके ईश्वरीय स्वभाव का पता नहीं था।

च. आधुनिकतावादी लोग तर्क देते हैं कि प्रसिद्ध या प्रख्यात लोगों के जन्म की कहानियों की तरह, यीशु के जन्म में किस्से और कथाएं जोड़कर संवारा या बढ़ा चढ़ाकर बताया गया है।

1. कुंवारी कोटलिक ने स्वर्ग से उसकी गोद में पंखों की एक गेंद को पकड़ लिया और

उसकी गोद में एक बेटा, एज़्टेक का समर देव हुइज़िलोपकी आ गया।

2. कुइज़ालोटल की कुंवारी मां एक दुर्लभ पत्थर को निगलकर गर्भवती हो गई।
3. आधुनिकतावादी लोग दावा करते हैं कि यीशु मसीह का कुंवारी से जन्म, जन्म की इन मिथ्या कहानियों के जैसा है।
4. परन्तु यीशु मसीह का कुंवारी से जन्म, पुराने नियम की भविष्यद्वाणी, नये नियम में इसके पूरा होने, पुराने नियम के यहूदियों द्वारा उसकी राह देखे जाने और नये नियम से लेकर आज तक के मसीहियों द्वारा उसे माने जाने से सिद्ध होता है।
5. मसीही व्यक्ति कुंवारी से जन्म की पुष्टि के लिए बाइबल के प्रमाण पर भरोसा करता है।

छ. आधुनिकतावादी लोग दावा करते हैं कि आरम्भिक कलीसिया यीशु मसीह के कुंवारी से जन्म पर विश्वास नहीं करती थी।

1. बाइबल के अंदर या बाइबल के बाहर ऐसी कोई बात नहीं है जिससे यह सुझाव मिलता हो कि आरम्भिक कलीसिया मसीह के कुंवारी से जन्म को नहीं मानती थी।
2. यीशु मसीह के कुंवारी से जन्म पर हमला केवल 18वीं सदी में उच्च विवेचना के द्वारा हुआ।

III. यीशु मसीह का जन्म ऐतिहासिक है।

क. बाइबल में यीशु मसीह के जन्म की भविष्यद्वाणी की गई।

1. मसीहा या उद्धारकर्त्ता का जन्म पुराने नियम की भविष्यद्वाणी का विषय था (उत्प. 3:15; 12:3; 49:10; यशा. 7:14)।
2. उद्धारकर्त्ता के जन्म का स्थान पहले से भविष्यद्वाणी के द्वारा बता दिया गया था (मीका 5:2)।
3. उद्धारकर्त्ता के जन्म का समय भविष्यद्वाणी के द्वारा पहले से बता दिया गया था (दानि. 2:31-45)।

ख. मसीहा के जन्म की भविष्यद्वाणियों को मानते हुए बाइबल का इतिहास बाइबल की भविष्यद्वाणियों की पुष्टि करता है।

1. यीशु का जन्म बैतलहम में हुआ (मत्ती 2:1; लूका 2:1-7)।
2. यीशु का जन्म कैसर अगस्तुस के शासनकाल में हुआ, जब कुरेनियुस सीरिया का हाकिम और हेरोदेस महान फलस्तीन (या पलिश्तीन) का राजा था (लूका 2:1-2; मत्ती 2:1)।

ग. सांसारिक इतिहास भी यीशु के जन्म की पुष्टि करता है।

1. इतिहास की पुस्तकों के उदाहरण, जिनमें यीशु के जन्म की ऐतिहासिकता को माना गया है: जॉन एस. सी. एबट (301) की पुस्तक *इटली,* आर्थर ई. आर. बोक (334) की पुस्तक *ए हिस्टरी ऑफ़ रोम* तथा एडवर्ड बर्न्स तथा फिलिफ रालफ (360-363) की पुस्तक *वर्ल्ड सिविलाइज़ेशन*।
2. मसीहियत का समर्थन करने वाले संसार के इतिहासों के साथ-साथ मसीहियत का विरोध करने वाली यह गवाही देते हैं कि यीशु नासरी एक ऐतिहासिक व्यक्ति था।

निष्कर्ष:

1. यह बात कि यीशु नासरी नाम का आदमी रोमी राजाओं के समय में फलस्तीन (या पलिश्तीन) में जन्मा था, **वास्तविकता** है।
   क. बाइबल तथा सांसारिक इतिहास दोनों इस तथ्य की पुष्टि करते हैं।
   ख. यीशु नासरी का जन्म बिल्कुल सच है।
2. यीशु मसीह का जन्म कुंवारी से होना एक **वास्तविकता** है।
   क. बाइबल पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों तथा नये नियम में उनके पूरा होने के द्वारा यीशु के कुंवारी से जन्म की पुष्टि करती है।
   ख. पहली सदी से लेकर आज तक विश्वासी मसीहियों ने यीशु मसीह के कुंवारी से जन्म को माना है।
   ग. यीशु मसीह का कुंवारी से जन्म उतना ही यथार्थ है जितना बाइबल की कोई और बात। और यह बिल्कुल सच है।
3. संयोग से, अंग्रेज़ी के कम से कम तीन संस्करण यीशु मसीह के कुंवारी से जन्म को गलत और गुमराह करने वाले ढंग से दिखाते हैं।
   क. *द रिवाइज़्ड स्टैंडर्ड वर्ज़न, गुड न्यूज़ फ़ॉर मॉडर्न मैन* तथा *न्यू वर्ड ट्रांसलेशन* तीनों में मसीह के जन्म को बताते हुए ''कुंवारी'' शब्द की जगह ''युवती'' या ''युवा कन्या'' लिखा गया है।
   ख. युवतियां सदियों से बच्चों को जन्म देती रही हैं, परन्तु किसी कुंवारी ने बालक अर्थात यीशु मसीह को जन्म केवल एक बार दिया।

निमन्त्रण:

1. परमेश्वर का पुत्र, यीशु मसीह प्राणों का उद्धार करने के लिए कुंवारी से जन्म लेकर संसार में आया; जब तक हम सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानते तब तक हम यीशु मसीह के कुंवारी से जन्म और उद्देश्य को अपने लिए निरस्त करते हैं।
2. यीशु मसीह बपतिस्मा रहित विश्वासियों के उद्धार के लिए संसार में आया (मर. 16:16)।
3. यीशु मसीह भटके हुए मसीहियों के उद्धार के लिए भी तैयार है (1 यूह. 1:7-10)।

यीशु मसीह का बचपन

लूका 2:51-52

प्रसंगः

अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता से और अच्छी तरह से परिचित होना।

परिचयः

1. यीशु मसीह के आरम्भिक जीवन से सम्बन्धित कम जानकारी होने के कारण, आज के पाठ से नई जानकारी मिलने के बजाय यीशु के आरम्भिक जीवन की कुछ बातों को आसानी से याद रखा जा सकता है।
   - क. यीशु के जीवन के पहले 30 वर्षों के बारे में बाइबल में अधिक नहीं मिलता है।
   - ख. जो कुछ थोड़ा बहुत मिलता है उसे मनुष्य के बनाए हुए पवित्र दिनों या छुट्टियों के दिनों [holyday] के द्वारा बिगाड़ दिया गया है।
   - ग. आम तौर पर आधारहीन परम्परा, डिनोमिनेशनों की शिक्षा तथा बेकार अनुमान से यीशु के जीवन के बाइबल के तथ्यों को छिपा दिया जाता है।
2. सुसमाचार के चार विवरणों में मसीह के जीवन का इतिहास मिलता है।
   - क. इनमें से कम से कम दो इतिहासकार परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए *साक्षी* थे।
   - ख. पवित्र आत्मा ने, ईश्वरीय प्रेरणा के द्वारा मसीह के जीवन को दर्शाने वाले बिल्कुल सही सही शब्दों का चयन करने में पवित्र लेखकों की अगुआई की।
   - ग. इसके अलावा पवित्र आत्मा ने इन पवित्र इतिहासकारों को उस सब के अलावा जो उन्होंने अपनी आखों से देखा था, यीशु मसीह से सम्बन्धित हर प्रकार की सामग्री उपलब्ध करवाई।
   - घ. चुंगी लेने वाला मत्ती, एक प्रेरित था और मसीह के जीवन और मृत्यु तथा जी उठने का गवाह था।
   - ङ सुसमाचार प्रचारक मरकुस, प्रेरित पौलुस का सहकर्मी था।
   - च. मैडिकल डॉक्टर लूका, एक अन्यजाति था, जो प्रेरित पौलुस के साथ परिश्रम करता था।
   - छ. यूहन्ना एक प्रेरित और मसीह के जीवन, मृत्यु तथा पुनरुत्थान का चश्मदीद था।
3. सांसारिक इतिहास भी, जो बहुत करके मसीहियत से लड़ने को तैयार रहता है, यीशु मसीह के जीवन के बारे में जानकारी देता है।
   - क. फ़्लेवियस जोसेफस (37-93) मसीह के बाद की पीढ़ी में जन्मा और प्रेरितों का समकालीन था; वह एक यहूदी इतिहासकार था और यीशु मसीह का चेला नहीं था, परन्तु उसने यीशु मसीह के जीवन के भाग को लिखा।
   - ख. केरियुस कुरनेलियुस टेसिटुस एक रोमी इतिहासकार था, जिसने लगभग 100 ईसवी [मसीह के बाद] में लिखा, और प्रेरितों की मृत्यु के बाद वाली अगली पीढ़ी का समकालीन था। वह मसीही नहीं था, परन्तु उसने मसीह के जीवन के कुछ भाग का उल्लेख किया।
   - ग. और इतिहासकारों ने भी यीशु मसीह के जीवन को माना है और उसके कुछ भाग को लिखा है।
4. सुसमाचार के चारों विवरणों में मसीह के जीवन की आवश्यक जानकारी का सार मिलता है।

क. मसीह के जीवन के पहले 30 वर्षों के बारे में अधिक नहीं लिखा गया है।

ख. परन्तु मसीह के जीवन के विषय में जितना हमें जानने की आवश्यकता है उतना सुसमाचार के विवरणों में हमें दे दिया गया है (यूह. 20:30-31)।

5. सांसारिक इतिहास यीशु मसीह के पवित्र जीवन की और पुष्टि कर देता है।

क. परन्तु मसीही लोगों को जहां भी लगे कि सांसारिक इतिहास और बाइबल की मसीह की जीवनी आपस में मेल नहीं खाते हैं, वहां बाइबल के विवरण में अधिक भरोसा है।

ख. सांसारिक इतिहास मसीही व्यक्ति के लिए जानकारी का अंतिम स्रोत नहीं है, और न ही वह इतना भरोसे के योग्य है।

मुख्य भागः

I. लूका 2:1-7 यीशु मसीह के जन्म का विवर्ण लिखता है।

क. पुराने नियम में यीशु मसीह के कुंवारी से जन्म की भविष्यद्वाणी की गई थी और नये नियम में पूरी हुई (यशा. 7:14; मत्ती 1:18-25; लूका 1:26-38)।

ख. यीशु का जन्म लगभग 4 ई.पू. में हुआ।

ग. यूसुफ़ और मरियम जनगणना के लिए सम्राट के आदेश से नासरत में अपने निवास से बैतलहम में अपने पूर्वजों की जगह पर गए।

1. यह घटना जिस पर यूसुफ़ और मरियम का कोई वश नहीं था, उस भविष्यद्वाणी के पूरा होने का कारण बन गई कि मसीहा का जन्म कहां होना था (मीका 5:2)।
2. रोमी जनगणना कर इकट्ठा करने के लिए नई सूची बनाने के लिए की गई थी।

घ. यूसुफ और मरियम के बैतलहम में पहुंचने पर, उन्हें ठहरने के लिए कहीं कोई जगह न मिली, जिस कारण यीशु का जन्म एक चरनी में हुआ।

1. जिस विनम्रता के साथ परमेश्वर के पुत्र ने संसार में प्रवेश किया, उसकी तुलना धनवानों और प्रसिद्ध लोगों के जन्म से करना चौंका देने वाला है।
2. परम्परा के अनुसार यीशु के जन्म की जगह में बैतलहम की एक गुफा को बताया जाता है; उस जगह पर एक चर्च भवन (गिर्जाघर) है और जहां चरनी का स्थान माना जाता है उसका संकेत देते हुए फर्श पर एक तारा बना है।

II. लूका 2:8-20 स्वर्गदूतों और चरवाहों के बारे में है।

क. स्वर्गदूतों ने उन चरवाहों को, जो रात को अपने-अपने झुंडों की रखवाली कर रहे थे, यीशु मसीह के जन्म की खबर दी।

1. यीशु मसीह के जन्म को बहुत से लोग 25 दिसंबर को पवित्र दिन (छुट्टी का दिन) के रूप में मनाते हैं।
2. पूरे इतिहास में यीशु मसीह के जन्म के दिन पर काफी भिन्नता और विवाद रहा है, और वर्ष भर इसे अलग-अलग समयों पर मनाया जाता था।
3. यह सम्भव नहीं है कि यीशु मसीह का जन्म सर्दी के महीनों में हुआ हो क्योंकि चरवाहे आम तौर पर नवम्बर से मार्च तक रात को अपने झुंडों को बाड़े के अंदर रखते हैं।

4. बैतलहम अमेरिका के जैक्सन, मिसिसिप्पी के जैसा ही है और सर्दी में इसका मौसम वैसा ही होता है (ठण्डा, कहीं कहीं बर्फ़ के साथ बारिश)।

ख. इसके बाद चरवाहे बालक यीशु का दर्शन करने चले गए।

1. यीशु के जन्म के दृश्य में आम तौर पर यूसुफ़, मरियम, बालक यीशु, कुछ जानवरों, चरवाहों, पण्डितों को चरनी के ऊपर स्वर्गदूतों और आकाश में एक तारा दिखाया जाता है।
2. वास्तव में, चरवाहों के यीशु की खोज में खेतों से निकलने से पहले स्वर्गदूत जा चुके थे, और पण्डित या ज्ञानी (एक विशेष तारे का पीछा करते हुए) अभी नहीं पहुंचे थे।

III. लूका 2:21-38 मन्दिर में यीशु के खतने ओर अर्पण किए जाने का वर्णन लिखता है।

क. जन्म के आठ दिन बाद यीशु का खतना और नामकरण हुआ।

1. यीशु मसीह यहूदा के गोत्र का यहूदी और दाऊद के कुल में जन्मा था (इब्रा. 7:14; लूका 2:4)।
2. हमारे प्रभु का जन्म यहूदी वाचा या पुराने नियम के अधीन हुआ, जिसके अधीन वह और उसका परिवार थे।
3. लैव्य. 12:1-3 में बताया गया था कि यहूदी लड़कों का खतना, जन्म के बाद आठवें दिन हो।

ख. यीशु मसीह को परमेश्वर के सामने लाया गया और अर्पण किया गया (लूका 2:22-24)।

1. यह प्रस्तुति माता के शुद्ध किए जाने के 41 दिन बीत जाने के बाद हुई (लैव्य. 12:4-8)।
2. मेमना बलि किया जाना आवश्यक था, जब तक परिवार इतना गरीब न हो कि मेमना चढ़ाना उसके बस की बात न हो। ऐसा होने पर पण्डुकों का जोड़ा दिया जा सकता था।
3. परमेश्वर का आदेश था कि मनुष्य और पशु के पहलौठे को अर्पण किया जाना आवश्यक था। (भेड़ों, बकरियों और बछड़ों को छोड़ इन्हें अर्पण नहीं किया जाता था बलि किया जाता था) (निर्ग. 13:2, 12-13; 34:19-20; गिन. 3:13, 08:17; 18:17)।
4. अर्पण के लिए किया गया यीशु का बलिदान गरीबों द्वारा दिया जाने वाला बलिदान था।

ग. शमौन नामक एक भविष्यद्वक्ता और हन्नाह नामक भविष्यद्वक्तिन दोनों ने पुष्टि की कि यीशु मसीह ही वह मसीहा था, जिसकी राह इस्राएली लोग लम्बे समय से देख रहे थे (लूका 2:25-38)।

1. शमौन और हन्नाह दोनों को ईश्वरीय प्रकाशन मिला था।
2. शमौन ने अन्यजातियों के उद्धार के यीशु मसीह के उद्देश्य को बताया (तुलना यशा. 62:2)।
3. दोनों ने यीशु मसीह को इस्राएल का छुटकारा बताया (तुलना मत्ती 1:21; लूका 19:10)।

IV. मत्ती 2:1-12 पण्डितों (या विद्वानों) के आने की बात बताता है।

क. विद्वान पुरुष (ज्योतिषी) जो कम से कम दो थे परन्तु उनकी संख्या पता नहीं है, यीशु मसीह को ढूंढ़ते हुए आए।

1. पूर्व के ये लोग सम्भवतया पुरखाओं की आज्ञा मानने वाले गैर यहूदी लोग थे और उन्हें ईश्वरीय प्रकाशन मिला हो सकता है।
2. वे एक तारे के पीछे-पीछे आए, जो सम्भवतया तारे जैसी लगने वाली कोई चमत्कारी रोशनी थी, जो उनके आगे-आगे चलते हुए उन्हें यीशु मसीह तक ले आई।
3. उन पण्डितों ने हेरोदेस महान से पूछा कि राजकुमार यीशु कहां जन्मा है।
4. अपनी गद्दी छिन जाने के डर से, हेरोदेस ने बालक यीशु की हत्या करने की योजना बनाई।
5. मसीहा के जन्म की भविष्यद्वाणी पर पुराने नियम वाली बाइबल से ढूंढ़ने के बाद उन पण्डितों को बैतलहम में भेज दिया गया (मीका 5:2)।

ख. उन विद्वानों को यीशु मसीह मिल गया।

1. साफ़ है कि विद्वानों के पहुंचने तक, यीशु और उसका परिवार अब अस्तबल में नहीं बल्कि किसी घर में रह रहे थे।
2. यीशु के जन्म को, कुछ समय, परन्तु दो साल से कम का समय, हो चुका था।
3. बाइबल में चाहे विद्वानों की संख्या नहीं बताई गई, परन्तु सोना, मुर्र, और लोबान तीन प्रकार के उपहार चढ़ाए जाने की बात है।
4. मुर्र और लोबान दोनों ही अत्यधिक सुगंध वाले वृक्षों से निकलने वाली धूप थे, जिस कारण वे बहुत कीमती थे।

V. मत्ती 2:13-18 मिस्र में जाने और बच्चों के वध किए जाने का इतिहास बताता है।

क. स्वप्न में किसी दूसरे रास्ते से वापस जाने की चेतावनी पाकर, वे विद्वान हेरोदेस को बताए बिना चले गए।

ख. यूसुफ़ को स्वप्न में मरियम और यीशु को साथ लेकर मिस्र में भाग जाने की चेतावनी दी गई।

1. हेरोदेस महान यीशु मसीह को मरवा डालना चाहता था क्योंकि उसे डर था कि यहूदियों का यह आत्मिक राजा उसके सांसारिक राज्य के लिए ख़तरा होगा।
2. यूसुफ़ सुरक्षा के लिए मरियम और यीशु को मिस्र में ले गया।
3. यह सुनिश्चित करने के अपने प्रयास में कि उसने यीशु को मरवा डाला है, हेरोदेस ने बैतलहम के इलाके के दो या इससे कम साल के सभी बच्चों को मरवा डाला।
4. मिस्र में जाना और वहां से उनका लौट आना होशे 11:1 में पुराने नियम की भविष्यद्वाणी का और पूरा होना था।

VI. लूका 2:39-40 नासरत में लौटने की बात बताता है।

क. यूसुफ़ स्वप्न में एक स्वर्गदूत से और निर्देश मिलने के बाद, मरियम और यीशु को वापस पलिश्तीन ले आया।

ख. हेरोदेस महान मर चुका था, परन्तु उसका बेटा अरखिलाउस, राजा बन गया था, इस कारण यीशु का परिवार गलील के नासरत में बस गया (जिसे उसका अपना नगर बताया जाता है)।

ग. इस कारण यीशु नासरत में रहने लगा, जिस कारण उसे नासरी कहा गया, जो पवित्र शास्त्र का पूरा होना था (मत्ती 2:23)।

1. नाज़ीर और नासरी में फ़र्क है।
2. नाज़ीर परमेश्वर की विशेष सेवा के लिए अलग किया गया व्यक्ति होता था, और वह कुछ मन्नतों से बंधा हुआ होता था (न्यायियों 13:5; 1 शमू. 1:11; देखें गिनती 6)।
3. नासरी, नासरत नगर के निवासी को कहा जाता था।

घ. उसके बाद लगभग एक दशक तक यीशु के जीवन का कोई विवरण नहीं है।

1. हमारे प्रभु के जीवन के बालकपन के इस काल के सम्बन्ध में पवित्र इतिहास कुछ नहीं बताता है।
2. सांसारिक इतिहास मसीह के इस काल के बारे में कुछ नहीं बताता है।
3. मिथालजी तथा परम्परा का दावा है कि बचपन में, यीशु ने चमत्कार किए, विशेषकर अपने साथियों के टूटे खिलौनों को चमत्कार से जोड़ कर दिया।
4. साफ़ है कि हमारे प्रभु के बचपन की कोई भी बात साधारण से इस हद तक आगे नहीं थी कि किसी को यह संदेह हो कि वह परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती 13:54-56)।
5. यीशु के बालकपन के जीवन के बीच के इस काल को केवल लूका 2:40 लिखता है।

VII. लूका 2:41-60 में यीशु के बारह वर्ष की आयु में फसह में भाग लेने का विवरण बताता है।

क. यीशु ने यरूशलेम में यूसुफ़ और मरियम के साथ फसह के पर्व में भाग लिया।

ख. यीशु पीछे रह गया, जबकि यूसुफ़ और मरियम घर वापस जाने के लिए निकल पड़े।

1. साफ़ है कि यूसुफ़ और मरियम बहुत से अन्य लोगों के साथ जा रहे थे जो यहूदी पर्व के बाद गलील को अपने-अपने घरों को लौट रहे थे, और हर किसी को लगा कि यीशु किसी और के साथ होगा।
2. यह पता चलने पर कि यीशु उनके साथ नहीं है, यूसुफ़ और मरियम यीशु को ढूंढ़ने के लिए वापस यरूशलेम में आए और तीन दिन तक उसे इधर-उधर ढूंढ़ते रहे।
3. अंत में उन्हें वह मन्दिर में, व्यवस्था के विद्वानों के साथ व्यवस्था की बातों पर विचार-विमर्श करते हुए मिल गया।
4. यहूदी अगुवे पवित्र शास्त्र के यीशु के ज्ञान से स्तब्ध थे।
5. यीशु को धार्मिक अगुओं के साथ पवित्र शास्त्र पर चर्चा करते देख, यूसुफ़ और मरियम दंग रह गए।
6. अपने माता-पिता द्वारा डांटे जाने पर, यीशु ने अपने ईश्वरीय मिशन की बात बताई।
7. यूसुफ़ और मरियम के साथ यीशु नासरत में लौट आया।

VIII. लूका 2:51-52 यीशु के बड़ा होने की बात लिखता है।

क. इन दो आयतों में केवल अगले 18 वर्षों में यीशु के बड़ा होने की जानकारी है।

ख. यीशु एक आज्ञाकारी बालक था।

1. पुराने नियम में, बच्चों के आज्ञा मानने पर ज़ोर दिया जाता था (निर्ग. 20:12; 21:15, 17, नीति. 23:13-14)।
2. नये नियम में भी, बच्चों के आज्ञा मानने पर ज़ोर दिया गया है (इफि. 6:1)।

ग. यीशु बुद्धि और डील-डौल में बढ़ा।

1. उसने सहज-बुद्धि के साथ-साथ ज्ञान प्राप्त किया, जबकि वह अपने ज्ञान का इस्तेमाल सही ढंग से कर सकता था।
2. डील-डौल में बढ़ते हुए, वह शारीरिक रूप में बड़ा हुआ।

घ. यीशु परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ा; हम आसानी से अनुमान लगा सकते हैं:

1. यीशु एक अच्छा सदाचारी आदमी था।
2. वह ईमानदार था।
3. वह मेहनती था।
4. वह आलसी, गाली देने वाला, चोर आदि नहीं था।
5. हमारे प्रभु में वे सभी प्रशंसनीय विशेषताएं थीं जो किसी को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य होने और परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों को स्वीकार्य होने के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष:

1. पुरखाओं तथा यहूदी मत दोनों के अधीन लोगों को 400 वर्ष तक परमेश्वर की ओर से कोई नया प्रकाशन न होने के बाद यीशु मसीह के जन्म का नया प्रकाशन मिला।
2. हमारे प्रभु का पालन-पोषण एक माता, सौतेले पिता, सौतेले भाइयों और बहनों वाले परिवार में हुआ (मत्ती 13:54-56)।
3. स्पष्टतया यूसुफ़ की मृत्यु हो गई थी, क्योंकि एक समय के बाद उसका उल्लेख नहीं है और क्रूस पर यीशु ने अपनी माता की देखभाल का काम प्रेरित यूहन्ना को दे दिया।
4. यीशु को तीन वर्षों की अपनी सेवकाई 3 वर्षों ने अपनी सेवकाई को आरम्भ करने से पहले उसे तैयार किया।
5. सुसमाचार के विवरणों में यीशु के जीवन के पहले 30 वर्षों के बारे में चाहे बहुत कम दिया गया है, परन्तु सुसमाचार के विवरणों में अधिकतर उसकी सेवकाई के तीन वर्षों को बताया गया है।
6. पृथ्वी पर यीशु मसीह के जीवन के अंतिम तीन वर्षों ने सारी मनुष्यजाति पर प्रभाव डाला है।

निमन्त्रण:

1. इस समय यदि आप परमेश्वर के साथ उद्धार पाए हुए होने के सम्बन्ध में नहीं हैं तो आप पर मसीह के जीवन और उसकी सेवकाई का प्रभाव नहीं पड़ा।
2. गलती करने वाले मसीही मन फिराकर और प्रार्थना करके इस कमी को दूर कर सकते हैं।
3. जो लोग बिना बपतिस्मा विश्वासी हैं, वे यीशु के निर्देशों को मानकर इस त्रासदी को दूर कर सकते हैं (मर. 16:16)।

यीशु मसीह का पृथ्वी पर का

जीवन और सेवकाई

यशायाह 40:3-5

प्रसंग: अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के बारे में और जानना।

परिचय:

1. यीशु के जीवन के आरम्भिक 30 वर्षों में से अधिकतर समय अज्ञात है, जिसकी मुख्य बातें केवल सुसमाचार में मिलती हैं।
2. परन्तु सुसमाचार के विवरण यीशु के जीवन और पृथ्वी पर की सेवकाई के अंतिम तीन वर्षों से भरे पड़े हैं।
3. स्पष्टतया यीशु मसीह के पृथ्वी पर के जीवन तथा सेवकाई के इतिहास के लिए एक सरमन काफ़ी नहीं हो सकता, या इससे हमारे प्रभु की प्रभावशाली शिक्षा को लिखने का आरम्भ भी नहीं हो सकता।
4. यीशु मसीह के पृथ्वी पर के जीवन तथा सेवकाई के बारे में पवित्र पुस्तक में जो कुछ मिलता है, हमें उस सब के विवरण से आज अपने आपको संतुष्ट करना आवश्यक है।
5. उस पवित्र दस्तावेज़ में वह पर्याप्त जानकारी दर्ज है जो निष्कपट मन वाले किसी भी व्यक्ति के लिए सही ढंग से यह निष्कर्ष निकालने के लिए आवश्यक है कि यीशु नासरी परमेश्वर का पुत्र, मसीह और संसार का उद्धारकर्त्ता है (यूह. 20:30-31)।

मुख्य भाग:

I. पृथ्वी पर की यीशु मसीह की सेवकाई से पहले की तैयारी।

क. यीशु के जीवन के आरम्भिक 30 वर्षों ने उसे, सेवकाई के अपने तीन वर्षों के लिए तैयार किया।

1. 12 वर्ष की आयु में यीशु ने परमेश्वर के पुत्र के रूप में अपने ईश्वरीय मिशन को स्वीकार किया (लूका 2:49)।
2. अगले 18 वर्षों तक, परमेश्वर का देहधारी हुआ पुत्र शारीरिक रूप में बड़ा हुआ और मनुष्यजाति और परमेश्वर को प्रभावित करता रहा (लूका 2:52)।
3. यीशु ने अपनी सेवकाई आरम्भ करने से पहले 30 वर्षों तक प्रतीक्षा की, जो इस बात का संकेत था कि फलदायक परिश्रम से पहले मनुष्यजाति के बीच परिपक्वता का होना आवश्यक है (लूका 3:23)।

ख. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रचार तथा सेवकाई से यीशु मसीह की सेवकाई का मार्ग तैयार हुआ।

1. पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि एलिय्याह के जैसा एक नबी उठकर मसीहा की सेवकाई के लिए मार्ग तैयार करेगा (यशा. 40:3-5, मला. 3:1; 4:5; मत्ती 3:1-3; लूका 3:2-6)।
2. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यह प्रचार करते हुए प्रभु का मार्ग तैयार किया कि राज्य निकट है (मत्ती 3:2)।
3. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मन फिराव का प्रचार करता और पापों की क्षमा के लिए

बपतिस्मा देता था (लूका 3:3)।

4. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला उद्धार को ध्यान में रखते हुए पश्चात्ताप करने वालों को बपतिस्मा देता था (मत्ती 3:5-8; प्रेरि. 19:1-6)।
5. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का प्रचार था कि मसीहा आकर कुछ लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देगा जबकि दूसरों को भयंकर दण्ड का बपतिस्मा (मत्ती 3:10-12)।
6. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु मसीह को बपतिस्मा दिया (सारी धार्मिकता को पूरा करने के लिए) और उसकी पहचान मसीहा के रूप में करवाई जिसकी राह वे सदियों से देख रहे थे (मत्ती 3:13-17)।
7. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने ऐसे प्रचार के कारण व्यक्तिगत खतरे की परवाह किए बिना, जहां पर भी पाप मिला उसे गलत कहा (लूका 3:18-20, मत्ती 3:7-9; 14:3-12)।

II. यीशु की सेवकाई के आरम्भ के आस-पास की घटनाओं ने उसे तीन वर्षों की अपनी सेवकाई के लिए तैयार किया और उसकी पृष्ठभूमि बनाई।

क. यीशु मसीह का बपतिस्मा पृथ्वी पर की उसके तीन वर्षों की सार्वजनिक सेवकाई का आरम्भ था।

1. यीशु मसीह को छोड़ बाकी सब के लिए, यूहन्ना का बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिए था (मत्ती 3:5-6)।
2. चाहे यीशु ने कोई पाप नहीं किया था (2 कुरिं. 5:21; 1 पत. 2:2)।
3. यीशु को सारी धार्मिकता को पूरा करने के लिए बपतिस्मा दिया गया (यानी, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई के दौरान हर यहूदी के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक था, मत्ती 3:15)।
4. यीशु मसीह में चाहे कोई पाप नहीं था, परन्तु उसे पिता की आज्ञा मानने के रूप में बपतिस्मा दिया गया (इब्रा. 5:8-9)।
5. बेशक यीशु का बपतिस्मा सदा के लिए मनुष्यजाति के लिए उदाहरण का काम करता है।
6. बपतिस्मा लेने के थोड़ी देर बाद यीशु ने प्रचार करना आरम्भ कर दिया (मत्ती 4:17),

ख. शैतान द्वारा जंगल में की जाने वाली यीशु मसीह की परीक्षा ने हमारे प्रभु को अपनी सेवकाई के लिए और भी अच्छी तरह से तैयार किया।

1. यीशु बपतिस्मे के तुरन्त बाद, 40 दिन और 40 रातों तक जंगल में उसकी परीक्षा हुई (मत्ती 4:1-11; मरकुस 1:12-13)।
2. यीशु ने पवित्र शास्त्र के हवाले दे देकर शैतान की हर परीक्षा का सामना किया (मत्ती 4:1-11)।
3. यीशु मसीह हमारी तरह सब बातों में परखा गया, पर फिर भी उसने कोई पाप नहीं किया (इब्रा. 2:18; 4:15)।
4. यीशु मसीह ने हमें नमूना दिया कि यदि हम शैतान का सामना करें तो वह हमारे सामने से भाग जाएगा (याकू. 4:7; इफि. 4:27; 1 पत. 5:8-9)।

5. परीक्षा का सामना करते हुए पाप-रहित होने के कारण, यीशु मसीह अपनी सार्वजनिक सेवकाई को आरम्भ करने के लिए तैयार हुआ।

ग. आरम्भिक सेवकाई में यीशु मसीह का अपने कुछ चेलों को बुलाना, तैयारी का एक महत्वपूर्ण भाग था।

1. यीशु ने सबसे पहले, अंद्रियास और पतरस को बुलाया (यूह. 1:35-42)।
2. उसके बाद उसने फिलिप्पुस और नतनएल को चुना (यूह. 1:43-51)।
3. अभी तक यीशु ने केवल चार चेलों के नाम रखे जो बाद में उसके प्रेरित बने।

घ. पानी को दाखरस में बदल देने का हमारे प्रभु का आश्चर्यकर्म उसका पहला आश्चर्यकर्म था और यीशु की ईश्वरीय सेवकाई का पहला सार्वजनिक प्रदर्शन था (यूह. 2:1-11)।

1. यह आश्चर्यकर्म आनन्द मनाए जाने के किसी अवसर पर यीशु द्वारा किया गया एकमात्र आश्चर्यकर्म था।
2. इस आश्चर्यकर्म के बाद यीशु कुछ दिनों तक गलील की झील के पश्चिमी तट पर कफ़रनहूम में रहा।

III. हमारे प्रभु की सेवकाई के पहले भाग को ''यहूदिया की सेवकाई'' नाम दिया जा सकता है।

क. यीशु मसीह पहले यरूशलेम में गया।

1. वहां उसने पहली बार पैसे का लेनदेन करने वालों और सर्राफों को निकालकर मन्दिर को साफ़ किया (यूह. 2:13-22)।
2. उसके बाद यीशु ने आश्चर्यकर्म किए, जिससे बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया (यूह. 2:23)।
3. निकुदेमुस नामक एक फ़रीसी के साथ यीशु मसीह का पहला लिखित संवाद (यह निजी बातचीत थी) हुआ (यूह. 3:1-21)।

ख. यीशु और उसके चेले यरूशलेम से निकलकर यहूदिया देश में गए।

1. वहां यीशु ने उपदेश दिया और बपतिस्मा दिया (यूह. 3:22)।
2. यह वही इलाका था जिसमें यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और उसके चेले उपदेश देने थे, और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपने चेलों के सामने यह पुष्टि की थी कि यीशु ही मसीह है (यूह. 3:25-36)।

ग. इसके बाद यीशु यहूदिया से निकलकर सामरिया में गया और उसी रास्ते से वापस गलील को चला गया (मत्ती 4:12; मरकुस 1:14; यूह. 4:1-4)।

1. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की गिरफ़्तारी के बाद और फ़रीसियों को यह पता चलने के बाद कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता था, यीशु यहूदिया से चला गया।
2. यीशु सामरिया में सूखार नामक जगह पर गया, वहां कुएं पर उसे एक स्त्री मिली (यूह. 4:5-26)।
3. कुएं पर स्त्री के साथ हुआ संवाद यीशु की दूसरी लिखित बातचीत थी (यह भी निजी था) और इस दौरान उसने अपनी पहचान मसीहा के रूप में करवाई।
4. बहुत से सामरियों ने विश्वास किया कि यीशु ही मसीहा है (यूह. 4:27-42)।
5. सामरिया में दो दिन रहने के बाद यीशु और उसके चेले गलील को चले गए (यूह. 4:43)

IV. हमारे प्रभु की सेवकाई के अगले भाग को ''गलील की सेवकाई'' नाम दिया जा सकता है।

क. गलीलियों ने यीशु को मसीह मान लिया था, क्योंकि फसह के दिनों के दौरान उन्होंने यरूशलेम में उसे पहले भी आश्चर्यकर्म करते देखा था (यूह. 4:45)।

1. यीशु पूरे गलील के आराधनालयों में उपदेश देता था और ''सब उसकी बड़ाई करते थे'' (लूका 4:14-15)।
2. परन्तु यीशु के गृहनगर नासरत ने उसे ठुकरा दिया और उसे मार डालने की कोशिश की (लूका 4:16-30)।
3. यीशु काना में चला गया और वहां कफ़रनहूम के राजा के एक राजकर्मचारी ने उससे अपने पुत्र को चंगा करने की विनती की (यूह. 4:46-53)।
4. यीशु मसीह कफ़रनहूम में रहा (मत्ती 4:13; लूका 4:31-32)।

ख. यीशु ने पतरस, अंद्रियास, याकूब और यूहन्ना नामक चार मछेरों को बुलाया (मत्ती 4:18-22; मरकुस 1:16-20; लूका 5:1-11)।

1. पतरस और अंद्रियास को यह दूसरी बुलाहट थी।
2. इतनी मछलियां पकड़े जाने पर जिससे जाल टूटने और दो जहाज़ डूबने का ख़तरा बन गया था, मछेरों के यीशु के चेले बनने के लिए छोड़ देने को तैयार होने से पहले की बात है।

ग. यीशु मसीह बहुत से आश्चर्यकर्म करते और बीमारों को चंगा करते हुए, सारे गलील में प्रचार करता रहा (मत्ती 4:23-25; 8:21)।

1. सीरिया (गलील के उत्तर), दिकापुलिस (गलील के पूर्व), यहूदिया और सामरिया से लोग गलील में यीशु मसीह के पास अपने बीमारों को चंगा करवाने के लिए लाते थे।
2. यीशु मसीह के पास आने वाले हर बीमार को चंगा किया जाता था।

घ. हमारे प्रभु की गलील की सेवकाई के दौरान होने वाली और कई घटनाएं।

1. यीशु ने अपना प्रसिद्ध पहाड़ी उपदेश दिया (मत्ती 5-7)।
2. यीशु ने सूबेदार के सेवक को चंगा किया (मत्ती 13:5-13)।
3. यीशु ने पतरस की सास को चंगा करने और अशुद्ध आत्मा वाले आदमी को चंगा करने सहित, कफ़रनहूम में आश्चर्यकर्म किए (मत्ती 8:14-17; मरकुस 1:21-34; लूका 4:31-41)।
4. यीशु ने एक कोढ़ी को चंगा किया (मत्ती 4:2-4)।
5. यीशु ने गलील की झील पर तूफ़ान को थामा (मत्ती 8:18, 23-27)।
6. यीशु ने गदरेनियों के देश में दुष्टात्माओं को निकाला (मत्ती 8:28-34; मरकुस 5:1-20; लूका 8:26-40)।
7. यीशु ने मत्ती को अपना चेला बनने के लिए बुलाया (मत्ती 9:9-13; मरकुस 2:13-17; लूका 5:27-32)।
8. यीशु ने याईर की बेटी को जिलाया (मत्ती 9:18-26: मरकुस 5:22-43; लूका 8:41-56)।
9. यीशु ने एक स्त्री को चंगा किया, अंधे को आंखें दीं, गूंगे को चंगा किया और दुष्टात्माओं को निकाला (मत्ती 9:27-33)।

10. यीशु ने नाईन नगर की विधवा के पुत्र को जिलाया (लूका 7:11-17)।
11. एक पश्चात्तापी महिला द्वारा इत्र के साथ यीशु का अभिषेक किया गया (लूका 7:36-50)।
12. यीशु ने दो देनदारों का दृष्टांत बताया (लूका 7:41-42)।
13. यीशु ने अपने प्रेरितों को चुना (मत्ती 10:2-4)।
14. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेलों ने यीशु मसीह से पूछा कि क्या आने वाला मसीह वही है (मत्ती 11:2-30)।
15. यीशु ने सूखे हाथ वाले आदमी को चंगा किया (मत्ती 12:9-14)।
16. यीशु ने गलील की झील के किनारे लोगों की भीड़ को उपदेश दिया (मत्ती 13:1-2)।
17. यीशु ने बीज बोने वाले का दृष्टांत बताया (मत्ती 13)।
18. यीशु ने बीज, जंगली बीज, राई के बीज, खमीर, छिपे हुए ख़ज़ाने, अनमोल मोती, और जाल के दृष्टांत बताए (मर. 4; मत्ती 13)।
19. नासरत के निवासियों द्वारा दूसरी बार यीशु मसीह को नकारना (मत्ती 13:54-58)।
20. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को मार डाला गया (मत्ती 14:1-12)।
21. यीशु ने 5,000 पुरुषों को, जिनमें स्त्रियां और बच्चे अलग थे, आश्चर्यकर्म के द्वारा खिलाया (मत्ती 14:13-23)।
22. यीशु गलील की झील के जल के ऊपर चला (मत्ती 14:24-36)।
23. यीशु सूर और सैदा (गलील के उत्तर) के नगरों के इलाकों में गया जहां उसने एक अन्यजाति लड़की में से दुष्टात्मा को निकाला (मत्ती 15:21-28)।
24. यीशु गलील की झील के आस-पास के इलाके में वापस आया जहां उसने कई आश्चर्यकर्म किए (मत्ती 15:29-31)।
25. यीशु ने 4,000 पुरुषों के साथ स्त्रियों और बच्चों को आश्चर्यकर्म से खिलाया (मत्ती 15:32-38)।
26. यीशु ने बैतसैदा के निकट एक अंधे को आंखें दीं (मर. 8:22-26)।
27. प्रेरित पतरस ने यीशु को ख्रिस्तुस अर्थात मसीहा और परमेश्वर का पुत्र माना (मत्ती 16:13-20)।
28. यीशु मसीह का रूपांतर हुआ (मत्ती 17:1-13)।
29. यीशु मसीह ने कफ़रनहूम में कर चुकाया (मत्ती 17:24-27)।

ङ: यीशु ने गलील की अपनी सेवकाई तब खत्म की जब उसने यरूशलेम में झोंपड़ियों के पर्व में भाग लिया (यूह. 7:1-52)।

1. यरूशलेम में उसके शत्रुओं द्वारा उसे उसकी बातों में फंसाने की कोशिश में उसके पास एक व्यभिचारिन स्त्री को लाया गया, कि देखें कि वह उसे पत्थर मारने का दण्ड देता है या उसे छोड़ देता है (यूह. 7:53-8:11)।
2. यीशु मसीह ने बताया कि वह जगत की ज्योति है (यूह. 8:12-30)।

V. हमारे प्रभु की सेवकाई के एक और भाग को ''सीरिया की सेवकाई'' नाम दिया जा सकता है।

क. यीशु मसीह यरदन के पार के देश में जाने के लिए गलील से चला गया (मत्ती 19:1-2; मरकुस 10:1)।
ख. हमारे प्रभु ने 70 चेलों को भेजा (लूका 10:1-24)।
ग. यीशु मसीह ने धन्य सामरी की कहानी बताई (लूका 10:25-37)।
घ. यीशु ने एक अंधे को आंखें दीं (यूह. 9:1-41)।
ङ. यीशु ने अच्छा चरवाहा पर संदेश दिया (यूह. 10:1-21)।
च. यीशु ने यरूशलेम में स्थापन पर्व में भाग लिया (यूह. 10:22-42)।
छ. यीशु ने धनवान मूर्ख का दृष्टांत बताया (लूका 12:1-59)।
झ. यीशु ने फल-रहित अंजीर के पेड़ का दृष्टांत बताया (लूका 13:1-9)।
ञ. यीशु ने एक कुबड़ी स्त्री को चंगा किया (लूका 13:11-13)।
ट. यीशु ने विवाह के अतिथि का दृष्टांत बताया (लूका 14:1-24)।
ठ. यीशु ने खर्चे का हिसाब लगाने पर सिखाया (लूका 14:25-35)।
ड. यीशु ने खोई हुई भेड़, खोए हुए सिक्के और उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत बताए (लूका 15:1-7)।
ढ. यीशु ने अधर्मी भण्डारी का दृष्टांत दिया (लूका 16)।
ण. यीशु ने धनी मनुष्य और लाज़र के बारे में बताया (लूका 16:19-31)।
त. प्रभु ने निकम्मे दास पर चर्चा की (लूका 17:1-10)।
थ. यीशु ने अपने मित्र लाज़र को क़ब्र में से जिलाया (यूह. 11:1-46)।
द. अब यीशु खुलेआम लोगों के बीच में नहीं घूमता था, क्योंकि महायाजकों, अन्य प्रधान याजकों तथा फ़रीसियों ने उसे मार डालने का षड्यन्त्र रचा था (यूह. 11:54)।
ध. यीशु ने दस कोढ़ियों को चंगा किया (लूका 17:11-19)।
न. यीशु ने अधर्मी न्यायाधीश का दृष्टांत दिया (लूका 18:1-8)।
य. यीशु ने चुंगी लेने वाले की पश्चात्तापी प्रार्थना को फ़रीसी की घमण्ड से भरी प्रार्थनाओं से अलग किया (लूका 18:9-14)।
र. यीशु ने मोहरों का दृष्टांत दिया (लूका 19:11-27)।
ल. बैतनिय्याह में यीशु के सिर पर कीमती तेल उण्डेला गया (मत्ती 26:6-13; मरकुस 14:3; यूह. 12:1-8)।
व. बाकी सब यीशु के संसार को छुटकारा दिलाने के लिए क्रूस पर अपने आपको बलिदान देने के लिए था!

निष्कर्ष:

1. यीशु का जन्म लगभग 4 ई.पू. (मसीह के पहले) हुआ; साल के अंदर-अंदर या इससे थोड़ा बाद वह और उसका परिवार मिस्र में भाग गए।
2. मिस्र से वापस आने पर उसका परिवार नासरत मे फंस गया जहां वह अपनी सार्वजनकि सेवकाई आरम्भ करने तक रहा।
3. बारह वर्ष के आयु में लगभग 8 ईसवी (मसीह के बाद) में यीशु ने यरूशलेम में फसह में भाग लिया।
4. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने 26 A.D. (मसीह के बाद) अपनी सेवकाई आरम्भ की।

5. हमारे प्रभु की यहूदिया की सेवकाई लगभग 27 A.D. में फसह के समय आरम्भ हुई (अप्रैल 11–18) और लगभग 28 A.D. तक चली थी।
   क. यहूदिया की सेवकाई कोई नौ महीने तक चली।
   ख. लगभग 27 A.D. के दिसम्बर में यीशु ने कुएं पर सामरी स्त्री के साथ बातचीत की।
6. गलील की सेवकाई 28 A.D. से 29 A.D. लगभग 1 वर्ष तक चली।
7. पिरिया की सेवकाई 29 A.D. से 30 A.D. तक के मार्च महीने तक रही।
8. यह यीशु मसीह के जीवन और सेवकाई को उसकी सेवकाई के अंतिम सप्ताह के अंत तक ले आता है।
   क. सुसमाचार के विवरणों में यीशु के बाकी के जीवन और सेवकाई से बढ़कर जीवन के अंतिम सप्ताह की लगभग जानकारी है।
   ख. अंतिम सप्ताह में यरूशलेम में उसका विजयी प्रवेश, मन्दिर को दूसरी बार शुद्ध करना, कई दृष्टांत, यरूशलेम के विनाश और द्वितीय आगमन की भविष्यद्वाणियां, प्रभु–भोज की स्थापना, गतसमनी बाग, यीशु की गिरफ़्तारी, उसकी पेशियां, उसका सताव, क्रूस पर चढ़ाया जाना, पुनरुत्थान तथा स्वर्गारोहण शामिल है।
   ग. अपनी मृत्यु के निकट के अंतिम सप्ताह के बाद, दो महीनों के अंदर–अंदर यीशु स्वर्ग पर उठा लिया गया, प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया, कलीसिया स्थापित हो गई और मनपरिवर्तन करने वाले 3000 जनों को इसमें मिला दिया गया।

निमन्त्रण:

1. यीशु मसीह का पृथ्वी पर का जीवन और सेवकाई इसलिए हुई ताकि वह क्रूस पर मनुष्यजाति के पाप का बलिदान बन सके (2 कुरिं. 5:21)।
2. हर किसी के लिए जो अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मे में यीशु मसीह को पहन नहीं पाता है, यीशु मसीह का जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान तथा स्वर्गारोहण बेमाने हैं (गला. 3:27; प्रेरि. 2:38)।
3. खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए यीशु द्वारा किया गया कुछ भी काम परमेश्वर के उस भटके हुए बालक के लिए जो मन नहीं फिरा पाता, बेकार है (प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

आओ
उत्तम गुरु यीशु
से मिलो
मत्ती 7:28-29

प्रसंग: बाइबल में से यह दिखाना कि यीशु मसीह उत्तम गुरु है, जिससे शिक्षा लेने के लिए हमें उसके पास जाना चाहिए, जो शिक्षा हमारे जीवनों को बना दे।

परिचय:

1. यीशु मसीह हर उस काम में जो उसने किया, बेहतरीन ढंग से अतुलनीय था; सृष्टिकर्त्ता के रूप में, परमेश्वर देहधारी हुआ के रूप में, कलवरी के क्रूस पर बलिदान के रूप में, उद्धारकर्त्ता के रूप में, राजा के रूप में, न्याय के रूप में यीशु मसीह श्रेष्ठ है।
2. कोई और ऐसा है ही नहीं जो यीशु मसीह से अच्छा गुरु हो, और जिसके पास हम जाएं।

मुख्य भाग

I. गुरु होने का क्या अर्थ है?

क. दो यूनानी क्रिया शब्दों से पता चलता है कि गुरु होने का क्या अर्थ है।

1. पहला, ''*didasko*'' (दिदास्को) का अर्थ है ''निर्देश देना, उदाहरण, मत्ती 4:23; 9:35; रोमि. 12:7; 1 कुरिं. 4:17; 1 तीमु 2:12; 4:11'' (वाइन'स)।
2. दूसरा, ''*matheteuo*'' (माथेटियो) का अर्थ ''सिखाना ... मत्ती 28:19 [28:20 ''*didasko*'' (दिदास्को)]; प्रेरि. 14:21'' (वाइन'स)।
3. इसके अलावा नये नियम में गुरु के अर्थ को तय करने वाले शब्द संज्ञाओं तथा विशेषणों के साथ-साथ समानार्थक शब्द भी हैं।

ख. परमेश्वर मनुष्य का गुरु है।

1. परमेश्वर पुराने नियम में मनुष्य का गुरु था; ''परमेश्वर को गुरु के रूप में दिखाया गया है। वह मूसा को सिखाता था (निर्ग. 4:15)'' (डॉर्टी 131)।
2. इसी प्रकार से परमेश्वर ने नई वाचा में मनुष्यजाति को सिखाने का वचन दिया (यशा. 2:2-3)।
3. इसका अर्थ यह हुआ कि इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि जब यीशु मसीह देह में होकर पृथ्वी पर आया, तो वह उत्तम गुरु था।

II. यीशु मसीह उत्तम गुरु है।

क. यीशु मसीह की छोटी सी सेवकाई में मुख्य बात सिखाना था (मत्ती 4:23; 5:2; 7:29; 9:35; 11:1; 13:54:21:23; 26:55)।

1. उत्तम गुरु यीशु ने अपनी शिक्षा में बार-बार प्रतीकों [अपने समय के पावर प्वायंट आदि] का इस्तेमाल किया।
2. उदाहरण के लिए, ''उत्तम गुरु यीशु, दृष्टांतों की शिक्षा के द्वारा राज्य के भेदों को

प्रकट करता है'' (रिज्जवे 38)।

3. उनके दैनिक जीवन को दर्शाते शब्द चित्रणों के साथ, उत्तम गुरु ने ऐसी परिस्थितियों का इस्तेमाल किया जिनसे वे परिचित थे, ताकि उन्हें उन आत्मिक सच्चाइयों की शिक्षा दी जाए, जिन्हें वे कम जानते थे या बिल्कुल नहीं जानते थे।
4. ब्रूस डार्टी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि यीशु मसीह केवल उपदेश नहीं, बल्कि लोगों को निर्देश भी देता था, जो कि आम तौर पर बड़ी भीड़ को छोड़कर लोगों को दिए जाते थे (मर. 4:1)।

   यीशु उत्तम गुरु है क्योंकि वह लोगों को सिखाता था न कि केवल सबक देता था। ध्यान दें कि सुसमाचार के विवरणों में कितने लोगों का नाम लिया गया है: निकुदेमुस (यूह. 2:1), पतरस (लूका 5:1-11), सामरी स्त्री (यूह. 4), जक्कई (लूका 19:1-10) और सुरूफिनीकी स्त्री (मर. 7:24-30)। लोगों को, विशेषकर समाज द्वारा हाशिये पर रखे गए लोगों को, देखने के इस गुण ने, यीशु को परमेश्वर की ओर से आए हुए गुरु के रूप में अलग पहचान दी (डॉर्टी 133)।

ख. यीशु मसीह को उत्तम गुरु कहलाने का अधिकार है (मत्ती 28:18-20)।

1. यीशु के अनुसार (मत्ती 21:23-27), ''अधिकार के केवल दो ही स्रोत हैं, या तो स्वर्ग या फिर मनुष्य'' (क्राफट 5-6)।
2. यीशु को पकड़ने के लिए प्रधान याजकों, और फ़रीसियों की ओर से भेजे गए ''अधिकारी'' या ''मन्दिर के पहरेदार'' (NIV) खाली हाथ लौट गए क्योंकि वे उत्तम गुरु से भयभीत हो गए थे (यूह. 7:32, 45-46)।
3. जैसा कि डैनवर कूपर ने इसे लिखा है, ''उत्तम गुरु में अलग होने की हिम्मत थी। वह अधिकार के साथ बात करता था'' (59)।
4. उसका स्वर्गीय अधिकार परमेश्वर के प्रकट किए गए वचन पर आधारित था।

   परमेश्वर के वचन में अपने भरोसे के कारण यीशु ऐसा गुरु है जिसकी कोई बराबरी नहीं है। यीशु पवित्र शास्त्र पर बहुत ज़ोर देता था (मत्ती 4:4; 22:29, 31; यूह. 5:39)। इसके विपरीत, इस्राएली गुरुओं को पवित्र शास्त्र का ज्ञान नहीं था (मत्ती 22:29; यूह. 3:10,12)। आज गुरुओं के लिए अपने उपदेश में पवित्र शास्त्र पर ज़ोर देना आवश्यक है। बाइबल परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया वचन है (2 तीमु. 3:16; 2 पत. 1:20-21)। यह मसीही लोगों की उन्नति कर सकता है (प्रेरि. 20:32)। केवल यही हमें यीशु के विषय में बताता है (यूह. 5:39; 8:31-32, 47)। (डार्टी 133)।

ग. यीशु मसीह उत्तम गुरु था क्योंकि वह हमेशा वही सिखाता था जो लोगों के लिए सुनना आवश्यक होता था (न कि वह जो वे सुनना चाह रहे होते थे, 2 तीमु. 4:2-4)

1. हमसे उल्ट, ईश्वरीय होने के कारण यीशु ''अतुलनीय गुरु था क्योंकि वह जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है (यूह. 2:23-24)'' (डॉर्टी 132)।
2. *यीशु की तरह, हमारे लिए परमेश्वर के वचन को सिखाना आवश्यक है ताकि लोगों के दैनिक जीवनों पर इसका प्रभाव पड़े।*

यीशु ऐसा गुरु है जिसकी कोई बराबरी नहीं है, क्योंकि वह लोगों को उनके प्रतिदिन की परिस्थितियों में सिखाता था। बहुत से लोगों के लिए, धर्म उनके दैनिक जीवन से अलग होता है। यीशु के लिए ऐसा नहीं था। वह दैनिक जीवन में से लिए गए दृष्टांतों तथा कहानियों से सिखाता था। शायद इसीलिए साधारण लोग आनन्द से उसकी सुनते थे (मर. 12:37)। यीशु ने दैनिक जीवन पर पवित्र शास्त्र के प्रभाव को दिखाया (मर. 7:1–13)। दैनिक जीवन से उसके जुड़ाव के कारण उसकी शिक्षा फ़रीसियों की शिक्षा से बिल्कुल विपरीत थी (लूका 11:46, 52; मत्ती 23:3–4)। (डार्टी 133)

घ. यीशु मसीह जो उपदेश देता था, उसे व्यवहार में भी लाता था (प्रेरि. 1:1)।

1. यीशु मसीह कुछ–कुछ, उत्तम गुरु इसलिए है, क्योंकि फ़रीसियों के विपरीत (मत्ती 23:3–5), वह जो प्रचार करता था उसे व्यवहार में भी लाता था (मत्ती 16:24)।

2. *पृथ्वी पर सबसे महत्वपूर्ण नमूना वही व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन को अपने जीवन से सिखाता है।*

अंत में यीशु अद्वितीय गुरु है, क्योंकि उसने उसी का नमूना दिया जो उसे सिखाया। आज्ञा मानने सहित हर बात के लिए यीशु हमारा आदर्श है (यूह. 13:17: इब्रा. 5:8–9; 1 पत. 2:21)। प्रेरित पौलुस अपने द्वारा मसीह में आने वालों के लिए नमूना बना (1 कुरिं. 4:16; 11:1; फिलि. 3:17)। पौलुस ने थिस्सलुनीके के नये विश्वासियों की अपने सिखाने वालों तथा प्रभुत्व का अनुसरण करने वाले बनने के लिए सराहना की (1 थिस्स. 1:6–7)। परमेश्वर के वचन को सिखाने वालों के रूप में आज हमें चाहिए कि सिखाते समय हम आज्ञा मानने के लक्ष्य को रखें (मत्ती 7:24–27; रोमि. 2:17–21, 25)। परन्तु आज्ञा मानने के लिए कहने के लिए आवश्यक है कि पहले हम स्वयं आज्ञा मानने वाले हों। जहां हम स्वयं नहीं जाते वहां हम दूसरों को नहीं ले जा सकते। जो हमारे अपने पास नहीं, उसे हम किसी दूसरे को नहीं दे सकते। ... सिखाते हुए हम केवल ज्ञान ही नहीं बांट रहे होते, बल्कि हमें अनुसरण किए जा सकने वाले व्यवहार को आकार देना आवश्यक है (डार्टी 134)।

घ. यीशु मसीह के उपदेश से उसके परमेश्वर होने का पता चलता था।

1. हमारे प्रभु के शत्रुओं में से कोई भी बातचीत में उसे हरा नहीं सकता था, जो कि यीशु मसीह के परमेश्वर होने का प्रमाण है।

यहूदी अगुओं के विभिन्न गुटों ने यीशु को लोगों की नज़र से गिराने की कोशिश की, परन्तु उत्तम गुरु ने उन्हें एक–एक करके खामोश कर दिया (बोर्ड 270)।

झगड़ालू मसीह। भाइयो हमारी लड़ाई शैतान के साथ है और हम इस बात को न भूलें। बाइबल में प्रभु को मेमने के रूप में भी दिखाया गया है और सिंह के रूप में भी। ... बुनियादी सबक यह होना आवश्यक है कि जब प्रभु पर निजी हमला होता है तो वह बदला नहीं लेना चाहता (1 पत. 2:22–23)। ... परन्तु

जब हमला उसकी शिक्षा या उसकी डॉक्ट्रिन पर होता, तो यह अलग बात होती थी। वह मुकाबला करता और लड़ाई करता। वह खण्डन करता और दोष लगाता था (मत्ती 23:15, 25, 27–28) (क्राफ़्ट 14–15)।

2. *इतिहास में किसी अन्य गुरु ने मनुष्यजाति के ऊपर उत्तम गुरु यीशु मसीह से बढ़कर गहरा और मज़बूत प्रभाव नहीं डाला है।*

   यीशु की सिखाने की सेवकाई केवल तीन साल के छोटे से अंतराल की थी। उसने कोई पुस्तक नहीं लिखी। किसी विश्वविद्यालय में उसकी कोई पीठ नहीं थी। अपने छोटे से जन्म स्थान से वह बहुत दूर नहीं गया। फिर भी उन लोगों के द्वारा जिन्हें उसने प्रशिक्षित किया था, यीशु ने संसार पर इतना प्रभाव डाला है, जितना किसी अन्य गुरु ने नहीं। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उसकी शिक्षाओं में उसकी ईश्वरीयता की झलक मिलती है (डार्टी 135)।

ङ. यीशु मसीह ने दूसरों को गुरु बनने के लिए सिखाया।

1. उत्तम गुरु यीशु ने अपने चेलों को सिखाना चाहा ताकि बदले में वे दूसरों को सिखा सकें; उसने अपने चेलों को बताया कि वह उन्हें ''मनुष्यों को पकड़ने वाले'' बनाएगा (मत्ती 4:18–22)।
2. उसी प्रकार से प्रेरित पौलुस ने भी तीमुथियुस को उन्हें सिखाने का निर्देश दिया जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों (2 तीमु. 2:2)।

III. परमेश्वर ने प्रभु की कलीसिया में सिखाने वालों को रखा है।

क. आरम्भिक कलीसिया में ज़िम्मेदारी के अधिक पदों में सिखाना और फिर समझाना शामिल था (1 कुरिं. 12:28; इफि. 4:11)।

1. पहले 1 कुरिं. 12:28 में ''प्रेरित ... भविष्यद्वक्ता ... शिक्षक'' बताए गए हैं।
2. फिर इफि. 4:11 में ''प्रेरित ... भविष्यद्वक्ता, ... सुसमाचार सुनाने वाले, ... रखवाले [पासबान] ... पास्टर/प्राचीन ... उपदेशक'' दिए गए हैं।
3. प्रचारकों, प्राचीनों तथा शिक्षकों को जहां तक हो सके प्रभावशाली सिखाने वाले लगने के लिए, अपने आपको परमेश्वर के वचन के साथ लैस करना आवश्यक है।

ख. प्रभु की कलीसिया को, प्रभु द्वारा दिए गए तीन मिशनों में से दो आम माने जाने वाले नियमों में, सिखाना आवश्यक है।

1. संसार में सुसमाचार को ले जाने में, खोए हुओं को यीशु मसीह के सुसमाचार को सिखाना शामिल है (मत्ती 28:19–20)।
2. पवित्र विश्वास में कलीसिया की उन्नति या बढ़ोतरी के लिए सिखाना आवश्यक है (1 कुरिं. 14:12, 26)।
3. परमेश्वर के वचन को अच्छी तरह से सीखना जिससे वह दूसरों को इसे सिखाने के योग्य हो सके, हर मसीही की ज़िम्मेदारी है (इब्रा. 5:11–14; 1 पत. 3:15)।

निष्कर्ष:

1. ब्रूस डार्टी ने उत्तम गुरु यीशु मसीह का अच्छा निष्कर्ष दिया।

   यीशु की सेवकाई में सिखाना मुख्य बात थी (मत्ती 4:23)। सुसमाचार के विवरणों में बहुत सी शिक्षा सामग्री मिलती है। पहाड़ी उपदेश, दृष्टांत और जैतून के पहाड़ पर उपदेश सभी यीशु की सेवकाई में सिखाने के महत्व का संकेत हैं। यीशु की शिक्षा पर लोगों की प्रतिक्रिया भी इस बात का संकेत है कि यीशु उत्तम गुरु था। बाइबल कहती है कि लोग उसकी शिक्षा से स्तब्ध होते थे (मत्ती 7:28-29; 13:54)। वे उसकी शिक्षा पर चकित भी होते थे (यूह. 7:15, 32, 44-46)। शिक्षा ने ही यीशु को अपने समय के अन्य गुरुओं से अलग होने में सहायता की और शिक्षा ही उसके परमेश्वर होने को दिखाने में भी सहायक है (डार्टी 131)।

2. टी. पियर्स ब्राउन ने इस बात पर ज़ोर दिया कि हर मसीही जो कि एक शिक्षक है और विशेषकर जो प्रचारक है, उसे उन लोगों के जीवनों में सचमुच अंतर लाने के उद्देश्य को सिखाना आवश्यक है जो हमारी बातों का हिसाब रखते हैं।

   हम में से अधिकतर जो सिखाने के काम में अपना जीवन लगाते हैं, मानते हैं कि यीशु **उत्तम गुरु** है और हमारा काम इस प्रकार से सिखाने की कोशिश करना है, जैसे गला. 4:19 में पौलुस कहता है, ''तुम में मसीह का रूप बन जाए।''

   वह धर्म जो जीवन में अंतर लाता है सोमवार से शनिवार तक दिखाई देने वाला धर्म है, न कि रविवार के दिन (डार्टी 133)।

3. यीशु मसीह के सिखाने के ढंगों तथा विषय सामग्री की नकल करके हम सफल गुरु बनना सीख सकते हैं। ''उत्तम गुरु का ढंग और संदेश और परमेश्वर की प्रेरणा पाए उसके अनुयायी हमारे होने चाहिए'' (टी. पियर्स ब्राउन ''स्नीक'')।

   यीशु उत्तम गुरु है क्योंकि उसने लोगों को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बदलना सिखाया। ऐसे गुरु हैं जिनके पाठों में समझ की बड़ी बातें हैं। ऐसे गुरु भी हैं जो अपने सुनने वालों के दिल के तार को छू लेते हैं। हमारी शिक्षा में इच्छा का होना भी आवश्यक है। यीशु ने मनुष्य की इच्छा तक पहुंचना सिखाया (मत्ती 5:48; 7:21-23; 19:16-22; 22:37-40)। समझ ज्ञान, जानकारी तथा तथ्यों के साथ मिलकर काम करती है। इच्छा दिशा, प्रेरणा और जीवन के लिए बदलाव के साथ काम करती है। *गुरु के रूप में यीशु ने जानकारी से बढ़कर दिया। उसने वह शिक्षा दी जो सुधार और मन फिराव का कारण बनी। सिखाने वालो, क्या हमारे पाठों में वह जानकारी होती है जो जवाब मांगती है? क्या यह निर्णय लेने को कहती है? ऐसे बाइबल अध्ययन तथा बाइबल क्लासों की बड़ी आवश्यकता है जो निर्णय लेने की प्रक्रिया की ओर ले जाते हों। हमें मनुष्य की इच्छा को परमेश्वर की इच्छा के साथ समर्पण के लिए कहना आवश्यक है!* (डॉर्टी 134)

4. ''ख़ुदा करे कि हम उत्तम गुरु यीशु के चेले बने रहें'' (डार्टी 135)।

निमन्त्रण:

1. उत्तम गुरु यीशु ने हमें उद्धार के विषय में हैरान होने के लिए नहीं छोड़ा है।

2. यीशु ने बताया कि हर विश्वासी उद्धार पाने के लिए बपतिस्मा ले (मर. 16:16)
3. प्रेरित यूहन्ना और प्रेरित पतरस ने ज़ोर देकर कहा कि यीशु मसीह का लहू उन मसीही लोगों के लिए उपलब्ध है जो पश्चात्ताप और प्रार्थना करने के बावजूद भी पाप करते हैं (1 यूह. 1:7–10; प्रेरि. 8:22)।

आओ
क्रूस पर यीशु
से मिलो
रोमि. 6:3-6

प्रसंग: बाइबल में से यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने और उसके महत्व को दिखाना।

परिचय:

1. ''आओ यीशु से मिलो'' के प्रसंग वाले प्रवचनों की एक शृंखला में हम बाइबल में से पहले ही सृष्टिकर्त्ता यीशु मसीह, देहधारी हुए परमेश्वर यीशु मसीह और उत्तम गुरु यीशु मसीह के बारे में देख चुके हैं।
2. आज का पाठ हमें प्रोत्साहित करता है कि ''आओ क्रूस पर यीशु से मिलो।''

मुख्य भाग:

I. क्रूस पर चढ़ाया जाना मृत्यु-दण्ड का भयावह रूप था।

क. प्राचीन इतिहास में अलग-अलग देशों द्वारा क्रूस के अलग-अलग रूपों का इस्तेमाल किया जाता था।

1. अलग-अलग समयों तथा स्थानों में क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले व्यक्ति को सूली पर चढ़ाए जाने के लिए सीधे खम्भे से लेकर आड़ा करके ''X'' के आकार वाले दो शहतीरों के सीधा खड़ा किए जाने तक का इस्तेमाल किया जाता था।
2. अधिकतर प्राचीन देशों के (उदाहरण के लिए फीनीके, कार्थजीनियन, मिस्री, स्कूती, भारतीय, जर्मन व फारसी और अश्शूरी) लोगों में क्रूसारोहण के किसी न किसी रूप का इस्तेमाल किया जाता था (वार्नर 5)।

ख. रोमी साम्राज्य में भी मृत्यु-दण्ड के रूप में क्रूसारोहण का इस्तेमाल किया जाता था।

1. रोमी क्रूस ज़मीन से ऊपर 7 फुट तक आड़े शहतीर वाला 9 फुट ऊंचा खम्भा होता था। (वार्नर 4 में हेस्टिंग्स द्वारा उद्धृत)।
2. सीधे खम्भे से आगे की ओर निकला ''खूंटा'' (*न्यू अंगर'स*) या ''शरीर के कुछ भाग को टेक देने के लिए बनाया गया लकड़ी का एक छोटा टुकड़ा बना होता था जो गद्दीनुमा होता था ... जिसके न होने से हाथों और पांवों पर ही बहुत बोझ पड़ता। [सीधे खम्भे] के ऊपर एक छोटी तख्ती होती थी ... जिसमें दण्ड पाने वाले व्यक्ति का अपराध लिखा होता था'' (वार्नर 4)।
3. क्रूस पर यीशु के सिर के ऊपर लगी तख्ती पर लिखा था, ''यीशु मसीह यहूदियों का राजा'' (यूह. 19:19; मत्ती 27:37; मरकुस 15:26; लूका 23:38)।

ग. क्रूस पर चढ़ाए जाने की भयावहता लोगों को भयभीत करने के लिए होती थी, ताकि वे सरकारी नियमों का पालन करते रहें।

1. क्रूस पर चढ़ाए जाने का दण्ड चोरी, हत्या, झूठी गवाही और राजद्रोह में शामिल लोगों को दिया जाता था (वार्नर 6)।
2. रोमी साम्राज्य में देशों पर शासन एकीकरण के द्वारा ही नहीं बल्कि घृणित, ज़बर्दस्ती

और अमानवीय नियन्त्रण के द्वारा किया जाता था।

3. क्रूस पर चढ़ाया जाना पूरे शासन के उसी सिस्टम का भाग था।

घ. क्रूस पर चढ़ाए जाने की प्रक्रिया का पहला कदम कोड़े मारना होता था; ''... कोड़े मारे जाना जोकि *'आधी मृत्यु'* (दर्मियानी मौत) होता था, क्रूस पर चढ़ाए जाने का भयानक ढंग था'' (*एडरशेम* ज़ोर दिया गया)।

1. दण्डित व्यक्ति के कपड़े उतार दिए जाते, उसकी पीठ को पिटाई करने वाले की ओर मोड़कर, उसकी कलाइयों को किसी छोटे खम्भे से बांध दिया जाता।
2. मुट्ठी वाला एक चाबुक जिसमें जगह जगह पर छोटी छोटी हड्डियों और कीलों वाले चमड़े के टुकड़े लगे होते थे, दण्ड पाने वाले को तब तक मारे जाते थे, जब तक उसके मांस के चिथड़े निकल कर उसकी मांसपेशियां, हड्डियां और शायद आंतड़ियां तक दिखने न लग जातीं।
3. ''दस में से सात जन तो ऐसी मार खाते खाते ही मर जाते'' (वार्नर 9)।
4. मसीहा को कोड़े मारे जाने की भविष्यद्वाणी की बात इसके क्रूर होने का संकेत देती है जिससे हमारे प्रभु के शरीर पर गहरे घाव हो गए थे (भजन 35:15; 129:3; यशा. 50:6)।

ङ: कोड़े मारे जाने के बाद, दण्ड पाने वाले व्यक्ति को क्रूस पर चढ़ाए जाने के स्थान तक अपने क्रूस का कम से कम कुछ भाग, उठाकर ले जाने को मजबूर किया जाता।

1. क्रूस पर चढ़ाए जाने की जगहें शहर के बाहर किसी प्रसिद्ध पहाड़ी पर और प्रसिद्ध हाइवे के पास होती थीं (इब्रा. 13:12)।
2. दण्ड पाने वाले व्यक्ति के आगे-आगे एक एलची अपराधी और उसकी पहचान बताती हुई तख्ती लेकर चलता था (वार्नर 9)।

च. दण्डित व्यक्ति को या तो लकड़ी के क्रूस से बांधा जाता या कीलों से ठोक दिया जाता।

1. ''मृत्यु-दण्ड दिए जाने के स्थान पर पहुंचकर, क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले व्यक्ति के कपड़े उतारकर उसे नंगा कर दिया जाता ...'' (मैक्लिन्टॉक ऐंड स्ट्रॉन्ग)।
2. मांस के फटने को रोकने में सहायता के लिए शरीर के भार के नीचे कीलों से आड़े शहतीर में से हाथों में से, कलाइयों के बीच कील ठोक दिए जाते।
3. पांवों को या तो सीधे खम्भे के साथ दो कीलों से ठोक दिया जाता या एक दूसरे के ऊपर चढ़ाकर दोनों एड़ियों में से लम्बे कील से ठोक दिया जाता (*नैल्सन'स*)।
4. फिर क्रूस को ज़मीन में गाड़ दिया जाता, जिससे क्रूस पर चढ़े व्यक्ति के पांव भूमि से एक-दो फुट ऊंचे रहें (क्रूस पर चढ़ाए जाने की तस्वीरों में क्रूस को आम तौर पर बहुत बड़ा और ऊंचा दिखाया जाता है) ... (*मैक्लिटॉक ऐंड स्ट्राँग*)।
5. कोड़ों से हुए बड़े-बड़े ज़ख़्मों और क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले के कीलों से हुए नए घावों से पूरा शरीर घावों से भर जाता, जिनमें से दुर्गंध आने लगती (यशा. 1:6 NKJV)।
6. रोमी क्रूसारोहण के ऊपर आम तौर पर आदमी धीरे-धीरे, अगले 36 घंटों से अधिक तक तड़प-तड़प कर मरता, परन्तु क्रूस पर चढ़ाए गए कुछ लोग तीन-तीन दिन तक, और कई अधिक समय तक जीवित रहते (''नौ नौ दिन,'' *न्यू अंगर'स*) जो कि शारीरिक अवस्था तथा कोड़े मारे जाने की सीमा जैसी अलग-अलग बातों पर

निर्भर होता था।

क्रूसारोहण के द्वारा मृत्यु की पीड़ा बहुत अधिक होती थी, विशेषकर गर्मी के मौसम में फूले हुए घावों से जगह-जगह लहू रिसने के साथ-साथ, कई जगह पर सूजन के कारण बुखार हो जाता है, जो धूप निकलने पर और बिगड़ जाता, शरीर अकड़ जाता और गला बुरी तरह से सूख जाता। खुरदरे कीलों के पास से फूला हुआ [मांस] और फटी हुई दुःखती नसों और नाड़ियों में भयंकर दर्द होता। सिर और पेट की धमनियों में लहू जमा हो जाता [बेजा बहने से] और दर्दनाक और तीखा सिरदर्द होता। चिंता और भय का सोचकर दिमाग परेशान हो जाता। *क्रूस पर मरने वाला व्यक्ति वास्तव में तिल-तिल कर मरता।* टिटेनस असल में निकलता नहीं था और ऐंठन होने से घाव खिंच जाते और पीड़ा और बढ़ जाती, और अंत में शरीर के जवाब देने पर अंत में क्रूस पर चढ़ा व्यति बेहोश होकर मर जाता। यह दुःख इतना भयानक होता था कि ''युद्ध के बढ़ते जुनून में भी कई बार तरस उत्तेजित करने वाला होता था'' (BJ,V, xi, 1)। (ISBE)।

क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले व्यक्ति के सारे कपड़े उतारकर उसे नंगा कर दिया जाता और इसके बाद उसके लिए और भी भयानक क्षण आता। उसे यातना के औजार के ऊपर लिटा दिया जाता। उसकी बाहें आड़े शहतीर के ऊपर रखकर फैला दी जातीं, और उसकी हथेली के बीच बड़ी सी मेख रख कर, मुग्दर के प्रहार से उसे काठ में ठोक दिया जाता। फिर दोनों पैरों को अलग-अलग, या सम्भवतया इकट्ठे करके एक दूसरे के ऊपर चढ़ाकर, शरीर के भार से हाथों और पांवों को फटने से बचाने के लिए, जो ''चारों बड़े घावों को छोड़ किसी और पर टिक'' नहीं सकता था, को कांपते हुए शरीर में से एक और बड़ी सी मेख निकाल दी जाती। ... क्रूस के बीच में लकड़ी का इतना मज़बूत उभार होता था, जिससे मनुष्य के शरीर के कम से कम कुछ भाग को, जो जल्द ही यातना का भार बन जाना होता था, टेक मिल सके। फिर अपने जीवित मानवीय बोझ वाले ''श्रापित वृक्ष'' को धीरे-धीरे ऊपर उठाया जाता और ज़मीन में अच्छी तरह से गाड़ दिया जाता। पैर ज़मीन से थोड़ा ऊंचाई पर रखे जाते थे। क्रूस पर चढ़ा व्यक्ति हर उस हाथ की पहुंच में होता था, जिनकी उसे मारने की इच्छा होती थी। क्रूसारोहण के द्वारा मृत्यु में वह सारी पीड़ा और मृत्यु शामिल लगती है जो भयानक और डरावनी हो सकती है जिसमें चक्कर आना, ऐंठन होना, प्यास लगना, भूख लगना, अनिद्रा, सदमा देने वाला बुखार, टेटनस, शर्मिंदगी, पीड़ा का देर तक रहना, प्रत्याशित आतंक, घाव का खराब हो जाना। ये सब बातें इतनी बढ़ जाती थीं कि अंत में उन्हें सहना नामुमकिन हो जाता था, परन्तु सब केवल वहीं पर रुकती थी जिससे आदमी को बेहोशी की राहत मिलती थी। अस्वाभाविक मुद्रा से पल-पल जीना मुश्किल होता; पंगु हुई और लगातार पीड़ा से पिचकती हुई नसें; नंगा होने से घाव धीरे-धीरे खराब होने लगते;

शिराएं, विशेषकर सिर और पेट की, सूज जातीं और लहू के अधिक जमा होने से दब जातीं; इतना ही नहीं, हर प्रकार का दु:ख धीरे-धीरे बढ़ने लगता पर उनमें जलन और प्यास बढ़ने की असहनीय पीड़ा भी जुड़ जाती। मसीह की ऐसी ही मृत्यु होने वाली थी (*स्मिथ* ने दोहराया)।

छ. क्रूसित व्यक्ति के बचाव को रोकने के लिए आम तौर पर क्रूसारोहण के समय पर चार सिपाही और एक सूबेदार पहरा देता था (यूह. 19:23; मत्ती 27:54)।

झ. रोमी लोग इस्राएल में क्रूसारोहण के सामान्य ढंग में कुछ बदलाव की अनुमति देते थे।

1. इस्राएल के बाहर, क्रूस दिए जाने वालों को उनके क्रूस के ऊपर मरने के लिए छोड़ दिया जाता और उनके शवों को मुर्दाखोर चील और कुत्ते खा लेते थे।
2. मूसा की व्यवस्था में शव को रात भर पेड़ पर टांगने की मनाही थी, जो नियम क्रूस पर चढ़ाए जाने वालों पर भी लागू होता था (व्यव. 21:22-23; 5:30; 10:39, गला. 3:13)।
3. रोमी लोग क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले व्यक्ति की जल्द मृत्यु के लिए उसकी टांगें तोड़ देने की अनुमति देते थे ताकि शव को दिन ढलने से पहले क्रूस पर से उतारा जा सके (यूह. 19:31-34)।

ञ. यीशु केवल आपके या मेरे लिए नहीं मरा, बल्कि उसने शारीरिक मृत्यु में से सबसे भयंकर मृत्यु के लिए, अपने आपको स्वेच्छा से दे दिया, ताकि हम आत्मिक रूप में जीवित रह सकें।

II. मसीहियत के लिए कलवरी के क्रूस पर, यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने का क्रूसारोहण बुनियादी महत्व है।

क. यीशु मसीह का क्रूस पर चढ़ाया जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।

1. पुराने नियम में भविष्यद्वाणी की गई थी कि मसीहा ने ऐसी मृत्यु (कोड़े मारे जाने और क्रूसारोहण) के लिए स्वयं को दे देना था (भजन 22:16-18; 69:21; यशा. 53:1-12)।
2. स्वयं यीशु ने भविष्यद्वाणी की कि उसने रोमी क्रूस के ऊपर क्रूसारोहण का दु:ख उठाना था (मत्ती 10:38: लूका 14:27)।

ख. यीशु मसीह का क्रूसारोहण संसार को इसके पापों से बचाने के लिए पृथ्वी पर की उसकी सेवकाई का चरम था (यूह. 3:16-1-17; 1 यूह. 3:16)।

मरकुस द्वारा हमारे उद्धारकर्त्ता के क्रूसारोहण का समय ''तीसरा पहर'' लिखा गया है; यानी, नौ बजे से लेकर बारह बजे तक पूरा समय शांत नहीं रहा था, चाहे अंत के निकट यह शांत था; और सुसमाचार प्रचारक के द्वारा कहा गया है कि यह ''छठे घण्टे के लगभग'' की (हमारे समय के अनुसार बारह बजे) की बात है (यूह. 19:14) (पूल)।

1. मसीही व्यक्ति का मसीह के क्रूसारोहण, मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने की नकल करना उसके उद्धार का कारण बनता है (गला. 2:20; 6:14; रोमि. 6:3-13)।
2. यीशु मसीह ने क्रूस के द्वारा, मनुष्यजाति (यहूदी और अन्यजातियों) के लिए असीम पवित्र परमेश्वर के साथ मेल को सम्भव बना दिया (इफि. 2:16; कुलु. 1:20)।

ग. मसीहियत से सीधे तौर पर जुड़े अन्य कारकों का सीधा सम्बन्ध मसीह के क्रूस के साथ है।

1. मसीह के क्रूस के द्वारा, पुराने नियम की जगह नया नियम दिया गया है (कुलु. 2:14)।

2. क्रूसारोहण के द्वारा, यीशु मसीह फसह के मेम्ने का प्रति-रूप बना (निर्ग. 12:46; यूह. 19:33, 36)।

घ. इसके अलावा, एक पल के लिए उस वृक्ष पर टंगे हुए श्राप की कल्पना करें जो यीशु मसीह ने हमारे लिए अपने ऊपर लिया।

1. यहूदी धर्म में, पेड़ पर किसी शव का टंगा होना अपमान और लज्जा की बात मानी जाती थी (व्यवस्था. 21:22-23)।
2. पवित्र परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह ने उस अपमान और लज्जा को अपने ऊपर लिया, जिसके हक्कदार आप और मैं थे (गला. 3:13)।
3. क्रूस पर यीशु मसीह की घृणित और अपमानजनक मृत्यु पहली सदी के बहुत से लोगों के लिए विश्वास करने के लिए ठोकर का पत्थर थी, परन्तु मसीही लोगों ने मसीह के द्वारा यीशु मसीह की भयानक मृत्यु को उद्धार के लिए तेज से भरी यादगार में बदल दिया (1 कुरिं. 1:18, 23)।
4. यीशु द्वारा हमारे लिए क्रूस पर सहा गया अपमान उसके राजा यीशु, या हमारे जीवनों के राजा के रूप में उसके राज्याभिषेक का कारण बना (इब्रा. 12:2)।

ङ. परन्तु गैर-मसीहियों के साथ-साथ भटके हुए मसीहियों सहित बहुत से लोगों ने अपने आपको क्रूस के शत्रु बना लिया है (फिलि. 3:18)।

1. विशेषकर मसीही लोगों को, इस बात में चौकस होना आवश्यक है कि वे सुसमाचार की जगह मनुष्य की समझ को महत्व देकर ''मसीह के क्रूस'' को ''व्यर्थ'' न ठहरा दें (1 कुरिं. 1:17)।
2. आज बहुत से लोग हैं जो मसीह के क्रूस से ठोकर खाते हैं (गला. 5:11)।

च. यीशु ने कुछ समय के लिए उस महिमा को, जो स्वर्ग में परमेश्वर की है, त्यागकर पापी मनुष्यजाति के लिए जो कि आप और मैं हैं, बलिदान के रूप में, अपने आपको विनम्रता से दे दिया (फिलि. 2:7-8; 2 कुरिं. 5:21)।

III. क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु आपके लिए और मेरे लिए तब तक बेकार है जब तक इसका हमारे जीवनों पर सकारात्मक प्रभाव नहीं है।

क. यीशु मसीह ने मनुष्यजाति के लिए दुःख सहने वाला उद्धारकर्त्ता बनने के लिए स्वर्ग की महिमा को छोड़ दिया (यूह. 3:17)।

1. जब तक हम मसीह के सुसमाचार का लाभ नहीं उठाते तब तक हमारे प्रभु का स्वर्ग को छोड़ना और कलवरी के क्रूस पर उसका हमारे लिए बलिदान बेकार होगा (रोमि. 1:16; इब्रा. 5:9)।
2. यीशु मसीह खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए आया, परन्तु हमारे लिए परमेश्वर के साथ सहयोग करना आवश्यक है (लूका 19:10; फिलि. 2:12)।

ख. जब भी कोई व्यक्ति, और विशेषकर मसीही लोग, बेदार होने वाले हर क्षण में मसीहियत को व्यवहार में नहीं ला पाता है, तो क्रूस पर यीशु के बलिदान को बुरी तरह से बट्टा लगता है।

1. यीशु उनका प्रभु नहीं है जो उसे नज़रअंदाज़ करते हैं या उसकी आज्ञा मानने से

इनकार करते हैं (लूका 6:46; मत्ती 7:21)।

2. मनुष्यजाति और विशेष रूप से मसीही लोगों के लिए, अच्छी बातों पर विचार करना और अच्छे-अच्छे काम करना आवश्यक है (फिलि. 4:8; तीतु. 2:12)।
3. मसीही लोगों के लिए सप्ताह में कम से कम एक बार परमेश्वर के ठहराए हुए ढंग से उसकी आराधना करना आवश्यक है (इब्रा. 10:25; प्रेरि. 20:7; 1 कुरिं. 16:1-2)।
4. मसीही लोगों के लिए संसार में सुसमाचार को ले जाना, खुद को परमेश्वर के वचन के साथ समझाना और जब-जब हो सके तब-तब गैर-मसीही लोगों के साथ परोपकार करना आवश्यक है (मर. 16:15-16; 1 पत. 2:2; गला. 6:10)
5. मसीही लोगों के लिए भले कामों में सरगर्म होना आवश्यक है (तीतु. 2:14; याकू. 2:18)।

ग. विचार करें कि हमारा प्रभु कलवरी के क्रूस के साथ कैसे टंग गया।

1. बेशक, सचमुच में उसके शरीर में से लोहे की मेखें लकड़ी के खुरदरे शहतीर में जिसके साथ क्रूस पर यीशु को बांधा गया था, ठोकी गईं।
2. परन्तु यीशु में सामर्थ थी कि क्रूस पर से अपने आप उतर आता या छुड़ा लेता और इस संसार को नष्ट कर देने के लिए स्वर्गदूतों की सेना बुला लेता (मत्ती 27:40, 42; 26:53)।
3. फिर भी हमारे प्रभु को कलवरी के उस पुराने खुरदरे क्रूस के साथ, मेखों ने नहीं बल्कि आपके और मेरे पापों ने, कसकर बांध रखा था।
4. जब-जब आप और मैं पाप करते हैं, तब-तब हम यीशु मसीह को फिर से क्रूस पर देने के लिए एक और मेख ठोकने का प्रयास कर रहे होते हैं (इब्रा. 6:6)।
5. ''क्रूस'' या ''क्रूसारोहण'' के लिए यूनानी शब्द का एक रूप ''फिर'' और ''क्रूस दो'' के अर्थ वाला मिश्रित शब्द विश्वास त्याग करने (बेदीन होने) वाले मसीहियों के वर्णन के लिए इब्रा. 6:6 में मिलता है जो ''यथार्थ रूप में मसीह को फिर से क्रूस पर चढ़ाने के दोषी'' थे।

सार:

1. ''रोमियों के लिए क्रूस का कभी भी प्रतीकात्मक अर्थ नहीं था, जिसे दण्ड दिए जाने या मृत्यु-दण्ड के माध्यम के रूप में माना जाए। मसीहियत के प्रसार के साथ, धीरे-धीरे क्रूस को महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, धर्मशास्त्रीय और कानूनी प्रतीक के रूप में माना जाने लगा ...'' (वार्नर 12)।
2. एक अर्थ में अपने प्राथमिक रूप में, क्रूस पर क्रूसारोहण गला काटने, सूली देने, घुड़खैंच दण्ड, फायरिंग दल, बिजली वाली कुर्सी या ज़हर का टीका लगाकर मृत्यु-दण्ड दिए जाने के जैसा ही था।
3. क्रूस पर दिए जाने की हर बात को उस मृत्यु की दहशत के अलावा मरने वाले व्यक्ति के परिवार और उसके साथियों के साथ-साथ उसे अत्यधिक अपमान देने के लिए तैयार किया जाता था।
4. परन्तु *परमेश्वर के बालक के लिए, क्रूस हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के द्वारा विजय का प्रतीक है।*

निमन्त्रण:

1. क्या आज यीशु मसीह आपका उद्धारकर्त्ता है ?
2. यीशु आज आपका उद्धारकर्त्ता नहीं है यदि आप एक ऐसे मसीही हो, जिसके पाप यीशु मसीह को फिर से क्रूस पर कीलों से ठोक रहे हैं (प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।
3. यीशु आपका उद्धारकर्त्ता नहीं है यदि आपने बपतिस्मे के पुराने मनुष्य को क्रूस पर चढ़ाकर और यीशु मसीह की मृत्यु में द्वारा दफ़न होकर सुसमाचार की आज्ञा को नहीं माना है (रोमि. 6:3-6)।

तीन क्रूस

लूका 23:39-43

प्रसंग: बाइबल में से, दो प्रकार के लोगों की तस्वीर को दिखाना और निष्कपट मन वालों को उद्धारकर्त्ता के, बीच वाले क्रूस के पास ले जाना।

परिचय:

1. यीशु नासरी को यरूशलेम के बिल्कुल बाहर, गुलगुता या कलवरी पर, क्रूस पर चढ़ाया गया था (मत्ती 27:33-35; लूका 23:33)।
2. मृत्यु-दण्ड दिए जाने वाली जगह पर यीशु के साथ दो और जनों को भी ले जाया गया (लूका 23:32)।
3. यीशु के दोनों ओर एक-एक डाकू को देखते हुए, तीनों को क्रूस पर चढ़ाया गया; यीशु बीच वाले क्रूस पर था (लूका 23:33)।

मूख्य भाग:

I. एक डाकू और उसके क्रूस से विद्रोह और घमण्ड को दर्शाया गया; वह दृश्य अपश्चात्तापी, खोई हुई मनुष्यजाति का वर्णन था।

क. एक डाकू ने यीशु का ठट्ठा उड़ाया।

1. उसने यह कहते हुए कि ''क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आपको और हमें बचा'' हमारे प्रभु की निंदा (मूल में ''ब्लासफेमो'') की (लूका 23:39)।
2. मसीहा के लिए, उसका ठट्ठा उड़ाया जाना, उसकी अत्यधिक शारीरिक पीड़ा से कहीं बढ़कर था।
3. इसके अलावा, यीशु ने ऐसा कुछ नहीं किया था जिससे उसे दुर्भावनापूर्ण ताना मारा जाए।
4. इस डाकू की बात में संकेत था कि वह एक विद्रोही, अहंकारी और अपश्चात्तापी व्यक्ति था, और उसे अपने प्राण की कोई चिंता नहीं थी, चाहे वह मृत्यु की दहलीज पार करके अनंतकाल में जाने वाला था।

ख. यह कुकर्मी कई खोई हुई आत्माओं का प्रतिनिधित्व करता है।

1. लाखों लोग अपने प्राणों की चिंता किए बिना, अनन्तकाल की दहलीज पार कर गए हैं, यानी वे भी सदा के लिए खो गए हैं।
2. हमारे आस-पास रहने वाले कई लोग धार्मिकता के मानवीय मापदण्डों से, परमेश्वर के धार्मिकता के मापदण्ड से जो आम तौर पर कहीं कम कड़ा होता है, बाहर रहते हैं।
3. वे सरकारी अधिकार का विद्रोह करते हैं और पकड़े जाने या दण्ड मिलने पर आम तौर पर खुलेआम बिना पछतावे या पश्चात्ताप के होते हैं।
4. कई पापी तो यहां तक दावा करते हैं कि उनकी स्वर्ग में जाने की कोई इच्छा नहीं और उन्हें इस जीवन में भक्तिपूर्ण लोगों के साथ की कोई परवाह नहीं है।

ग. वही डाकू लोगों की उस बड़ी जनसंख्या का भी प्रतिनिधि है जो वास्तव में मसीह में विश्वास नहीं करती है, यानी जिन्होंने उसकी आज्ञा को नहीं माना है और खोए हुए हैं।

1. यह डाकू एक अविश्वासी था।

2. उद्धार में उसकी दिलचस्पी केवल उसकी अपनी शर्तों के आधार पर थी; इसी प्रकार से, आज खोए हुए निष्कपट लोग भी जिस डिनोमिनेशन के वे सदस्य होते हैं उसकी शर्तों पर उद्धार पाना चाहते हैं।
3. इसके अलावा यह डाकू बहुत ही संदेह करने वाला था और प्रभु से चिह्न मांगकर उसने उसकी परीक्षा ली। इस तथ्य के बावजूद कि प्रभु ने उन आश्चर्यकर्मों के द्वारा जो उसने किए थे, उसने उद्धारकर्त्ता के रूप में अपने आपको पहले ही साबित कर दिया है, आज भी लोगों में कोई बदलाव नहीं आया है (मर. 16:20; इब्रा. 2:3-4: यूह. 20:30-31)।

II. दूसरा डाकू और उसका क्रूस पश्चात्ताप को दर्शाते और उस एकमात्र व्यवहार को दिखाते हैं जिसके द्वारा लोग उद्धार पा सकते हैं।

क. दूसरे डाकू की बात में यीशु को मसीह माना गया (लूका 23:40-43)।
   1. साफ़ है कि यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई का पता दूर-दूर के लोगों को था।
   2. इस डाकू ने यीशु को परमेश्वर (''थियोस'') ही माना (लूका 23:40)।
   3. उसने यह भी माना कि वह और दूसरा डाकू अपने अपराधों के लिए दोषी थे, जबकि यीशु निर्दोष था (लूका 23:41)।
   4. इस डाकू ने यीशु को मसीहा या वह उद्धारकर्त्ता माना, जिसने उस राज्य को स्थापित करना था जिसकी भविष्यद्वाणियां सदियों से की जा रही थीं।
   5. एक डाकू को इतना अधिक विश्वास था कि उसने अपने अनन्तकाल को बीच वाले क्रूस पर चढ़े व्यक्ति के भरोसे छोड़ दिया, जो कि इस कठिन क्षण में प्रेरितों द्वारा दिखाए गए विश्वास से भी बढ़कर था।

ख. इस डाकू ने केवल विश्वास ही नहीं किया, मन भी फिराया।
   1. उसने इस संसार के एकमात्र उद्धारकर्त्ता के सामने उद्धार की विनती की।
   2. जैसे यीशु ने उस डाकू का उद्धार उस समय की लागू शर्तों से किया (नया नियम अभी प्रभावी नहीं हुआ था, इब्रा. 9:16-17), उसी प्रकार से उद्धार के लिए अब जीवित लोगों के लिए वर्तमान में लागू शर्तों अर्थात सुसमाचार के लिए यीशु के पास आना आवश्यक है (रोमि. 1:16)।
   3. पाप की क्षमा न तो पाप के परिणाम को तब बदलती थी और न अब; डाकू को अपने अपराधों का परिणाम मिलना ही था और वह मिल ही गया (रोमि. 13:1-7)।

ग. पश्चात्ताप करने वाले डाकू ने अपने पापी साथी को डांटा और मसीह का बचाव किया।
   1. हमारे प्रभु के चेले अधार्मिकता का विरोध करते थे (1 पत. 5:8-9; याकू. 4.7)।
   2. प्रभु के चेले धार्मिकता का बचाव भी करते हैं (फिलि. 1:17; यहूदा 3)।
   3. पश्चात्तापी लोग मन और आचरण में अपने पिछले पापों तथा बुरी संगति से मुड़ जाते हैं (2 कुरिं. 6:14-1 6)।

III. हमारा उद्धारकर्त्ता बीच वाले क्रूस पर था।

क. बीच वाले क्रूस को अलग-अलग दृष्टिकोणों से देखा जाता था।
   1. अपश्चात्तापी डाकू ने उस पर अपने जैसे बुरे आदमी को, यानी एक ढोंगी उद्धारकर्त्ता

को देखा।

2. पश्चात्तापी डाकू ने बीच वाले क्रूस पर परमेश्वर के पुत्र और मनुष्य के एकमात्र उद्धारकर्त्ता को देखा।

ख. यीशु मसीह ने हमारी जगह अत्यधिक दु:ख उठाया।

1. डाकू जहां अपने पापों के लिए मरे थे, वहीं यीशु दूसरों के पापों के लिए मरकुस (2 कुरिं. 5:21; 1 पत. 2:21-24; 3:18)।
2. बीच में क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु भविष्यद्वाणी का पूरा होना भी था (यशा. 53:4-12)।
3. यीशु मसीह का बलिदानी लहू हमारे प्राणों का उद्धार करता है (1 पत. 1:18-20; इफि. 1:7)।

ग. यीशु मसीह वह उद्धारकर्त्ता है जिसकी ओर उद्धार पाने के इच्छुक सब लोगों के लिए मुड़ना आवश्यक है।

1. उसका मिशन खोए हुओं का उद्धार करना था (लूका 19:10; मत्ती 1:21-23)।
2. यीशु मसीह विश्वासियों का उद्धार करता है (यूह. 8:24; मर. 16:16)।
3. यीशु यह भी चाहता है कि मन फिराकर सबके सामने यह माना जाए कि वह मसीह है (लूका 13:3; मत्ती 10:32-33)।
4. उद्धार पाने के इच्छुक लोगों के लिए यीशु की आज्ञा मानना आवश्यक है (लूका 6:46; इब्रा. 5:8-9)।
5. यीशु मसीह उद्धार पाए हुओं को अपनी कलीसिया में मिला लेता है (प्रेरि. 2:47)।

निष्कर्ष:

1. अपश्चात्तापी पापी खोए हुए हैं और जब तक वे मन नहीं फिरा लेते, तब तक खोए हुए रहेंगे।
2. पश्चात्तापी पापियों को उद्धार के सुसमाचार की योजना की आज्ञा को मानना आवश्यक है।
3. उद्धार का मार्ग यह मानने के साथ खुलता है, ''मैंने पाप किया है'' (नहे. 1:6)।
4. यीशु मसीह का बहा हुआ लहू पापों का प्रायश्चित जो मनुष्यजाति के उद्धार के लिए परमेश्वर के अनुग्रह को आने देता है (रोमि. 3:23-25)।

निमन्त्रण:

1. आपका बोलचाल और आचरण अपश्चात्तापी डाकू के साथ अधिक मेल खाता है या पश्चात्तापी डाकू के साथ?
2. आप बीच वाले क्रूस पर जो प्रतिक्रिया देते हैं उससे आपका यह जीवन प्रभावित होगा और यह तय होगा कि आपका अनन्तकाल कहां पर बीतेगा!
3. यदि आप बपतिस्मा-रहित विश्वासी हैं, तो आपके लिए बपतिस्मे में यीशु को पहनकर अपने पापों को धो डालना आवश्यक है (गला. 3:27; प्रेरि. 22:16)।
4. यदि आप परमेश्वर के भटके हुए बालक हैं तो आपको आज ही उद्धारकर्त्ता के पास लौट आना आवश्यक है (1 यूह. 1:9)।

मसीह का
प्रतिनिधिक दु:ख सहना
2 कुरिं. 5:21; 1 पत. 2:24

प्रसंग: खोए हुए संसार के लिए यीशु मसीह की बलिदानी मृत्यु को और अच्छी तरह से समझना और यह भी कि हमारा जवाब क्या होना चाहिए।

गीत: जब रखता हूं, मैं क्रूस पर ध्यान जहां मसीह ने मौत सही।

परिचय:

1. मसीहियत की चार प्रमुख शिक्षाएं हैं।
   - क. कुंवारी से जन्म।
   - ख. पापों का प्रायश्चित।
   - ग. मसीह का प्रतिनिधिक दु:ख सहना।
   - घ. मुर्दों में से जी उठना।
2. आज आधुनिकतावादियों या उदारवादियों, नास्तिकों तथा अन्य लोगों द्वारा मसीहियत की प्रमुख शिक्षाओं पर आक्रमण किया जाता है।
   - क. ''आधुनिकतावादी'' उसे कहते हैं जिसे लगता है कि मसीहियत की शिक्षाओं को उसके साथ जो उसका मानना है कि यह निर्विवाद, वैज्ञानिक तथ्य है (उदाहरण के लिए, सृष्टि या बाइबल के आश्चर्यकर्मों के अन्य व्याख्याओं के बजाय विकास) मेल खाने के लिए नये सिरे से परिभाषित करना आवश्यक है।
   - ख. ''नास्तिक'' उसे कहा जाता है जो मनुष्य के आत्मिक होने सहित परमेश्वर तथा आत्मिक जीवों के होने को न मानता हो।
3. उनके हमले उन सभी बुनियादी सिद्धांतों पर आक्रमण हैं, जिन पर मसीहियत आधारित है, यानी मसीहियत की हर प्रमुख शिक्षा पर हमला होता है।
   - क. आधुनिकतावादियों द्वारा कुंवारी से जन्म (यशा. 7:14) पर बाइबल के अशुद्ध अनुवाद वाले संस्करणों में हमला होता है; और अफ़सोस की बात है कि कुछ गुमराह भाई इन अशुद्ध अनुवादों को मान लेते हैं और उनका बचाव भी करते हैं (उदाहरण के लिए RSV)।
   - ख. नास्तिक तथा आधुनिकतावादी इस बात का भी इनकार करते हैं कि परमेश्वर है, और यह कि पूर्णतया सही या गलत (पाप), पाप के लिए प्रायश्चित, मसीहा, मनुष्य का आत्मिक पहलू और मरे हुओं में से जी उठने जैसा कुछ हो सकता है।
   - ग. नास्तिक तथा आधुनिकतावादी लोग मोहित और उसके सीधे-सादे अनुयायियों वाले कट्टर व्यवहार के रूप में यीशु मसीह और उसके प्रतिनिधिक दु:ख सहने को नकारते हैं।
4. सचमुच में, यीशु ने परमेश्वर के पुत्र के रूप में, मनुष्यजाति के लिए दु:ख ही नहीं सहा, बल्कि उसका दु:ख सहना प्रतिनिधिक था।
   - क. ''प्रतिनिधिक'' से हमारा कहने का अर्थ यह है कि यीशु ने स्वेच्छा से, अपने अपराधों के लिए नहीं, बल्कि दूसरों के पापों के लिए दु:ख सहा (2 कुरिं. 5:21: इब्रा. 4:15; 1 पत. 2:22, 24)।
   - ख. इसके अलावा यीशु ने हमारी जगह स्वेच्छा से दु:ख सहा (मृत्यु तक हमारे पापों को सहते

हुए) (यूह. 4:34; 6:38)।

मुख्य भागः

I. यीशु मसीह के प्रतिनिधिक दुःख सहने को निकट से देखना।

क. परमेश्वर की खराई के लिए मसीह का मनुष्य की जगह दुःख सहने के लिए तैयार होना आवश्यक है; निर्दयी और अन्यायी हुए बगैर पिता अनिच्छुक मसीह को कलवरी के क्रूस पर नहीं भेज सकता था।

ख. परमेश्वर की खराई के लिए मसीह के प्रतिनिधिक दुःख सहने की आवश्यकता भी निर्णायक है; नहीं तो इसने पिता को क्रूर और अन्यायी बना देना था।

ग. मसीह का प्रतिनिधिक दुःख सहना परमेश्वर के स्वभाव के साथ मेल खाता है।

1. वनस्पति जगत में प्रकृति के नियम में ऐसा चक्र होता है जिसमें पौधे के जीवन की एक पीढ़ी की मृत्यु (उदाहरण के लिए, जंगलों, फसलों) से नये पौधे का सृजन होता है।
2. प्रकृति के नियम के बनाने वाले परमेश्वर ने, एक योजना बनाई, जिसमें मसीह की मृत्यु में से पापी मनुष्य नया बन सके (रोमि. 6:3-5)।
3. प्राणी जगत में, प्रकृति के नियम में सहज ज्ञान होता है, जिनके द्वारा जीव जंतु अत्यधिक खतरे या मृत्यु का सामना करते हुए भी, अपनी संतान की देखभाल करते हैं (मत्ती 23:37)।
4. परमेश्वर अपनी संतान यानी मनुष्य की देखभाल इस हद तक करता है कि वह अपने पुत्र की मृत्यु तक सहने को तैयार हो गया।

घ. प्रतिनिधिक दुःख सहना परमेश्वर के अनुग्रह के साथ मेल खाता है।

1. दोषी के लिए निर्दोष का दुःख सहना, परमेश्वर के अनुग्रह में बना हुआ नियम है (उदाहरण के लिए, पशुओं के बलिदान)।
2. यीशु मसीह उन पहले के बलिदानों का प्रति-रूप है (इब्रा. 9:7-14; 1 पत. 3:1 8)।
3. परमेश्वर असीमित रूप में भला है जबकि सीमा में बंधा मनुष्य बुराई करता है, इस कारण परमेश्वर ने मनुष्य के उद्धार के लिए अनुग्रह से अनुरोध किया; मनुष्य असीमित रूप में धर्मी परमेश्वर के हाथों न्याय से उद्धार नहीं पा सकता था, जिस कारण सब ने निराशाजनक ढंग से खो जाना था (रोमि. 3:24; 5:17, 20-21)।

II. परमेश्वर अपने पाप-रहित स्वभाव के द्वारा पाप के साथ कोई संगति नहीं रख सकता।

क. इसलिए पापी मनुष्य को उसके अपने ऊपर छोड़ देने पर, परमेश्वर के साथ उसकी कोई संगति नहीं हो सकती।

1. परमेश्वर ने बुराई को नहीं बनाया और बुराई के साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं है (याकू. 1:13-16)।
2. चाहे परमेश्वर ने स्वर्गदूतों तथा मनुष्यजाति को दी गई पसंद चुनने की शक्ति देकर बुराई की सम्भावना को रोका नहीं (यहोशू 24:15; प्रका. 22:17)।
3. पसंद चुनने की शक्ति के बिना, मनुष्य केवल रोबोट होते।

ख. इस कारण, परमेश्वर और मनुष्य के बीच संगति को बहाल करने के लिए, पिता ने मनुष्य

के पापी होने की पूर्ति करने के लिए असीम रूप में धर्मी प्रतिनिधिक बलिदान को भेज दिया (यूह. 3:6)।

1. फिर भी परमेश्वर अपने न्यायसंगत और धर्मी स्वभाव में बदलाव किए बिना, अपश्चात्तापी लोगों का उद्धार नहीं कर सकता था (व्यव. 19:21)।
2. इसलिए परमेश्वर ने छुटकारे की एक योजना बनाई, जिसे मनुष्यों के लिए मानना आवश्यक है (इफि. 3:1–12; तीतु. 1:1–3)।
3. परमेश्वर ने लोगों के उद्धार के लिए मसीह के प्रतिनिधिक दु:ख सहने के द्वारा करुणा और अनुग्रह को धार्मिकता और न्याय के साथ मिला दिया (तीतु. 3:5; इफि. 2:8)।
4. छुटकारा चाहे मुफ्त वरदान है, परन्तु हर किसी के लिए आवश्यक है कि इसे अपने लिए परमेश्वर की शर्तों के अनुसार अपनाए (रोमि. 5:15–21; 6:3–5)।

निष्कर्ष:

1. मसीहियत की चार प्रमुख शिक्षाएं हैं: कुंवारी से जन्म, पापों का प्रायश्चित, मसीह का प्रतिनिधिक दु:ख सहना, मुर्दों में से जी उठना।
2. आज मसीहियत के इन बुनियादी सिद्धांतों पर हमला हो रहा है।
3. मुनष्य के छुटकारे के लिए यीशु मसीह का प्रतिनिधिक दु:ख सहना आवश्यक है।
4. हमारे उद्धार के लिए यीशु ने हमारी जगह पर, स्वेच्छा से, अपने आपको दे दिया।
5. यीशु मसीह का प्रतिनिधिक दु:ख सहना धर्मी, परन्तु प्रेमी परमेश्वर को अपने अनुग्रह और करुणा के द्वारा पाप में गिरे हुए मनुष्यों का उद्धार करने की अनुमति देता है।

निमन्त्रण:

1. मनुष्य के लिए मसीह के प्रतिनिधिक दु:ख सहने के लाभ को पाने के लिए परमेश्वर की शर्तों को मानना आवश्यक है।
2. वे शर्तें हैं, *सुनना* और *विश्वास करना* (रोमि. 10:1)), *मन फिराना* (प्रेरि. 17:30), मसीह का *अंगीकार* प्रभु के रूप में करना (रोमि. 10:9–10) और *बपतिस्मा लेना* (प्रेरि. 22:16; 1 पत. 3:21)।
3. इसके अलावा, उद्धार पा लेने के बाद, परमेश्वर की योजना अर्थात सुसमाचार को मानते रहना आवश्यक है (इब्रा. 5:8–9), और उन अवसरों पर जिनमें परमेश्वर का बालक पाप करता है, पश्चात्ताप और प्रार्थना के द्वारा वह फिर से यीशु मसीह के प्रतिनिधिक दु:ख सहने का लाभ उठा सकता है (1 यूह. 1:7; प्रेरि. 8:22)।

यीशु मसीह का बलिदान

प्रेरितों 20:28

प्रसंग: यीशु मसीह के बलिदान तथा कुछ समकालीन मसीहियों के बलिदान की बात करके बलिदानपूर्वक मसीही जीवन जीने पर ज़ोर देना।

परिचय:

1. ऐसा हो सकता है कि संसार में हर किसी को स्वेच्छा से यीशु मसीह के सुसमाचार की आज्ञा मानकर मसीही बनने की छूट न हो।
   - क. संसार के एक बड़े देश में, पहले अर्ज़ी देकर सरकार से अनुमति लिए बिना बपतिस्मा लेना गैर कानूनी है, परन्तु लोग बपतिस्मे के लिए कहते हैं और उन्हें तुरन्त बपतिस्मा दे दिया जाता है (प्रेरि. 16:33)।
   - ख. एक एशियाई देश में, बुद्ध धर्म से किसी और धर्म में जाना या किसी को बौद्ध मत से मसीह में लाना गैर कानूनी है, परन्तु लोग फिर भी बपतिस्मा लेने के लिए कहते हैं और उन्हें तुरन्त बपतिस्मा दिया जाता है (प्रेरि. 5:29)।
2. संसार के कुछ भागों में मसीही बनने के गम्भीर परिणाम हैं।
   - क. यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर ने सुसमाचार की आज्ञा मानी जिस कारण उसे शिक्षक के पद की नौकरी से निकाल दिया गया, दो साल की जेल हो गई और उसके परिवार के लोग देश में तितर-बितर हो गए।
   - ख. एक मुस्लिम महिला ने सुसमाचार की आज्ञा मान ली और उसके पति ने केवल इस कारण से कि वह मसीही बन गई है, उसका कत्ल कर दिया। फिर भी, एक और मुस्लिम महिला तथा उस मृत मसीही स्त्री की सहेली ने मसीही बनने का फैसला किया, अच्छी तरह से जानने के बावजूद हुए कि उसकी भी हत्या कर दी जा सकती है।

मुख्य भाग:

I. बेशक इन मसीहियों के बलिदानों के पीछे यीशु मसीह का बलिदान है।

- क. यीशु मसीह के बलिदान के बिना, मसीही बनने के बलिदान किसी काम के नहीं होने थे (यूह. 3:16; रोमि. 8:32)।
  1. बाइबल की पहली किताब से, यीशु मसीह का बलिदान ही बाइबल का विषय है (उत्प. 3:15)।
  2. पूरी बाइबल में 300 के लगभग हवालों में यीशु मसीह की बलिदानी मृत्यु की भविष्यद्वाणी की गई (भजन 22; 34: यशा. 53; दानि. 9)।
- ख. प्रेरित पौलुस ने यीशु मसीह के बलिदान पर फोकस रखा।
  1. यीशु मसीह के बलिदान से बढ़कर या उसके जितना महत्वपूर्ण और कुछ नहीं है (1 कुरिं. 2:2)। ''क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूं।''
  2. मसीह के बलिदान के बिना, हमारे पापों का कोई क्रय मूल्य या छुटकारे का दाम

नहीं होना था (प्रेरि. 20:2; 1 तीमु. 2:5-6)।

II. मसीह के बलिदान से उसके क्रूसारोहण से कहीं बढ़कर बातें हुईं।

क. हमारे प्रभु ने नाशवान मनुष्य का रूप लेने के लिए परमेश्वर होने के जामे को उतार दिया (फिलि. 2:6-8)।

जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

ख. यीशु मसीह ने पृथ्वी पर साधारण जीवन जीने के लिए स्वर्ग की महिमा और तेज को छोड़ दिया (इब्रा. 2:9)।

पर हम यीशु को, जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दु:ख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं, ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से, वह हर एक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चखे।

ग. हमारा प्रभु (मनुष्य के पाप के कारण जो उसने हमारे लिए सहा) परमेश्वर से अलग होने के समय के लिए तैयार था।

1. ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया'' (मत्ती 27:46)।
2. दुष्ट लोगों को दिए जाने वाले अनन्तकालिक दण्डों में से एक परमेश्वर से अलग होना होगा (2 थिस्स. 1:9)।

III. यीशु मसीह के बलिदान का सम्बन्ध उसके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण से है।

क. पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने यीशु मसीह की मृत्यु तथा पुनरुत्थान पर फोकस रखा (प्रेरि. 26:22-23)।

ख. प्रेरित पौलुस ने यीशु मसीह की मृत्यु, दफ़नाए जाने और जी उठने को सुसमाचार का सार बताया (1 कुरिं. 15:1-4; मत्ती 26:28)।

ग. यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा हमें मिलाया जाता है (रोमि. 5:12; 6:3-5)।

1. यीशु मसीह ने उनके पाप उठा लिए जो उसकी आज्ञा मानते थे (इब्रा. 5:8-9; 9:28)।
2. उन पापों को हमारे उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के शरीर में क्रूस पर कीलों से ठोक दिया गया (1 पत. 2:24), ''वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।''

निष्कर्ष:

1. यीशु मसीह के बलिदान का, आपके और मेरे लिए, अर्थ यह है कि हमें अपनी मसीहियत को गम्भीरता से लेना चाहिए, हल्के से नहीं।
2. प्रभु की कलीसिया की स्थापना के बाद मसीही शहीदों का अर्थ यह है कि हमें अपनी मसीहियत को गम्भीरता से लेना चाहिए, हल्के से नहीं (प्रेरि. 12:1-2; मसीह के प्रेरित; मसीही शहीदों

के बाइबल इतिहास के बाहर के हवाले।

3. समकालीन मसीहियों के बलिदानों का अर्थ है कि आपको और मुझे अपनी मसीहियत को गम्भीरता से लेना चाहिए, हल्के से नहीं।

निमन्त्रण:

1. क्या आप बलिदानपूर्वक मसीही जीवन जीते, बलिदानपूर्वक मसीही सेवा करते और बलिदानपूर्वक मसीही आराधना करते हैं ? वही प्रश्न मेरे लिए अपने आप से पूछने आवश्यक हैं।
2. यदि आप ने बपतिस्मे में यानी उस बपतिस्मे में यीशु मसीह को कभी नहीं पहना है (गला. 3:27) जो पापों की क्षमा के लिए है (प्रेरि. 2:38; 22:16) जो बचाता है (1 पत. 3:21), तो आपने वास्तव में अभी अपने मसीही सफर का आरम्भ नहीं किया है।
3. यदि आप अपने जीवन में मसीहियत को गम्भीरता से नहीं ले रहे हैं (अन्य सब बातों से बढ़कर इसे पहल देकर, मत्ती 6:33; 10:37–39), या यदि आप पाप के दोषी हैं चाहे आप मसीही हैं, तो इसका उपचार है (प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

हमारे पापों के लिए कुचला गया

यशायाह 53:5

प्रसंग: हमारे प्रभु के क्रूसारोहण की भयावहता पर ज़ोर देना जिससे गैर-मसीहियों तथा भटके हुए मसीहियों को सुसमाचार की आज्ञा मानने की आवश्यकता समझाकर परमेश्वर के और लोगों को और भी जोश से मसीहियत को व्यवहार में लाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

परिचय:

1. बाइबल में भविष्यद्वाणी की गई कि मसीहा मनुष्यजाति के पापों के लिए कुचला जाएगा।
   - क. उत्प. 3:15 में बाइबल की पहली भविष्यद्वाणी है और यह भविष्यद्वाणी यीशु मसीह के कुचले जाने की बात करती है।
   - ख. यशा. 53:5 में उद्धारकर्त्ता के क्रूसारोहण की भविष्यद्वाणी की गई और बताया गया कि उसने ''हमारे अपराधों के लिए कुचला'' जाना था।
2. उस समय की परिभाषा में यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय तक, उसके साथ होने वाले व्यवहार की ''क्रूरता'' का पता शायद ही मिलता हो।
   - क. यशा. 53:5 में ''कुचला गया'' शब्द का अर्थ चूर-चूर करना हो सकता है।
   - ख. मसीह के क्रूसारोहण में जो-जो हुआ, उस की समीक्षा करने पर, उस सारी भयावहता का पता चलता है, जो उसने हमारे स्थान पर सही।

मुख्य भाग:

I. यीशु की गिरफ़्तारी और पेशियां।

- क. जैतून के पहाड़ पर गतसमनी बाग में यीशु का पसीना लहू की बूंदें बनकर गिरा (मत्ती 26:30, 36; लूका 22:44)।
  1. होता तो बहुत कम है, परन्तु यह एक वास्तविक चिकित्सकीय स्थिति है, जिसमें कई बार पसीना कम से कम लहू के जैसा दिखने लगता है।
  2. ऐसा होना अत्यधिक तनाव के कारण बताया जाता है।
  3. अपने होने वाले क्रूसारोहण के साथ-साथ, पूरे मानवीय परिवार के पापों का बोझ अपने कंधों पर उठाने का सोचकर, यीशु को मानसिक पीड़ा हुई, उससे पसीने का लहू बन जाना कोई बहुत बड़ी बात नहीं थी।
- ख. अपनी गिरफ़्तारी, पेशियों, कोड़े मारे जाने और क्रूसारोहण से पहली रात, यीशु बिल्कुल नहीं सोया।
  1. परन्तु उसके चेले अवश्य सो गए (मत्ती 26:40-45; मरकुस 14:37-41)।
  2. बेशक मार पड़ने, कोड़े खाने और क्रूसारोहण के साथ-साथ सो न पाने के कारण हुई थकावट से, सिपाहियों के क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह की टांगें तोड़ने के लिए आने तक क्रूस पर उसकी मृत्यु हो चुकी थी।
- ग. अलग-अलग पेशियों के दौरान यीशु को पीटा गया, ठट्ठा किया गया और उसकी निंदा की गई।

1. हमारे प्रभु की आंखें ढंक दी गईं, और उन लोगों ने, जिन्होंने उसे पकड़ा हुआ था, उसे थप्पड़ मारे (लूका 22:63-64)।
2. महायाजक के सामने यीशु को फिर से मारा गया (यूह. 18:22)।
3. दिन चढ़ने के थोड़ी देर बाद, यीशु को महासभा के सामने ले जाया गया, जिसने यह मान कर कि उसने परमेश्वर की निंदा की है, उसे मृत्यु-दण्ड का दोषी ठहरा दिया (मत्ती 27:1; लूका 22:66-71; यूह. 18:31)।
4. इसके बाद यीशु को रोमी हाकिम पिलातुस के पास ले जाया गया, जहां पर यहूदियों की ओर से हमारे प्रभु पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया (लूका 23:1-2)।
5. पिलातुस ने यीशु को पेशी के लिए हेरोदेस के पास भेज दिया, जहां हमारे प्रभु का ठट्ठा उड़ाया गया (लूका 23:7-11)।
6. पितातुस के पास लौटने पर यीशु को कोड़े मारे गए, ठट्ठा किया गया, पीटा गया और लम्बी शूलों का एक मुकुट बनाकर उसके सिर में धंस दिया गया (मर. 15:15-20)।

II. कोड़े मारे जाने की क्रूरता।

क. रोमी लोग हर मृत्युदण्ड से पहले मरने वालों को कोड़े मारा करते थे।

1. दण्डित व्यक्ति के कपड़े कमर तक उतार दिए जाते या उसे पूरा नंगा कर दिया जाता और पीठ बाहर की ओर कर दी जाती और उसे किसी खम्भे के साथ बांध दिया जाता।
2. कोड़ा या चाबुक अपने आप में एक मुट्ठी होती थी जिस पर चमड़े की कई कई गांठें हुआ करती थीं, और उसकी हर गांठ में हड्डी या धातु लगी होती थी।
3. कोड़े मारे जाना इतना असहनीय होता था कि दस में से सात लोग तो केवल कोड़े मारे जाने से ही मर जाते थे।
4. कोड़े मारे जाना सम्भवतया दो रोमी सिपाहियों के द्वारा होता था, और इस की कोई सीमा नहीं होती होगी कि कितने प्रहार करने हैं।

ख. कोड़े मारे जाने का असर।

1. मार खाने वाला व्यक्ति सदमे और लहू बहने से कमज़ोर हो जाता था।
2. कोड़े से एक के बाद एक प्रहार पीठ, नितम्भों, टांगों और छाती और पेट आदि तक लगते थे।
3. आरम्भिक प्रहारों से मांस फट जाता।
4. बार-बार के प्रहारों से मांसपेशियां टूट जातीं, नसें और धमनियां कट जातीं, मांस के चीथड़े बन जाते और धड़कते दिल के साथ खून बाहर को निकलने लगता।
5. विशेषकर पीठ, मांस के चीथड़ों सी दिखाई देने लगती।
6. केवल कोड़े मारे जाने से ही मांस-तंतु तथा अंग इतने खराब हो जाते थे कि उनके ठीक होने की गुंजायश कम ही होती।
7. कोड़े मारे जाने से व्यक्ति की शकल बेशकल हो जाती।

ग. पिलातुस के सिपाहियों ने, क्रूसारोहण से पहले कोड़े मारे जाने के बाद, हमारे प्रभु के साथ और भी दुर्व्यवहार किया।

1. उन्होंने यीशु को एक वस्त्र ओड़ाया, उसे ठट्ठे किए, उसके सिर पर कांटों का मुकुट बनाकर रखा, उसके मुंह पर थूका, और उसे थप्पड़ मारे (यूह. 19:1-3)।
2. कांटे एक-एक इंच लम्बे शूल थे, जिन्हें वे यीशु के सिर पर ठूंसते समय उसके सिर में से गहरी पीड़ा भरे कराहने के साथ हर बार, लहू भी निकलता होगा।
3. यीशु का वस्त्र उतारे जाने पर पपड़ी बनना आरम्भ हो चुके घाव, बुरी तरह से फिर से खुल गए होंगे, जिससे पीड़ा और बढ़ गई होगी और लहू नये सिरे से निकल आया होगा।

III. क्रूसारोहण की भयावहता।

क. क्रूसारोहण को मनुष्य के द्वारा बनाया गया मृत्यु-दण्ड का सबसे भयंकर रूप माना जाता था।

1. रोमियों ने क्रूसारोहण का तरीका अपने पूर्ववर्ती लोगों से लिया था, परन्तु भयावहता, दर्द और भयभीत करने में उन्होंने महारत प्राप्त कर ली थी।
2. क्रूस पर वे विशेषकर गुलामों तथा अन्य लोगों को चढ़ाया करते थे।
3. क्रूसारोहण का इस्तेमाल राजद्रोह, डकैती, हत्या, झूठी गवाही और देशद्रोह के मामलों में किया जाता था। इसीलिए यहूदियों ने यीशु पर पिलातुस के सामने देशद्रोह का आरोप लगाया था।
4. रोमी लोग क्रूसारोहण का इस्तेमाल कब्ज़ा किए हुए देशों पर अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिए किया करते थे।
5. क्रूसारोहण नगर के बाहर उस मार्ग के पास किया जाता था, जहां से लोगों का आना जाना हो और यह अधिक से अधिक पीड़ा और अधिक से अधिक अपमान देने के इरादे से किया जाता था।

ख. रोमी क्रूस।

1. इसमें 7 फुट आड़े शहतीर के साथ भूमि से 9 फुट ऊंचा सीधा शहतीर होता था।
2. दण्ड पाए हुए व्यक्ति को 75 और 125 पौंड (1 पौंड= लगभग 450 ग्राम) के बीच भार वाला आड़ा शहतीर उठाकर क्रूस पर चढ़ाए जाने की जगह ले जाना होता था।
3. दण्ड पाने वाले के अपराध को लिखी एक तख्ती जुलूस के आगे-आगे लेकर ले जाई जाती और शहतीर के सीधे भाग के ऊपर लगा दी जाती।
4. क्रूस पर चढ़ाए जाने की जगह लगभग एक तिहाई मील दूर होती थी (1 मील=लगभग 1.6 किलोमीटर); यीशु द्वारा अपनी पेशियों की दौरान तय की गई दूरी लगभग $2^{1/2}$ मील (लगभग 4 किलोमीटर)।
5. क्रूस के सीधे शहतीर वाले भाग में भी शरीर के भार को टेक देने में सहायता के लिए छोटी सी जगह बनाई जाती होगी।

ग. क्रूसारोहण का असर।

1. $4^1/_2$" से 7'' लम्बे और लगभग आधा इंच मोटे कील कलाइयों (यूनानी भाषा में इसका यही अर्थ है) और पांवों को क्रूस पर ठोकने के लिए इस्तेमाल किए जाते और हाथ क्रूस के साथ नहीं लगाए जाते थे।

2. कलाइयों में कील ठोके जाने से नसों पर चोट लगती, जिससे भुजाओं, रीड़ की हड्डी और मस्तिष्क में अत्यधिक पीड़ा होती।
3. पांवों में कील ठोके जाने से भी उतनी ही पीड़ा होती।
4. क्रूस के ऊपर हाथों और पांवों में कील ठोके जाने से, व्यक्ति ''Y'' के आकार की मुद्रा में हो जाता, जोकि सांस लेने पर ''T'' के आकार में बदलना आवश्यक हो जाता; कील ठुके हाथों और पांवों के साथ संघर्ष करते हुए अत्यधिक पीड़ा सहने पर ही ऐसा हो सकता था।
5. क्रूस पर चढ़े व्यक्ति की हड्डियों के 'जोड़ उखड़' जाते थे (भजन 22:14)।
6. क्रूस पर चढ़ाए गए व्यक्ति के पूरी तरह से थक जाने और सांस लेने के लिए ऊपर की ओर न हुआ जाने पर दम घुटने से उसकी मृत्यु हो जाती।
7. क्रूस पर हमारे प्रभु के अंतिम क्षणों में उसे कुत्तों द्वारा घेरा जाना, उसके वस्त्र फट जाना, पानी की कमी हो जाना, ठट्ठे उड़ाया जाना (भजन 22) और उस पर थूका जाना शामिल थे (यशा. 50:6)।

घ. मृत्यु अनिवार्य थी।

1. क्रूस पर चढ़ाए जाने वालों को मरने से पहले, क्रूस पर टांगें तोड़े जाने से उनकी मृत्यु होने तक 36 घंटों तक लटके रहने दिया जाता था।
2. सिपाही क्रूस पर टंगे लोगों के जीवित रहने तक उनकी पहरेदारी करते थे, ताकि कहीं ऐसा न हो कि कोई दूसरा उन्हें क्रूस पर से उतार कर ले जाए और वे मरें न।
3. यीशु की मृत्यु की पुष्टि करने के लिए, अंत में, एक सिपाही ने उसकी पसली में भाला मार कर उसे बेधा (यूह. 19:34)।

IV. वह रोमी क्रूस जिस पर यीशु मरा, उसका नहीं बल्कि हमारा था!

क. सृष्टिकर्त्ता यीशु ने, सृष्टि का रूप लेने के लिए स्वर्ग की सारी महिमा को त्याग दिया (1 कुरिं. 15:47; यूह. 1:14)।

1. परमेश्वर देहधारी हुआ (1 तीमु. 3:16)।
2. इब्रा. 2:14-17; 10:5.

ख. *वह मनुष्यजाति को शैतान के नरक में अनन्त हानि से बचाने के मिशन पर आया था, परन्तु हमने उसे मार डाला!*

1. प्रेम ने यीशु को पृथ्वी पर लाकर हमारी खातिर मरने के लिए तैयार होने को विवश कर दिया (रोमि. 5:8; यूह. 15:13)।
2. पहली सदी के यहूदियों ने सचमुच में रोमियों के हाथों देकर, मसीह को मरवा डाला (मत्ती 27:23-25, प्रेरि. 2:36)।
3. पापी बल्कि पाप करने वाले मसीही लोग भी, जब पाप कर रहे होते हैं, तो वे यीशु को नये सिरे से क्रूस पर चढ़ा रहे होते हैं (6:4-6)।

निष्कर्ष:

1. यीशु में कोई पाप नहीं था (1 पत. 2:22)।
2. फिर भी हमारे पापों के कारण, उसे स्वर्ग छोड़कर मनुष्य बनना पड़ा।
3. हमारे पापों के कारण, उसे नंगा या अर्धनग्न करके, खम्भे से बांधा गया, जहां निर्ममतापूर्वक पीटा गया और कोड़ों से घायल किया गया।
4. हमारे पापों के कारण, कलवरी के क्रूर क्रूस के ऊपर उसके हाथों और पांवों में से, रेल की पटरी में लगाए जाने वाले कीलों के आकार के कील लगाए गए।
5. हमारे पापों ने, हमारे प्रभु की पसली को बेध डाला।
6. हमारे पापों ने क्रूस पर सड़क के किनारे देह में हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर को अपमानित किया।

निमन्त्रण:

1. यीशु हमारे पापों के लिए एक भयानक मृत्यु मरा, परन्तु यदि हम उसके बलिदान को हमें हमारे पापों से उद्धार नहीं दिलाने देते, तो उसने व्यर्थ में दु:ख उठाया।
2. अभी सुसमाचार की आज्ञा को मानो और अपने पापों की क्षमा पाओ (प्रेरि. 22:16)।
3. उड़ाऊ लोगो, प्रभु की ओर लौट आओ (लूका 15:11-32; प्रेरि. 8:22)।

क्या
यीशु मसीह एक ऐतिहासिक व्यक्ति
है?
1 कुरिं. 1:18-26

प्रसंग: इस बात को ध्यान में रखते हुए कि परमेश्वर, बाइबल और कलीसिया के वैरी इस बात का इनकार करते हैं कि यीशु नासरी (मसीह) एक वास्तविक व्यक्ति था बल्कि कहते हैं कि वह केवल एक मिथ है, हम यहां पर कई स्रोतों से दिखाते हैं कि यीशु नासरी (मसीह) सचमुच में पहली सदी के फलस्तीन (या पलिश्तीन) में रहा और वहीं मरा।

परिचय:

1. कई कुछ अधिक ही स्मार्ट लोग कुछ बड़ी बेवकूफ़ी वाली और बेबुनियाद बातें कहते हैं।
2. यीशु मसीह की ऐतिहासिकता या यीशु नासरी (मसीह) के वास्तविक होने का इनकार करना कि वह एक ऐतिहासिक व्यक्ति है किसी के द्वारा भी किया जाने वाला सबसे बेवकूफ़ी भरा और बेबुनियाद दावा है।
3. इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि ऐसा कहने वाला व्यक्ति कितना पढ़ा लिखा है, या किसी विशेष क्षेत्र में विशेषज्ञ है (1 कुरिं. 1:18-26)।
4. बाइबल के मुख्य पात्र के पूर्वाग्रह से भरी अप्रमाणित आलोचनाओं का पर्याप्त **प्रमाण** से आसानी से मुकाबला किया जा सकता है।
5. यीशु मसीह ऐतिहासिक व्यक्ति है!

मुख्य भाग:

I. बहुत से लोगों का वह बहुत पढ़े-लिखे हों या न जहां तक हो सके अधिक से अधिक लोगों में यह विश्वास निकालने का एक दुष्ट हथकंडा है यीशु नासरी कभी हुआ ही नहीं।

क. आम तौर पर, विशेषकर जवान लोग सबसे सामान्य और बेबुनियाद दावों का सामना करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं होते कि यीशु मसीह कभी हुआ ही नहीं।

1. माता-पिता, ऐल्डरों, प्रचारकों तथा शिक्षकों के लिए जवानों को तथ्यों तथा यीशु मसीह की ऐतिहासिकता की सच्चाई से लैस करना आवश्यक है। इससे पहले कि इन जवानों का सामना अपने मसीही विश्वास की इन चुनौतियों का सामना करने से पहले।
2. उदाहरण के लिए कॉलेज के प्रोफेसर तथा युवा साथियों के लिखित या ज़बानी मज़ाक से युवा मसीहियों के विश्वास को ख़तरा होता है।
3. आखिर कोई भी विश्वास के अपने सिस्टम में अज्ञानी और अनपढ़ या पुराना नहीं दिखना चाहता।
4. इसके अलावा यदि हम अपने जवानों को ऐसे सामनों के लिए तैयार नहीं करते तो वे किसी प्रमाण के साथ इन बेबुनियाद आरोपों का सामना नहीं कर सकते।

5. नतीजा यह होगा कि हम इन मसीही जवानों को खो देंगे!

ख. इस पर संदेह न करें; बाइबल के आलोचक खुलेआम यह चुनौती देते हैं कि यीशु नासरी कभी हुआ ही नहीं, जिससे वे मसीही धर्म के आधार को कमज़ोर करना चाहते हैं।

1. इन दो उद्धरणों से यीशु मसीह की ऐतिहासिकता के विरुद्ध किए जाने वाले आलोचनात्मक दावों का पता चलता है।

   विश्व प्रसिद्ध मैडिकल डॉक्टर और मसीहियत के आजीवन आलोचक, एडवर्ड सवेज़र ने लिखा है: यीशु नासरी जो मसीहा के रूप में सार्वजनिक रूप में सामने आया, जिसने परमेश्वर के राज्य के सदाचार का प्रचार किया, जिसने पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य स्थापित किया, और अपने अंतिम अभिषेक के लिए मर गया, कभी हुआ ही नहीं। वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसे तर्कवाद ने गढ़ा, उदारवाद ने उसे जीवन दिया और ऐतिहासिक पोषाक ने आधुनिक थियोलोजी ओढ़ा दी (1964, पेज 398)। (बट)

   ... विटेरबो, इटली की अदालत का एक मामला विश्वस्तर पर ध्यान खींच रहा है। नास्तिक लुइगी कैसियोली ने कैथोलिक प्रीस्ट, एनरिको रिगी को यह शिक्षा देने के लिए यह मुकद्दमा किया है कि यीशु 2000 वर्ष पहले पृथ्वी पर रहता था। कैसियोली का यह दावा है कि रिगी और कैथोलिक चर्च ने यह शिक्षा देकर कि यीशु एक वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति था, जो वास्तव में पहली सदी के दौरान फलस्तीन (या पलिश्तीन) में रहता था, बहुत से लोगों को धोखा दिया है (लायोनस)।

2. बेशक, यदि कोई मसीही धर्म को कमज़ोर कर सकता है, तो वह मसीहियत के प्रतिबंधक नैतिक कोट को अपने धार्मिक तथा नैतिक दु:साहस के साथ हस्तेक्षप करने से निकाल सकता है।

II. सच यह है, पर्याप्त परिमाण यह साबित करता है कि यीशु नासरी (मसीह) सचमुच में पहली सदी में हुआ।

क. एक प्राचीन दस्तावेज़ बाइबल यह साबित करती है कि यीशु नासरी (मसीह) सचमुच में पहली सदी में हुआ और मरा।

... आज यूनानी नये नियम के 5,366 हस्तलेख, पूरे या अधूरे हैं जो नये नियम की यथार्थता की पुष्टि करते हैं। ... वास्तव में नया नियम किसी भी अन्य पुस्तक से बढ़कर ऐतिहासिक दस्तावेज़ है। होमेर की इलियार्ड की केवल 643 प्रतियां हैं, जो अविवादित रूप से प्राचीन यूनानी की सबसे प्रसिद्ध पुस्तक है। जूलियस सीज़र के *गैलिक वार्स* पर कोई संदेह नहीं करता, परन्तु हमारे पास इसकी केवल 10 प्रतियां हैं, जिनमें से सबसे पुरानी इसके लिखे जाने के 1,000 वर्ष बाद की है। नये नियम के लिखे जाने के 70 वर्षों के अंदर-अंदर ही प्रतियों की इतनी बहुतायत किसी आश्चर्य से कम नहीं है। ... लीवी ने रोमी इतिहास की 142 पुस्तकें लिखीं, जिनमें से केवल 35 बची हैं। 35 पुस्तकों को कोई 20 हस्तलेखों के कारण दिखाया जाता है, जिनमें से केवल एक चौथी सदी की है। टेसिटुस के हिस्ट्रीज़ ऐंड ऐनल्स के हमारे

पास केवल दो हस्तलेख हैं, जिनमें से एक नौंवी सदी का और एक ग्यारहवीं सदी का है। एक और प्रसिद्ध प्राचीन पुस्तक हिस्ट्रीज़ ऑफ़ थुसीडाइस केवल आठ हस्तलेखों पर निर्भर है, इनमें से सबसे पुराना हस्तलेख लगभग 900 ए.डी. का है। (मसीही युग के आरम्भ के कुछ पपायरस के खण्डों के साथ)। हिस्ट्रीज़ ऑफ़ हेरोडोटस की परिस्थिति ऐसी ही है। (बट)

1. अन्य कई इतिहासों से जिनका बहुत कम प्रमाण बचा है नया नियम ऐतिहासिक रिकॉर्ड के रूप में कहीं बढ़कर प्रामाणिक या मान्य दस्तावेज़ है, पर फिर भी उन्हें बिना संदेह के मान्य माना जाता है।
2. नया नियम एक प्राचीन दस्तावेज़ है जो पहली सदी में यीशु नासरी के (मसीह) के अस्तित्व की गवाही देता है।

ख. इतिहासकार इस बात की पुष्टि करते हैं कि यीशु नासरी (मसीह) वास्तविक व्यक्ति था जो पहली सदी में फलस्तीन (या पलिश्तीन) में रहा और मरा।

1. यहूदी इतिहास यीशु नासरी के जिसे अधिकतर लोग मसीह के रूप में जानते हैं, वास्तव में पहली सदी में होने की बात करता है।

   प्रभु के अस्तित्व की सबसे पुरानी गैर-मसीही गवाही यहूदी इतिहासकार फ़्लेवियस जोसेफस (37-100 ए.डी.) की है। *एंटिक्वइटीज़ ऑफ़ द ज्यूस* के लेखक इस इतिहासकार ने दो बार यीशु का उल्लेख किया। एक पद्य में उसने यीशु को ''ख्रिस्तुस'' कहा, उसके ''अद्भुत कामों'' की बात की और उसकी मृत्यु तथा पुनरुत्थान का हवाला दिया (18.3.3)। (जैक्सन)

2. इसके अलावा, चाहे इस विश्वास को माना नहीं जाता कि यीशु नासरी ही पुराने नियम की भविष्यद्वाणी वाला मसीह था, और उसे कम करके जाना जाता है, परन्तु यहूदी बेबीलोनी तालमुड में यह माना गया है कि यीशु नासरी पहली सदी में पलिश्तीन में रहता था (जैक्सन)।
3. पहली सदी के रोमी साम्राज्य से जुड़े दस्तावेज़ यह पुष्टि करते हैं कि यीशु नासरी, जिसे मसीह कहा जाता है ऐतिहासिक व्यक्ति था।

   बितुनिया के हाकिम पलिनी ने रोमी सम्राट ट्रॉजन (लगभग 112 ए.डी.) से यह सलाह मानते हुए लिखा वह मसीही लोगों के साथ कैसे पेश आए जिन्होंने ''मसीह के लिए जैसे कि वह परमेश्वर हो'' एक ठहराए हुए दिन भजन गाने के लिए इकट्ठा होना परम्परा बना ली है (हिस्ट. एक्स. 96)। रोमी इतिहासकार टेसिटुस ने (लगभग 115 ए.डी) ने अपनी पुस्तक *ऐनल्स* में ''ख्रिस्तुस'' की बात की जिसे ''तिबेरियुस के शासन में हाकिम पौंतियुस पिलातुस के हाथों मृत्यु-दण्ड दिया गया था'' (एक्स वी 44)। एक प्रसिद्ध रोमी लेखक ट्युटोनिस ने 120 ए.डी. के लगभग लिखते हुए यह घोषणा की कि क्लौदियुस ने यहूदियों को रोम से निकाल दिया क्योंकि वे ''ख्रिस्तुस के उक्साने से बार-बार गड़बड़ कर रहे थे'' (विस्टा क्लॉन्डी XXV. 4)। ''ख्रेस्तुस'' ख्रिस्टोस (ख्रिस्तुस) या मसीह का बिगड़ा हुआ रूप है प्रेरि. 18:2 में लूका ने इस परिस्थिति का संकेत दिया (जैक्सन)।

ग. मसीहियत के पुराने शत्रु, उसके जिसे ख्रिस्टुस कहा जाता है, होने का इनकार नहीं करते।

दूसरी सदी ए.डी. पैगन दार्शनिक सैलसस ने मसीहियत का सबसे पुराना प्रचलित साहित्यिक आक्रमण किया। *ट्रु डिस्कोस* (178 ए.डी.) नामक उसकी पुस्तक मसीह पर एक कड़ा प्रहार था। सैलसस ने तर्क दिया कि यीशु का जन्म निम्न परिस्थितियों में नहीं हुआ था, जो कि पंथेरा नामक एक सिपाही का अवैध पुत्र था। ... बड़ा होने पर उसने बहुत से लोगों को धोखा देते हुए, अपने आपको परमेश्वर घोषित कर दिया। सैलसस ने आरोप लगाया कि मसीह के अपने ही लोगों ने उसे मार डाला, और यह कि उसका पुनरुत्थान एक छलावा था। परन्तु सैलसस ने यीशु के ऐतिहासिक व्यक्ति होने पर कभी सवाल नहीं उठाया। समोसाटा के लुसियन (लगभग 115-200 ए.डी.) को ''यूनानी साहित्य का वोल्टायर'' कहा जाता था। ... उसने कहा कि मसीही लोग प्रसिद्ध ''कुतर्की'' की उपासना करते थे, जिसे पलिश्तीन में इसलिए क्रूस पर चढ़ा दिया गया क्योंकि उसने नये रहस्य बताए थे। उसने कभी भी यीशु के अस्तित्व को नहीं नकारा। कोर फायरी का जन्म लगभग 233 ए.डी. में हुआ, उसने यूनान में फिलॉस्फी का अध्ययन किया, और सिसली में रहा, जहां उसने मसीही विश्वास के विरोध में पन्द्रह पुस्तकें लिखीं। अपनी एक पुस्तक *लाइफ़ ऑफ़ पैथागोडस* में उसने दावा किया कि बुतप्रस्त दुनिया के जादूगर, मसीह से बड़ी शक्तियों को दिखाते थे। उसका तर्क अपने आप में यीशु के अस्तित्व और सामर्थ को मान लेना था (जैक्सन)।

घ. अब बाइबली और गैर बाइबली प्रमाण वास्तव में यीशु मसीह की ऐतिहासिकता का सम्मान करते हुए सहमत हैं।

1. बाइबल, विशेषकर नये नियम के ऐतिहासिक या जीवन वाले भाग, यह पुष्टि करते हैं कि यीशु नासरी (मसीह) पहली सदी का एक वास्तविक व्यक्ति था।
2. प्राचीन, गैर बाइबली साहित्य चाहे यीशु नासरी (मसीह) के ईश्वरीय होने का खुलकर सम्मानपूर्वक विरोध करता है, परन्तु फिर भी यह पुष्टि करता है कि यीशु नासरी (मसीह) पहली सदी का एक वास्तविक व्यक्ति था।
3. कोई भी, चाहे वह बहुत पढ़ा लिखा हो या कम पढ़ा लिखा, अगर यह दावा करता है कि यीशु नासरी ऐतिहासिक, पहली सदी का व्यक्ति नहीं था, वह या तो तथ्यों से अनजान है या जानबूझकर धोखे में है।
4. *यीशु मसीह की ऐतिहासिकता निर्विवाद तथ्य है!*

निष्कर्ष:

1. गैर बाइबली, प्राचीन साहित्य में लग सकता है कि यीशु नासरी (मसीह) की ऐतिहासिकता को साबित करने का बहुत कम प्रमाण है।

   क. परन्तु उदाहरण के लिए, यीशु मसीह के ऐतिहासिक व्यक्ति होने को साबित करने का प्रमाण पिलातुस हाकिम और ऐतिहासिक व्यक्ति होने के प्रमाण से बढ़कर है, जिसने हमारे प्रभु को क्रूस पर चढ़ाए जाने का दण्ड दिया।

   ख. यीशु मसीह के ऐतिहासिक व्यक्ति होने को मानने वाले गैर बाइबली तथा बाइबली प्रमाण को ध्यान में रखते हुए, इस बात का प्रमाण कि यीशु नासरी (मसीह) वास्विक, पहली सदी का व्यक्ति था, किसी भी अन्य प्राचीन घटना या व्यक्ति के प्रमाण से बढ़कर है।

ग. ''यीशु की ऐतिहासिकता इतिहास के किसी भी अन्य विषय से बढ़कर है'' (स्पैंग्लर 282)।

घ. यीशु मसीह के ऐतिहासिक व्यक्ति होने के प्रमाण की कमी होने के बजाय, यीशु नासरी (मसीह) की ऐतिहासिक व्यक्ति होने का भरपूर प्रमाण है, विशेषकर किसी भी अन्य प्राचीन व्यक्ति, स्थान या घटना के प्रमाण की तुलना में।

2. यीशु मसीह की ऐतिहासिकता के सबसे बड़े गवाह विमुख, प्रतिकूल गवाह जिन्हें यह मान लेने से कि यीशु नासरी (मसीह) पहली सदी में पलिश्तीन में रहता था बिल्कुल कुछ प्राप्त नहीं होगा (और सब कुछ होना ही है)।

   क. रॉड रदरफुर्ड ने लिखा है: ''यह तथ्य कि यह गवाही शत्रु गवाहों की ओर से है, इसे और भी अधिक विश्वसनीयता देती है, क्योंकि यदि हो सकता तो मसीहियत के इन शत्रुओं ने मसीह के ऐतिहासिक व्यक्ति होने को मानने से इनकार करना था'' (296)।

   ख. आम तौर पर हमारे प्रभु के आधुनिक शत्रुओं में यह बेबुनियाद दावा करने से पहले कि यीशु नासरी (मसीह) के अस्तित्व पर इतिहास खामोश है, ऐतिहासिक दस्तावेज़ों को जांचने की ईमानदारी नहीं है।

   ग. और भी आलोचक हैं, जो हमें लगता है कि अच्छी तरह से जानते हैं, यह दावा करते हुए कि इतिहास यीशु नासरी (मसीह) के अस्तित्व पर खामोश है, कपटपूर्ण ढंग से जानबूझकर उसके झूठ होने का दावा करते हैं।

निमन्त्रण:

1. गैर बाइबली और बाइबली प्रमाण यह पुष्टि करते हैं कि यीशु पहली सदी में पलिश्तीन में रहा, उसने आश्चर्यकर्म किए और मसीही धर्म का आरम्भ किया।
2. आज कोई मसीह का चेला बनकर इसी प्रकार से मसीही धर्म में मिलाया जाता है जैसे 2,000 साल पहले लोगों को मसीही बनने पर मसीह की कलीसिया में मिलाया जाता था (मर. 16:16; प्रेरि. 2:47)।
3. उसी प्रकार से, गलती करने वाले मसीहियों के पाप आज भी उसी प्रकार से क्षमा किए जाते हैं जैसे 2,000 साल पहले के मसीही लोगों के पाप क्षमा किए जाते थे (प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

आओ
उद्धारकर्त्ता यीशु
से मिलो
लूका 2:11

प्रसंग: यह दिखाना कि स्वर्ग से यीशु मसीह के आने का कारण और कार्य मनुष्यजाति का आत्मिक उद्धारकर्त्ता बनना था।

परिचय:

1. मनुष्यजाति को स्वयं को पापों से बचा न पाने के कारण उसे एक ईश्वरीय उद्धारकर्त्ता की बुरी तरह से आवश्यकता है।
2. अच्छा हुआ कि यीशु मसीह ने हमारा उद्धारकर्त्ता बनने के परमेश्वर पिता के मिशन को स्वीकार कर लिया।
3. हमारे लिए छुटकारा पाने से पहले, उद्धारकर्त्ता के रूप में यीशु मसीह के सम्बन्ध में बाइबल की जानकारी से लैस हो जाना आवश्यक है।

मुख्य भाग:

I. पुराना और नया दोनों नियम मनुष्यजाति के एक ईश्वरीय उद्धारकर्त्ता की बात बताते हैं।

क. ''उद्धारकर्त्ता'' शब्द की परिभाषा का अर्थ बुनियादी है, परन्तु वास्तविक महत्व इस पर निर्भर करता है कि यह किस संदर्भ में मिलता है।

1. यहोशू तथा राजा शाऊल के समय के बीच के 15 न्यायी *शारीरिक, मानवीय उद्धारकर्त्ता* थे (न्या. 2:16; 3:9, 15)।
2. परन्तु उद्धार या छुटकारे के सम्बन्ध में, यीशु मसीह मनुष्यजाति का *आत्मिक, ईश्वरीय उद्धारकर्त्ता* है।

उद्धारकर्त्ता। बाइबल में इस्तेमाल हुआ यह शब्द, अपने उच्चतम अर्थ में, यीशु मसीह के लिए लागू होता है, परन्तु एक गौण ढंग में (मानवीय छुटकारा दिलाने वालों के लिए) लागू होता है (*न्यू अंगर'स*)

1: जो खतरे या विनाश से बचाता हो; 2: जो उद्धार दिलाता है; उसे *विशेषकर बड़े अक्षरों में* बताया गया: JESUS *यानी* **यीशु** (मेरियम)।

ख. इब्रानी और यूनानी दोनों भाषाओं में अपने-अपने शब्द हैं जिनका अनुवाद अंग्रेज़ी में ''Savior'' (उद्धारकर्त्ता) हुआ है।

1. KJV में ''Savior'' (उद्धारकर्त्ता) शब्द 37 बार आया है जिसमें 13 बार पुराने नियम में और 24 बार नये नियम में है।
2. अनुवाद हुए शब्द उद्धारकर्त्ता (savior) का इब्रानी शब्द ''याशा'' है, चाहे इब्रानी शब्द कुल मिलाकर 207 बार मिलता है और इसका अनुवाद ''बचा,'' ''छुड़ाने

वाला,'' ''बदला लेने वाला'' और ''सहायता'' के रूप में भी हुआ है।

3. अनुवाद हुए शब्द ''उद्धारकर्ता'' का यूनानी शब्द ''सोटेर'' है और इसका अर्थ ''छुटकारा दिलाने वाला'' है (बाइबलसॉफ़्ट)

ग. दोनों नियमों में ''उद्धारकर्त्ता'' के प्रयास शब्द ही इस्तेमाल हुए हैं।

1. यशायाह 49:26 और 60:16 में ''छुड़ाने वाला'' और ''उद्धारकर्त्ता'' शब्द पर्यायवाची के रूप में मिलते हैं।
2. ''छुटकारा देने वाला'' शब्द उसे दिखाता है जो कि मनुष्यजाति के उद्धारकर्त्ता के रूप में यीशु मसीह है (यशा. 59:20; तीतु. 2:13-14)।

   छुटकारा दिलाने वाला। नये नियम में, मसीह को मुख्य छुटकारा दिलाने वाले के रूप में दिखाया गया है, चाहे छुटकारा दिलाने वाले के लिए यूनानी शब्द का इस्तेमाल नहीं हुआ। यीशु ने अपना प्राण ''बहुतों की छुड़ौती के लिए'' दे दिया (मर. 10:45)। इसीलिए प्रेरित पौलुस विश्वासियों को ''उसके लहू के द्वारा छुटकारा'' पाए हुए कहता है (इफि. 1:7)। (नैल्सन)

3. प्रेरित पतरस ने भी लिखा कि यीशु मसीह के लहू के द्वारा मनुष्यजाति के लिए छुटकारा उपलब्ध है (1 पत. 1:18-19)।
4. रोमि. 3:24-25 भी देखें।

II. मनुष्यजाति का आत्मिक उद्धारकर्त्ता बनने के लिए यीशु मसीह के स्वर्ग से संसार में आने के कारण और कार्य का पता दोनों नियमों से इकट्ठा की गई बाइबल की जानकारी से चलता है।

क. यीशु मसीह में जो स्वर्ग से पृथ्वी पर आया एक ईश्वरीय उद्धारकर्त्ता है, पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों का पूरा होना मिलता है।

1. अब्राहम से की गई आत्मिक प्रतिज्ञा तब पूरी हुई जब यीशु मसीह इस पाप भरे संसार में आया (उत्प. 12:3; लूका 1:68-77)।
2. हमारे उद्धारकर्त्ता के रूप में यीशु मसीह ने पापों को मिटाने वाली भविष्यद्वाणियों को पूरा किया (यशा. 53:10-11; यिर्म. 23:5-6; जक. 9:9)।

ख. यीशु मसीह संसार में मनुष्यजाति के उद्धारकर्त्ता के रूप में काम करने के उद्देश्य से ही आया।

1. हमारे स्वर्गीय पिता ने यीशु मसीह को हमारा उद्धारकर्त्ता बनाकर ही भेजा (यूह. 3:17; 1 यूह. 4:14)।
2. यीशु के जन्म पर, एक दूत ने चरवाहों के पास यह घोषणा की कि उनके लिए ''एक उद्धारकर्त्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है'' (लूका 2:11); मत्ती 1:21 में स्वर्गदूत द्वारा यूसुफ़ से कही बात को मिलाएं।
3. यीशु मसीह ''सब मनुष्यों का उद्धारकर्त्ता'' बनने के लिए आया (चाहे कुछ लोग उसे उद्धारकर्त्ता नहीं भी मानते) (1 तीमु. 4:10)।
4. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने घोषणा की कि यीशु मसीह ने ''जगत का पाप उठाकर'' उद्धारकर्त्ता का काम करना था (यूह. 1:29)।

5. सामरियों ने यह मान लिया कि यीशु ''सचमुच में जगत का उद्धारकर्त्ता है'' (यूह. 4:42)।
6. यीशु ने दावा किया कि वह संसार का उद्धारकर्त्ता बनने के लिए आया (मत्ती 18:11; लूका 19:10; यूह. 12:47-48)।
7. अपने पुनरुत्थान और बाद में स्वर्ग पर वापस उठा लिए जाने पर यीशु मसीह उद्धारकर्त्ता बना (प्रेरि. 5:31)।
8. साफ़-साफ़ कहें तो यीशु मसीह, मसीह की देह का उद्धारकर्त्ता है (इफि. 5:23)।

ग. अपने उद्धारकर्त्ता के मिशन को परमेश्वर के वचन (बाइबल) से जानकर, हम अपने उद्धार को पा सकते हैं।

1. पवित्र शास्त्र का अध्ययन करने से हम उद्धारकर्त्ता से उद्धार को जान सकते हैं (2 तीमु. 3:15; 2 पत. 3:18)।
2. मसीही लोग उद्धारकर्त्ता की वापसी के लिए, समय के अंत की ओर, दिलेरी से देख सकते हैं (फिलि. 3:20)।

निष्कर्ष:

1. यीशु मसीह हमारा उद्धारकर्त्ता है, जो ''इसलिए प्रकट हुआ कि पापों को हर ले जाए'' (तीतु. 1:4; 1 यूह. 3:5)।
2. क्योंकि यीशु मसीह उद्धारकर्त्ता है, इस कारण पतरस ने माना कि यीशु के पास ''अनन्त जीवन की बातें'' थीं (यूह. 6:68)।
3. क्योंकि यीशु मसीह उद्धारकर्त्ता है, इसलिए प्रेरित पौलुस ने बार-बार दावा किया कि उद्धार केवल यीशु मसीह के द्वारा पाया जा सकता है (प्रेरि. 13:23, 38-39; 2 तीमु. 2:10; 1 थिस्स. 5:9)।
4. अय्यूब 19:25 में हम बड़ी दलेरी से अय्यूब की बात से सहमत होते हैं: ''मुझे निश्चय है कि मेरा छुड़ाने वाला (यानी हमारा उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह) जीवित है।''

निमन्त्रण:

1. उद्धारकर्त्ता के रूप में यीशु मसीह से सम्बन्धित बाइबल की जानकारी से लैस होकर हम अपने लिए छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं।
2. यीशु उनका उद्धारकर्त्ता है जो सुसमाचार की आज्ञा को मानते हैं (रोमि. 6:17; इब्रा. 5:9)।
3. हे गैर-मसीही, परमेश्वर के वचन की ओर मुड़कर और बाइबल के प्रमाण से विश्वास पाकर (रोमि. 10:17), पापों से मन फिराकर, यह मानते हुए कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेकर, सुसमाचार की आज्ञा मान (प्रेरि. 2:38; 8:37)।
4. हे भटके हुए मसीही, पाप से मन फिराकर और क्षमा के लिए प्रार्थना करके सुसमाचार की आज्ञा मान (प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

आओ
मसीहा और राजा यीशु
से मिलो
यूह. 1:41; 4:25-26

प्रसंग: मसीहा और राजा के रूप में हमारे प्रभु की भूमिका के महत्व को बाइबल में से समझाना।

परिचय:

1. यीशु मसीह से सम्बन्धित शब्द मसीहा और राजा का आपस में सम्बन्ध है।
2. मिलकर वे पाप में गिरी मनुष्यजाति के छुटकारे की पुराने नियम की सब भविष्यद्वाणियों का फल लाती हैं।
3. ''आओ मसीहा और राजा यीशु को मिलें।''

मुख्य भाग:

I. इसका क्या अर्थ है कि यीशु मसीह मसीहा है?

क. ''Messiah (मेसियाह)'' (OT) या ''*Messias* (मेसियास)'' (NT) शब्द दोनों नियमों में मिलता है।

1. ''Messiah'' (मेसियाह) के लिए इब्रानी शब्द mashiyach (मशियाख) है जिसका अर्थ है ''अभिषिक्त; आम तौर पर अलग किया हुआ व्यक्ति (जैसे राजा, याजक या संत); विशेषकर, मेसियाह'' (*बाइबलसॉफ़्ट'स*)।
2. यह इब्रानी शब्द पुराने नियम में 39 बार मिलता है: 37 बार ''अभिषिक्त'' के रूप में और 2 बार ''मसियाह के रूप में'' (दानि. 9:25-26)।
3. LXX [सप्तत्ति, इब्रानी बाइबल के पुराने नियम का यूनानी अनुवाद] में पुराने नियम के इब्रा. मशियाह के उन्तालीस के उन्तालीस का अनुवाद 'ख्रिस्टोस' '' किया गया है (ईस्टन)।
4. नये नियम में ''Messiah (मेसियाह)'' या ''*Messias* (मेसियास) केवल दो बार मिलता है (यूह. 1:41; 4:25)।

ख. नये नियम में मसियाह के लिए पर्यायवाची के रूप में एक और शब्द का इस्तेमाल कई बार हुआ है।

1. यूनानी शब्द ''*christos*'' (ख्रिस्टोस) जिसका अनुवाद ''ख्रिस्त'' या मसीह हुआ है, का अर्थ है ''अभिषिक्त'' (यानी मसीहा जो यीशु का एक विशेषण है)। (बाइबलसॉफ़्ट'स)
2. ''ख्रिस्टोस का अर्थ है 'पर लगा,' 'अभिषिक्त' और संज्ञा शब्द के रूप में (ख्रिस्टोन को) 'लेप' है। गैर बाइबली दायरे के लोगों से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है'' (किट्टल ऐंड फ्रैड्रिक)।

इब्रानी शब्द *मशियाह* जिसका लिप्यंत्रण ''मसीहा'' (मसियाह) हुआ है,

क्रिया शब्द से बना विशेषण है, और मोटे तौर पर इसका अनुवाद ''अभिषिक्त व्यक्ति'' हो सकता है। ''अभिषेक'' के अर्थ वाले क्रिया शब्द से लिए गए नये नियम के *ख्रिस्टोस* का भी यही अर्थ है। इसलिए मसियाह (मसीह) और ख्रिस्त दोनों एक ही अवधारणा को दर्शाते शब्द हैं। (*यह याद रखा जाना चाहिए कि जैसा कि लगता है कि बहुत से लोगों का विचार है, मसीह नाम नहीं है। जैसे कि यीशु मसीह में नाम हो और उसमें यीशु पहला और अंत में मसीह। ऐसा नहीं है।*) (करलीन)

हमारे लिए मसीह या ख्रिस्ट व्यक्तिवाचक नाम बन गया है, और इसलिए इसे निश्चयवाचक उपपद के बिना लिखा जाता है; परन्तु सुसमाचार के विवरणों में, प्रतिज्ञा किए हुए मसियाह (मसीहा) के साथ यीशु की पहचान पर आज भी लोगों के मन में संदेह है। इस कारण उपपद का इस्तेमाल आदतन किया जाता है और इसलिए यीशु मसीह के लिए *Jesus Christ* का अनुवाद ''*Jesus, the Christ*'' होना चाहिए (विन्सेंट)।

Messi'ah (अभिषिक्त)। यह शब्द (*Meshiach*) नये नियम के शब्द ख्रिस्त या मसीह (ख्रिस्टोस) का उत्तर देता है, और अपने पहले अर्थ में यह पवित्र तेल के साथ अभिषिक्त किसी भी व्यक्ति के लिए लागू होता है। अलग किए जाने के तरीके से, इस्राएल के राजाओं को अभिषिक्त कहा जाता था। 1 शमू. 2:10, 35; 12:3, 5 आदि। इस शब्द का इस्तेमाल चुने हुए लोगों के अपेक्षित राजकुमार के लिए, जिसे उनके लिए परमेश्वर की मंशाओं को पूरा करना और उन्हें छुड़ाना होता था, और उसके लिए भी किया जाता था, जिसके आने की पुरानी वाचा के सब नबियों ने बात की थी। वह मसियाह अर्थात अभिषिक्त, यानी परमेश्वर की नियुक्ति के द्वारा, राजा और नबी की तरह अलग किया हुआ था (स्मिथ)।

3. नये नियम में *Christos* (ख्रिस्टोस) 572 बार आता है, और KJV को छोड़ जहां प्रेरि. 10:48 में इसका अनुवाद ''प्रभु'' के रूप में किया गया है, सब जगह इसका अनुवाद ''मसीह'' या ख्रिस्ट के रूप में ही हुआ है।
4. ''नये नियम में मसियाह के बजाय मसीह या ख्रिस्त शब्द लगभग एक ही तरह से हमारे प्रभु के आधिकारिक पदनाम के रूप में इस्तेमाल हुआ है'' (*न्यू अंगर'स*)।

II. खोई हुई मनुष्यजाति के लिए इसका क्या अर्थ है कि यीशु ख्रिस्त मसियाह (मसीहा) और राजा है?

क. पुराने नियम में मसीहा की सैकड़ों भविष्यद्वाणियां हैं।

1. ''मसीहा की भविष्यद्वाणियां बहुत बार उद्धृत की जाती हैं'' (ईस्टन)।
2. ''पुराने नियम की 332 अलग-अलग भविष्यद्वाणियां हैं, जो मसीह में हू-ब-हू पूरी हुईं'' (241)।

बाइबल में 300 से अधिक भविष्यद्वाणियां यीशु मसीह की बात करती हैं। इन भविष्यद्वाणियों के द्वारा दिए गए विशेष विवरणों में उसके गोत्र (उत्प. 49:10), उसके जन्म स्थान (मीका 5:2), उसके जन्म तथा मृत्यु के समय (दानि. 9:25-26), उसका मार्ग तैयार करने के लिए आने वाले यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले (मला. 3:1; 4:5; मत्ती 11:10), उसके काम और सेवकाई (यशा. 52:13-53:12), उसके क्रूसारोहण (भज. 22:1-18), उसके पुनरुत्थान (भज. 16:8-11; प्रेरि. 2:25-28), उसके स्वर्गारोहण (भजन 2; प्रेरि. 13:33), और याजक और राजा के रूप में उसके महिमा पाने (भज. 110; प्रेरि. 2:34) की बात मिलती है। (*नैल्सन'स*)

मसीहा की भविष्यद्वाणी के रूप में मसीही युग के पहले के यहूदियों द्वारा माने जाने वाले पुराने नियम के वचनों की संख्या उन विशेष भविष्यद्वाणियों से जिनकी ओर मसीही लोग आम तौर पर ध्यान दिलाते हैं, कहीं बढ़कर है। एडरशेम ने इसे 456 से अधिक बताया है ... (*न्यू अंगर'स*)।

ख. बाल मसीह पुराने नियम की भविष्यद्वाणियां का पूरा होना था (लूका 2:25-32)।
   1. बहुत से भजन मसीहा के ही हैं (2; 16:7-11; 67; 68:28-35; 69; 72:1-19; 93; 96; 97, 98, 99, 110; 118:19-29)।
   2. फिलिप्पुस ने माना कि पुराने नियम की भविष्यद्वाणियां मसीहा की घोषणा करती थीं (यूह. 1:45)।
   3. यीशु मसीह ने अपने प्रेरितों को, मसीहा के दु:ख उठाने की बात बताते हुए पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों को न जानने के लिए उन्हें डांटा (लूका 24:25-27)।

ग. परमेश्वर की प्रेरणा पाए पहली सदी के प्रेरित और प्रचारक बार-बार मसीह के बारे में पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों की बात करते थे (प्रेरि. 3:14-18, 22-26)।
   1. प्रेरित पौलुस ने अपनी शिक्षा और प्रचार के द्वारा ''पवित्र शास्त्र में से प्रमाण देता'' था कि पुराने नियम में दु:ख सहने वाले परन्तु विजयी मसीहा की भविष्यद्वाणी की गई (प्रेरि. 9:22; 17:2-3; 26:22-23; रोमि. 1:1-3; 1 कुरिं. 15:3-4)।
   2. इसी प्रकार से प्रेरित पतरस ने दु:ख सहने वाले ख्रिस्त (मसीहा) की भविष्यद्वाणी की बात की (1 पत. 1:10-11)।

घ. पहली सदी में चिर-प्रतीक्षित मसीहा के आने की उम्मीद की हवा थी।

मसीह के समय में यहूदियों के बीच पाई जाने वाली मसीहा की भाषा की सुसमाचार में पर्याप्त गवाही है। बपतिस्मा देने वाले के प्रश्न से हम यह देखते हैं कि ''आने वाले'' की उम्मीद थी (मत्ती 11:3 और समानांतर), जबकि लोगों को आश्चर्य था कि कहीं यूहन्ना ही तो वह मसीह नहीं है (लूका 3:15)। (ISBE)

   1. अंद्रियास ने अपने भाई पतरस को यह बताने के लिए ढूंढ़ा कि वह मसीहा जिसकी प्रतीक्षा की जा रही थी आ चुका है (यूह. 1:40-41)।
   2. कुंवे पर यीशु के साथ बातचीत करने वाली स्त्री ने माना कि संसार आने वाले मसीहा की राह देख रहा था (यूह. 4:25-26, 29)।

3. सामरियों ने माना कि यीशु ''मसीह और जगत का उद्धारकर्त्ता'' है (यूह. 4:42)।
4. पतरस ने मज़बूती के साथ यह दावा किया कि यीशु ही वह (मसीहा) था (मत्ती 16:15-16; प्रेरि. 4:26-27)।

ङ: यीशु ने साफ़-साफ़ अपने मसीहा होने की घोषणा की।

1. कुएं पर उस स्त्री को यीशु ने बताया कि वही मसीहा है (यूह. 4:25-26)।
2. महायाजक तथा अन्य धार्मिक अगुओं के सामने यीशु ने दावा किया कि वही ख्रिस्त (यानी मसीह) है (मत्ती 26:63-64)।

च. परमेश्वर पिता ने यीशु को ख्रिस्त (मसीहा) अभिषेक किया (प्रेरि. 4:26-27)।

1. अनुवाद हुए शब्द ''मसीहा'' का अर्थ ''अभिषिक्त'' है और ''पुराने नियम राजाओं तथा याजकाओं के लिए इस्तेमाल हुआ है, जिन्हें अभिषेक के समारोह के द्वारा पद के लिए अलग किया जाता था।'' (ISBE)
2. ''याजकों (निर्ग. 28:41; 40:15; गिन. 3:3), भविष्यद्वक्ता (1 राजा 19:28), और राजाओं (1 शमू. 9:16; 16:3; 2 शमू. 12:7) उनका अभिषेक तेल के साथ किया जाता था, और इस प्रकार उनके अगल-अलग पदों के लिए उन्हें लग किया जाता था'' (ईस्टर्न)।
3. यीशु नासरी भविष्यद्वक्ता, याजक और राजा है इन सभी भूमिकाओं के लिए परमेश्वर का अभिषिक्त है, जो एक यीशु में मिलते थे जो ख्रिस्त अर्थात हमारा मसीहा है।

छ. परन्तु यहूदियों में इस बात का कि मसीहा कैसा होगा टेडा या गलत विचार था।

यहूदी विचार में, मसीहा ने यहूदियों का राजा अर्थात एक राजनैतिक अगुआ होना था। जिसने उनके शत्रुओं को पराजित करके शांति और सुनहरा युग लाना था। *मसीही विचार में,* मसीहा शब्द आत्मिक छुटकारा दिलाने वाले के रूप में यीशु की भूमिका के लिए इस्तेमाल होता है, जो अपने लोगों को पाप और मृत्यु से छुड़ाता है। मसीहा शब्द इब्रानी भाषा के शब्द से निकला है जिसका अर्थ ''अभिषिक्त'' है। इसका यूनानी समकालीन शब्द ख्रिस्टोस है जिससे हमें ख्रिस्त शब्द मिला है। मसीहा आरम्भिक मसीहियों द्वारा उस सब के वर्णन के लिए जो यीशु था, पदवी के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। बहुतों को उम्मीद थी कि मसीहा एक राजनैतिक अर्थात एक राजा होगा जो रोमियों को पराजित करके इस्राएलियों की भौथ्तक आवश्यकताओं को पूरा करेगा।

1. पहली सदी में ''मसीहा'' का विचार करने का अर्थ ''राजा'' होने की बात पर विचार करना था, और यह सही भी था।
2. मरियम वैबस्टर ने ''Messiah'' की परिभाषा ''1 ए: यहूदियों का राजा और अपेक्षित छुड़ाने वाला'' के रूप में की है।
3. पहली सदी के यहूदियों की गलती मसीहा के आत्मिक राज्य के बजाय सांसारिक राज्य स्थापित करने वाला राजा होने की उम्मीद करना था (यूह. 18:36)।

ज. यीशु नासरी (कुंवारी से जन्म लेने वाला देहधारी हुआ परमेश्वर) ही मसीहा-राजा है।

1. महान राजा के दीन गधे पर सवार होकर यरूशलेम में विजयी प्रवेश करने की भविष्यद्वाणी की गई थी (जक. 9:9; मत्ती 21:5)।
2. यीशु यहूदियों का ''जन्मजात राजा'' था (मत्ती 2:2)।

3. यीशु ने माना कि वह ''यहूदियों को राजा'' था (मत्ती 27:11, 29, 37)।
4. यीशु ''राजा'' ''सनातन, अविनाशी, अनदेखा'' है (1 तीमु. 1:17)।
5. यीशु मसीह ''एकमात्र अधिपति और राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' है (1 तीमु. 6:15; प्रका. 17:14; 19:16)।
6. यीशु मसीह ''पवित्र लोगों का राजा'' है (प्रका. 15:3)।

निष्कर्ष:

1. मसीहा की आवश्यकता पहली बार मनुष्यजाति के धोखा खाने के द्वारा जिसका प्रतिनिधित्व पहले दम्पत्ति ने किया, शैतान के द्वेष के कारण, अदन की वाटिका में होने वाली पाप की त्रासदी के कारण पड़ी।
2. तुरन्त, परमेश्वर ने मसीहा-राजा के द्वारा छुटकारे के लिए मनुष्यजाति को तैयार करना आरम्भ कर दिया (उत्प. 3:15; गला. 4:4; इफि. 3:10-11; 1 पत. 1:18-21)।

> मसीह से सम्बन्धित भविष्यद्वाणियां उस योजना का भाग थीं जिसे परमेश्वर ने सृष्टि से पहले बनाया। जब परमेश्वर ने मसीह की मृत्यु, दफ़नाए जाने और पुनरुत्थान के द्वारा अपनी सनातन योजना को पूरा कर लिया, तो इसमें परमेश्वर की समझ (1 कुरिं. 1:20) सामर्थ, परमेश्वर की महिमा और तेज दिखाया गया। ... रोमियों के नाम अपने पत्र की समाप्ति पौलुस ने बहुत कुछ वैसे ही की जैसे इसने इसका आरम्भ किया था। सुन्दर स्तुतिगान के साथ जो कि इस प्रकार है: (25) ''अब जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्थात यीशु मसीह के संदेश के प्रचार के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा, (26) परन्तु अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले हो जाएं, (27) उसी एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन'' (रोमि. 16:25-27) (वेस्ट 10)।

3. परमेश्वर पिता ने पाप में गिरी मनुष्यजाति को मसीहा-राजा दिया, परन्तु हमारे मसीहा की ओर से सम्भव किया गया पाप से उद्धार पाने की ज़िम्मेदारी मनुष्यजाति की है।

निमन्त्रण:

1. सचमुच में, यीशु मसीह ''[आत्मिक] इस्राएल का राजा'' है (मत्ती 27:42); क्या राजा यीशु आज आपके जीवन का राजा है?
2. यीशु आपके जीवन का मसीहा-राजा नहीं है यदि आपने अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने की उपेक्षा की या नकारा है (मर. 16:16; प्रेरि. 2:38)।
3. यीशु आपके जीवन का मसीहा या राजा नहीं है यदि आप ऐसे मसीही हैं जिसका जीवन पाप से मैला है (प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।
4. यदि यीशु अभी आपके जीवन का मसीहा-राजा नहीं है, तो कृपया इसी क्षण सुसमाचार की आज्ञा मानें (इब्रा. 5:9)।

आओ
महायाजक यीशु
से मिलो
इब्रा. 9:7–12

प्रसंग: हमारे महायाजक के रूप में यीशु मसीह से जुड़े वचनों को देखना।

परिचय:

1. महायाजक के रूप में, यीशु मसीह स्वर्गीय पिता के सामने हमारे लिए वह करता है जो हम अपने आप के लिए नहीं कर सकते, यानी वह परमेश्वर के सामने हमारे लिए विनती करता है यानी हमारी सिफ़ारिश करता है।

   पृथ्वी पर यहां हमारा प्रभु एक श्रेष्ठ अर्थ में याजक है, संसार के पापों के लिए अपने आपको बलिदान करने में और सिफ़ारिश करने में। वह वर्तमान में भी हमारा महायाजक है, जो स्वर्ग में हमारे लिए सिफ़ारिश करता है। (*न्यू अंगर'स*)

2. महायाजक के रूप में यीशु मसीह नये नियम की याजकाई के रूप में मसीही लोगों की अगुआई करता है।

मुख्य भाग:

I. यीशु मसीह मलिकिसिदक की रीति के अनुसार याजक है।

क. मलिकिसिदक की याजकाई मूसा की व्यवस्था के अधीन हारून की याजकाई से भिन्न थी।
   1. मलिकिसिदक की याजकाई हारून की याजकाई की तरह किसी गोत्र या परिवार के भीतर नहीं थी (इब्रा. 7:1–3; उत्प. 14:18–20)।
   2. जो याजकाई मलिकिसिदक की रीति के अनुसार है वह ''सदाकाल की'' और ''युगानयुग'' या ''अटल'' है (इब्रा. 6:20; 7:23–24, 28)।

ख. इब्रानियों का लेखक यह प्रमाण देता है कि मलिकिसिदक की याजकाई मूसा की व्यवस्था वाली याजकाई से श्रेष्ठ है (इब्रा. 7:4–10)।
   1. जिसका अर्थ यह हुआ कि यीशु मसीह की सेवकाई मलिकिसिदक की रीति के अनुसार है, इसलिए हमारे प्रभु की याजकाई भी हारून की याजकाई से श्रेष्ठ है (इब्रा. 7:11)।
   2. मसीहियत के अधीन जो याजकाई है वह यहूदी मत के अधीन वाली याजकाई से भिन्न और श्रेष्ठ है (इब्रा. 7:12–1 12)।

ग. परमेश्वर पिता ने यीशु मसीह को मलिकिसिदक की रीति पर हमारा महायाजक बनाया (इब्रा. 5:10)।
   1. परमेश्वर ने पुराने निमय की भविष्यद्वाणी को पूरा करने के लिए यीशु मसीह

को मलिकिसिदक की रीति के अनुसार अपना याजक होने के लिए बुलाया (इब्रा. 5:4–6; भजन 2:4; 110:4)।

2. यीशु मसीह को परमेश्वर की खाई गई शपथ के साथ महायाजक बनाया गया (इब्रा. 7:20–21)।

II. यीशु मसीह हमारा महायाजक है।

क. यीशु मसीह को ''प्रेरित और महायाजक'' कहा गया है (इब्रा. 3:1)।

1. परमेश्वर पिता ने यीशु मसीह को हमारा महायाजक बनाया (इब्रा. 5:5)।
2. महायाजक के रूप में, यीशु मसीह ''परमेश्वर के घर का अधिकारी'' है (इब्रा. 10:21)।
3. हमारे महायाजक के रूप में, यीशु मसीह ''दयालु और विश्वासयोग्य'' है (इब्रा. 2:17)।

ख. हमारे महायाजक के रूप में, यीशु मसीह ''स्वर्गों से होकर गया है'' (इब्रा. 4:14)।

1. हमारा महायाजक यीशु मसीह ''स्वर्ग पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा है'' (इब्रा. 8:1)।
2. यीशु मसीह ने याजक होने के योग्य नहीं होना था यदि उसकी याजकाई यहूदी मत वाली याजकाई होती (इब्रा. 7:13–14; 8:4)।

ग. हमारा महायाजक यीशु मसीह, यहूदी मत के अधीन वाले महायाजकों से श्रेष्ठ है।

1. यीशु मसीह श्रेष्ठ महायाजक है क्योंकि चाहे वह ''हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला'' (इब्रा. 4:15)।
2. यीशु मसीह देह में आया और वैसे ही परखा गया जैसे हम परखे जाते हैं, इसलिए हमारा महायाजक हम पर दया करता है।
3. महायाजक के रूप में यीशु मसीह उस तम्बू से बड़े तम्बू में सेवा करता है जिसमें हारून के याजक सेवा करते थे (इब्रा. 9:11)।
4. महायाजक के रूप में यीशु मसीह की श्रेष्ठता में प्रतिदिन और वार्षिक भेटों की जगह एक ही बार भेट देना शामिल है (इब्रा. 9:25; 10:11–12)।
5. मूसा की व्यवस्था के अधीन सेवा करने वाले अन्य महायाजकों के विपरीत, हमारे महायाजक के रूप में यीशु मसीह ''पवित्र, निष्कपट, निर्मल, पापियों से अलग'' है (इब्रा. 7:26–28)।

घ. महायाजक का उद्देश्य ''भेंट और पाप बली चढ़ाना होता है'' (इब्रा. 5:1)।

1. इसलिए हमारे महायाजक के रूप में यीशु मसीह को ''भेंट और बलिदान चढ़ाने के लिए ठहराया'' गया (इब्रा. 8:3)।
2. यहूदी मत के अधीन जहां पर महायाजक अपने पापों के प्रायश्चित के लिए परम पवित्र स्थान में वर्ष में केवल एक बार जाता था, वहीं हमारे महायाजक के रूप में यीशु मसीह पशुओं का लहू नहीं बल्कि अपना स्वयं का लहू लेकर एक ही बार असली परम पवित्र स्थान में गया (इब्रा. 9:7–12, 25)।

ङ मसीही लोग यीशु मसीह के मातहत याजक हैं (1 पत. 2:5, 9; प्रका. 1:6; 5:10; 20:6)।

प्रार्थना, स्तुति, चंदा, सचमुच में आराधना की वह सब बातें और काम हैं और इन्हें उन बलिदानों में प्रतीकात्मक रूप में शामिल किया जाता है जिन्हें महायाजक मसीह के अधीन काम करते याजकों के रूप में मसीही लोगों को (इब्रा. 9:11–28), आत्मिक मन्दिर अर्थात कलीसिया में चढ़ाना आवश्यक है। ... (वुड्स)

निष्कर्ष:

1. यीशु मसीह वह सब कुछ है जो यहूदी मत के अधीन महायाजक था बल्कि इससे भी बढ़कर।

   इस्राएल के याजक परमेश्वर के एक बड़े याजक अर्थात प्रभु यीशु मसीह की धुंधली परछाई, अस्पष्ट रूपरेखाएं और रेखाचित्र थे। रूप और आदि रूप के बीच गहराई तक समानता बनाए बिना, हो सकता है कि हम कुछ संक्षिप्त वाक्यों में मसीह के याजकाई वाले स्वभाव में पाई जाने वाली सिद्धता को संक्षिप्त कर दें: (1) याजक के रूप में मसीह परमेश्वर का ठहराया हुआ है (इब्रा. 5:5)। (2) उसे शपथ के साथ नियुक्त किया गया है (इब्रा. 7:20-22)। (3) वह पाप-रहित है (इब्रा. 7:26)। (4) उसकी याजकाई युगानयुग है (इब्रा. 7:23-24) (5) उसकी भेंट सिद्ध और अंतिम है (इब्रा. 9:25-28; 10:12)। (6) उसकी सिफ़ारिश हर समय उपलब्ध है (इब्रा. 7:25)। (7) एक व्यक्ति में परमेश्वर और मनुष्य के रूप में वह सिद्ध बिचवई है (इब्रा. 1-2)। (ISBE)

   परन्तु व्यवस्था के बीच महायाजक द्वारा किया जाने वाला प्रायश्चित उस प्रायश्चित की केवल परछाई था जो लोगों के पापों के लिए अपना स्वयं का लहू देकर मसीह द्वारा किया गया (मिलिगन)
2. इसके अलावा मलिकिसिदक की याजकाई की तरह यीशु मसीह की याजकाई विलक्षण है।
3. अंत में मसीही लोग हमारे महायाजक यीशु मसीह के मातहत याजक हैं।

निमन्त्रण:

1. परमेश्वर के सामने स्वर्ग में हमारे पाप-रहित, महायाजक के रूप में, यीशु मसीह हमारा सिद्ध बिचवई या सिफ़ारिश करने वाला है (1 तीमु. 2:5; इब्रा. 7:25; 8:6)।
2. परन्तु हमारा महायाजक यीशु मसीह केवल परमेश्वर के विश्वासी बच्चों की सिफ़ारिश और मध्यस्थता कर सकता है (मर. 16:16; प्रेरि. 8:22; प्रका. 2:10)।

आओ

बिचवई, सिफ़ारिश करने वाले और सहायक यीशु

से मिलो

1 तीमु. 2:5

प्रसंग: बाइबल में से बिचवई (मध्यस्थ), सिफ़ारिश (विनती) करने वाले और सहायक (एडवोकेट) के रूप में यीशु मसीह की भूमिकाओं को दिखाना।

परिचय:

1. यीशु मसीह मनुष्यजाति और परमेश्वर के बीच में अकेला और केवल एक बिचवई है।
2. यीशु मसीह मनुष्यजाति और परमेश्वर के बीच सिफ़ारिश करने वाला है।
3. इसके अलावा, यीशु मसीह परमेश्वर के पास मनुष्यजाति का सहायक (या एडवोकेट) है।
4. यीशु मसीह पवित्र परमेश्वर के पास मनुष्यजाति की एकमात्र पहुंच है (यूह. 14:6)।

मुख्य भाग:

I. यीशु मसीह मनुष्यजाति और परमेश्वर के बीच में अकेला और केवल एक बिचवई है।

क. ''बिचवई'' क्या होता है?

जो दो गुटों या व्यक्तियों के बीच उनके मतभेद दूर करवाकर उनमें समझौता करवाने में सहायता करता है। बिचवई आम तौर पर निष्पक्ष होता है जो दोनों के बीच, मध्यस्थ या बिचौलिए का काम करता है जो फूट पड़े लोगों के खुद अपने मतभेदों को दूर न कर पाने पर, शत्रुता को मिटाता है। बिचवई समझौते का बिचोलिया भी हो सकता है। समझौता हो जाने के बाद वह समझौते की शर्तों का गवाह बनकर यह सुनिश्चित करने वाला व्यक्ति हो सकता है कि उन शर्तों को माना जाए। बिचवई को प्रभावशाली ढंग से कार्य करने के लिए उसके पास कानूनी अधिकार का होना आवश्यक होता है और यह भी कि उसकी शक्ति को मान्यता दी जाए। (नैल्सन)

1. स्वर्ग हो या पृथ्वी, दोनों में ऐसा कोई नहीं है जो ईश्वरीय और मानवीय परिस्थितियों को एक समान जानता हो, इसलिए यीशु मसीह मनुष्य और परमेश्वर के बीच एकमात्र योग्य बिचवई है।
2. इसके अलावा, यीशु मसीह के पास ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार'' (मत्ती 28:18) है, जो प्रभावी ढंग से मध्यस्थता करने के लिए आवश्यक है।

   बिचवई, यानी दो अलग-अलग पक्षों को मिलाने के लिए उनके बीच में आने वाला व्यक्ति (मैक्लिंटॉक ऐंड स्ट्रॉन्ग)

3. ISBE में कहा गया है कि बिचवई ''बिचौलिया'' होता है, और सप्तति अनुवाद में पुराने नियम में अंग्रेजी शब्द ''mediator'' अकेले अय्यूब 9:33 के लिए और नये नियम में छह बार मिलता है।

4. मनुष्यजाति और परमेश्वर के बीच बैर का कारण वह पाप है जो मनुष्यजाति ने किया (या जो नहीं किया; याकू. 4:17), और पाप की समस्या से निपटने के द्वारा, यीशु मसीह मनुष्य और परमेश्वर के बीच मध्यस्थता करता है।
5. किट्टल की *थियोलोजिकल डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामैंट* में कहा गया है कि बिचवई ''अंपायर'' होता है।

ख. पुराने और नये दोनों नियमों के अपने-अपने मध्यस्थ हैं।

1. यहूदी मत के तहत मूसा ने इस्राएलियों और परमेश्वर के बीच मध्यस्थता की (निर्ग. 20:19-22; व्यव. 5:5)।
2. प्रेरित पौलुस ने माना कि मूसा पुराने नियम का मध्यस्थ यानी बिचवई था (गला. 3:19-20)।
3. परन्तु यीशु मसीह नये नियम का मध्यस्थ है (1 तीमु. 2-5; इब्रा. 9:15; 12:24)।
4. नये नियम की बात करें तो, हमारा प्रभु ''उत्तम वाचा का मध्यस्थ'' है (इब्रा. 8:6)।
5. और, यीशु मसीह की मध्यस्थता मनुष्यजाति और परमेश्वर के बीच मनुष्य के पाप की शत्रुता को मिटाने के इर्द-गिर्द घूमती है (1 तीमु. 2:5-6; इब्रा. 9:12-15)।

II. यीशु मसीह मनुष्यजाति और परमेश्वर के बीच सिफ़ारिश करने वाला क्या होता है

क. सिफ़ारिश करने वाला कौन होता है?

मसीह की सिफ़ारिश। यह याजक के रूप में मसीह के काम से सम्बन्धित है (देखें यीशु मसीह, के काम) और इसमें आम तौर पर उस सहायता की बात होती है जो परमेश्वर और मनुष्यजाति के बीच बिचवई के रूप में वह करता है (देखें मध्यस्थता)। एक विशेष अर्थ में मसीह को परमेश्वर के निकट लाते और मनुष्यों की ओर से याचना करते हुए दिखाया गया है (रोमि. 8:27; इब्रा. 7:25), और इसलिए, सिफ़ारिश या विनती करने के विचार से मेल खाते हुए, वह हमारा सहायक (या एडवोकेट) है (1 यूह. 2:1)। (*न्यू अंगर'स*)

1. अक्षरश: ''विनती या सिफ़ारिश करना'' शब्द का अर्थ ''के बीच में आना'' है।
2. आसान शब्दों में कहें तो बाइबल में, विनती करना ''किसी दूसरे व्यक्ति या समूह की ओर से परमेश्वर के सामने विनती करने या प्रार्थना करने का काम'' है (नैल्सन)।
3. नैल्सन की पुस्तक में है कि किस के सिफ़ारिश करने वाले के रूप में कार्य करने के कुछ सबसे पुराने अवसरों में सदोम नगर के लिए अब्राहम और इस्राएलियों के लिए मूसा का नाम लिया जाता है।
4. परन्तु सफलतापूर्वक सिफ़ारिश किया जाना इस बात पर निर्भर करता है कि जिनके लिए सिफ़ारिश की जा रही है वे परमेश्वर के वचन को मानते हैं या नहीं (यूह. 17:9)।
5. अदन की वाटिका में पहले दम्पत्ति और परमेश्वर के बीच पाप के कारण पड़ी दूरी से पहले तक, मनुष्य और परमेश्वर के बीच किसी सिफ़ारिश करने वाले की आवश्यकता नहीं थी (उत्प. 3:8)।

ख. प्रेरित पौलुस ने हमारे प्रभु की सेवकाई को ''मिलाप की सेवकाई'' का नाम दिया (2 कुरिं. 5:18-19)।

1. इससे पहले यशायाह नबी ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि मसीहा या ख्रिस्त ने

''अपराधियों के लिए विनती'' करनी थी (यशा. 53:12)।

2. स्वर्ग पर अपने उठा लिए जाने के बाद से ''परमेश्वर के दाहिने हाथ'' होने के कारण, यीशु मसीह विधिवत ढंग से ''हमारे लिए निवेदन'' करता है (रोमि. 8:34)।
3. यीशु मसीह हमारे लिए सिफ़ारिश करता रहता है, ''वह [हमारे लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है]'' (इब्रा. 7:25) या जैसा कि ईस्टन ने इसे कहा है: ''उसके मध्यस्थता के काम का आवश्यक भाग यह सिफ़ारिश करना है।''
4. ''मिलाप की सेवकाई'' में ''लोगों (यानी आपके और मेरे) के पापों के लिए प्रायश्चित'' करना शामिल है (इब्रा. 2:17)।

ग. बाइबल यीशु मसीह के अलावा दो और सिफ़ारिश करने वालों को भी दिखाती है।

1. पहले तो, पवित्र आत्मा मनुष्यजाति और परमेश्वर के बीच सिफ़ारिश करने में भाग लेता है (रोमि. 8:26–27)।
2. इससे बहुत कम महत्व में, मसीही लोग अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा अपने साथी मनुष्यों के लिए सिफ़ारिश करते हैं (1 तीमु. 2:1)।

III. इसके अलावा, यीशु मसीह परमेश्वर के पास मनुष्यजाति का सहायक यानी एडवोकेट है।

क. सहायक क्या होता है?

सहायक (या ADVOCATE) (यू.: पैराक्लेटोस, ''पैराक्लीट'')। जो किसी दूसरे का मुकदमा लड़ता है। इस शब्द का इस्तेमाल यीशु द्वारा पवित्र आत्मा के लिए किया गया (यूह. 14:16; 15:26; 16:7), जहां इसका अर्थ यहायक [सहायता करने वाला NKIV] बताया गया है; और यूहन्ना ने मसीह को वह सहायक बताया है (1 यूह. 2:1)। अंग्रेजी भाषा के शब्द एडवोकेट (लातीनी: एडवोकेटस) सलाह देने वाला वकील या अदालत में अपने मुवक्किल का मुकदमा लड़ने वाला हो सकता है; या जो, मुश्किल या कठिन समय में सताए हुए के साथ सहानुभूति करता और उचित दिशा और सहायता देता है। (*न्यू अंगर'स*)

1. नैल्सन में ''एडवोकेट'' को ''जो किसी न्यायालय या अदालत में किसी दूसरे का मुकद्दमा लड़ता है'' कहा गया है।
2. मैक्लिन्टॉक ऐंड स्ट्रॉन्ग में कहा गया है कि यहूदी लोगों को एडवोकेट की भूमिका पता नहीं था, जब तक वे रोमी शासन के तहत नहीं आए और उन्हें अदालत की कार्यवाहियों में अपने मुकद्दमों का अधिक प्रभावी ढंग से प्रतिनिधित्व करने के लिए एडवोकेटों या वकीलों का इस्तेमाल नहीं करना पड़ा।

ख. हमारा प्रभु हमारा स्वर्ग में पिता परमेश्वर के कटघरे के सामने हमारा ''एडवोकेट'' या बचावपक्ष का वकील है (1 यूह. 2:1)।

विरोधी दुष्ट या शैतान के कारण, जो परमेश्वर के सामने हम पर आरोप लगाता है, मसीही लोगों को एक एडवोकेट या सहायक की आवश्यकता है (1 पत. 5:8; प्रका. 12:10)। यदि शैतान ''अभियोगपक्ष का वकील'' है, तो मसीह और पवित्र आत्मा कानूनी एडवोकेट, यानी ''बचावपक्ष के वकील'' हैं जो हमारी सहायता करते, हमारा बचाव करते, हमें सलाह देते और हमारा समाधान करते हैं; वे मसीही व्यक्ति का मुकद्दमा दिन रात परमेश्वर के सामने रखते, पाप का लगातार उपचार देते रहते हैं (नैल्सन)।

1. यीशु और प्रेरित यूहन्ना ने ऐसे शब्द का इस्तेमाल किया जिसका इस्तेमाल पहली सदी में पलिश्तीन में, अदालत में किसी दूसरे का पक्ष रखने वाले के लिए किया जाता था (प्रेरि. 24:1)।
2. स्वर्ग की ईश्वरीय अदालत में सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने बचावपक्ष के रूप में मनुष्यजाति का प्रतिनिधित्व करने के लिए, यीशु मसीह से बढ़िया और कोई वकील नहीं है।

निष्कर्ष:

1. 1 तीमु. 2:5 के सम्बन्ध में, एल्बर्ट बार्नर का मानना है कि यीशु मसीह *सारी मनुष्याजाति* (जिसमें राजा, उनकी प्रजा, धनवान, निर्धन, मालिक, गुलाम सब शामिल हैं), के लिए एक बिचवई बनने को तैयार है, जबकि मैथ्यू कूल ने इसे इस प्रकार से कहा: ''सब मनुष्यों का एक ही मध्यस्थ है।''
2. ऐडम क्लार्क ने माना कि बिचवई के रूप में यीशु मसीह परमेश्वर और मनुष्यों के बीच ''सुलह करवाने वाला'' और मनुष्यों की पाप की समस्या को सुलझाने वाला है।
3. *वाइन* में जोड़ा गया है कि यीशु मसीह बिचवई से बढ़कर है, परन्तु बलिदान के मेमने के रूप में वह स्वयं ही वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य और परमेश्वर के बीच पाप की शत्रुता दूर होती है (यशा. 59:1–2; 2 कुरिं. 5:21)।

> मसीह परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक, और केवल एक मध्यस्थ है (1 तीमु. 2:5; इब्रा. 8:6; 9:15; 12:24)। वह प्रायश्चित के अपने सर्वसिद्ध बलिदान के द्वारा परमेश्वर और मनुष्य के बीच मिलाप करवाता है (ईस्टन)।

निमन्त्रण:

1. यीशु मसीह चाहे सारी मनुष्यजाति के लिए बिचवई या मध्यस्थ, सिफ़ारिश करने वाला और सहायक बनने को तैयार है, परन्तु ऐसा वह केवल आज्ञा मानने वालों के लिए ही कर सकता है (रोमि. 6:17; 2 थिस्स. 1:7–9; इब्रा. 3:9; प्रका. 2:10)।
2. यीशु मसीह आपका बिचवई, सिफ़ारिश करने वाला और सहायक **नहीं है,** यदि आप यह विश्वास नहीं करते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र है, आपने अपने पापों से मन नहीं फिराया है और पापों की क्षमा के लिए पानी में दफ़नाए नहीं गए हैं (यानी बपतिस्मा नहीं लिया है) (मर. 16:16; प्रेरि. 2:38; 22:16)।
3. यीशु मसीह आपका बिचवई, सिफ़ारिश करने वाला और सहायक **नहीं है**, यदि आप अविश्वासी मसीही हैं (प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

आओ
व्यवस्था के देनेवाले और भविष्यद्वक्ता यीशु
से मिलो
व्यव. 18:15

प्रसंग: बाइबल में से दिखाना कि यीशु मसीह व्यवस्था का बड़ा देने वाला और नये नियम का भविष्यद्वक्ता है।

परिचय:

1. यीशु मसीह नये नियम की व्यवस्था का देने वाला है, जबकि मूसा पुराने नियम की व्यवस्था का देने वाला था (यूह. 1:17; 7:19)।
2. यीशु मसीह नये नियम का बड़ा *भविष्यद्वक्ता* है, जबकि मूसा पुराने नियम का बड़ा भविष्यद्वक्ता था (व्यव. 18:15, 18: यूह. 1:45; प्रेरि. 3:22; 7:37)।
3. व्यवस्था के देने वाले तथा भविष्यद्वक्ता सहित, बाइबल में दिए गए यीशु के कई नाम, पदनाम तथा और काम एक ही बड़े ईश्वरीय पात्र में मिल जाते हैं।

   > यहूदी मत की तरह मसीह के पदनाम और काम एक दूसरे में मिल जाते हैं। इसलिए यीशु यूह. 6:14-15; मत्ती 21:9से अगली आयतों में, भविष्यद्वाणी वाला मसीहा होने के साथ-साथ राजा भी है। प्रेरि. 3:18 से वह भविष्यद्वक्ता के साथ-साथ मसीह भी है (किट्टल ऐंड फ्रैड्रिक)।
   >
   > मूसा हाकिम, व्यवस्था का देने वाला, छुड़ाने वाला और नबी था; मसीह लोगों के लिए यह सब था, परन्तु उन्होंने उसे ठुकरा दिया। (बोल्स)

4. इस अवसर पर, हम आपको निमन्त्रण देते हैं कि ''आओ व्यवस्था के देने वाले और भविष्यद्वक्ता यीशु से मिलो।''

मुख्य भाग:

I. जहां मूसा पुराने नियम की व्यवस्था का देने वाला था, वहीं यीशु मसीह नये नियम की व्यवस्था का देने वाला है।

क. ''**व्यवस्था का देने वाला**'' शब्द के इस्तेमाल से बाइबल का क्या अभिप्राय है?

1. ''व्यवस्था का देने वाला'' के लिए अंग्रेज़ी बाइबल में (lawgiver) दोनों नियमों में केवल छह बार मिलता है, जिसमें से पांच बार पुराने नियम में और एक बार नये नियम में है।
2. परन्तु इब्रानी शब्द जिसका अनुवाद कई बार ''व्यवस्था देने वाला'' किया गया है, 19 बार मिलता है।
3. इसमें नियमों को बनाने की बात है।
4. अंत में, व्यवस्था का देने वाला यहोवा है, जो हर प्रकार का ईश्वरीय नियम देता है

(यशा. 33:22; याकू. 4:12)।

5. परन्तु, परमेश्वर ने मूसा को पुराने नियम की व्यवस्था का देने वाला और यीशु मसीह को नये नियम की व्यवस्था का देने वाला ठहराया।

ख. पुराने नियम की व्यवस्था के देने वाले के रूप में मूसा किसी भविष्यद्वक्ता/नबी से बढ़कर था।

1. मूसा व्यवस्था का देने वाला था, जिसके साथ परमेश्वर ने दर्शनों और स्वप्नों के माध्यम से बात करने के बजाय, सीधे बात की (गिन. 12:6-7; तुलना व्यवस्था. 34:10)।
2. प्रेरित यूहन्ना ने लिखा है कि व्यवस्था (पुराना नियम) को मूसा ने लिखा, जबकि सुसमाचार (नया नियम) यीशु मसीह ने स्वयं लाया (यूह. 1:17; 7:19)।
3. मूसा व्यवस्था या पुराने नियम का लेखक नहीं था, बल्कि उसने इसका परिचय परमेश्वर के लिए लोगों के बीच करवाया।
4. वैसे ही, यीशु मसीह ने लोगों के बीच में परमेश्वर के लिए, पुराने नियम की जगह नये नियम का परिचय करवाया।

ग. मूसा के प्रतिरूप के रूप में, यीशु मसीह नये नियम की व्यवस्था का देने वाला है।

1. यीशु मसीह का रूपांतर निश्चित रूप में, परमेश्वर की व्यवस्था देने वाले के रूप में ज़िम्मेदारी को मूसा से लेकर, यीशु मसीह के ऊपर डाल देता है (मत्ती 17:5; तुलना मत्ती 3:17; यूह. 12:28; 2 पत. 1:17-18)।
2. मत्ती 17:5 पर टिप्पणी करते हुए, एक टीकाकार ने लिखा है:

> व्यवस्था देने वाले मूसा और नबियों में बड़े एलिय्याह की उपस्थिति में, परमेश्वर ने यीशु की ओर इशारा करते हुए घोषणा की कि वह उसका पुत्र है और अब उसकी सुनी जाएगी। मूसा और एलिय्याह का निकाला जाना सांकेतिक है; इन दोनों से बड़ा रहने वाला था। ... मूसा और एलिय्याह वैसे ही गायब हो गए जैसे वे प्रकट हुए थे; वे दृश्य से हट गए थे और व्यवस्था देने वाले और भविष्यद्वक्ता के रूप में मैदान में आने वाला केवल यीशु रह गया। (बोल्स)

II. मूसा जहां पुराने नियम का बड़ा भविष्यद्वक्ता था, वहीं यीशु मसीह नये नियम का बड़ा भविष्यद्वक्ता है।

क. मूसा हो या यीशु मसीह, दोनों का सम्मान करते हुए "**भविष्यद्वक्ता**" (Prophet) शब्द के इस्तेमाल से बाइबल का क्या अर्थ है?

1. परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता कई बार *पहले से बता देने वाले* (*fortellers*) और *सीधे बोल देने वाले* (*forthtellers*) दोनों होते थे, और आम तौर पर वे सीधे बोल देने वाले ही होते थे।

> भविष्यद्वक्ता के लिए साधारण इब्रानी शब्द नबी (*nabi*) है, जिसे चश्मा निकलने की तरह "बुलबुला निकलना" का संकेत देने वाले क्रिया शब्द से लिया गया है। इसलिए इस शब्द का अर्थ है कि जो परमेश्वर की घोषणाओं की घोषणा करता या बरसाता है। भविष्यद्वक्ता के लिए अंग्रेज़ी शब्द (Prophet) यूनानी भाषा के लिए शब्द (*prophetes*) से लिया गया है, जो साहित्यिक

यूनानी में उसे दर्शाता है जो किसी दूसरे के लिए बात करता है, विशेषकर जो किसी देवी/देवता की ओर से बात करता है, और इस प्रकार से उसकी इच्छा को मनुष्य को समझाता है; इसलिए इसका अनिवार्य अर्थ है ''व्याख्या करने वाला।'' ''जो पहले से बता देता है'' के रूप में इसके आधुनिक अर्थ में शब्द का उपयोग उत्तर-साहित्यिक है। (स्मिथ)

2. मूसा और यीशु मसीह के विशेष संदर्भों के साथ-साथ पुराने नियम के और नये नियम के कई भविष्यद्वक्ता थे (इफि. 4:11)।

   पहला व्यक्ति जिसे बाइबल भविष्यद्वक्ता कहती है ... अब्राहम था (उत्प. 20:7; तुलना भजन 105:15), परन्तु पुराने नियम की भविष्यद्वाणी को इसका मानकी रूप मूसा के जीवन और सूरत में मिला, जिसने भविष्य के सभी नबियों के लिए तुलना करने का मापदण्ड बनाया (व्यव. 18:15-19; 34:10; मसीहा)। पुराने नियम की भविष्यद्वाणी की साहित्यिक परम्परा में याहवेह के असली नबी में पाई जाने वाली हर स्थिति पहले मूसा में मिली। (*न्यू बाइबल डिक्शनरी*)

ख. पुराने नियम में बड़े भविष्यद्वक्ता के रूप में मूसा का विशेष स्थान था।

1. परमेश्वर के विशेष भविष्यद्वक्ता के रूप में उसके साथ जो सम्बन्ध मूसा ने बरकरार रखा वह संसार में यीशु मसीह के आने तक के सभी अन्य नबियों के सम्बन्ध से बढ़कर था (व्यव. 34:10; तुलना गिन. 12:6-।)।
2. मूसा पुराने नियम का बड़ा भविष्यद्वक्ता था जो नये नियम के बड़े भविष्यद्वक्ता का पूर्वाभास था (व्यव. 18:15,18; प्रेरि. 3:22-23; 7:37)।
3. यीशु मसीह के आने तक मूसा के कद और काम वाला कोई और नबी नहीं था।

ख. मूसा के प्रतिरूप के रूप में यीशु मसीह नये नियम का बड़ा भविष्यद्वक्ता है।

1. पहली सदी के इस्राएल में साधारण लोग यीशु को परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता मानते थे (मत्ती 21:11: लूका 7:16)।
2. अपने आश्चर्यकर्मों तथा शिक्षा के कारण (जिसकी पुष्टि उसके आश्चर्यकर्मों से होती थी), उसकी पीढ़ी के लोगों द्वारा यीशु को वह नबी माना जाता था जिसकी भविष्यद्वाणी मूसा ने की थी (यूह. 6:14; 7:40)।
3. फिलिप्पुस ने अपने भाई नतनएल को बताया कि यीशु ही वह नबी है जिसकी भविष्यद्वाणी मूसा ने की थी (यूह. 1:45)।
4. सामरियों ने माना कि यीशु ही वह मसीहा या वह नबी था जिसके विषय में मूसा ने लिखा था (वे पुराने नियम की केवल पहली पांच पुस्तकों को मानते थे) (यूह. 4:25-26, 42)।
5. ''परन्तु किसी सामरी के लिए नबी होने का अर्थ यह था कि वह मसीहा है, क्योंकि वे मूसा के बाद किसी और को नहीं मानते थे'' (एडरशेम)।
6. यीशु मसीह ने स्वयं व्यव. 18:15, 18 को अपने ऊपर लागू किया, और उसने घोषणा की कि यदि यहूदी लोग मूसा की भविष्यद्वाणियों पर विश्वास कर रहे थे तो उन्होंने उसे उस नबी के रूप में पहचान लेना था जिसके विषय में मूसा ने लिखा था (यूह. 5:46)।

7. यीशु ने वह नबी होने का दावा किया जिसकी भविष्यद्वाणी पुराने नियम में की गई थी (लूका 4:16-21; 13:33: यूह. 4:26, सामरियों के लिए मसीहा या भविष्यद्वक्ता)।
8. मूसा को पीछे करते हुए, परमेश्वर पिता ने घोषणा की कि यीशु ही है जिसकी मनुष्यजाति को सुननी चाहिए (मत्ती 17:5)।
9. मत्ती 17:5 पर टिप्पणी करते हुए, एक टीकाकार ने लिखा, ''अब नबी और व्यवस्था देने वाला यीशु वही है जो स्वर्ग से बात करता है और नई वाचा का मध्यस्थ है (इब्रा. 12:22-25)'' (धूरिस)।

घ. भविष्यद्वक्ता यीशु मूसा से श्रेष्ठ है और नये नियम की व्यवस्था पुराने नियम की व्यवस्था से श्रेष्ठ है (इब्रा. 3:2-6)।

1. भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था देने वाले के रूप में मूसा ने पृथ्वी पर रहते हुए परमेश्वर की व्यवस्था को लागू किया।
2. बड़े भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था देने वाले के रूप में यीशु मसीह स्वर्ग से परमेश्वर की व्यवस्था (सुसमाचार या नये नियम) को लागू करता है।

निष्कर्ष:

1. व्यव. 18:15, 18 में नये नियम के बड़े भविष्यद्वक्ता के रूप में यीशु मसीह का स्पष्ट संदर्भ है, इसलिए इसे नकारा नहीं जा सकता, क्योंकि परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लेख इसे हमारे प्रभु के लिए बताते हैं (यूह. 1:45; प्रेरि. 3:22-23; 7:37)।

   परन्तु यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि व्यव. 18:15, कि मूसा ने चाहे पुराने युग का परिचय करवाया, परन्तु मसीह उस नये युग में ले आया, जैसा कि लिखा गया है पहले वाला उसका रूप था (*जिम्परसन, फासट ऐंड ब्राउन*)।

2. व्यवस्था देने वाले और भविष्यद्वक्ता सहित बाइबल में यीशु को दिए गए कई नाम, पदनाम और काम मिल जाते हैं।

   मध्यस्थ न केवल प्रधान भविष्यद्वक्ता और महायाजक है, बल्कि वह राजाओं का राजा भी है। ... (पिंक)

   मसीहा वही व्यक्ति है जो ''स्त्री का वंश'' (उत्प. 3:15), ''अब्राहम का वंश'' (उत्प. 22:18), ''मूसा के समान एक नबी'' (व्यव. 18:15), ''मलिकिसिदक की रीति पर याजक'' (भज. 110:4), ''यिशै के ठूंठ में से निकली डाली'' (यशा. 11:1, 10), कुंवारी का पुत्र ''इम्मानुएल'' (यशा. 7:14), ''यहोवा की डाली'' (यशा. 4:2), और ''वाचा का दूत'' (मला. 3:1) है। यह वही है ''जिसके विषय में व्यवस्था में मूसा ने, नबियों ने भी लिखा।'' पुराने नियम वाली बाइबल बड़े छुटकारा दिलाने वाले तथा उसके द्वारा पूरा किए जाने वाले काम की नबूवती घोषणाओं से भरी पड़ी है। यीशु मसीह बड़ा छुटकारा दिलाने वाला यीशु, अभिषिक्त, मनुष्य का उद्धारकर्त्ता है (ईस्टन)।

3. बड़े भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था देने वाले के रूप में उसे पुराने नियम के स्थान पर नया नियम

देने का अधिकार दिया गया (मत्ती 28:18 NKJV; इफि. 2:15; कुलु. 2:14; इब्रा. 8:6)।

> मूसा ने, परमेश्वर के नाम में, उन्हें बताया कि समय के पूरा होने पर, उनके बीच में से, अर्थात उनकी अपनी जाति में एक नबी खड़ा किया जाना था जो उसके समान (व्यव. xviii. 15, 18)। हाकिम और छुटकारा दिलाने वाला, न्यायी और व्यवस्था देने वाला होना था, उसके जैसा होने के कारण उसके पास उन रीतियों को जो उसने दी थी बदलने और *उत्तम वाचा के मध्यस्थ* के रूप में एक नई आशा दिलाने का अधिकार होना था। (हेनरी)

निमन्त्रण:

1. व्यवस्था के बड़े देने वाले और नबी के रूप में आज हमारे लिए यीशु की सुनना आवश्यक है (मत्ती 17:5; यूह. 5:24; 12:48)।
2. यीशु ने कहा कि उद्धार पाने के लिए विश्वास करना और बपतिस्मा लेना आवश्यक है (मर. 16:16)।
3. बपतिस्मा लेने के बाद यीशु मसीही लोगों से विश्वासी बने रहने की अपेक्षा रखता है, परन्तु मसीही लोगों के पापों के लिए उपचार भी है (प्रका. 2:10: प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

आओ

अपनी कलीसिया के सिर (head), अपनी देह के सिर और अपने घर के मुखिया (head) यीशु

से मिलो

इफि. 1:22-23

प्रसंग: अपनी कलीसिया के सिर, अपनी देह के सिर और अपने घर या परिवार के प्रमुख के रूप में यीशु की भूमिकाओं पर ज़ोर देना।

परिचय:

1. ''सिर'' (प्रमुख) होने की अवधारणा से आम लोग परिचित होते हैं (उदाहरण के लिए, संगठनों, जानवरों तथा लोगों के सिर या हैड होते हैं जो देह का संचालन करते हैं, जैसे परिवार के मुखिया, आदि)।
2. ''सिर'' के लिए ''head'' के संज्ञा शब्द के लिए Merriam Webster's Collegiate Dictionary में 21 परिभाषाएं हैं, जिसमें ''हैड'' की विशेषण के रूप में चार परिभाषाएं, और ''हैड'' शब्द की क्रिया शब्द के रूप में 10 परिभाषाएं हैं, जो कि कुल 35 प्राथमिक परिभाषाएं हैं।
3. ''सिर'' के लिए ''हैड'' के अर्थों में जानवर या मानवीय देह का वह भाग जिसमें दिमाग और मुंह होता है, सिक्के का एक-एक पहलू, सिरों की गिनती करते हुए व्यक्ति, किसी चीज़ का ऊपरी भाग जैसे किसी चीज़ के पैर का सिरा या सामने का भाग, निर्देशक या लीडर, किसी चीज़ का मुख्य भाग, किसी चीज़ का सिरा, जहाज़ के ऊपर का शृंगार, सामान की जगह, अखबार की सुर्खियां, ऊपर तक जाती कोई चीज़, मशीनरी के साथ का सामान, सिर कलम करना या काटना, यात्रा के लिए निर्धारित मार्ग, आरम्भ करके किसी दिशा में जाना।
4. बाइबल यीशु मसीह को अपनी कलीसिया के सिर, अपनी आत्मिक देह के सिर और अपने आत्मिक घर या परिवार के सिर के रूप में दिखाती है।
   क. ''head'' शब्द की कई परिभाषाएं यीशु मसीह के कलीसिया से अपने सम्बन्ध पर लागू होती हैं जो उसकी आत्मिक देह और उसका आत्मिक परिवार है।
   ख. बाइबल में बताए गए ''शब्द'' से यीशु मसीह की भूमिकाओं की मेल खाती परिभाषाओं को मिलाते हैं।

मुख्य भाग:

I. यीशु मसीह अपनी कलीसिया का सिर है।

क. ईश्वरीय प्रकाशन के द्वारा प्रेरित पौलुस ने साफ़-साफ़ और बार-बार लिखा कि यीशु मसीह कलीसिया का सिर है।

1. इफिसियों की पत्री के दो अध्यायों में पौलुस ने पुष्टि की कि यीशु मसीह कलीसिया का सिर है (इफि. 1-22-23; 5:23)।
2. इफि. 1:22-23 और 5:23 में प्रेरित पौलुस ने ''कलीसिया'' और ''देह'' शब्दों का इस्तेमाल अदल बदल कर किया।
3. कुलुस्से की कलीसिया को भी पौलुस ने ज़ोर देकर कहा कि यीशु मसीह कलीसिया का सिर है, जबकि वह देह का भी सिर है (कुलु. 1:18)।

ख. *अपनी कलीसिया का सिर केवल यीशु मसीह है।*

1. इसका अर्थ यह हुआ कि कलीसिया का दिमाग और चेहरा केवल यीशु मसीह है।
2. केवल हमारा प्रभु अपनी कलीसिया का निर्देशक या लीडर है।
3. कलीसिया में सबसे बड़ी सम्मान की जगह केवल यीशु ही है।
4. अपनी कलीसिया के सम्बन्ध में सबसे ऊपर केवल यीशु मसीह ही चढ़ा है।
5. *अपनी कलीसिया के सिर के रूप में केवल यीशु मसीह ही कलीसिया की दिशा या मार्ग को तय करता है।*

ग. पृथ्वी पर कोई दूसरा, और विशेष करके उस कलीसिया का जिसे यीशु ने बनाया, सिर नहीं है (उन धार्मिक अगुओं के विपरीत जो सिर या प्रमुख होने का दावा कर सकते हैं)।

II. यीशु मसीह अपनी आत्मिक देह का सिर है।

क. प्रेरित पौलुस ने ईश्वरीय प्रकाशन से साफ़-साफ़ और बार-बार लिखा कि अपनी आत्मिक देह का सिर यीशु मसीह ही है।

1. हम पहले ही यह देख चुके हैं कि प्रेरित पौलुस ने ''कलीसिया'' और ''देह'' शब्द का इस्तेमाल अदल-बदल कर किया है (इफि. 1:22-23; 5:23; कुलु. 1:18)।
2. कुलु. 2:19 के साथ-साथ इफि. 4:15-16 में प्रेरित पौलुस ने कलीसिया का वर्णन बहुत से अंगों वाली देह के रूप में किया जिसका सिर यीशु है (तुलना 1 कुरिं. 12:12-31: रोमि. 12:4-5)।

ख. *अपनी आत्मिक देह का सिर केवल यीशु मसीह है।*

1. इसका अर्थ यह हुआ कि अपनी आत्मिक देह का दिमाग और चेहरा केवल यीशु मसीह है।
2. अपनी आत्मिक देह का निर्देश या लीडर केवल हमारा प्रभु है।
3. अपनी आत्मिक देह में आदर की सबसे प्रमुख जगह केवल यीशु की है।
4. अपनी आत्मिक देह के सम्बन्ध में सबसे ऊंची जगह पर केवल यीशु मसीह है।
5. *अपनी आत्मिक देह के सिर के रूप में केवल यीशु मसीह ही अपनी आत्मिक देह की दिशा या मार्ग तय करता है।*

ग. पृथ्वी पर कोई दूसरा, और विशेषकर हमारे प्रभु की आत्मिक देह का सिर नहीं है (उन धार्मिक अगुओं के विपरीत जो प्रमुख या सिर होने का दावा करते हैं)।

III. अपने आत्मिक घर या परिवार का सिर यीशु मसीह है।

क. ईश्वरीय प्रकाशन से प्रेरित पौलुस ने साफ़-साफ़ और बार-बार लिखा कि यीशु मसीह

अपने आत्मिक घर या परिवार का सिर (मुखिया) है।

1. प्रेरित ने ''कलीसिया'' और ''परमेश्वर के घराने'' शब्दों का इस्तेमाल अदल बदलकर किया (1 तीमु. 3:15)।
2. 'परमेश्वर के घराने' शब्दों के बारे में रॉबर्टसन ने 1 तीमु. 3:15 के लिए लिखा गया है: ''सम्भवतया यहां पर 'परमेश्वर का घराना' यानी 'परमेश्वर का परिवार' है।''
3. इसी प्रकार से इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने माना कि यीशु मसीह ''अपने घर का अधिकारी'' है (इब्रा. 3:2-6)।
4. प्रेरित पतरस ने भी कहा कि मसीही लोग वे आत्मिक पत्थर हैं जिनसे मसीह का आत्मिक घर बना है (1 पत. 2:5)।

ख. अपने आत्मिक घर (या परिवार) का मुखिया केवल यीशु मसीह है।

1. इसका अर्थ यह हुआ कि अपने आत्मिक घर या परिवार का दिमाग और मुंह केवल यीशु मसीह है।
2. अपने आत्मिक परिवार का निर्देशक या लीडर केवल हमारा प्रभु है।
3. अपने आत्मिक घर में सबसे आदर की जगह केवल यीशु की है।
4. अपने आत्मिक परिवार में सबसे ऊंची जगह केवल यीशु मसीह की है।
5. अपने आत्मिक परिवार के मुखिया के रूप में केवल यीशु मसीह अपने आत्मिक घर की दिशा या मार्ग को तय करता है।

ग. हमारे प्रभु के आत्मिक घर या परिवार का सिर (प्रमुख) कोई दूसरा नहीं है, और विशेषकर पृथ्वी पर उन धार्मिक अगुओं के विपरीत जो प्रमुख होने का दावा करते हैं।

IV. यीशु मसीह के लिए बाइबल में ''सिर'' पदनाम और वचनों में भी मिलता है।

क. यीशु मसीह ''कोने के सिरे का पत्थर'' है (भजन 118:22; मत्ती 21:42-43; मरकुस 12:10; लूका 20:17; प्रेरि. 4:11; इफि. 2:20; 1 पत. 2:6-7)।

कोने का सिरा। दो दीवारों के कोने में लगा पत्थर जो उन्हें मिलाता है; विशेषकर, इमारत के मूल या आरम्भ के स्थान पर इमारत की नींव के एक कोने में लगा पत्थर (न्यू अंगर'स)।
कोने का पत्थर। कोने को जोड़ने वाला, जहां इमारत की दो दीवारें आपस में मिलती हैं। बाइबल के समयों में, इमारतें आम तौर पर कटे हुए चौरस पत्थरों से बनाई जाती थीं। कोने का पत्थर दो जुड़ने वाली दीवारों को मिलाने के द्वारा, पूरी इमारत को एक सीध में रखकर बनाने में सहायक होता (नैल्सन)।

1. भविष्यद्वाणी वाला यह पत्थर यीशु मसीह है जिसे यहूदी अगुओं ने नकार दिया परन्तु परमेश्वर ने चुन लिया (उत्प. 49:24; यशा. 28:16; रोमि. 9:33)।
2. यीशु मसीह उसी आत्मिक दीवार के कोने का पत्थर है जो जीवित मसीही लोगों के रूप में मसीह से बनती है (1 पत. 2:5-7)।

ख. यीशु मसीह ''हर एक पुरुष का सिर'' है (1 कुरिं. 11:3)।

ग. यीशु मसीह ''सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है'' (कुलु. 2:10)।

निष्कर्ष:

1. यह स्पष्ट है कि कलीसिया देह, घराना या परिवार, जिनमें से प्रत्येक का सिर यीशु मसीह है, एक ही ईश्वरीय संस्थान के अलग-अलग रूप हैं।
2. यीशु मसीह कलीसिया का सिर है, और कलीसिया और देह एक ही बात हैं, इसका अर्थ यह हुआ कि हमारा प्रभु अपनी आत्मिक देह का सिर भी है (इफि. 1:22-23)।
3. कुलु. 1:18 में यह जानकारी उल्टा करके दी गई है; यीशु मसीह देह का सिर है और देह और कलीसिया एक ही बात हैं, इसलिए हमारा प्रभु अपनी कलीसिया का सिर भी है।
4. यीशु मसीह अपने आत्मिक घर या परिवार का सिर है।
5. *बिना किसी शक के यीशु मसीह अपनी कलीसिया , अपने आत्मिकता, अपने घर या परिवार और हर चीज़ का चाहे जो भी हो, सिर है।*

निमन्त्रण:

1. यदि यीशु मसीह आपके जीवन का सिर नहीं है, तो आपको सुसमाचार की आज्ञा मानने की आवश्यकता है (रोमि. 6:17; 2 थिस्स. 1:7-9)।
2. यीशु मसीह आज्ञा मानने वालों का उद्धार करता है और उन्हें अपनी कलीसिया में मिला लेता है, जो कि उसकी आत्मिक देह और उसका आत्मिक परिवार है (इब्रा. 5:9; प्रेरि. 2:49)।
3. जो लोग पहले से वे आत्मिक पत्थर हैं जिनसे हमारे प्रभु का आत्मिक घर या परिवार बना है, उन्हें विश्वासी बने रहना आवश्यक है और यदि वे पाप करके ठोकर खाते हैं तो उन्हें मन फिराना आवश्यक है (प्रका. 2:10; प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

आओ
न्यायी यीशु
से मिलो
प्रका. 20:11-15

प्रसंग: अंत के दिन में मनुष्यजाति के न्यायी के रूप में यीशु मसीह को प्रतिष्ठा देने वाले वचनों पर ध्यान देना।

परिचय:

1. यह पाठ हमें प्रोत्साहित करता है कि ''आओ न्यायी यीशु से मिलो।''
2. ऐसा हम कुछ प्रश्न उठाकर करेंगे जिनके उत्तर हम बाइबल में से देखेंगे।

मुख्य भाग:

I. अंतिम न्याय के पक्का होने के बारे में बाइबल क्या बताती है?

क. बाइबल यह बताती है कि अंतिम न्याय वह ठहराया हुआ समय है जिसके लिए न तो कोई देर से आ सकता है और न उससे बच सकता है (इब्रा. 9:27)।

ख. अंतिम न्याय और यीशु मसीह का न्यायी होना मसीही शिक्षा की बुनियादी बातें हैं (इब्रा. 6:1-2)।

ग. अंतिम न्याय इतना सम्पूर्ण होगा कि ''मनुष्यों की गुप्त बातों'' और ''मनों के अभिप्रायों'' तक को जांचा जाएगा (रोमि. 2:16; 1 कुरिं. 4:5)।

बाइबल के सभी वचनों में अंतिम न्याय को ''पक्का'' (सभो. 11:9), विश्वव्यापी (2 कुरिं. 5:10), सच्चाई से (रोमि. 2:5), निर्णायक [1 कुरिं. 15:52] और अनन्तकालिक परिणामों वाला बताया गया है [इब्रा. 6:2), इसलिए हमें चाहिए कि अपने अविनाशी दिलचस्पियों की परवाह करके, अपने सामने रखे आश्रय की ओर भागें, अपने कीमती समय में सुधार करें, छुटकारा दिलाने वाले के गुणों पर निर्भर रहें और ईश्वरीय वचन के आदेशों को मानें, ताकि हम उसमें शांति पा सकें (ईस्टन)

अंतिम न्याय। मसीही थियोलोजी में अंतिम न्याय एक कार्य है जिसमें परमेश्वर सीधे तौर पर मानवीय इतिहास के साथ हस्तक्षेप करता है, इस संसार की गति को बिल्कुल रोक देता है, मानवीय जीवों का अनंत भविष्य तय करता है और उन्हें उनकी अंतिम स्थिति से मेल खाते माहौल में रख देता है (ISBE)

II. अंतिम न्याय में किस-किस का न्याय होगा?

क. अंतिम न्याय में जीवितों और मरे हुओं का न्याय होगा।

1. प्रेरित पतरस का प्रचार था (और आत्मा की प्रेरणा पाए इतिहासकार लूका ने इसे दर्ज किया) कि यीशु मसीह जीवितों और मरे हुओं का न्याय करेगा (प्रेरि. 10:42; तुलना 1 पत. 4:5)।

2. प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस को लिखा कि यीशु मसीह जीवितों और मरे हुओं का न्याय करेगा (2 तीमु. 4:1)।

ख. ''छोटे बड़े'' सब का न्याय होगा (प्रका. 20:12)।

ग. ''दुष्टों'' का न्याय होगा (2 पत. 3:7; यहू. 14-15)।

घ. ''जिन-जिन का न्याय होगा उनमें (1) बिना किसी अपवाद के आदम की पूरी संतान होगी (मत्ती 25:31-46; 1 कुरिं. 15:51, 52; प्रका. 20:11-15); और (2) नीचे गिराए हुए स्वर्गदूत शामिल होंगे (2 पत. 2:4; यहू 1:6)'' (ईस्टन)।

III. अंतिम न्याय का मानक क्या होगा?

क. आत्माओं का न्याय उसी के अनुसार होगा जो उन्होंने पृथ्वी पर रहते हुए अपने साथी मनुष्य के साथ व्यवहार किया।

1. यीशु मसीह ने अंतिम न्याय को लोगों के एक दूसरे विशेषकर साधनहीन लोगों के साथ, बर्ताव से सम्बन्धित दिखाया (मत्ती 25:31-46)।
2. लोगों का न्याय उसी के अनुसार होगा जो उन्होंने ''किया, चाहे अच्छा, चाहे बुरा'' (2 कुरिं. 5:10)।
3. उदाहरण के लिए, सुलैमान ने जवानों को सावधान किया कि वे चौकस रहें कि वे कैसा जीवन जीते हैं, क्योंकि परमेश्वर उनके व्यवहार को अंतिम न्याय में लाना याद रखेगा (सभो. 11:9)।

ख. लोगों का न्याय धर्म के अनुसार किया जाएगा।

1. प्रेरित पौलुस ने अथेने में यह प्रचार किया कि यीशु ''धर्म से जगत का न्याय करेगा'' (प्रेरि. 17:31)।
2. मनुष्य के धर्म और परमेश्वर के धर्म में फ़र्क है (रोमि. 10:3)।
3. मनुष्य के लिए धर्मी ठहराया जाने के लिए यीशु मसीह से उसकी शर्तों पर अपील करना आवश्यक है (2 कुरिं. 5:21)।

ग. हर किसी का न्याय उस ईश्वरीय प्रकाशन के अनुसार होगा जो उसे दिया गया था (प्रका. 20:12)।

घ. हर किसी का न्याय 'उसके कामों के अनुसार' होगा (प्रका. 20:12: सभो. 12:13-14; 2 कुरिं. 5:10)।

IV. अंतिम न्याय में न्याय कौन करेगा?

क. अंतिम न्याय में न्याय यीशु करेगा।

1. ईश्वरीय पिता ने न्याय की भूमिका यीशु को दी है और अंतिम न्याय करने का अधिकार उसे दिया है (यूह. 5:22, 27-29)।
2. हर कोई मसीह के न्याय आसन के सामने पेश होगा (रोमि. 14:10; 2 कुरिं. 5:10)।

ख. किसी को अंतिम न्याय को किसी दूसरे पर टाल देने की सुविधा या अधिकार नहीं है (याकू. 4:12)।

V. अंतिम न्याय का परिणाम क्या होगा?

क. अंतिम न्याय के परिणाम की केवल दो सम्भावनाएं है।

1. यीशु मसीह ने ''जीवन के पुनरुत्थान'' और ''दण्ड के पुनरुत्थान'' की दो सम्भावनाएं बताईं (यूह. 5:29)।
2. नहीं तो वचन अनन्तकालिक स्वर्ग और अनन्तकालिक नरक की बात करता है (मत्ती 23:23; 25:46; यूह. 14:3)।
3. वचन कहीं पर भी दो से बढ़कर सम्भव अनन्तकालिक ठिकानों को नहीं दिखाता, चाहे कुछ धार्मिक लोग यह कल्पना करते हैं कि चार या अधिक सम्भव अनन्तकालिक ठिकाने हैं।

ख. बाइबल में परमेश्वर के साथ अनन्तकालिक स्वर्ग में शामिल होने को अलग-अलग तरीके से दिखाया गया है।

1. प्रेरित पौलुस अंतिम न्याय में शाबाशी पाने वाले हर व्यक्ति को ''धर्मी न्यायी'' द्वारा ''धर्म का मुकुट'' दिए जाने की बात करता है (2 तीमु. 4:8)।
2. प्रेरित यूहन्ना ने यीशु के ''जीवन का मुकुट'' की बात करते हुए लिखा (प्रका. 2:10)।
3. प्रेरित पतरस ने इसे ''महिमा का मुकुट'' कहा (1 पत. 5:4)।

निष्कर्ष:

1. अंतिम न्याय में मनुष्यजाति के न्यायी के रूप में, अधिकार और ज़िम्मेदारी केवल यीशु मसीह के पास है।
2. अंतिम न्याय के बाद केवल दो सम्भावित अनन्तकालिक ठिकाने हैं।
3. अंतिम न्याय में मनुष्यजाति का न्याय उसी के अनुसार होगा जो या तो पृथ्वी पर रहते हुए उसने किया या जो नहीं कर पाया (मत्ती 25:31-46; याकू. 4:1-)।
4. अंतिम न्याय में मनुष्यजाति का न्याय परमेश्वर के प्रकाशन के अनुसार होगा जिसके तहत लोग अलग-अलग समयों में रहे (प्रका. 20:11-15)।

निमन्त्रण

1. अंतिम न्याय के लिए अपने आपको तैयार करने और बड़े न्यायी यीशु मसीह से मिलने की पक्की सम्भावना के लिए हम क्या कर सकते हैं?
2. पहले तो, हम मसीह के सुसमाचार की आज्ञा मान सकते हैं जिससे हमारे पाप मिटाए जा सकें और हम मसीही बन सकें (प्रेरि. 2:38, 41, 47; 11:26)।
3. दूसरा, मसीह के विश्वासी बने रह सकते हैं और फिर पाप में ठोकर खाने पर मन फिरा सकते हैं (प्रका. 2:10; 1 यूह. 1:9)।

आओ
श्रेष्ठ यीशु
से मिलो
कुलु. 1:18

प्रसंग: यीशु मसीह की विलक्षण और अतुलनीय भूमिका पर ज़ोर देना।

परिचय:

1. नेव'ज़ टॉपिकल बाइबल में यीशु मसीह के 250 नाम या पदनाम दिए गए हैं।
2. पिछले कई पाठों में हमने इन पदनामों में से केवल कुछ को ही देखा है: सृष्टिकर्त्ता, देहधारी होने से पूर्व परमेश्वर, देहधारी हुआ परमेश्वर, उत्तम गुरु, क्रूस पर, उद्धारकर्त्ता, मसीहा, राजा, महायाजक, बिचवई, सिफ़ारिश करने वाला, सहायक, व्यवस्था देने वाला, भविष्यद्वक्ता, अपनी कलीसिया का सिर, अपनी देह का सिर, अपने घराने का सिर और न्यायी।
3. यीशु मसीह के लिए ये सभी पदनाम जिन्हें हमने देखा है, और 200 से अधिक और नाम जिन्हें हमने हाल ही में नहीं देखा है, यीशु मसीह के श्रेष्ठ होने का संकेत देते हैं।
4. यहां पर आपको निमन्त्रण दिया जाता है कि ''आओ श्रेष्ठ यीशु से मिलो।''

मुख्य भाग:

I. ''श्रेष्ठ'' से हमारा क्या अभिप्राय है?

क. *Merriam Webster's Collegiate Dictionary* में ''श्रेष्ठता'' के लिए (''pre-eminence'') की परिभाषा, ''सबसे ऊंचे पद, पदवी या महत्व वाला होना'' के रूप में दी गई है।

ख. इब्रानी शब्दकोश में (''*mowthar,*'' जो केवल सभो. 3:19 और नीति. 14:23; 21:5 में मिलता है) ''preeminence के लिए शब्द की परिभाषा वस्तुत:, लाभ; प्रतीकात्मक रूप में, श्रेष्ठता'' के विचारों के साथ दी गई है (बाइबलसॉफ़्ट'स)।

ग. ग्रीक डिक्शनरी में ''preeminence'' की परिभाषा ''ऊंचे पद तथा प्रमुखता के अर्थ के साथ, पहले स्थान पर होना, 'पहला होना, श्रेष्ठ होना' '' के रूप में दी गई है (लौव और निडा)।

घ. एक और ग्रीक डिक्शनरी में ''preeminence'' की परिभाषा में इससे मिलता जुलता एक और शब्द जोड़ा गया है (''*proteuo*'' केवल कुलु. 1:18 में मिलता है): ''पद या प्रभाव में प्रथम होना'' (बाइबलसॉफ़्ट'स)।

II. किसी को भी वह श्रेष्ठता प्राप्त नहीं है जो यीशु मसीह को मिली है।

क. शैतान ने यीशु मसीह पर श्रेष्ठता चाही।

1. शैतान द्वारा यीशु मसीह पर फेंकी गई एक परीक्षा यीशु के उसे दण्डवत करने के बदले में हमारे प्रभु को इस संसार के सब राज्य देने की पेशकश की (मत्ती 4:8-9)।

2. राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में, यीशु मसीह ने फिर भी इस संसार से सब राज्यों पर विजय पा ली (1 तीमु. 6:15: प्रका. 11:15)।

ख. कई बार मसीही लोग भी उस श्रेष्ठता को पाना चाहते हैं जो केवल यीशु मसीह की है।

1. अफ़सोस की बात है कि दियुत्रिफेस की तरह कुछ मसीही लोग भी प्रभु की कलीसिया में श्रेष्ठ बनना चाहते हैं (3 यूह. 9-10)।
2. 3 यूहन्ना 9 में ''श्रेष्ठ'' के लिए यूनानी शब्द उससे मिलता जुलता है परन्तु कुलु. 1:18 में यीशु को दी गई ''श्रेष्ठता'' से अलग शब्द है।
3. 3 यूह. 9 में ''श्रेष्ठता'' के लिए शब्द मिश्रित शब्द ''philoproteuo'' है जिसका अर्थ ''प्रथम होना चाहने वाला, यानी पहचान का भूखा होना'' (बाइबलसॉफ़्ट'स)।
4. दियुत्रिफेस के नाम के साथ जुड़ा ''श्रेष्ठता'' का यह गलत इस्तेमाल केवल 3 यूह. 9 में मिलता है।

ग. अन्य धार्मिक लोग भी उस श्रेष्ठता को पाना चाहते हैं जो उचित रूप में केवल यीशु मसीह की है।

1. कैथोलिक पोप की एक पदवी ''Vicar of Christ'' (''विकार ऑफ़ क्राइस्ट'') है, जिसका अर्थ है: ''पोप का एक पद जो उसके श्रेष्ठ और विश्वव्यापी प्रमुख होने को दर्शाता है, मसीह की कलीसिया के ऊपर, आदर और अधिकार दोनों में'' (''विकार ऑफ़ क्राइस्ट'')।
2. मॉरमन चर्च में अपना ''नबी और प्रधान'' है: ''द चर्च ऑफ़ जीज़स क्राइस्ट ऑफ़ लेटर डे सेंट्स का वर्तमान नबी और प्रधान गोर्डन बी. हिंक ले है'' (''लिविंग प्रोफेट ऐंड अपोस्टल'')।
3. कई धार्मिक गुटों में ईश्वरीय नियम को बदलने और नई धार्मिक शिक्षा को लागू करने को प्राथमिकता देने को बढ़ावा देने वाले अगुओं को ऊंचा किया।
4. परन्तु अपनी कलीसिया का सिर और श्रेष्ठ यीशु मसीह ही है (कुलु. 1:18)।

घ. उचित रूप में कुछ अर्थ में पशु जगत के पाश्विक जंतुओं पर मनुष्यजाति की कोई श्रेष्ठता नहीं है।

1. बेशक वह संसार जिसमें हम रहते हैं जो विकासवादी आरम्भों में डूब गया है इस बात को समझता नहीं है, परन्तु मनुष्यजाति प्राणी जगत से श्रेष्ठ है क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्यजाति के अंदर ''जीवित प्राण'' रखा है (उत्प. 2:7; 1 कुरिं. 15:45)।
2. ''जीवित प्राण'' केवल मनुष्यों में ही है और इसमें मनुष्यजाति का आत्मिक स्वभाव है क्योंकि परमेश्वर ने प्राणी जगत सहित, शेष सृष्टि के सम्बन्ध में ऐसा ही नहीं किया।
3. हमारी मृत्यु और नाशवान अस्तित्व के कारण, मनुष्यजाति अन्य आत्मिक जीवों पर श्रेष्ठ होने का दावा नहीं कर सकती (भजन. 8:4-5; इब्रा. 2:6-7)।
4. मृत्यु के सम्बन्ध में मनुष्यजाति प्राणी जगत से अधिक मेल खाती है जब श्रेष्ठता पर विचार की बात आती है (सभो. 3:19)।

III. उचित रूप में केवल यीशु मसीह को ही श्रेष्ठ माना जा सकता है।

क. यीशु मसीह की श्रेष्ठता से महिमा देने वाले वचनों में स्पष्ट मिलती है।

1. भविष्यद्वाणी करते हुए, ज़कर्याह (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का पिता) ने यीशु मसीह को ''परम प्रधान'' कहा (लूका 1:76)।
2. यहां पर यीशु की श्रेष्ठता ''परम प्रधान'' की ओर से दी गई है [ASV] (बोल्स)
3. यीशु मसीह पर लागू होने वाले ''इकलौता'' वाले वचन उसके श्रेष्ठ होने की बात करते हैं (यूह. 1:14, 18; 3:16, 18; 1 यूह. 4:9)।

ख. एक अर्थ में यीशु मसीह की श्रेष्ठता परमेश्वर पिता और परमेश्वर पवित्र आत्मा से भी बढ़कर है।

1. यीशु मसीह ने परमेश्वर की महिमा और मानवीय सृष्टि की उससे विपरीत दीनता दोनों को भोगा है।
2. जिस कारण यीशु मसीह सइ बात में श्रेष्ठ है जो परमेश्वरत्व के अन्य सदस्यों सहित और सबसे बढ़कर है।
3. यीशु मसीह में, स्वर्ग और पृथ्वी की सब वस्तुएं उसके श्रेष्ठ होने की बात करती हैं (इफि. 1:10)।
4. ''इफिसियों और कुलुस्सियों जुड़वां पत्रियां हैं जो विचार और शैली में एक जैसी, मसीह की श्रेष्ठता को सराहती हैं ...'' (ISBE) जैसा कि कुलु. 1:18 और इफि. 1:10 की तुलना करने से पता चलता है।

ग. कुलु. 1:18 यीशु मसीह को श्रेष्ठ बताता है।

1. देह और कलीसिया का सिर (यीशु मसीह के लिए इस्तेमाल होने वाले अन्य सब पदवियों सहित, कई जिनका हमने अपनी शृंखला ''आओ यीशु से मिलो'' में देखा है) होने के कारण यीशु मसीह के श्रेष्ठ होने की बात करते हैं।
2. शारीरिक देह होने के कारण, जिस में उसने सृष्टिकर्त्ता होने के अलावा सृष्टि के रूप में अस्तित्व को अनुभव किया, फिर कभी न मरने के लिए जी उठा, यीशु मसीह भी अकेला श्रेष्ठ है।

   सिर, आदि, पहलौठा शब्द नई सृष्टि (जिसका जन्म उसके पुनरुत्थान में हुआ) में मसीह की श्रेष्ठता को दिखाते हैं (1 कुरिं. 15:22; प्रका 1:5; 3:14) (विक्लिफ)

3. ''सारी सृष्टि में पहलौठा, कलीसिया का सिर, और मरे हुओं में से जी उठने वाला पहला, होने के नाते मसीह हर बात में ('श्रेष्ठ') है'' (किट्टल ऐंड फ्रैड्रिक)

   ... सृष्टि की हर चीज़ के मालिक, प्रभु और प्रधान के रूप में मसीह परमेश्वर-मनुष्य है या मानवीय स्वभाव के लिए ठहराया गया, उसे सारी सृष्टि में श्रेष्ठता है और वह प्रधान है, भजन 2:7, 8; इब्रा. 1:2, 6. (पूले)

4. ''... कि वह हर बात में पहली जगह हो'' (बाउर, ग्रीक ऐंड डेंकर)।

घ. कई टीकाकार कुलु. 1:18 के अंतिम भाग में यीशु मसीह को दी गई श्रेष्ठता की बात करते हैं।

1:18 के अंतिम भाग का अनुवाद यह भी हो सकता है ''कि वह सब में श्रेष्ठ हो,'' जीवितों के साथ साथ मरे हुओं के बीच मसीह की श्रेष्ठता की बात करते हुए। मसीह की श्रेष्ठता सब

वस्तुओं और सब लोगों के बीच, जीवते और मरे हुओं में एक समान है (फिल्ड 152)

यहां पर मसीह की श्रेष्ठता की इस बड़ी बात का दूसरा पड़ाव शुरू होता है, पहले में सारी सृष्टि है, और इसमें नई आत्मिक सृष्टि यानी हमारे प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया है। (कॉफ़मैन)

''वह **स्वयं** (न कोई दूसरा) पहली बात में सब कुछ हो।'' दोनों विचारों में समय में प्राथमिकता और महिमा में प्राथमिकता के दोनों विचार: सृष्टि के संसार में पहले की तरह, अब नये बने संसार में (कुलु. 1:15; भजन 89:27; यूह. 3:13) (जिमिएसन, फॉस्सेट ऐंड ब्राऊन)

निष्कर्ष:

1. श्रेष्ठता में न तो पृथ्वी पर न स्वर्ग में और न ही शैतान की अतुलनीय यीशु मसीह के साथ कोई तुलना है।

   मसीहियत की श्रेष्ठता यानी उच्चतर शक्ति और आदर मसीह यीशु के कारण है। यह शिक्षा कुलु. 1:18 में स्थापित होती है। सृष्टि में, व्यक्तिगत रूप में, पद में, काम, सामर्थ और आदर सब बातों में, मसीह स्वर्गदूत और मनुष्य, या किसी भी अन्य सृष्टि से बढ़कर श्रेष्ठ है। (मैक्लिन्टॉक ऐंड स्ट्रॉन्ग)

2. यूनानी शब्द ''*proteuo*'' जिसका अर्थ है ''प्रथम होना'' (पद या प्रभाव में) और इसका अनुवाद नये नियम में केवल एक बार कुलु. 1:18 में ''प्रधान'' हुआ है और केवल यीशु मसीह के लिए लागू होता है जो श्रेष्ठ है (बाइबलसॉफ़्ट'स)

निमन्त्रण:

1. परन्तु यीशु मसीह आपके जीवन में श्रेष्ठ नहीं है यदि आप सच्चे मसीही नहीं है, और डिनोमिनेशन को मानने वाले असली मसीही नहीं हैं (प्रेरि. 11:26; 26:28; 1 पत. 4:16)।
2. यीशु और उसके प्रतिनिधि प्रेरित पतरस ने बताया कि मसीही कैसे बना जाए, जिसे यीशु अपनी कलीसिया में मिला ले (मर. 16:16; प्रेरि. 2:38, 41, 47)।
3. प्रेरित पतरस और प्रेरित यूहन्ना ने भी बताया कि मसीही लोगों द्वारा किए गए पापों को कैसे मिटाया जा सकता है (प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।
4. परमेश्वर करे कि यीशु मसीह सचमुच में आपके जीवन में श्रेष्ठ हो।

श्रेष्ठ मसीह

कुलु. 1:9–23

प्रसंग: कुलु. 1:15–17 की व्याख्या।

परिचय:

1. यीशु मसीह कौन है ?
2. क्या परमेश्वर (Deity) के रूप में उसने सृष्टि में बराबर योगदान दिया या वह सृजी गई वस्तुओं में से पहला था।
3. सृजित संसार अस्तित्व में कैसे बना रहता है ?

मुख्य भाग:

I. कुलु. 1:15, ''वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहलौठा है।''

क. यूह. 1:1–3, 10, 14, 17–18; फिलि. 2:6–11 और इब्रा. 1:1–14 को मिलाएं

ख. संदर्भ में यीशु मसीह के रूप में ''वह'' का परिचय दिया गया है (आयतें 12–14)।

ग. यीशु मसीह ''अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप'' है।

1. ''प्रतिरूप'' किसी चीज़ की प्रति या नकल होता है। हमारे पास प्रतियां बनाने वाली मशीनें (या फाटोस्टेट) होती हैं जिनसे असल की प्रतियां बनती हैं।
2. यीशु परमेश्वर की प्रति है (कुलु. 1:15); मसीही लोग यीशु की प्रतियां हैं (रोमि. 8:29)।
3. पौलुस रहस्यवादियों का खण्डन कर रहा था जो यीशु मसीह को सृजित जीव के रूप में मानते थे।
3. यीशु निजी तौर पर परमेश्वर को प्रकट करने आया; यीशु अदृश्य परमेश्वर का प्रत्यक्ष स्वरूप है (यूह. 14:9)।

घ. ''अदृश्य''

1. 1 तीमु. 1:17, इब्रा. 11:27 में भी ''अनदेखा'' इब्रा. 11:27
2. तीमु. 6:16, ''देख नहीं सकता''

ङ. ''पहलौठा''

1. पिता ने भविष्यद्वाणी की कि वह मसीह को अपना पहलौठा बनाएगा (भजन 89:27)।
2. परमेश्वर (Deity) के रूप में मसीह ने सृष्टि की रचना में सहायता की और बाद में शारीरिक देह धारण की (यूह. 1:1–3, 14)।
3. ''पहलौठा'' ''इकलौता'' (यूह. 3:6) और ''पहलौठा'' (इब्रा. 1:6) के बराबर है।

II. कुलु. 1:16, ''क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं।''

क. 1 कुरिं. 8:6 की तुलना करें; इफि. 3:9 और इब्रा. 1:2 को मिलाएं।

ख. ''सृष्टि हुई'' निर्माता की स्वामित्व से जुड़ा है।

ग. ''स्वर्ग'' में ऊंचाई का विचार है। आकाश या तारों से भरा आसमान।

घ. ''पृथ्वी'' का अर्थ जहां कि यहां है आकाश के विपरीत सारी पृथ्वी हो सकता है।

ङ ''देखी'' का अर्थ जो दिखाई देता है, ''अनदेखी'' अदृश्य है; ''देखी'' वाला ही शब्द पर नकारात्मक अर्थ वाले पूर्वसर्ग ''अ'' के साथ।

च. ''सिंहासन'' कुर्सी या राज्य को कहा गया है जिसके पांव रखने की चौकी हो।

छ. ''प्रभुताएं'' प्रभुत्व से सम्बन्धित है या जिसका शासन हो।

झ. ''प्रधानताएं'' का अर्थ पहले कुछ करना, हाकिम, प्रधान, अगुआ (कुलु. 2:10, 15; रोमि. 8:38; इफि. 6:12)।

ण. ''अधिकार'' दूसरों के लिए अधिकार से है जिनके लिए आज्ञा मानना आवश्यक है (1 पत. 3:22)।

ट. ''सारी वस्तुएं'' का अर्थ सब कुछ शामिल है (इफि. 1:10)।

ठ. ''के द्वारा'' का अर्थ के माध्यम से या के ज़रिये है (रोमि. 11:36; इब्रा. 2:10)।

III. कुलु. 1:17, ''वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती हैं।''

क. ''स्थिर रहती हैं'' का अर्थ है अनुमोदित, पूर्ण में भागों को एक करती; सृजी रहती, बनी रहती हैं।

निष्कर्ष:

1. यीशु मसीह हमारा सृजनहार है।
2. यीशु मसीह सारी सृष्टि में सबसे श्रेष्ठ है।
3. प्रधान (श्रेष्ठ) होने के कारण यीशु सृजित संसार पर विजय होगा (कुलु. 1:20; फिलि. 2:10: प्रका. 5:13)।
4. यीशु मसीह सृजित संसार को उसी सामर्थ के साथ बनाए रखता है जिसके द्वारा उसने इसे सृजा।
5. यीशु कलीसिया का सिर है (कुलु. 1:18)।
6. यीशु हमारा न्यायी होगा (यूह. 12:4 2; 2 कुरिं. 5:10)।
7. यीशु हमारा उद्धारकर्त्ता है (लूका 19:10; यूह. 4:42)।

निमन्त्रण:

1. सुसमाचार की आज्ञा मानो, जिसके द्वारा यीशु तुम्हारा भी उद्धारकर्त्ता बन सकता है (रोमि. 1:5; 16:26; 2 थिस्स. 1:8)।
2. गैर-मसीहियों को बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी गई है (प्रेरि. 10:48; रोमि. 6:1-1:)।
3. भटके हुए मसीहियों को विश्वास में लौटना आवश्यक है (याकू. 5:19-20)।

यीशु मसीह का अधिकार

यूह. 12:48

प्रसंग: बाइबल से दिखाना कि यीशु मसीह का अधिकार कहां तक है।

परिचय:

1. आज के समय में, सम्भवतया हर व्यक्ति यह मानता है कि बाइबल परमेश्वर का अंतिम, सम्पूर्ण, मुकम्मल, परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया ईश्वरीय और अचूक वचन है।
   - क. वैसे ही, बाइबल उस मसीही के लिए, जिसके लिए वह आत्मिक या धार्मिक मामलों में सच्चाई का पता लगाता है, मानक है।
   - ख. इस मामले में बाइबल के हर ईमानदार छात्र को यीशु मसीह के अधिकार को साबित करने के लिए बाइबल की गवाही काफ़ी है।
2. सम्भवतया आज के समय के सभी या कम से कम अधिकतर लोग पहले से ही मानते हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र, और धर्म में अधिकार उसके पास है।
   - क. इसलिए आज का अध्ययन उन लोगों के विश्वास पर ज़ोर देगा जो पहले से इस बात को समझते हैं कि कलीसिया के सम्बन्ध में जिसके ऊपर वह सिर है, सारा अधिकार यीशु मसीह के पास है (कुलु. 1:18)।
   - ख. इसके अलावा, कोई भी व्यक्ति जिसे यह पक्का विश्वास न हो या उसके मन में संदेह हो कि बाइबल की कलीसिया पर हाकिम कौन है, यह पाठ यीशु मसीह के अधिकार को मान्यता देते हुए उसके विश्वास को पक्का करेगा।
   - ग. हम यह जानते हैं कि बहुत सी शिक्षाओं में सफलतापूर्वक यीशु मसीह के अपनी कलीसिया पर अधिकार रखने की बात को सफलतापूर्वक नकारा जाता है, इसलिए आज कुछ लोगों के लिए इस बात पर उलझन में पड़ना सम्भव है (उदाहरण के लिए मनुष्यों के धर्मसार, सांसारिक मुख्यालय, डिनोमिनेशनों का प्रबन्ध)
3. सारा अधिकार या तो सम्पूर्ण हो या सौंपा गया हो (या दोनों) इसलिए हम अपनी कलीसिया के सिर के रूप में यीशु मसीह के पास होने वाले अधिकार की किस्म और दर्जे का पता लगाएंगे।

मुख्य भाग:

I. यीशु मसीह के पास सम्पूर्ण अधिकार है।

- क. परमेश्वरत्व के दूसरे रूप में, यीशु मसीह पिता और पवित्र आत्मा में समान अधिकारी है।
  1. परमेश्वरत्व का उल्लेख ईश्वरीय व्यक्तियों के बहुलता का संकेत देता है (प्रेरि. 17:2 9; रोमि. 1:20; कुलु. 2:9)।
  2. परमेश्वरत्व के व्यक्तियों की बहुलता उत्प. 1:26 में मिलती है।
  3. परमेश्वरत्व के तीन ईश्वरीय व्यक्ति मत्ती 28:19 में मिलते हैं।
- ख. पिता और पुत्र आत्मा के साथ समानाधिकारी के रूप में, यीशु मसीह के पास पिता और पवित्र आत्मा की तरह ही सम्पूर्ण अधिकार है।
  1. यीशु मसीह के पास महिमा, अधिकार और वह सब कुछ था जो संसार की सृष्टि से

पहले से परमेश्वर के पास था (यूह. 17:5)।

2. यीशु मसीह में पास परमेश्वर का रूप या सार है (फिलि. 2:6)।
3. यीशु मसीह परमेश्वर के तत्व की छाप है (कुलु. 1:15; इब्रा. 1:3)।

II. यीशु मसीह के पास सौंपा गया अधिकार है।

क. यीशु मसीह को स्वर्गीय पिता की स्वीकृति सौंपे गए अधिकार वाली है (मत्ती 3:16-17; 17:1-5)।

ख. यह सौंपा गया अधिकार ग्रेट कमीशन का आधार है (मत्ती 28:18-20)।

III. यीशु मसीह ने अपने लिए अधिकार का दावा किया, और प्रेरित पौलुस ने भी यीशु के पास अधिकार होने की बात की।

क. यीशु मसीह के आरम्भिक प्रचार में परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता के रूप में कम से कम बहुत सा अधिकार होने के उच्च दावे का प्रमाण मिलता है (मत्ती 4:17; तुलना 1:3-2)।

ख. यीशु मसीह ने परमेश्वर के पुराने नियम की आज्ञाओं को विस्तार देते हुए अधिकार के दावे की पुष्टि की (मत्ती 5:20-48, ''परन्तु मैं तुमसे कहता हूं'')।

ग. यीशु ने अपने लिए मनुष्यजाति का अनन्तकालिक न्याय करने के अधिकार का दावा किया (यूह. 12:48, मत्ती 7:21-23; 2 कुरिं. 5:10)।

घ. प्रेरित पौलुस ने लिखा कि यीशु मसीह के पास समय के अंत में अपने अनुयायियों को आराम और दुष्टों को दण्ड देने का अधिकार है (1 थिस्स. 4:16-17; 2 थिस्स. 1:7-9)

IV. यीशु मसीह के आश्चर्यकर्मों ने उसके अधिकार तथा उसकी मान्य शिक्षा की पुष्टि की।

क. आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य परमेश्वर के वचन को पक्का करना था।

1. मर. 16:17-18 में आश्चर्यकर्मों को बताने के बाद, यीशु ने कहा कि आश्चर्यकर्म परमेश्वर के वचन को पक्का करने के लिए थे (मर. 16:20)।
2. इब्रानियों के लेखक ने कहा कि आश्चर्यकर्मों ने पहले ही वचन को पक्का करना आरम्भ कर दिया था (इब्रा. 2:3-4)।

ख. यीशु मसीह ने आश्चर्यकर्म किए जिसके द्वारा उसने प्रकृति पर अधिकार को दिखाया।

1. हमारे प्रभु ने समुद्र के तूफ़ान को शांत किया (मत्ती 8:23-27)।
2. यीशु ने आश्चर्यकर्म के द्वारा हज़ारों लोगों को खिलाया (मत्ती 14:13-23; 15:32-38)।
3. यीशु पानी के ऊपर चला (मत्ती 14:24-36)।
4. हमारे प्रभु ने आश्चर्यकर्म से बीमारों को चंगा किया (यूह. 4:46-54; मत्ती 8:2-4; 9:2-8; यूह. 5:1-16)।
5. यीशु ने आश्चर्यकर्म से पानी को दाखरस में बदल दिया (यूह. 2:1-11)।

ग. यीशु मसीह ने आश्चर्यकर्म किए जिनके द्वारा उसने आत्मा के संसार पर अपने अधिकार को दिया (मर. 1:23-26; मत्ती 8:28-34; 9:27-34; 17:14-20)।

घ. यीशु मसीह ने आश्चर्यकर्म किए जिनके द्वारा उसने मृत्यु पर अपने अधिकार को दिखाया (लूका 7:11-17; मत्ती 9:18-26; यूह. 11:1-46)।

निष्कर्ष:

1. परमेश्वरत्व के एक सदस्य तथा पिता से अधिकार पाए हुए के रूप में यीशु मसीह के पास धर्म में पूर्ण अधिकार है।
2. यीशु मसीह के पास स्वर्ग और पृथ्वी में सारा अधिकार है (मत्ती 28:18)।
3. जब तक दुनिया रहेगी तब तक यीशु मसीह का अधिकार रहेगा (1 कुरिं. 15:24-28)।

निमन्त्रण:

1. यीशु मसीह के अधिकार को सामने रखकर हम या तो यीशु मसीह की शिक्षाओं को मान सकते हैं या उनके द्वारा दोषी ठहर सकते हैं (यूह. 12:4))।
2. यीशु मसीह के अधिकार को मानकर, गैर-मसीही लोग हमारे प्रभु के वचनों पर ध्यान लगाएंगे (मर. 16:16)।
3. यीशु मसीह के अधिकार को मानकर, भटके हुए मसीही यीशु की संगति में लौट आएंगे (1 यूह. 1:7-10)।

यीशु मसीह का पुनरुत्थान

1 कुरिं. 15:1-4

प्रसंग: हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के बारे में और जानना

परिचय:

1. यीशु मसीह का फिर कभी दोबारा न लौटने के लिए क़ब्र में से जी उठना, मसीहियत का निर्णायक पहलू है।
2. यदि यीशु मसीह क़ब्र में से जी न उठता, तो पाप से लदी, खोई हुई मनुष्यजाति को बिल्कुल कोई उम्मीद नहीं होनी थी!
   - क. चाहे यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, परन्तु उसके जी उठने के बिना मनुष्य की आशाएं सदा के लिए मिट्टी में मिल जानी थीं।
   - ख. चाहे यीशु मसीह भविष्यद्वाणी में बताया गया चिर प्रतिक्षित उद्धारकर्त्ता या मसीहा है, परन्तु बिना अपने पुनरुत्थान के उसने किसी का उद्धार नहीं कर सकना था।
   - ग. चाहे यीशु मसीह ने कलवरी के क्रूस पर अपना बहुमूल्य लहू बहा दिया, परन्तु बिना पुनरुत्थान के इसका खरीद मोल किसी काम नहीं होना था।
   - घ. चाहे यीशु मसीह ने अन्य सब भविष्यवाणियों को पूरा कर दिया था परन्तु पुनरुत्थान के बिना वह सब बेकार होना था।
   - ङ. चाहे पुरखाओं तथा यहूदी युग के तहत लोग वफ़ादारी से परमेश्वर की आज्ञा को मानते थे, परन्तु बिना यीशु मसीह के पुनरुत्थान के उनमें से कोई भी किसी को भी परमेश्वर के साथ स्वर्ग में अनन्तकाल के निकट नहीं ले जा पाना था।
   - च. *यीशु मसीह के पुनरुत्थान के बिना सब कुछ बेकार होना था!*
3. यीशु मसीह के पुनरुत्थान के बिना कलीसिया की स्थापना नामुमकिन थी।
4. यीशु मसीह का पुनरुत्थान खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के लिए उसके मिशन का असली चरम था (लूका 19:10)।
   - क. दूसरों के विपरीत जो मरकर जी उठे थे, यीशु मसीह दोबारा नहीं मरा।
   - ख. दूसरे लोगों के काम मृत्यु पर खत्म हो जाते हैं, परन्तु यीशु मसीह के साथ ऐसा नहीं है जिसे काम में क़ब्र से उसका अपना जी उठना शामिल था।
   - ग. यीशु मसीह का पुनरुत्थान शैतान को घातक या जानलेवा प्रहार था, और यह इस बात का आश्वासन है कि हम एक दिन क़ब्र में से जी उठेंगे।
5. क़ब्र में से जी न उठ पाना मसीहा और परमेश्वर का पुत्र होने के लिए यीशु नासरी को झूठा साबित कर देना था।
6. आसान शब्दों में कहें, *यीशु मसीह के पुनरुत्थान के बिना, कोई मसीहियत नहीं होनी थी!*

मुख्य भाग:

I. यीशु मसीह रविवार वाले दिन, 9 अप्रैल, सन 30 को क़ब्र में से जी उठा (या 33 ए.डी. निर्भर करता है कि हमारे कैलेंडर की गलती को ध्यान में रखा जाता है या नहीं)।

क. यीशु मसीह शुक्रवार, 7 अप्रैल को क्रूस पर चढ़ाया गया।
   1. उस दिन कई भयानक घटनाएं घटीं: भूकम्प, मन्दिर के पर्दे का बीच में से फट जाना, पूरे उस इलाके में अंधेरा छा जाना और मरे पवित्र लोगों का पूरे यरूशलेम में घूमना।
   2. अरिमतिया के यूसुफ़ और निकुदेमुस ने उस शाम 6:00 बजे सब्त का आरम्भ होने से पहले-पहले जल्दी से यीशु मसीह को दफ़ना दिया।

ख. शनिवार वाले दिन, 8 अप्रैल को, महासभा ने पिलातुस को चोरी करके यीशु मसीह की क़ब्र पर पहरा बिठाने के लिए कहा।
   1. यहूदी अगुओं को उम्मीद नहीं थी कि यीशु मसीह जी उठेगा, परन्तु उन्हें डर था कि चेले यीशु की लाश चुरा लेंगे और दावा करेंगे कि वह जी उठा है।
   2. पिलातुस ने तीसरे दिन के बाद तक पहरा देने के लिए क़ब्र के लिए सिपाही दे दिए।

ग. रविवार वाले दिन, 9 अप्रैल को यीशु मसीह जी उठा!
   1. संसार आज इस दिन को ''ईस्टर संडे'' कहता है, परन्तु बाइबल में से पवित्र दिन मानने के लिए याद करने का कोई धार्मिक निर्देश नहीं है।
   2. स्वर्गदूत ने कब्र पर मोहर लगे पत्थर को हटा दिया।
   3. पहरेदार प्रभु के जी उठने से भयभीत हो गए, परन्तु यूहदियों ने उन्हें यह कहने के लिए कि जब वे सो रहे थे यीशु के चेले उसके शव को चुरा ले गए, उन्हें घूस दी।
   4. यीशु की माता मरियम, मरियम मगदलीनी तथा अन्य स्त्रियां भोर होने से पहले क़ब्र पर गईं, परन्तु उन्हें क़ब्र खाली मिली।
   5. उन्होंने खाली क़ब्र की बात पतरस और यूहन्ना को बताई जो अपनी आंखों से देखने के लिए क़ब्र की ओर दौड़े।

II. जी उठा मसीह अपने जी उठने के दिन कई बार दिखाई दिया।

क. जी उठे मसीह को देखने वाली सबसे पहली मरियम मगदलीनी थी (मर. 16:9)।
   1. यीशु ने उसमें से सात दुष्टात्माएं निकाली थीं।
   2. उसने प्रेरितों को बताया परन्तु उन्होंने उस पर विश्वास न किया (मर. 16:10-11)।

ख. विश्वासी स्त्रियों की एक टोली ने भी जी उठे प्रभु को देखा (मत्ती 28:9-10)।

ग. यीशु दो चेलों को दिखाई दिया जब वे गांवों की ओर जा रहे थे, परन्तु जब उन्होंने दूसरे चेलों को बताया तो उन्होंने विश्वास न किया (मर. 16:12-13)।

घ. यीशु मसीह पतरस को दिखाई दिया (लूका 24:34)।

ङ. यीशु दस प्रेरितों को दिखाई दिया (यूह. 20:13-23)।
   1. यहूदा जिसने यीशु मसीह को पकड़वाया था, पहले ही मर चुका था
   2. थोमा शेष प्रेरितों के साथ नहीं था (यूह. 20:24)।

III. जी उठा मसीह अपने जी उठने के बाद 40 दिनों तक अपने आपको जीवित दिखाता रहा (प्रेरि. 1:3)।

क. 16 अप्रैल को, यीशु शेष ग्यारह प्रेरितों को दिखाई दिया, जिनमें थोमा भी था (यूह. 20:26-28)।

ख. बाद में यीशु गलील की झील में सात प्रेरितों को दिखाई दिया (यूह. 21:1-23)।

1. एक बार फिर बहुत सी मछलियां पकड़ी गईं।
2. यीशु ने पतरस से बार-बार यह पूछकर कि क्या वह मसीह से प्रेम करता है, वफ़ादार और विनम्र होने की आवश्यकता के साथ पतरस को प्रभावित किया।

ग. यीशु स्वर्गारोहण में ग्यारह प्रेरितों को दिखाई दिया (लूका 24; प्रेरि. 1)।

घ. स्पष्टतया यहूदा की जगह नियुक्त किए जाने वाले प्रेरित होने वाले व्यक्ति ने जी उठे प्रभु को देखा था क्योंकि प्रेरित होने के लिए यह एक शर्त थी (प्रेरि. 1:21-23)।

ङ. 500 से ऊपर भाइयों ने एक ही समय में जी उठे मसीह को देखा (1 कुरिं. 15:6)।

IV. जी उठा मसीह अपने स्वर्गारोहरण के बाद कुछ लोगों को दिखाई दिया।

क. पहले मसीही शहीद, स्तिफनुस ने, पथराव से मारे जाने से थोड़ा पहले जी उठे मसीह को देखा (प्रेरि. 7:55-56)।

ख. तरसुस वासी शाऊल (प्रेरित पौलुस) ने दमिश्क के मार्ग पर जी उठे प्रभु को देखा (प्रेरि. 9; 22; 26; 1 कुरिं. 15:22)।

निष्कर्ष:

1. यीशु मसीह की मृत्यु तथा उसके बाद उसके जी उठने की भविष्यद्वाणी की गई।
2. यीशु मसीह ने मनुष्य का रूप धरा, पृथ्वी पर रहा, मरा और जी उठा।
3. यीशु मसीह के शत्रुओं ने उसे क़ब्र में रखने की बेकार कोशिश की, और वे इस बात का कोई सबूत न दे पाए कि वह जी नहीं उठा।
4. यीशु मसीह का जी उठना उन दर्शनों से साबित हुआ जिनमें
   क. वह दिन के अलग-अलग घण्टों में दिखाई दिया।
   ख. वह कई अलग-अलग दिनों पर दिखाई दिया।
   ग. वह अपने चेलों के साथ चला, उनसे बातें की और उनके साथ खाना खाया।
5. वे चेले जिन्होंने उसकी मृत्यु का शोक मनाया था और उसके जी उठने के बारे में उन्हें संदेह था, उन्हें विश्वास हो गया कि वह जी उठा है, और वे जी उठने का बचाव करते हुए आवश्यकता पड़ने पर यातनापूर्वक मृत्यु मरने के लिए तैयार थे।
6. 500 से अधिक भाइयों ने जी उठे मसीह को एक ही समय में देखा था, जो किसी भी जज या ज्यूरी को संतुष्ट करने के लिए गवाहों का काफी बड़ा समूह है।
7. यीशु मसीह का जी उठना मसीहियत के बढ़ने का आधार बन गया।
8. यीशु मसीह के पुनरुत्थान के बिना, मसीहियत खोखली और बेकार होनी थी (1 कुरिं. 15:19)
9. मसीहियत का सार 1 कुरिं. 15:1-4 में मिलता है!

निमन्त्रण:

1. परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह आपके लिए मर गया और जी उठा ताकि आपके पाप मिटाए जा सकें।
2. यीशु मसीह का जी उठना आपके किसी काम का नहीं है, यदि आप या तो परमेश्वर के भटके हुए बालक बन गए हैं या आपने अपने पापों की क्षमा के लिए अभी बपतिस्मा नहीं लिया है (रोमि. 6:23; 1 यूह. 1:9; प्रेरि. 2:38)।

यीशु
पर ध्यान लगाए रखो
1 कुरिं. 11:1

प्रसंग: संसार में जीवन और व्यवहार के हर पहलू के लिए यीशु पर निर्भर होने पर ज़ोर देना।

परिचय:

1. अधिक समय नहीं हुआ जब ''यीशु पर ध्यान लगाए रखो'' में सहायता के लिए आभूषणों के ऊपर WWJD (''What Would Jesus Do?'' यानी ''यीशु क्या करेगा?'') लिखा होना आम होता था।
2. सचमुच में, थोड़ा सा ऐसा सहारा मिल जाना कोई बुरी बात नहीं है क्योंकि हमें संसार में जीवन और व्यवहार के हर पहलू में यीशु पर ध्यान लगाए रखने के लिए, जो भी कारण हो उसकी आवश्यकता है।
3. *आपका ध्यान कहां लगा है? क्या यह हर समय और हर जगह यीशु पर रहता है?*

मुख्य भाग:

I. उस आत्मिक संसार का ध्यान रखते हुए जिसकी ओर हम मुसाफिरों के रूप में अपने सांसारिक सफर में आगे बढ़ रहे हैं, यीशु पर ध्यान लगाए रखो।

क. हमें अपना ध्यान यीशु से कभी नहीं हटाना चाहिए।

1. नया नियम यीशु मसीह को मनुष्यजाति का सबसे बड़ा उदाहरण बताता है (1 पत. 2:21)।
2. हम यीशु के पीछे चल रहे दूसरे लोगों में यीशु को देख सकते हैं, जिससे हम और आसानी से यीशु के पीछे चल सकते हैं (1 कुरिं. 11:1; फिलि. 3:17)।
3. अन्य शब्दों में, जब वे लोग जिनके साथ हम संगति करते हैं, यीशु के पीछे चल रहे होते हैं तो हम भी और आसानी से यीशु के पीछे चल सकते हैं (1 कुरिं. 15:33; इब्रा. 6:12)।
4. यीशु हमारा बड़ा भाई है जो हमें सावधान करता रहता है (मत्ती 12:49-50; 25:40; रोमि. 8:29; इब्रा. 2:11)।

ख. यीशु पर अपना ध्यान लगाए रखने से, हम अपने अंदर यीशु के अधिक से अधिक गुणों को पा लेंगे।

1. हम दीनता और विनम्रता सीखेंगे (मत्ती 11:29; फिलि. 2:8; 2 कुरिं. 10:1)।
2. हम में वैसा ही प्रेम बढ़ना आवश्यक है, जो यीशु हमारे लिए रखता है (इफि. 5:2)

ग. जब-जब हम यीशु पर अपना ध्यान लगाए रखने में नाकाम रहते हैं, तब तब हमारे जीवन आपे से बाहर हो जाते हैं।

1. जब हम अपने जीवनों में यीशु पर ध्यान नहीं लगाए रहते, तो हमारे घर नशे और शराबखोरी, नैतिकताओं, गाली-गलौज, आदि से गंदे हो जाते हैं (गला. 5:19-21)।
2. यदि हम अपना ध्यान यीशु पर नहीं लगाए रखते तो हमारे वैवाहिक जीवन में समस्याएं खड़ी हो जाती हैं (मत्ती 19:4-6, 9; इफि. 5:25, 28, 31)।

3. यदि हम अपना ध्यान यीशु पर नही लगाए रखते हैं तो हम उतने अच्छे कर्मचारी और प्रबंधक नहीं हैं जितने हम हो सकते हैं (कुलु. 3:22-24)।
4. यीशु से ध्यान हटा लेने पर हमारे जीवन बिल्कुल वैसे नहीं रहते, जैसे हो सकते थे!

II. अपने पति/पत्नी के साथ अपने व्यावहारिक मेल-जोल को ध्यान में रखते हुए यीशु पर ध्यान लगाए रखो।

क. अपने साथी मनुष्यों के साथ हमारा एक दूसरे पर प्रभाव तभी बढ़ेगा यदि हम यीशु पर ध्यान लगाए रखेंगे।

1. हमारे लिए परमेश्वर से प्रेम रखना आवश्यक है, तभी हमारे साथ के लोग हम से पहले परमेश्वर की किसी भी अन्य आज्ञा को पूरा कर सकते हैं (मत्ती 22:37-40)।
2. मसीही लोगों के लिए आम तौर पर असहयोगी संसार में, जितना सम्भव हो, मेल कराने वाले होना आवश्यक है (रोमि. 12:18; 14:19; 1 कुरिं. 14:33; इफि. 4:3; 1 तीमु. 2:1-2; इब्रा. 12:14),

ख. संसार के कुछ लोग ऐसे हैं जिनके साथ आप यीशु पर अपना आदर्श सम्बन्ध नहीं बनाए रख सकते।

1. मसीही लोगों को ''अंधकार के निष्फल कामों में सहभागी'' होने की मनाही है (इफि. 5:11)।
2. मसीही लोगों को अधर्म के साथ असमान जुए में जुतने की मनाही है (2 कुरिं. 6:14-18)।
3. मसीही लोगों को अविश्वासी मसीहियों के साथ संगति रखकर उनके गलत कामों में उन्हें प्रोत्साहन देने की मनाही है (1 कुरिं. 5:11; 2 थिस्स. 3:6, 10, 14-15; रोमि. 16:17-18)।

III. सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने अपनी आराधना और सेवा को ध्यान में रखते हुए यीशु पर ध्यान लगाए रखो।

क. अपनी आराधना में यीशु पर ध्यान लगाए रखने का अर्थ यह है कि हम परमेश्वर की आराधना उसके अपने ठहराए हुए ढंग से करेंगे।

1. बाइबल के अनुसार परमेश्वर की अधिकृत आराधना को छोड़कर किसी भी अन्य बात को बाइबल में ''अपनी इच्छा के अनुसार आराधना'' कहकर उसकी निंदा की गई है (कुलु. 2:23; मत्ती 15:9)।
2. नये नियम की आराधना में प्रार्थना करना, प्रभु-भोज, प्रचार या वचन की शिक्षा देना, चंदा देना और गीत गाना शामिल हैं (प्रेरि. 2:42; 20:7; 1 कुरिं. 16:1-2; इफि.5:19: कुलु. 3:16)।

ख. मसीही सेवा में यीशु पर ध्यान लगाए रखने का अर्थ यह है कि हम इस जीवन में जो कुछ भी करते हैं उसमें ध्यान रखें कि हम पहले यीशु की सेवा कर रहे हैं।

1. यीशु की सेवा से बढ़कर हमारे लिए इस जीवन में कोई और वस्तु या व्यक्ति नहीं है जिस पर हम ध्यान दें (मत्ती 6:33; 10:37)।

2. मसीही लोगों के जीवनों में भले काम दिखाई देने चाहिए (तीतु. 2:7, 14; 3:1, 8, 14)।
3. भले काम परमेश्वर और उसके वचन में विश्वास किए जाने को दिखाते हैं (याकू. 2:14-16)।
4. भले काम स्वर्ग में परमेश्वर की महिमा करते हैं (यूह. 15:8)।

निष्कर्ष:

1. यीशु पर ध्यान रखने से पृथ्वी पर का जीवन बेहतर होगा और स्वर्ग में सनातन निवास के लिए तैयारी करने में सहायता मिलेगी।
2. अपने आत्मिक संसार को ध्यान में रखते हुए हमारे लिए यीशु पर ध्यान लगाए रखना आवश्यक है।
3. मानवीय जीवों के साथ अपने सम्बन्धों को ध्यान में रखते हुए हमें यीशु पर ध्यान लगाए रखना आवश्यक है।
4. अपनी आराधना और मसीही सेवा को ध्यान में रखते हुए हमें यीशु पर ध्यान लगाए रखना आवश्यक है।

निमन्त्रण:

1. कोई भी जो इस समय परमेश्वर का विश्वासी बालक नहीं है उसने पर्याप्त ढंग से यीशु मसीह पर ध्यान नहीं लगा रखा है।
2. यह विश्वास करके कि वह परमेश्वर का पुत्र है और पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेकर यीशु पर ध्यान लगाए रखो (मर. 16:16; प्रेरि. 2:38)।
3. मसीही के रूप में, विश्वासी बने रहकर और पाप करने पर मन फिराकर यीशु पर ध्यान लगाए रखो (प्रका. 2:10; प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

मसीह की दीनता

फिलिप्पियों 2:5-8

प्रसंग: यीशु मसीह की दीनता पर विचार करें, जिस कारण हमारे उद्धारकर्त्ता की दीनता, हमें अपने प्रतिदिन के जीवन में दीनता को अपनाने के लिए प्रेरणा देने के साथ-साथ, नमूने के रूप में उसे मानने का काम करती है।

परिचय:

1. बाइबली ''दीनता अहंकार या घमण्ड के बिल्कुल न होने का सुझाव देते हुए, विनम्र व्यवहार वाला गुण'' है (लोव ऐंड निडा)।
2. इसका अर्थ यह हुआ कि दीनता के द्वारा, यीशु मसीह ने अपने आपको वह बनने दिया, जिसके द्वारा पाप से लदे और खोए हुओं को छुड़ाया जा सके।
3. शायद बाइबल का कोई भी हवाला, यीशु मसीह की दीनता को फिलि. 2:5-8 से बेहतर नहीं बताता है।
4. हमारे प्रभु की दीनता हमारे अपने जीवनों में दीनता को अपनाने के लिए हमारे लिए सिद्ध नमूना है।
5. मसीह को मानने वालों के लिए, यीशु मसीह की दीनता पर ध्यान से विचार करना, दीनता को दिखाने के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा भी है।
6. दीनता को अपने मसीही जीवन में अपनाने से, पृथ्वी पर तो लाभ मिलते ही हैं, स्वर्ग में भी अनन्तकालिक आशिषें मिलती हैं।

मुख्य भाग:

I. ''जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली'' (फिलि. 2:5-8)।

क. ''तुम्हारा भी **स्वभाव** हो।''

1. ''स्वभाव।'' ''इसका अर्थ केवल अविवेकपूर्ण विचार नहीं, बल्कि नैतिक सरोकार या झलक है'' (वाइन)।
2. इस वचन का विषय, उस दीनता को, जो यीशु मसीह की है, परमेश्वर के बालक का स्थाई गुण होना बताया गया है।
3. दीनता हर मसीही का स्वाभाविक गुण होना चाहिए!

ख. ''जिसने परमेश्वर के **स्वरूप** में होकर भी।''

1. ''स्वरूप'' शब्द यूनानी भाषा के ''*morphe*'' (मॉर्फे) से लिया गया है और यह सार या तत्व के समान है।
2. यह वाक्यांश मसीह के परमेश्वर होने को दिखाता है, यानी यह कि उसमें वह सार या स्वभाव है, जो परमेश्वर को परमेश्वर बनाता है।

3. परमेश्वर होने के गुण में, पिता और यीशु मसीह के बीच, बिल्कुल कोई फ़र्क न तो था (और न है)।

ग. ''जिसने परमेश्वर के स्वरूप में **होकर** भी''

1. यहां पर ''होकर'' शब्द ''... बताई गई परिस्थितियों से पहले और इसके बाद की अस्तित्व या स्थिति दोनों वाला होने, या अस्तित्व में होने का अर्थ देता है। मसीह के परमेश्वर होने से सम्बन्धित, फिलि. 2:6 में यह महत्वपूर्ण है। 'जिसने परमेश्वर के स्वरूप (आवश्यक तथा विशेष रूप और स्वभाव) में होकर (अस्तित्व में) भी' वाक्यांश अपने साथ मसीह के परमेश्वरत्व के पूर्वपद यानी उसके देहधारण करने से पहले और उसके जन्म के समय और उसके बाद की घटना में परमेश्वरत्व के बरकरार रहने के दो पहलुओं को साथ लेता है ...'' (वाइन)।
2. वुएस्ट ने इसी विचार को लेकर आगे समझाया है।

   जिस समय प्रेरित कहता है कि हमारे प्रभु ने अपने आवश्यक यानी परमेश्वर होने के स्वभाव को जताया, वह उसके मनुष्य मसीह यीशु के रूप में देहधारी होने के लिए पृथ्वी पर आने से पहले का था। परन्तु यूनानी शब्द के इस्तेमाल से, जिसका अनुवाद ''होकर'' हुआ है, पौलुस अपने यूनानी पाठकों को यह बताता है कि हमारे प्रभु का ईश्वरीय होना उसके मानवीय रूप धारण करने के लिए पृथ्वी पर आने पर खत्म नहीं हुआ। यूनानी शब्द होकर का साधारण क्रिया शब्द नहीं, बल्कि एक ऐसा शब्द है जो वर्तमान में बढ़ी हुई पूर्ववर्ती स्थिति की बात करता है। यानी हमारे प्रभु ने परमेश्वर के सार को दिखाया जो उसमें उसके मनुष्य बनने से पहले ही नहीं, बल्कि मनुष्य बनने के बाद भी था, क्योंकि यही काम वह तब भी कर रहा था, जब फिलिप्पियों की पत्री लिखी जा रही थी। परमेश्वर के सार को दिखाने का अर्थ परमेश्वर के अधिकार का होना है, क्योंकि हमारे शब्द ''स्वरूप'' की परिभाषा के अनुसार, ऐसा अपने अंदर के स्वभाव से ही होता है। *आधुनिकतावाद के दावे का खण्डन करने के लिए कि मनुष्य बनने के समय हमारे प्रभु ने अपने परमेश्वर होने से अपने आपको शून्य कर दिया, यही शब्द काफी है।*

घ. ''परमेश्वर के तुल्य होने को अपने **वश में रखने की वस्तु** न समझा।''

1. यह वाक्यांश अपने आपको दो मेल खाते शब्द देता है।
2. परमेश्वर के तुल्य होना अपने लिए छीन के लेने वाला पुरस्कार नहीं था, क्योंकि परमेश्वरत्व के दूसरे व्यक्ति में वही सार या परमेश्वर होना बना रहा, जो कि पिता का भी था।
3. यानी परमेश्वर के साथ बराबरी होना कोई कब्ज़ा करने या ''पकड़कर रखने'' वाली चीज़ नहीं है (आर. वी. मार्जिनल रीडिंग)।
4. दूसरा, चाहे यीशु में परमेश्वर होने का सार या स्वभाव बना रहा, परन्तु उसने ईर्ष्यापूर्वक ढंग से इसका पहरा नहीं दिया कि वह देहधारी होने और मनुष्यजाति के लिए प्रतिनिधिक बलिदान बनने के लिए परमेश्वर के रूप में आराधना किए जाने से स्वयं को वंचित कर ले।

ङ: ''परमेश्वर के **तुल्य**।''

1. यूनानी में सचमुच में परमेश्वर के साथ ''समानताएं'' हैं।
2. फिर से, इस आयत में मसीह के परमेश्वर होने पर ज़ोर दिया गया है।

च. ''बरन अपने आप को शून्य कर दिया।''

1. यहां पर आर. वी. का कहना है कि मसीह ने ''अपने आप को शून्य कर दिया,'' जो यह सुझाव देने वाला भ्रमित विचार हो सकता है कि यीशु किसी प्रकार परमेश्वर के सनातन सार या स्वभाव से जो उसमें बना रहा, कम हो गया।
2. KJV में इस विचार को सही ढंग से देते हुए कि अपने सनातन सार या स्वभाव (यानी परमेश्वर होने) के बावजूद, यीशु ने ऐसे पदनाम और भूमिका को स्वीकार किया, जो परमेश्वर के रूप में उसके रुतबे से कहीं कमतर था।
3. ''जब हम इस तथ्य पर विचार करने के लिए आएंगे कि हमारे प्रभु ने ऐसी चीज़ को छोड़ दिया, तो हम पाएंगे कि वह ईश्वरीय सार का *अधिकार नहीं* बल्कि उसकी *अभिव्यक्ति* थी'' (वुएस्ट)।

छ. ''और **दास का स्वरूप** धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।''

1. यीशु ने अपने आपको परमेश्वर होने के गुणों से वंचित करने के बजाय (चाहे उसने उस आराधना को करवाना छोड़ दिया, जो परमेश्वर होने के नाते उसका अधिकार था), सृजित जीव यानी मनुष्यजाति का अतिरिक्त सार और भूमिका अपने ऊपर ले ली।
2. ''मनुष्य की समानता'' को अपनाने का अर्थ है कि यीशु ने अपने ऊपर मनुष्यजाति (''*anthropos*'') की ''सूरत'' को ओड़ लिया।
3. यह, और यह बताता है कि यीशु मसीह ने देहधारी होने की और भूमिका को चाहे अपना लिया, परन्तु उसने परमेश्वर होने के सार या स्वभाव को बरकरार रखा।
4. ''उसका मनुष्य होना उसके परमेश्वर होने जितना ही वास्तविक था'' (रॉबर्टसन)।

झ. ''और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया।''

1. देहधारी होने के द्वारा। यीशु को मनुष्यों ने देह तथा अन्य कई मानवीय गुणों में देखा।
2. इस यानी देहधारी होने की बात को मान लेना, यह नहीं बताता कि यीशु वास्तव में क्या या कौन था, या वह उस शारीरिक रूप से बढ़कर है कि नहीं, जिसमें वह प्रकट हुआ।
3. परमेश्वर और परमेश्वर के लिए योग्य आराध्य होने के बावजूद, फिर भी परमेश्वर की सृष्टि के सबसे सुन्दर भाग मनुष्य का रूप धारण करने की बात, चाहे सृष्टि बनाम सृष्टिकर्त्ता ही है, पर यीशु ने अपने आपको दीन किया।

ङ: ''यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।''

1. मसीह का दीन होना भटकी हुई सृष्टि यानी मनुष्यजाति के लिए वैकल्पिक बलिदान बनने के लिए उसके तैयार होने पर चरम पर पहुंचा।
2. इस आज्ञाकारी दीनता का चरम मनुष्य द्वारा, जिसके उद्धार के लिए उसने स्वर्ग को छोड़ा था, उसे रोमी क्रूस पर नीच, अति दु:खदायी मृत्यु दी जानी थी।
3. ''परमेश्वर के सिंहासन की सबसे बड़ी जगह।'' यीशु सबसे तुच्छ मानी जाने वाली मृत्यु, अर्थात श्रापित क्रूस पर दण्ड पाए अपराधी वाली मृत्यु मरने के लिए, इतना नीचे तक आ गया'' (रॉबर्टसन)।

II. यीशु मसीह कई प्रकार से हमारा सिद्ध नमूना है।

क. बाइबल में यीशु को अपने मानने वालों द्वारा, उसका अनुसरण किए जाने वाला आदर्श नमूना बताया गया है।

1. यीशु हमारा आदर्श है (1 पत. 2:21)।
2. प्रेरित पौलुस ने घोषणा की कि दूसरे मसीहियों के नमूने को मानकर भी, जो मसीह के पीछे वफ़ादारी से चल रहे हों, मसीही लोग परोक्ष रूप में मसीह के नमूने पर चल सकते हैं (1 कुरिं. 4:16; 11:1)।

ख. फिलि. 2:5-8 में, ''पौलुस मनुष्य के श्रेष्ठ उदाहरण के रूप में यीशु को दिखाता है।''

1. अपनी सेवकाई के दौरान हमारे प्रभु ने चेलों के पांव धोकर दीनता का सबसे बड़ा नमूना दिया (यूह. 13:1-17)।
2. मसीह द्वारा दिखाई गई दीनता, विशेषकर उसकी प्रतिनिधिक मृत्यु के सम्बन्ध में, भी भविष्यद्वाणी का विषय था (यशा. 53:7-9)।

III. जो कुछ यीशु ने हमारे लिए किया, उसे देखते हुए समझदार लोगों को चाहिए कि वे भी वैसे ही जवाब दें।

क. फिलि. 2:5-8 में दिखाई गई यीशु मसीह की दीनता का कारण मनुष्य की आत्मिक भलाई है।

ख. जिस दीनता को अपनाने का प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पियों से आग्रह किया, उसका कारण फिलिप्पी में मसीही लोगों की आत्मिक भलाई था।

ग. *विचार यह था कि यदि यीशु मसीह हमारी भलाई के लिए मनुष्यजाति के लिए इतनी दीनता दिखा सकता है, तो निश्चय ही अपनी सामान्य, आत्मिक भलाई के लिए मसीही लोग भी एक दूसरे के प्रति दीनता को दिखा सकते हैं।*

घ. दीनता का न होना परमेश्वर के लोगों की किसी भी मण्डली के लिए विभाजनकारी और आत्मिक जीवन के लिए विनाशकारी है।

IV. परमेश्वर के हर बालक को यह देखने के लिए कि वह मसीह की दीनता का अनुकरण कर रहा है या नहीं, बीच बीच में अपने जीवन की समीक्षा करते रहना आवश्यक है।

क. प्रेरित पौलुस ने न केवल ''दीनता'' के सम्बन्ध में, बल्कि सभी मसीही गुणों के लिए लिखा कि मसीही लोग अपने आपको परखें (2 कुरिं. 13:5)।

1. परमेश्वर के बालक के लिए मसीही जीवन जीते और उसमें सुधार करते हुए, कि कहीं स्वर्ग को पाने में नाकाम न हो जाएं, बीच बीच में अपने व्यवहार को नये नियम के मानक के साथ मिलाना सहायक हो सकता है।
2. *अंतिम परीक्षा* के लिए आवश्यक है कि *अपने आपको परखने* के बाद जो भी सुधार आवश्यक हो, वह सुधार लाया जाए, क्योंकि उसके बाद सुधार के लिए कोई और अवसर नहीं मिलने वाला।

ख. कई भेद खोलने वाले चिह्नों से पता चल जाता है, जब मसीही लोगों, मण्डलियों तथा भाईचारे के लिए बाइबली दीनता को अपनाने के लिए और कोशिश करना आवश्यक होता है।

1. जैसे परमेश्वर के ईश्वरीय वचन में दिखाई गई उसकी इच्छा की जगह धर्म में मनुष्य

की इच्छा को बदला जा सकता है, उसी प्रकार से *बनावटी दीनता* को भी दिखाया जा सकता है (कुलु. 2:23)।

2. अहंकारी घमण्ड, दम्भ, हेकड़ी, अपने आपको महत्व देना या अपने आपकी सेवा करना बाइबली दीनता को पीछे कर देता है जो कि सफल मसीहियत के विपरीत है (याकू. 4:6)।

ग. इसलिए नया नियम परमेश्वर के बालकों के लिए बाइबली दीनता को अपनाने के लिए शिक्षाओं से भरा पड़ा है।

1. ''हे नवयुवको, तुम भी प्राचीनों के आधीन रहो, वरन तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बांधे रहो, क्योंकि परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है। इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए'' (1 पत. 5:5-6)।
2. ''जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा'' (मत्ती 23:12)।
3. ''इसलिए परमेश्वर के चुने हुओं के समान जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो'' (कुलु. 3:12)
4. ''प्रभु के सामने दीन बनो, तो वह तुम्हें शिरोमणि बनाएगा'' (याकू. 4:10)।
5. ''मैं तुम से सच कहता हूं कि जब तक तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा'' (मत्ती 18:3-4)।

निष्कर्ष:

1. दीनता के द्वारा यीशु मसीह ने अपने आपको वह माध्यम बनने दिया, जिससे पाप से लदे तथा खोए हुओं का उद्धार हो।
2. यीशु मसीह दीनता का हमारा सबसे बड़ा उदाहरण है।
3. मसीह का दीन, वैकल्पिक बलिदान हमारे लिए भी, अपने जीवनों में बाइबली दीनता को अपनाने के लिए प्रेरणा देने वाला होना चाहिए।

निमन्त्रण:

1. बाइबली दीनता छुटकारे के लिए पहली आवश्यकता है, क्योंकि बिना दीन हुए, कोई सुसमाचार की आज्ञा को नहीं मान पाता।
2. इब्रा. 5:8-9 बताता है कि यीशु आज्ञा मानने वालों का उद्धार करेगा, जबकि 2 थिस्स. 1:7-9 बताता है कि यीशु आज्ञा न मानने वालों को दण्ड देगा।
3. हम में से हर किसी को ''सच्चाई को मानना'' आवश्यक है (रोमि. 6:17)।
   क. गैर-मसीही को ... (मर. 16:15-16; रोमि. 10:9-10; प्रेरि. 2:38)।
   ख. परमेश्वर के भटके हुए बालक को ... (प्रेरि. 8:22; याकू. 5:20-21)।

यीशु मसीहः दीनता का हमारा नमूना

फिलिप्पियों 2:5-8

प्रसंगः यीशु मसीह के जीवन में दीनता के प्रदर्शन के द्वारा इसके विषय का अध्ययन करना और दीनता के बारे में जो कुछ हम सीखते हैं, उसे अपने जीवनों में लागू करना।

परिचयः

1. एल. आर. विल्सन ने हमारे प्रभु के लिए कहा है, ''यीशु ने कभी भी ऐसा कोई नियम नहीं बताया जिसका उसने अपने जीवन में उदाहरण न दिया हो।''
2. फरीसियों के विपरीत, यीशु जो कुछ प्रचार करता था, उसे स्वयं भी करता था (मत्ती 23:3-5; 16:24)।
3. सुसमाचार के विश्वासी प्रचारक यीशु मसीह के नमूने को मानते हैं और लोगों को भी यीशु के पीछे चलने को प्रोत्साहित करते हैं (1 कुरिं. 4:16; 11:1)।
4. अन्य खूबियों के साथ, यीशु मसीह ने बड़ी ही सुन्दरता के साथ दीनता को दिखाया (फिलि. 2:5-8)।

मुख्य भागः

I. यीशु मसीह ने बड़े चौंकाने वाले ढंग से दीनता को दिखाया और सिखाया जब उसने अपने चेलों के पांव धोए (यूह. 13:4-17)।

क. एक पल के लिए इतिहास में पीछे पांव धोने को नहीं बल्कि पांवों के नमूने पर विचार करें!

1. लगभग 4000 वर्ष पहले, अब्राहम ने आतिथ्य के साथ पानी दिया था ताकि उसके स्वर्गीय मेहमान अपने पांवों को धो सकें (उत्प. 18:1-5)।
2. दो सदियों के बाद, जब यूसुफ़ मिस्र का हाकिम बना तो उसने अपने भाइयों के पांव धोने के लिए पानी दिया (उत्प. 43:24)।
3. लगभग 3,000 वर्ष पहले, अबीगैल ने पांव धोए (1 शमू. 25:41)।
4. लगभग 2,000 वर्ष पहले, एक स्त्री ने अपने आंसुओं तथा अपने बालों के साथ यीशु के पांव धोए, जिस पर हमारे प्रभु ने अपने मेज़बान को किसी के घर में प्रवेश करने से पहले पांव धोने के लिए रस्मी और आतिथ्य के साथ सम्मान न देने पर डांट लगाई (लूका 7:44-46)।
5. कुछ साल बाद प्रेरित पौलुस ने विधवा के गुणों में पवित्र लोगों (मसीही लोगों) के पांव धोने को शामिल किया (1 तीमु. 5:9-10)।

ख. बाइबल से पांव धोने का सामान्य कारण पता चलता है।

1. पांव तब भी धोए जाते थे और आज भी, क्योंकि वे गंदे होते थे और उन्हें साफ़ करना आवश्यक होता है।
2. प्राचीनकाल में जूते सैंडल के होते थे, और रास्ते कच्चे होते थे, जिस कारण किसी के घर में प्रवेश करने पर जूते उतारकर पांव धोना एक रस्म बन गई।
3. दयालु मेज़बान पानी और अंगोछा या तौलिया रखते थे; सेवकों द्वारा मेहमानों के पांवों को धोना आदर सत्कार की बात माना जाता था; और मेज़बान के स्वयं अपने

मेहमानों के पांव धोना बहुत आदर सत्कार और दीनता दिखाना माना जाता था।

ग. यीशु मसीह के अपने चेलों के पांव धोने से पहले उस घटना को समझने के लिए पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है।

1. मसीह के रूपांतर के बाद, चेलों में इस बात पर झगड़ा हुआ कि राज्य में उनमें से सबसे बड़ा कौन है, और अंत में उन्होंने यीशु को इसका फैसला करने के लिए कहा (मत्ती 18:1-4)।
2. फिर याकूब और यूहन्ना की माता ने विनती की कि यीशु उसके पुत्रों को राज्य में प्रमुख जगहों पर लगाए; इस विनती से दूसरे चेले याकूब और यूहन्ना पर गुस्सा करने लगे (मत्ती 20:20-28)।
3. यीशु और उसके चेलों ने अंतिम फसह मनाने और प्रभु-भोज का आरम्भ होने वाली शाम को ही हमारे प्रभु के चेले, अभी भी इस पर बहस कर रहे थे कि राज्य में सबसे बड़ा कौन है (लूका 22:24-30)।

घ. जब चेले आपस में झगड़ रहे थे कि प्रभु के राज्य में बड़ा कौन है, तभी यीशु ने भीड़ में सबसे छोटे व्यक्ति की मुद्रा बनाई (या सेवक-दास) और चेलों के पांव धोए।

1. फसह मनाने के लिए एक शर्त पांवों में जूते पहने होना आवश्यक होता था (निर्ग. 12:11)।
2. फसह के भोज के बाद यीशु ने और उसके चेलों ने अपने जूते उतारे होंगे और उसने उनके पांव धोए होंगे। परन्तु चेले इस बात पर बहस करने में कि कौन सबसे बड़ा है या साथी चेलों के पांव धोने के लिए अपने आपको दीन करे इस बहस में लगे हुए थे। इसलिए यीशु ने चेलों के पांव धोने के लिए अपने आपको दीन किया जिससे चेलों के बीच झगड़ा खत्म हो गया।

ङ. पांव धोने के बारे में बाइबल से कई ठोस निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

1. पांव धोना साफ़-सफाई और मेहमानदारी में शामिल होता था।
2. प्रभु ने पांव धोने का आरम्भ नहीं किया बल्कि यह तो मसीह से हज़ारों साल पुरानी परम्परा थी।
3. पांव धोना सेवकों द्वारा किया जाने वाला तुच्छ काम होता था।
4. यीशु मसीह ने अपने चेलों को दीनता का नमूना देने के लिए उनके पांव धोए। इस नमूने की उन्हें बहुत अधिक आवश्यकता थी, क्योंकि वे आपस में इस बात पर झगड़ रहे थे कि उनमें से राज्य में बड़ा कौन है (यूह. 13:15)।

च. न तो पांव धोना और न पांवों का धोना बाइबल की कलीसिया की रीतियां हैं।

1. प्रभु ने कलीसिया में पांव धोने का आरम्भ नहीं किया, क्योंकि कलीसिया को आरम्भ होने में अभी दो और महीने थे।
2. यीशु ने यह कहते हुए कि ''मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' आज्ञा दी कि उसके चेले कलीसिया में बाद में प्रभु-भोज को मनाएं। परन्तु उसने पांव धोने के बारे में ऐसा नहीं कहा कि ''मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' (लूका 22:19; 1 कुरिं. 11:24-25)।
3. बाइबल की कलीसिया को बाइबल में से प्रभु-भोज को मनाते हुए देखा जा सकता

है। परन्तु बाइबल को कलीसिया के लिए धार्मिक रीति के रूप में पांव धोने को मनाते हुए नहीं देखते।

4. पत्रियों में पांव धोना आतिथ्य सत्कार के एक कार्य के रूप में मिलता है (1 तीमु. 5:9-10)।

II. यीशु मसीह ने अलग-अलग ढंग से दीनता की शिक्षा दी और नमूना दिया।

क. यीशु मसीह ने बालकों जैसी दीनता की शिक्षा दी (मत्ती 18:1-4; मरकुस 9:33-37)।

1. चेले यह बहस कर रहे थे कि उनमें से सबसे बड़ा कौन है।
2. यीशु मसीह ने उन्हें बताया कि राज्य में सबसे बड़ा होने के बजाय बच्चे की तरह दीन होना आवश्यक है।
3. इसके अलावा यीशु ने अपने चेलों को बताया कि बिना दीनता के, वे स्वर्ग के राज्य में भी प्रवेश नहीं कर सकते (मत्ती 18:3)।

ख. यीशु मसीह ने क्रूस पर अपनी मृत्यु में अपने आपको दीन किया।

1. प्रभु ने यरूशलेम में दीन होकर प्रवेश किया (जक. 9:9; मत्ती 21:5)।
2. यीशु ने दीनतापूर्वक अपने आपको क्रूस पर चढ़ने दिया (प्रेरि. 8:32-33; 2 कुरिं. 8:9: फिलि. 2:7-8)।

III. यीशु मसीह ने विशेषकर धार्मिक अगुओं को दीनता दिखाने की शिक्षा दी।

क. यीशु मसीह ने धार्मिक पदवियों को गलत बताया और भाइयों के बीच दीनता को बढ़ावा दिया (मत्ती 23:1-12)।

1. धार्मिक नियम ''तुम सब भाई हो'' मसीह के चेलों की विशेषता होनी थी (मत्ती 23:8)।
2. यीशु के समय के ''रब्बी,'' और ''स्वामी'' की तरह धार्मिक पदवियों के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्द, जैसे रैवरेंड, डॉक्टर, ब्रदर, इवैंजलिस्ट तथा मनिस्टर आज परमेश्वर को स्वीकार्य नहीं है (चाहे ब्रदर (भाई), इवैंजलिस्ट (सुसमाचार प्रचारक) और मिनिस्टर (सेवक) शब्दों का प्रयोग विवरणात्मक शब्दों के लिए किया जा सकता है)।

ख. आरम्भिक कलीसिया में बेदीनी (विश्वास त्याग) कलीसिया की लीडरशिप में बड़ा बनने की इच्छा के कारण ही फैली थी।

1. दियुत्रिफेस बड़ा आदमी बनना चाहता था और उसने कलीसिया में पद पाने की कोशिश की थी (3 यूह. 9-10)।
2. प्रेरित पौलुस ने भविष्यद्वाणी की कि बड़ा बनने की प्राचीनों (ऐल्डरों) की इच्छा में बेदीनी होनी थी (प्रेरि. 20:30)।

निष्कर्ष:

1. यीशु मसीह दीनता का सबसे बड़ा उदाहरण है।
2. सचमुच में मसीह के लोगों को मसीह के जैसे बनने के लिए, अपने जीवनों में मसीह के जैसी

दीनता को अपनाना आवश्यक है।

3. नम्रता निर्बलता का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह नम्रता या दीनता एक गुण है (मत्ती 11:28–30)।

निमन्त्रण:

1. उद्धार पाने के लिए पापियों के लिए इतना दीन होना आवश्यक है कि वे मन फिराकर सुसमाचार की आज्ञा मान सकें (प्रेरि. 2:38; इब्रा. 5:8–9)।
2. उद्धार पाने के लिए मसीही लोगों के लिए इतना दीन होना आवश्यक है कि वे मन फिरा सकें (प्रेरि. 8:22)।
3. उद्धार पाए हुए रहने के लिए हर मसीही के लिए दीनतापूर्वक आराधना करना, सेवा करना और परमेश्वर की आज्ञा मानते रहना आवश्यक है।

यीशु मसीहः
हमारा नमूना

1 पत. 2:21–25; यूह. 13:1–17

प्रसंगः यह जानते हुए कि मानने के लिए कोई और बेहतर ढंग नहीं हो सकता, लोगों से यीशु के नमूने को मानने का आग्रह करना।

परिचयः

1. आदमी का नमूना उसके शब्दों से कहीं अधिक शक्तिशाली होता है।
   - क. उदाहरण के लिए, माता–पिता अपने बच्चों को गलत निर्देश दे रहे होते हैं जब वे बोलते हैं, ''जो मैं कहता हूं वह करो, जो मैं करता हूं वह नहीं!''
   - ख. यीशु मसीह कुछ कुछ उत्तम गुरु है, क्योंकि फरीसियों के विपरीत (मत्ती 23:3–5), उसने जैसा सिखाया वैसा किया भी (उदाहरण, ''... यदि कोई ... चाहे''; मत्ती 16:24)।
   - ग. प्रेरित पौलुस लोगों से उसके पीछे चलकर मसीह का अनुकरण करने को कह पाया, क्योंकि पौलुस जिस बात का प्रचार करता था वैसा ही जीवन जीता था (1 कुरिं. 11:1; 4:16)।
2. मसीही लोगों को अपने नमूने के तौर पर यीशु मसीह को इस्तेमाल करना आवश्यक है क्योंकि संसार उन लोगों के जीवनों को बड़े ध्यान से देखता है जो परमेश्वर की संतान होने का दावा करते हैं।
   - क. इस कारण मसीही लोगों के जीवनों को ऐसे पढ़ता है जैसे वे पत्रियां हों (2 कुरिं. 3:1–3)
   - ख. मसीही लोगों को संसार के जैसे न होने की चेतावनी दी जाती है (रोमि. 12:1–2), कि वे संसार के नहीं हैं (यूह. 17:16) और संसार से दोस्ती न करें (1 याकू. 4:4)।
   - ग. मसीही लोगों को वैसे ही जीने की कोशिश करनी चाहिए जैसे यीशु जीता था और नहीं तो अपने आप से किसी भी परिस्थिति में यह पूछना चाहिए कि ''यीशु क्या करता''
   - घ. माता–पिता, पुलिस वालों, शिक्षकों, ऐल्डरों, डीकनों तथा प्रचारकों में आदर्श ढूंढ़े जाते हैं, परन्तु हर मसीही को संसार के लिए आदर्श बनना चाहिए।

मुख्य भागः

I. परीक्षा का सामना करने पर यीशु हमारा नमूना है।

- क. यीशु ने कई प्रकार की परीक्षाओं पर जय पाई (मत्ती 4:1–11; इब्रा. 2:18)
- ख. प्रभु ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाया ताकि वे परीक्षा से बच सकें (मत्ती 6:9–13)।
- ग. बाइबल बताती है कि मसीही लोग परीक्षा पर जय पाते हैं (1 कुरिं. 10:13; 2 पत. 2:9)।
- घ. हर मसीही को परीक्षा पर जय पाने की कोशिश करनी चाहिए, जैसे यीशु ने की (इब्रा. 4:15; इब्रा. 6:1)।
- ङ. जय पाने वालों को प्रतिफल मिलेगा (प्रका. 3:5)।

II. यीशु मसीह प्रार्थना में हमारा नमूना है।

- क. मसीह का जीवन प्रार्थना भरा जीवन है।
  1. नमूने की प्रार्थना (मत्ती 6:9–15)।

2. गुप्त तथा प्रकट की गई बातों के लिए धन्यवाद (मत्ती 11:25-26)।
3. लाज़र की क़ब्र पर (यूह. 11:41-42)।
4. पतरस के लिए कि उसका विश्वास न डगमगाए (लूका 22:31-32)।
5. प्रभु-भोज के आरम्भ पर धन्यवाद के लिए प्रार्थना (मत्ती 26:26-27)।
6. गतसमनी के मार्ग पर बड़ी सिफ़ारिशी प्रार्थना (यूह. 17)।
7. गतसमनी में प्रार्थना (लूका 22:41-44)।
8. अपने हत्यारों के लिए क्रूस पर प्रार्थना (लूका 23:34)।

ख. कई वचनों से पता चलता है कि आरम्भिक चेले प्रार्थना करते थे (प्रेरि. 2:42, 6:4; 7:59-60; 12:5)।

ग. हर मसीही को प्रार्थना करने के लिए कहा गया है (1 थिस्स. 5:17; इफि. 6:18; कुलु.4:2)।

III. यीशु मसीह क्षमा करने में हमारा नमूना है।

क. यीशु ने प्रार्थना में क्षमा करने के लिए हमें सिखाया (मत्ती 6:9-15)।

ख. प्रभु ने अपने शत्रुओं को क्षमा किया तब भी जब वे उसकी हत्या कर रहे थे (लूका 23:34)।

ग. यीशु हर किसी को क्षमा करने के लिए तैयार होता है जब वह मन फिरा लेता है (इब्रा.10:15-17; 2 पत. 3:9; 1 यूह. 1:9)।

घ. मसीही लोगों को दूसरों को क्षमा करने के लिए कहा गया है (लूका 17:3-4; इफि. 4:32)।

IV. परमेश्वर के वचन को सिखाने और गलत को गलत कहने में यीशु हमारा नमूना है।

क. यीशु स्वयं परमेश्वर के पास से सुसमाचार को लेकर आया (यूह. 1:17), और पृथ्वी पर रहने के दौरान उसने परमेश्वर का वचन बताया (यूह. 3:34)।

ख. हमारे प्रभु ने धार्मिक गलती की निंदा की (मत्ती 15:9; मत्ती 23)।

ग. मसीही लोगों को केवल परमेश्वर का वचन बताने और गलत को गलत बताने की आज्ञा दी गई है (इफि. 5:11; 1 पत. 4:11; रोमि. 16:17-18)।

V. यीशु मसीह ने अपने रिश्तेदारों को अपनी आराधना और काम को रोकने की अनुमति नहीं दी।

क. एक बार प्रभु की माता तथा भाइयों ने उसे बातें करने से रोकना चाहा, परन्तु उसने उन्हें उसे रोकने नहीं दिया (मत्ती 12:46-50)।

ख. एक अन्य अवसर पर, उसके भाइयों ने उसके काम को प्रभावित करने की कोशिश की, परन्तु यीशु ने इस हस्तक्षेप की अनुमति नहीं दी (यूह. 7:2-9)।

ग. यीशु ने अपने चेलों को सिखाया कि वे परमेश्वर तथा उसके वचन से अपने परिवार के लोगों से भी बढ़कर प्रेम रखें (मत्ती 10:35-38)।

VI. यीशु ने तब भी हार नहीं मानी जब उसे तुच्छ जाना गया और उसकी सराहना नहीं की गई।

क. यदि तुच्छ जाने जाना और पूरी तरह से न समझे जाना छोड़ देने का कारण था, तो यीशु के पास पर्याप्त कारण था (इब्रा. 12:1-3; 1 पत. 2:21-25)।

ख. मसीही लोगों को भी निराशा और दुर्व्यव्यवहार सहना पड़ सकता है परन्तु वे हटे न (गला. 6:9; 1 कुरिं. 15:58)।

निष्कर्ष:

1. यीशु मसीह हमारा सिद्ध उदाहरण है (1 पत. 2:21–25; यूह. 13:1–15)।
2. हमें अपने आपसे पूछना चाहिए, हमारा जीवन कैसा होता यदि यीशु हमारा पड़ोसी होता या बार-बार हमारा मेहमान बनता? ''क्या आप अपने जीवन में कुछ बदलाव लाएंगे?''
3. यीशु सचमुच में पड़ोसी या मेहमान से अधिक निकट है क्योंकि वह हमारे अंदर रहता है (2 कुरिं. 13:5; इफि. 3:17)।
4. एक और प्रश्न अपने आपको पूछा जा सकता है, ''यदि यीशु संगति में उपस्थित हो तो क्या मैं परमेश्वर की आराधना और दिल लगाकर करूंगा?'' वह संगति में ही है (मत्ती 28:20)!

निमन्त्रण:

1. अंत में, चाहे यीशु मसीह को पाप क्षमा की कोई आवश्यकता नहीं थी, फिर भी उसने उद्धार न पाए हुओं के लिए बपतिस्मा लेने का नमूना छोड़ दिया (मत्ती 3:13–17)।
2. बपतिस्मा पापों को मिटा देता है (प्रेरि. 2:38; 22:16; 1 पत. 3:21)।
3. बपतिस्मा पाए हुए विश्वासी को चौकस रहना चाहिए कि वह अविश्वास से अपने बपतिस्मे को बेकार न कर दे (प्रेरि. 8:22; इब्रा. 10:26)।

यीशु मेरा सब कुछ!

उत्पत्ति 3:15

प्रसंग: यीशु मसीह के विस्तृत मिशन के सार को देखना चाहिए।

परिचय:

1. यीशु मसीह आरम्भ से लेकर अंत तक पूरी बाइबल में से निकलने वाली लाल डोरी है।
2. यीशु मसीह बाइबल का दिल है, जिसके बिना बाइबल बेतुकी और बेकार होनी थी।
3. यीशु मसीह का क्रूस बाइबल का मुख्य विषय और हमारे प्रभु का विस्तृत मिशन है।
4. *बाइबल की हर बात मसीह के क्रूस की ओर आगे को या पीछे को देखती है।*

मुख्य भाग:

I. बाइबल में एक सुन्दर घोषणा है कि यीशु आ रहा है!

क. उत्पत्ति 3:15 में यीशु मसीह के आने की अस्पष्ट प्रतिज्ञा है

1. उत्प. 12:1-3 आने वाले मसीहा की प्रतिज्ञा का विस्तार है।
2. बाइबल में दर्ज यीशु मसीह से सम्बन्धित लगभग मसीहा की 332 भविष्यद्वाणियां हैं (उदाहरण, यशा. 7:14; 53)।

ख. पहली सदी में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु मसीह का मार्ग तैयार किया (मत्ती 3:1-3)।

II. बाइबल अद्‌भुत समाचार देती है कि यीशु आ गया है!

क. स्वर्गदूतों ने घोषणा की कि उद्धारकर्त्ता का जन्म हुआ है (लूका 2:10-11)।

ख. यीशु का आना यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रचार का पूरा होना था (मत्ती 3:13-17; 4:17)।

ग. मसीह की सेवकाई क्रूस पर उसकी बलिदानी मृत्यु के साथ खत्म हो गई (यूह. 19:30)

घ. अपने पुनरुत्थान को प्रामाणिक बनाने के लिए वह अपने स्वर्गारोहण से पहले रुका रहा (प्रेरि. 1:3)।

III. बाइबल स्वर्ग के इतिहास को लिपिबद्ध करती है कि यीशु मसीह स्वर्ग पर उठाया जा रहा है!

क. लूका ने अपनी दोनों पत्रियों में यीशु मसीह के भय उत्पन्न करने वाले स्वर्गारोहरण को लिपिबद्ध किया (लूका 24:50-51; प्रेरि. 1:9-11)।

ख. हमारा प्रभु चाहे बिल्कुल साधारण परिस्थितियों में संसार में आया परन्तु वह यहां से गया विजयी होकर और महिमा में।

IV. बाइबल प्रतापवान उपस्थिति को लिपिबद्ध करती है कि यीशु राजा बनकर राज कर रहा है!

क. एक स्वर्गदूत ने भविष्यद्वाणी की कि यीशु मसीह राजा बनकर राज्य करेगा (लूका 1:32-33)।

ख. यीशु मसीह ने अपने लिए एक गैर सांसारिक राज्य का दावा किया (यूह. 18:36-37)।

1. यीशु मसीह समय के अंत तक राज करेगा (1 कुरिं. 15:24-28)।
2. यीशु ने एक ही ईश्वरीय संस्थान की बात करने के लिए ''कलीसिया'' और

''राज्य'' शब्दों का इस्तेमाल एक दूसरे के स्थान पर किया (मत्ती 16:18–19)।

3. हमारे प्रभु का राज्य शक्तिशाली और टिकाऊ है (दानि. 2:44; मरकुस 9:1; रोमि. 1:16)

V. बाइबल सुखद भविष्य को दिखाती है: यीशु फिर आ रहा है!

क. यीशु मसीह दूसरी बार प्रकट होगा (इब्रा. 9:27–28)।

ख. यीशु मसीह अपने पवित्र लोगों को अपने साथ स्वर्ग में ले जाने के लिए आ रहा है (1 थिस्स. 4:13–18; यूह. 14:1–3)।

निष्कर्ष:

1. बाइबल यीशु मसीह के बारे में ही है।
2. हमारे जीवनों को यीशु मसीह के बारे में ही पता होना आवश्यक है।
3. हमारे पूरे जीवन यीशु मसीह के इर्द-गिर्द घूमते होने चाहिए।
4. यीशु मसीह जीने के हमारे ढंग और हमारे हर निर्णय का आधार होना चाहिए।

निमन्त्रण:

1. यीशु अपने चेलों के लिए वापस आ रहा है, परन्तु क्या वह आपके लिए वापस आ रहा है?
2. उद्धार के लिए मसीह के क्रूस की ओर पीछे को देखो (कुलु. 1:20–21)।
3. उनके लिए जो यीशु मसीह पर भरोसा रखते हैं अनन्त विश्राम के लिए आगे को देखो (इब्रा. 4:9; गला. 3:27)।

प्रभु मेरे जीवन की सामर्थ

भजन संहिता 27:1

प्रसंग: परमेश्वर के बालक की प्रभु पर निर्भरता पर ज़ोर देना।

परिचय:

1. लोग इस जीवन में सामर्थ के लिए अलग-अलग स्रोतों की सहायता लेते हैं।
   - क. बहुत से लोग मित्रों, परिवार, साथियों या प्रधानगियों में प्रसिद्धि के लिए जाते है।
   - ख. शराब (अल्कोहल) बहुत से बुराई करने वालों, लुटेरों, हत्यारों और व्यभिचारियों की गुप्त सामर्थ होती है।
   - ग. एक आधुनिक कहावत में कहा जाता है, ''हर सफल पुरुष के पीछे एक भली स्त्री होती है।''
   - घ. कई और स्रोत हो सकते हैं जिनके पास लोग सामर्थ के लिए, आम तौर पर जाते हैं।
2. इस जीवन में सामर्थ के लिए मनुष्य किसके पास जा सकता है या उसे जाना चाहिए?
   - क. प्रसिद्धि से मिली सामर्थ चंचल होती है और आम तौर पर थोड़ी देर तक रहती है।
   - ख. शराब तथा अन्य नशे सामर्थ के वास्तविक स्रोत होने के बजाय जिनसे कोई अपना जीवन जी सकता हो, विनाशकारी और दाग भरे होते हैं।
   - ग. इस जीवन में सामर्थ के लिए मनुष्य पर, चाहे वह नर हो या नारी, निर्भर होना बिल्कुल अनुचित है।
   - घ. वे सभी अस्थाई स्रोत जिन पर इस जीवन में सामर्थ के लिए निर्भर रहना चुना जा सकता है, उनमें वह सनातन सामर्थ नहीं है जो केवल यीशु मसीह में है।

मुख्य भाग:

I. ''प्रभु मेरी ज्योति है।''

- क. बहुत से वचन यीशु मसीह को ''ज्योति'' बताते हैं।
  1. शमौन नबी ने कहा था कि बालक यीशु ने ज्योति होना था (लूका 2:32)।
  2. यीशु मसीह ने अपने आपको ''ज्योति'' कहा (यूह. 8:12; 9:5)।
  3. पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों में यीशु मसीह को ''ज्योति'' कहा गया (यशा. 49:6; 58:8)।
  4. यीशु मसीह को कभी अस्त न होने वाला ''सूर्य'' कहा गया जिससे स्वर्ग में प्रकाश होता रहेगा (यशा. 60:19-20, मला. 4:2)।
  5. मसीह का राज्य ज्योति का राज्य है (1 पत. 2:9; इफि. 5:14)।
- ख. परमेश्वरत्व की मंशा और स्वभाव की एकता का संकेत देते हुए परमेश्वर पिता को भी ''ज्योति'' कहा गया है।
  1. पुत्र के साथ-साथ पिता स्वर्ग की ज्योति देता है (प्रका. 21:23)।
  2. परमेश्वर को ज्योतियों का पिता कहा गया है (याकू. 1:17)।
  3. ''... परमेश्वर ज्योति है ...'' (1 यूह. 1:5)।
- ग. मसीही लोग यीशु मसीह का अनुकरण करने वाले हैं और उन्हें भी ज्योति कहा गया है।

1. मसीही लोग ''जगत की ज्योति'' हैं (मत्ती 5:14-16; फिलि. 2:15)।
2. मसीही लोग ''ज्योति की संतान'' हैं (1 थिस्स. 5:5: यूह. 12:36; इफि. 5:8)।
3. मसीही होने के साथ हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम ''ज्योति में चलें'' (1 यूह. 1:7; यशा. 2:5)

घ. सब को ज्योति की ओर मुड़ना आवश्यक है।

1. भजन 119:105, 130 परमेश्वर के वचन का वर्णन प्रकाश के रूप में करता है।
2. प्रेरित पौलुस की तरह हमें खोए हुए संसार को अंधकार से ज्योति में मोड़ने को अपना लक्ष्य बनाना आवश्यक है (प्रेरि. 26:18)।

II. ''प्रभु मेरा उद्धार है।''

क. मनुष्यजाति का एकमात्र उद्धार यीशु मसीह है।

1. हमारे प्रभु ने अपने लहू से कलीसिया को खरीदा (प्रेरि. 20:2))।
2. केवल यीशु के पास ''अनन्त जीवन की बातें'' हैं (यूह. 6:68)।
3. यीशु मसीह हर आज्ञा मानने वाले का उद्धार करता है (इब्रा. 5:8-9)।
4. लोगों को उद्धार देने के लिए परमेश्वर का पुत्र स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आया (लूका 19:10; यूह. 3:17)।

ख. कोई और स्रोत नहीं है जिसके पास हम यीशु को छोड़ उद्धार के लिए जा सकें।

1. उद्धार पाने की चाह रखने वाले हर किसी के लिए यीशु के द्वारा उद्धार पाना आवश्यक है (प्रेरि. 4:12)।
2. पिता के सामने केवल यीशु मसीह हमारा बिचवई या मध्यस्थ है (1 तीमु. 2:5)।
3. उद्धार कलीसिया नहीं देती, बल्कि यह उद्धार पाए हुओं की मण्डली है (प्रेरि. 2:47)
4. मनुष्य की चतुराई में किसी को भी किसी भी बात से छुड़ाने की क्षमता नहीं है और इसका परिणाम केवल फूट है (1 कुरिं. 1:10-13)।

ग. प्राचीनकाल का हो या आज के समय का, हर झूठा भविष्यद्वक्ता उद्धार दिलाने में असमर्थ है और जैसे एलिय्याह भविष्यद्वक्ता के सामने बाल के नबी गिरे थे वैसे ही वह गिर जाएगा (1 राजा 18)

III. ''मैं किससे डरूं?''

क. यहां पर ''डर'' शब्द

1. भजन 111:9 में इसी शब्द का अनुवाद ''भययोग्य'' (KJV में Reverend) हुआ है
2. भजन 111:5, 10 में इसी शब्द का अनुवाद ''भय'' हुआ है।
3. इसका अर्थ यह हुआ कि भजन 27:1 में प्रश्न यह है कि ''मैं किसका आदर करूं?''

ख. बिना किसी संदेह के हमारे सबसे अधिक आदर या ईश्वरीय भय का हक्कदार परमेश्वरत्व है।

1. भजन 111:9 परमेश्वर का कोई नया नाम नहीं बल्कि परमेश्वर की बराबरी की घोषणा करता है कि ''उसका नाम भय योग्य है।''
2. भजन 33:8 कहता है, ''सारी पृथ्वी के लोग यहोवा से डरें।''
3. पवित्र लोगों और उन सब को जो परमेश्वर को जानते हैं उसका बड़ा भय मानना आवश्यक है (भजन 89:7)।
4. परमेश्वर चाहता है कि लोग उसका भय खाएं (व्यव. 10:12-13)।

5. परमेश्वर का भय आने वाले न्याय के लिए तैयारी है (सभो. 12:13-14; यशा. 8:13)।
6. नये नियम में मसीही लोगों से परमेश्वर का भय मानने को कहा गया है (1 पत. 1:17; 2:17; इब्रा. 12:28; मत्ती 10:28)।
7. परमेश्वर का भय मानना परमेश्वर की संतान को अन्य देवी देवताओं के पीछे चलने से रोकेगा (यहोशू 24:14)।

ग. परमेश्वर का भय होने पर पूरा जीवन भर उसके वफ़ादार बनाए रखेगा।
1. परमेश्वर की करुणा उन पर बनी रहती है जो उसका भय मानते हैं (लूका 1:50; भजन 147:11)।
2. परमेश्वर की करुणा उन देशों और उनके वासियों पर बनी रहती है जो उसका भय मानते हैं (प्रेरि. 10:35)।

घ. हमारा मुख्य आदर चाहे परमेश्वर के प्रति होना आवश्यक है, परन्तु दूसरों के प्रति भी आदर होना आवश्यक है।
1. बच्चों के लिए माता-पिता का आदर करना आवश्यक है (लैव्य. 19:3)।
2. हमें सरकारी अधिकारियों का आदर करना आवश्यक है (रोमि. 13:1 तुलना 1 पत. 2:17)।
3. मसीही लोगों को यीशु मसीह के अपने लहू से बनाए गए ईश्वरीय संस्थान के रूप में कलीसिया का आदर करना आवश्यक है (प्रेरि. 20:28; इफि. 3:10-11)।
4. मनुष्यजाति को परमेश्वर के वचन का आदर करना आवश्यक है (रोमि. 1:16; प्रका. 22:18-19)

IV. ''प्रभु मेरे जीवन की सामर्थ है।''

क. परमेश्वर की ईश्वरीय सामर्थ लोगों की निर्बलता को दूर कर देती है।
1. निर्बल, अरक्षित इस्राएली बचाए गए थे जबकि मिस्री लाल समुद्र में डूब गए, जिसके बाद इस्राएलियों ने अपनी सामर्थ के रूप में गीत में परमेश्वर की महिमा की (निर्ग. 15:2)।
2. परमेश्वर की सामर्थ से निर्बल इस्राएलियों ने कनान पर विजय पा ली (व्यव. 7:17-24)
3. प्रेरित पौलुस को अपनी निर्बलता को दूर करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ में भरोसा किया (2 कुरिं. 12:9-10)।
4. जिसे परमेश्वर की निर्बलता माना जाता है (जैसा कि मनुष्य परमेश्वर को बदनाम करता है) वह ही मनुष्य की सामर्थ से बलवान है (1 कुरिं. 1:25)।

ख. ईश्वरीय सामर्थ एकमात्र असली और टिकाऊ सामर्थ है जिसके पास मनुष्य आ सकता है।
1. राजा दाऊद ने परमेश्वर को अपनी सामर्थ बताया (2 शमू. 22:33)।
2. दाऊद ने परमेश्वर को बचाने वाली ढाल भी बताया (भजन 28:7-8)।
3. ''परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक'' (भजन 46:1; 73:26; 81:1; 84:5; 89:21; यशा. 49:5)।

ग. परमेश्वर की सामर्थ आनन्द से मनुष्यजाति के लिए उपलब्ध है।
1. परमेश्वर हमारी सामर्थ बनने का वचन देता है (यशा. 41:10)।
2. प्रेरित पौलुस ने अपनी सामर्थ के लिए यीशु मसीह में भरोसा था (फिलि. 4:13)।
3. दोनों नियम मनुष्यजाति को अपने जीवनों में परमेश्वर के काम करने की सामर्थ लेने को कहते हैं (दानि. 11:32: इफि. 3:16; कुलु. 1:9-11)।

V. ''मैं किससे डरूं?''

क. परमेश्वर के बालक को मनुष्य से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।

1. यीशु मसीह, यदि शारीरिक रूप में नहीं, तो आत्मिक रूप में अपने मानने वालों की रक्षा करेगा (मत्ती 10:28)।
2. मृत्यु का सामना करते हुए डटे रहने से जीवन का मुकुट मिलेगा (प्रका. 2:10)।
3. मसीह के काम के लिए इस जीवन में सताव, उस सनातन प्रतिफल के सामने जो हमारे आगे रखा था, मसीही व्यक्ति को आनन्द पूर्वक दृढ़ रहने देता है (1 पत. 3:14; 4:12-16)

ख. परन्तु परमेश्वर के दुष्ट और भटके हुए संतान के लिए डरने के लिए बहुत कुछ है।

1. उनके साथ-साथ जो उसके पीछे नहीं चलते, यीशु परमेश्वर की दुष्ट संतान को भी दण्ड देगा (मत्ती 10:28; 2 थिस्स. 1:7-9)।
2. यीशु मसीह परमेश्वर के अधर्मी संतान से बदला लेगा (इब्रा. 10:30-31)।
3. न्याय के समय अधर्मियों को नरक में फेंक दिया जाएगा (प्रका. 20:12-15; 21:8)।

ग. अधर्मियों का सरकारी अधिकारियों से डरना भी बनता है।

1. सरकारी अधिकारी, परमेश्वर की अनुमति के अनुसार अपराधियों को दण्ड देता है (रोमि. 13:1-7)।
2. हमारे मसीही कर्त्तव्यों में सरकारी अधिकारियों का कहना मानना शामिल है (तीतु. 3:1; 1 पत. 2:13-14, 17)।
3. ऐतिहासिक रूप में परमेश्वर की स्वीकृति से अपराधियों को उसी समय कड़ा दण्ड दिया जाता है (लैव्य. 20:9-16; निर्ग. 21:12, 16-17)।

निष्कर्ष:

1. प्रभु मसीही व्यक्ति का सब कुछ है।
2. मसीहियत पूरी तरह से परमेश्वर पर निर्भरता की मांग करती है।
3. परमेश्वर पर निर्भरता के बिना (बाइबल में दी गई आज्ञाओं के अनुसार) इस जीवन या आने वाले अनन्तकाल के सम्बन्ध में आशा रखने का कोई कारण नहीं है।
4. भजन 27:1 में दाऊद ने बहुत अच्छा कहा है, ''यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किससे डरूं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा है, मैं किसका भय खाऊं?''

निमन्त्रण:

1. प्रभु गैर-मसीहियों तथा भटके हुए मसीहियों की ज्योति, उद्धार, और सामर्थ नहीं, परन्तु वह बन सकता है और बनना चाहता भी है।
2. परमेश्वर आपके जीवन की सामर्थ होगा यदि आप पापों की क्षमा के लिए जल में डुबकी के लिए अपने आपको समर्पित करते हैं (प्रेरि. 2:38)।
3. भटके हुए मसीहियों के लिए पश्चात्ताप और प्रार्थना में उसकी ओर लौट आने पर परमेश्वर तुम्हारी सामर्थ होगा।

हे यहोवा मेरे साथ हो

2 इतिहास 15:2

प्रसंग: इस बात पर ज़ोर देना कि परमेश्वर किन परिस्थितियों में हमारे साथ होने को तैयार हेाता है।

परिचय:

1. आसा यहूदियों के दक्षिणी राज्य, यहूदा का धर्मी राजा था (14:2)।
   - क. उसने 41 वर्षों तक राज किया और पूरे साम्राज्य में से मूर्तियों की वेदियों को नष्ट कर दिया (अध्याय 14-16; 14:3)।
   - ख. उसने यहूदा में छावनियां बनवाईं (14:6)।
   - ग. आसा के अधिकतर शासनकाल को चाहे शांति वाला माना जाता था, परन्तु जिस संदर्भ की बात की जा रही है, उसमें आसा एक युद्ध से लौट रहा था जिसमें यहूदा विजयी हुआ था, क्योंकि परमश्वेर ने उनके लिए युद्ध किया था (14:6, 9-15)।
   - घ. अपने शासन के अंत के निकट, आसा ने सैनिक सहायता के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखने के बजाय काफ़िर राजा पर भरोसा रखा, जिस कारण आसा से परमेश्वर की स्वीकृति हट गई (16)।
2. अज़र्याह नबी के द्वारा जो बातें आसा से कही गई थीं, परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध में वही बातें हम पर भी लागू होती हैं (2 इति. 15:2)।
   - क. ''जब तक तुम यहोवा के संग रहोगे तब तक वह तुम्हारे संग रहेगा।''
   - ख. ''यदि तुम उसकी खोज में लगे रहो तो वह तुम से मिला रहेगा।''
   - ग. ''जब तुम उसे त्याग दोगे तो वह भी तुम्हें त्याग देगा।''

मुख्य भाग:

I. जब तक तुम यहोवा के संग रहोगे तब तक वह तुम्हारे संग रहेगा।

- क. ''यहोवा मेरे साथ हो'' सशर्त है!
  1. परमेश्वर के मार्गों में बने रहना और उसके मार्गों पर चलना मनुष्य को है; परमेश्वर मनुष्यों की तरह नहीं चलता (यशा. 2:2-3)।
  2. परमेश्वर से दूर मनुष्य होता है और उसी को परमेश्वर के साथ मेल करना है (इफि. 2:16; कुलु. 1:20-22)।
- ख. यहोवा के हमारी ओर होने पर, कोई हमारे विरुद्ध ठहर नहीं सकता; यदि यहोवा हमारी ओर है तो कौन हमारा विरोधी हो सकता है (भजन 124:1-8; रोमि. 8:31)?
  1. परमेश्वर ने आसा की सेना को कूश (इथियोपिया) की बहुत बड़ी सेना पर विजय दिलाई (2 इति. 14:9-15)।
  2. इसी प्रकार से आज मसीही लोग यीशु मसीह के द्वारा किसी भी प्रकार के धक्के को सहन कर सकते हैं (फिलि. 4:13)।
- ग. कुछ लोग हैं जिनके साथ परमेश्वर कभी नहीं रहा है।
  1. उल्टा, परमेश्वर हर बनावटी धार्मिक शिक्षा को उखाड़ फेंकेगा (मत्ती 15:9, 13)।

2. परमेश्वर झूठे भविष्यद्वक्ताओं, झूठे गुरुओं तथा झूठे प्रचारकों के साथ नहीं है (1 यूह. 4:1; रोमि. 16:17-18)।

II. यदि तुम उसकी खोज में लगे रहो तो वह तुम से मिला करेगा

क. इस वाक्यांश में आशा और दिलासा है।

1. यीशु वादा करता है कि यदि हम उसे ढूंढें तो अवश्य उसे पा लेंगे (मत्ती 6:33; 7:7-8)।
2. हर कोई परमेश्वर को पा सकता है, चाहे सभी लोगों को परमेश्वर मिलता नहीं हैं (1 इति. 28:9)।

ख. फिर भी, परमेश्वर को पाना सशर्त है।

1. यदि हम परमेश्वर को ढूंढ़ते नहीं हैं तो उसे पाएंगे नहीं।
2. यदि हम परमेश्वर को सही जगह में नहीं ढूंढ़ते हैं (उदाहरण, बाइबल के बजाय मनुष्यों की शिक्षाओं में, मनुष्य के बजाय धर्म बनाम कलीसिया अर्थात परमेश्वर बनाए धर्म) तो हम उसे नहीं पाएंगे।

III. यदि तुम उसे त्याग दोगे तो वह भी तुम्हें त्याग देगा।

क. परमेश्वर उनसे मुंह फेर लेता है जो उससे मुंह फेर लेते हैं।

1. पाप लोगों को परमेश्वर से दूर कर देता है (यशा. 59:1-3)।
2. परमेश्वर पापियों की सुनता (यानी मानता) नहीं (यूह. 9:31)।

ख. परमेश्वर ने बहुत से लोगों से मुंह फेर लिया है।

1. इस्राएल तथा यहूदा की यहूदी जातियों को अलग-अलग निर्वासनों में भेजकर वह उनसे दूर हो गया।
2. परमेश्वर बहुत से लोगों से दूर हुआ, जिनके नाम पूरी बाइबल में मिल जाते हैं।
3. आज भी कुछ लोग हैं जिनसे परमेश्वर मुंह फेर लेता है (कुलु. 2:23)।

सारांश:

1. यदि हम परमेश्वर के साथ नहीं हैं तो हमें प्रार्थना में उसे हमारे साथ होने को कहने का अधिकार नहीं है (लूका 6:46)।
2. परमेश्वर उन लोगों के साथ नहीं है जो उसे वहां नहीं ढूंढ़ते जहां वह मिल सकता है।
3. परमेश्वर उनसे मुंह फेर लेता है जो उससे मुंह फेरते हैं।

निमन्त्रण:

1. चाहे परमेश्वर खुले मन से उन सब को स्वीकार कर लेता है जो उसकी शर्तों पर उसकी ओर लौटते हैं।
2. गैर-मसीहियों के लिए उनके पाप ''मिटाए जाने'' के लिए मन फिराना और मनपरिवर्तन करना आवश्यक है (प्रेरि. 3:19)।
3. भटके हुए मसीहियों के लिए मन फिराना और प्रार्थना करना आवश्यक है (प्रेरि. 8:22)।

खाली क़ब्र का सुसमाचार

1 कुरिं. 15:1-4, 12-23

प्रसंग: मसीहियत के लिए पुनरुत्थान का अत्यधिक महत्व होने पर ज़ोर देना।

परिचय:

1. मसीहियत संसार का सबसे विलक्षण धर्म है क्योंकि इसके संस्थापक की क़ब्र खाली पड़ी है!
   क. संसार के अन्य धर्मों के संस्थापकों के शव दुनियाभर की क़ब्रों में बेजान बड़े हैं, और उनके गल रहे अवशेष न तो इस जीवन की और न आने वाले अनन्तकाल की कोई आशा देते हैं।
   ख. चाहे यीशु मसीह दोबारा कभी उस में वापस न जाने के लिए, क़ब्र में से जी उठा और आज जीवित है, जिससे वह हमें आज के जीवन और आने वाले अनन्तकाल की बड़ी आशा देता है।
2. पूरी की पूरी मसीहियत, मसीह के पुनरुत्थान की इसी बड़ी शिक्षा पर टिकी है।
   क. बिना यीशु मसीह के पुनरुत्थान के, मसीहियत नहीं होनी थी!
   ख. बिना मसीह के पुनरुत्थान के, मसीह के प्रेरित तथा मसीहियत के प्रस्तावक होने की अपनी जगहों को, कब का छोड़ देना था।
   ग. मसीह के पुनरुत्थान के बिना, न तो नया नियम लिखा जाता था और न पुराना नियम पूरा होता, बल्कि वह बिना पूरा हुए और निरर्थक रहता।
3. सुसमाचार की उद्धार दिलाने वाली सामर्थ के साथ-साथ, हर आत्मिक प्रतिज्ञा, परमेश्वर का सनातन स्वभाव, यीशु मसीह के परमेश्वर होने और अधिकार की बातें मज़बूती के साथ यीशु मसीह के पुनरुत्थान पर आधारित हैं।
   क. खाली क़ब्र के बिना उत्प. 3:15 में की गई पहली आत्मिक प्रतिज्ञा से लेकर, उत्प. 12:1-3 में अब्राहम से की गई प्रतिज्ञाओं सहित, परमेश्वर के राज्य की स्थापना की हर प्रतिज्ञा (दानि. 2; यशा. 2; योए. 2) व्यर्थ होनी थी।
   ख. बिना यीशु मसीह के पुनरुत्थान के, हमारे सर्वज्ञ, धर्मी, करुणा से भरे परमेश्वर ने धोखेबाज़, गिरी हुई मूर्त ही होना था।
   ग. यीशु मसीह के पुनरुत्थान के बिना, हमारे उद्धारकर्त्ता ने परमेश्वर का पुत्र नहीं, बल्कि ढोंगी, और झूठा होना था, जिसमें ईश्वरीय अधिकार नहीं था।
   घ. बिना यीशु मसीह के पुनरुत्थान के, सुसमाचार अच्छी बातों का समाचार नहीं, बल्कि मनुष्यजाति के साथ बहुत बड़ा छलावा होना था, जिसमें खोई हुई आत्माओं को छुड़ाने की कोई सामर्थ नहीं होनी थी।
4. अनन्तकालिक भविष्य की बाइबल की शिक्षाएं जिसमें मृत्यु, द्वितीय आगमन, स्वर्ग, नरक, न्याय तथा परमेश्वर के अधिकार की बातें हैं, पुनरुत्थान के आधार पर ही टिकी हैं या गिरती हैं।
   क. पुनरुत्थान के बिना, स्वर्ग का कोई सनातन भविष्य नहीं है, जिससे नश्वर लोग उस मार्ग को अपना सकें जिनमें वे पृथ्वी पर रहते हैं।
   ख. बिना पुनरुत्थान के, या तो क़ब्र के आगे कुछ नहीं है, या यदि स्वर्ग है भी तो पहुंच से बाहर है, और सब आत्माएं जो इस संसार में कभी रही हों, सदा के लिए नरक में रहेंगी।

ग. बिना पुनरुत्थान के, मसीह का द्वितीय आगमन नहीं होगा।

घ. बिना पुनरुत्थान के कोई न्याय नहीं होगा।

ङ. बिना पुनरुत्थान के परमेश्वर के पास मनुष्यजाति को देने के लिए कुछ नहीं है, जिससे लोग परमेश्वर के अधिकार की बात को सुनें।

5. यीशु मसीह के पुनरुत्थान के बिना यीशु मसीह के लहू की बचाने वाली सामर्थ, अनगिनत पीढ़ियों से अनगिनत लोगों का वफ़ादारी से आज्ञा मानना, और आराधना तथा सेवा का हर पहलू किसी काम का नहीं होगा।

6. क्रूस पर दिए गए मसीहा का पुनरुत्थान, वह बड़ी शिक्षा है जिसके द्वारा परमेश्वर का स्वीकृत धर्म बना हुआ है।

क. पुराना नियम जी उठे मसीहा की भविष्यद्वाणी करता रहा है।

ख. सुसमाचार के विवरणों तथा प्रेरितों के काम की पुस्तक में जी उठे मसीहा की बात है।

ग. नया नियम जी उठे मसीहा की वापसी की भविष्यद्वाणी करता है।

मुख्य भागः

I. यीशु मसीह की मृत्यु, दफ़नाया जाना और जी उठना भविष्यद्वाणी का मुख्य विषय था।

क. उत्प. 3:15 यीशु मसीह के जी उठने की सबसे पहली भविष्यद्वाणी है।

1. कुछ हद तक यह भविष्यद्वाणी अस्पष्ट थी और पुराने नियम के सारे समय के दौरान भेद बनी रही।
2. छुटकारे की परमेश्वर की योजना तब तक भेद बनी रहेगी जब तक परमेश्वर ने यीशु मसीह के द्वारा इसे प्रकट नहीं कर दिया (रोमि. 16:25, 1 कुरिं. 2:7; इफि. 3:4, 9; कुलु. 1:27; 4:3; 1 तीमु. 3:16)।

ख. भजन 16:10 यीशु मसीह के पुनरुत्थान की एक और स्पष्ट भविष्यद्वाणी है।

1. पतरस प्रेरित ने, परमेश्वर की प्रेरणा से, पुष्टि की कि भजन 16:10 यीशु मसीह से सम्बन्धित है (प्रेरि. 2:2)।
2. भजन 16:10 तब तक भेद बना रहा जब तक विशेष रूप से यह यीशु मसीह में पूरा नहीं हो गया।

ग. यीशु मसीह ने अपने स्वयं के पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी की।

1. कई बार उसकी भविष्यद्वाणी अस्पष्ट होती थी या उसे गलत समझा जाता था (आरम्भ में) (यूह. 2:18-22)।
2. कई बार भविष्यद्वाणी स्पष्ट और अचूक होती थी, परन्तु सुनने वालों पर अविश्वास का पर्दा पड़ा रहता था (मत्ती 16:21-23; 20:17-19; 26:32; मरकुस 9:9; 14:28)

घ. प्रेरित पौलुस ने कहा कि भविष्यद्वक्ताओं तथा मूसा ने यीशु मसीह के पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी की थी (प्रेरि. 26:22-23)।

ङ. पुराने नियम के कई हवाले परोक्ष रूप में यीशु मसीह के पुनरुत्थान की बात करते हैं।

1. मसीहा की *विजयी मृत्यु* की बात करने वाली आयतें परोक्ष रूप में पुनरुत्थान की बात करती हैं।
2. पाप के लिए उचित बलिदान के रूप में यीशु मसीह की बात करने वाली आयतों में

यीशु मसीह के पुनरुत्थान की बात भी है।

3. यशा. 53:10-12 मसीहा से सम्बन्धित वचनों का नमूना है जिनमें परोक्ष रूप में यीशु मसीह के पुनरुत्थान की बात की गई है।

II. यीशु मसीह का पुनरुत्थान नये नियम की प्रमुख शिक्षा है।

क. पतरस ने जी उठे प्रभु का प्रचार किया।

1. सुसमाचार के पहले लिखित संदेश का सार पुनरुत्थान था (प्रेरि. 2:23-24)।
2. सुसमाचार के दूसरे लिखित संदेश का मुख्य विषय पुनरुत्थान था (प्रेरि. 3:14-15)।
3. महासभा के सामने प्रेरितों की सफाई का मुख्य विषय यीशु मसीह का पुनरुत्थान था (प्रेरि. 4:9-10)।
4. अन्यजातियों को दिए गए सबसे पहले लिखित सुसमाचार संदेश का सार यीशु मसीह का पुनरुत्थान था (प्रेरि. 10:39-41)।
5. अपनी पहली सामान्य पत्री में, पतरस ने भी, यीशु मसीह के सामान्य सुसमाचार की बात बताई (1 पत. 1:3; 3:18)।

ख. सभी प्रेरितों के प्रचार का विषय जी उठा प्रभु था (प्रेरि. 4:33)

ग. सुसमाचार प्रचारक स्तिफनुस ने जी उठे मसीह का प्रचार किया, जिस कारण भड़की हुई महासभा भीड़ में बदल गई जिसने उसे पथराव करके मार डाला (प्रेरि. 7:52, 55-60)।

घ. प्रेरित पौलुस ने भी हमारे प्रभु के जी उठने की शिक्षा दी।

1. पौलुस ने पिसिदिया के अंताकिया के आराधनालय में मसीह के जी उठने का प्रचार किया (प्रेरि. 13:30, 33-34, 37)।
2. पौलुस ने थिस्सलुनीके के यहूदियों के सामने उनके आराधनालय में जी उठने का प्रचार किया (प्रेरि. 17:1-3)।
3. पौलुस ने रोम के मसीही लोगों को यीशु मसीह के जी उठने की बात लिखी (रोमि. 1:4; 4:25; 6:4, 9; 10:9)।
4. पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीही लोगों को भी मसीह के जी उठने की बात लिखी (1 कुरिं. 15:1-23)।
5. इसके अलावा पौलुस ने थिस्सलुनीके, इफिसुस, फिलिप्पै में प्रभु की कलीसिया को और तीमुथियुस को मसीह के पुनरुत्थान की बात लिखी (1 थिस्स. 4:14; इफि. 1:20; फिलि. 3:10; 2 तीमु. 2:8)।
6. पौलुस ने राजाओं तथा लोगों की भीड़ों के सामने जी उठे मसीह का प्रचार किया (प्रेरि. 22:6-10; 23:6; 24:21; 26:22-23)।

III. यीशु मसीह का पुनरुत्थान जी उठने की सामर्थ है।

क. मसीह को पुनरुत्थान की सामर्थ स्वयं यीशु मसीह से मिली (यूह. 10:17-18)।

1. अपनी स्वयं की सामर्थ से यीशु मसीह ने अपना प्राण दे दिया।
2. यीशु मसीह अपनी स्वयं की सामर्थ से, मरे हुओं में से जी उठा।
3. यीशु मसीह ने अपनी स्वयं की सामर्थ से, अपनी मृत्यु तथा पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी

की।

4. अपनी स्वयं की सामर्थ से, यीशु मसीह मृत्यु पर जय पाकर, कभी न मरने के लिए, फिर जी उठा!

ख. यीशु मसीह के पुनरुत्थान की सामर्थ नये नियम की प्रमुख शिक्षा है (फिलि. 3:10–11)।

ग. यीशु मसीह के पुनरुत्थान की सामर्थ वह बल है, जो उद्धार दिलाने के लिए सुसमाचार को प्रभावी बनाता है (1 कुरिं. 15:1–23)।

1. पुनरुत्थान से उद्धार सम्भव होता है (2)
2. यीशु मसीह का पुनरुत्थान पुराने नियम की यीशु मसीह से जुड़ी भविष्यद्वाणियों को साबित करता है।
3. यीशु मसीह के पुनरुत्थान ने सुसमाचार के प्रचार की गवाहियों को पक्का किया (5–8)।
4. यीशु मसीह का पुनरुत्थान हमारे अपने पुनरुत्थान को सम्भव बनाता है (12)।
5. यीशु मसीह का पुनरुत्थान सुसमाचार को साबित करता है (14–15)।
6. यीशु मसीह का पुनरुत्थान मसीही विश्वास को पक्का करता है (14)।
7. यीशु मसीह के पुनरुत्थान की सामर्थ पापों की क्षमा को सम्भव बनाती है (17)।
8. पुनरुत्थान की सामर्थ जीवतों को मरे हुए पवित्र लोगों (संतों) के विषय में शांति देती है (18)।
9. यीशु मसीह के पुनरुत्थान की सामर्थ मसीही विश्वास को पक्का करती है (19)।
10. यीशु मसीह के पुनरुत्थान की सामर्थ द्वितीय आगमन तथा अंतिम न्याय के विषय में मसीही लोगों को प्रोत्साहित करती है (24–28)।

ग. यीशु मसीह के पुनरुत्थान के कारण सुसमाचार या परमेश्वर का वचन प्रभावशाली होता है (रोमि. 1:16; इब्रा. 4:12)।

घ. पुनरुत्थान या खाली क़ब्र मसीहियत की सामर्थ है, बिना इसके मसीहियत नहीं होनी थी!

IV. यीशु मसीह का पुनरुत्थान विश्वास और संगति की परीक्षा रहने वाली शिक्षा की बात है।

क. यीशु मसीह का पुनरुत्थान एक तथ्य है जिस पर विश्वास किया जाना आवश्यक है।

1. पिन्तेकुस्त वाले दिन प्रेरितों द्वारा यीशु नासरी के मनुष्य होने की बात सुनाए जाने से पहले यहूदी लोग परमेश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करते थे।
2. उस पहले लिखित सुसमाचार संदेश का विषय जी उठा प्रभु था।
3. यीशु मसीह का पुनरुत्थान ही वह शिक्षा थी, जिससे यहूदी अगुओं तथा बहुत से अन्य यहूदियों को परेशानी थी।
4. परन्तु उस दिन 3000 हज़ार के लगभग लोगों ने जीवते मसीह को मानकर बपतिस्मा लिया था।

ख. यीशु मसीह का पुनरुत्थान, विश्वास और मसीह का अंगीकार करने की मुख्य बात है (रोमि. 10:9–10)।

1. यीशु मसीह का पुनरुत्थान उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में मानने का आधार है (मत्ती 10:32; प्रेरि. 8:37)।
2. मरे हुए उद्धारकर्त्ता के प्रति निष्ठा दिखाने का कोई औचित्य नहीं होना था!

V. मसीहियत के विरोधियों ने यीशु मसीह के पुनरुत्थान को अविश्वसनीय बनाने का हर प्रयास किया है।

क. मसीहियत के विरोधियों को अच्छी तरह से मालूम है कि मसीहियत का आधार यीशु मसीह का पुनरुत्थान ही है।

ख. आलोचक स्वून थ्योरी के साथ विरोध करते हैं।

1. यीशु मसीह के पुनरुत्थान को अविश्वसनीय बनाने का यह प्रयास कहता है कि यीशु ने केवल क्रूस पर मरने का नाटक किया।
2. इसके अलावा यह शिक्षा यह मानती है कि क़ब्र की ठण्डक से हमारे प्रभु को होश आ गया।
3. फिर इस शिक्षा में यह माना जाता है कि यीशु क़ब्र से बच गया और उसने अपने चेलों को यह विश्वास दिला दिया कि वह जी उठा है।
4. सच यह है कि पेशेवर सिपाहियों ने जिन्हें मृत्यु देने तथा मृत्यु की पुष्टि करने का ज़िम्मा दिया गया था, यीशु की पसली में भाला घुसेड़कर मसीह की मरने की पुष्टि की थी (यूह. 19:31-33)।
5. रोमी हाकिम पिलातुस ने भी, प्रभु की देह को दफ़नाए जाने के लिए दिए जाने से पहले, यीशु की मृत्यु की पुष्टि की थी (मर. 15:43-45)।
6. अरिमतिया के यूसुफ़ और निकुदेमुस ने यीशु के शव को दफ़नाए जाने के लिए तैयार किया और उसे क़ब्र में रखा था, जो यीशु को जीवित नहीं दफ़ना सकते थे।
7. स्वून थ्योरी मसीहियत को अविश्वसनीय बनाने का एक कमज़ोर प्रयास है।

ग. कुछ आलोचक यह दावा करते हैं हमारे प्रभु के शत्रुओं ने उसके शव को चुरा लिया था।

1. उल्टा, यीशु मसीह के शत्रुओं ने जिनमें से अधिकतर यह चाहते थे कि हमारे प्रभु की देह क़ब्र में पड़ी रहे, क़ब्र पर पहरा देने के लिए सिपाही लगवा दिए थे (मत्ती 27:62-66)।
2. यदि हमारे प्रभु के शत्रुओं ने उसकी देह को चुरा लिया होता तो वे पिन्तेकुस्त के दिन या किसी अन्य अवसर पर, जब सुसमाचार सुनाया जा रहा होता, पुनरुत्थान को गलत साबित करने के लिए, उसके शव को लाकर दिखा सकते थे।
3. यह प्रचार किए जाने के बाद कि वह जी उठा है, यीशु मसीह के शत्रु, उसके शव को पेश कर देते तो मसीहियत कब की खत्म हो जानी थी।

घ. यीशु मसीह के पुनरुत्थान का विरोध करने वाली सबसे पुरानी शिक्षा यह है कि यीशु के चेले क्रूस पर दिए गए अपने प्रभु के शव को चुरा ले गए थे।

1. इस झूठ को यहूदी अगुओं ने गढ़ा था, जिन्होंने सिपाहियों को यह कहने के लिए घूस दी थी, कि जब वे सो रहे थे तो उसके चेले उसकी देह को चुरा ले गए थे (मत्ती 28:11-15)।
2. सो रहे गवाहों की गवाही किसी भी अदालत में अमान्य होनी थी।
3. चेलों में इतना साहस नहीं था कि वे क़ब्र पर पहरा दे रहे रोमी सिपाहियों का सामना करें क्योंकि वे तो उद्धारकर्त्ता को उसके जीवित रहते छोड़कर भाग गए थे (मत्ती 26:56)।

4. पुनरुत्थान वाले दिन चेले डर के मारे छिपे हुए थे (यूह. 20:19)।
5. यदि चेलों ने सचमुच में यीशु की देह को चुरा लिया होता, तो यह बताने के लिए सिपाहियों को घूस देने की कोई आवश्यकता नहीं होनी थी।
6. बेशक जिन चेलों ने यीशु की देह को चुराया था और झूठा प्रचार करने लगे थे कि वह जी उठा है, झूठ बोलने के लिए इतना सताव नहीं सहना था कि उन्हें शहादत भी देनी पड़े।
7. यह स्पष्ट है कि चेलों ने हमारे प्रभु की देह को नहीं चुराया था।

ङ: एक शिक्षा यह है कि महिलाएं किसी दूसरे की क़ब्र पर चली गई थीं।

1. लोग अपने प्रियजनों की क़ब्र को जिसमें उन्होंने उन्हें कुछ समय पहले दफ़नाया हो, इतनी जल्दी से नहीं भूलते।
2. निश्चय ही यूसुफ़ को यह याद होगा कि उसकी अपनी क़ब्र जिसमें यीशु को रखा गया था, कहां पर है।
3. यीशु की माता मरियम और मरियम मगदलीनी ने यीशु मसीह की क़ब्र के स्थान पर विशेष ध्यान रखा होगा (लूका 15:47; लूका 23:55)।

च. मसीहियत के और विरोधी यह दावा करते हैं कि चेलों ने जान बूझकर झूठ बोलकर लोगों को धोखा दिया।

1. फिर से यहूदी अगुवों ने यदि जी न उठे यीशु के शव को ले आना था, यदि वह जी न उठा होता।
2. मसीह के चेलों पर भारी सताव पड़ा और अपनी गवाही के कारण वे शहीद भी हो गए, जो कि नहीं होना था यदि उनकी बात झूठ पर आधारित होती (1 कुरिं. 4:9–13; 2 कुरिं. 11:23–28)।

छ. एक और शिक्षा यह है कि चेलों को भ्रम हुआ था कि यीशु जी उठा है।

1. परन्तु, जी उठे प्रभु को एक ही समय में सैकड़ों लोगों ने देखा था, और इतने सारे लोगों को एक साथ गलती नहीं लग सकती (1 कुरिं. 15:6)।
2. उसे अच्छी तरह से जानने वाले लोगों ने, जिनमें उसकी माता और प्रेरित भी थे, उसके जी उठने के बाद उसे देखा, उसे बातें करते सुना और उसके साथ खाना खाया (लूका 24:42–43; यूह. 21)।
3. 40 दिनों से अधिक समय में प्रभु अपने चेलों को, अलग–अलग समयों तथा अलग–अलग स्थानों पर दिखाई दिया था।
4. यदि चेलों को यह भ्रम हुआ था कि यीशु जी उठा है, जबकि वास्तव में वह जी नहीं उठा था, तो यहूदी अगुवे यीशु के शव को लाकर दिखाकर उन्हें गलत साबित कर सकते थे।

ज. हैलेलुय्याह, प्रभु जी उठा है!

निष्कर्ष:

1. यीशु मसीह का पुनरुत्थान मसीहियत के दिल की धड़कन है, जिसके बिना मसीहियत हो ही नहीं सकती।

2. यीशु मसीह के पुनरुत्थान ने यीशु मसीह के उदास, डरे हुए चेलों को सुसमाचार के निर्भीक सुनाने वाले बना दिया जो आवश्यकता पड़ने में सताव और मृत्यु तक सहने को तैयार थे।
3. हमारे आराधना के लिए इकट्ठा होने के द्वारा, हर सप्ताह के पहले दिन, यीशु मसीह के पुनरुत्थान के दिन को मनाया जाता है।
4. यीशु मसीह का पुनरुत्थान कलीसिया की, जिसके लिए वह मरा, जीवन शक्ति है।
5. यीशु मसीह का पुनरुत्थान नास्तिकता, अन्य शिक्षाओं, प्रकृति की पूजा तथा हर उस गलत मार्ग का अंत है।

निमन्त्रण:

1. यीशु मसीह का पुनरुत्थान हर उस व्यक्ति के लिए व्यर्थ है जो उद्धार से सम्बन्धित यीशु के निर्देशों की उपेक्षा करना चाहता है।
2. यीशु जवाबदेही की उम्र वाले व्यक्ति से चाहेगा कि वह विश्वास करे कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (यूह. 8:24), अपने पापों से मन फिराए (लूका 13:3), उसे प्रभु मानकर उसका अंगीकार करे (मत्ती 10:32) और अपने पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा ले (मर. 16:16)।
3. भटके हुए मसीही लोगों से यीशु चाहेगा कि वे मन फिराएं और प्रार्थना करें (प्रेरि. 8:22)।

दूसरा यीशु, कोई और आत्मा तथा कोई और सुसमाचार

2 कुरिं. 11:2-4

प्रसंग: यीशु मसीह के सम्बन्ध में बिगड़ी हुई शिक्षा को मानने के विरुद्ध सावधान करना।

परिचय:

1. प्रेरित पौलुस को भय था कि यीशु मसीह की बुनियादी शिक्षा में बिगाड़ किए जाने से कुरिन्थुस के लोगों में मसीह के लिए किए गए उसके कठोर परिश्रम कहीं बेकार न हो जाएं (2 कुरिं. 11:2-4; गला. 4:11)।
   - क. पहली सदी के परमेश्वर की प्रेरणा पाए अन्य लेखकों ने भी यीशु मसीह की शिक्षा को बिगाड़ने वाले झूठे गुरुओं के बारे में ऐसी ही चेतावनी दी (2 पत. 2:1-2; 2 यूह. 9-11)
   - ख. परन्तु यीशु मसीह, जिसके द्वारा हमारे पाप क्षमा हो सकते हैं, केवल एक है (प्रेरि. 4:12; 1 कुरिं. 3:11; 1 तीमु. 2:5)।
2. प्रेरित पौलुस को यह भी भय था कि कहीं कोई दूसरा सुसमाचार न बता दे (2 कुरिं. 11:4; गला. 1:6-9)।
   - क. पौलुस की सेवकाई के इतने वर्षों के बाद, डिनोमिनेशनों के अंदर सचमुच में हज़ारों अलग-अलग यीशुओं तथा अलग-अलग सुसमाचारों का प्रचार किया जा रहा है।
   - ख. इसके अलावा दुनियावी संसार यीशु मसीह को कुछ ऐसा बनाने का, जो वह था ही नहीं या उसके ऐतिहासिक होने का ही इनकार करने के प्रयास करता रहता है।
   - ग. अधर्मी उदारताओं से, दुनियावी संसार और कई धार्मिक अगुओं ने सुसमाचार को निगल लिया है।

मुख्य विषय:

I. पौलुस ने चिल्ला चिल्लाकर कहा था कि कुरिन्थुस के लोग इतने कमज़ोर थे कि वे किसी दूसरे यीशु, किसी और आत्मा तथा किसी और सुसमाचार को मान सकते थे।

- क. ''प्रचार'' का अर्थ है ''मुनादी करने वाला होना ... घोषणा करना'' (वाइन'स)।
  1. जब भी लोग ईश्वरीय सच्चाई (हमारे लिए, नया नियम) से हट जाते हैं, वहां किसी दूसरे यीशु, किसी दूसरे आत्मा तथा किसी दूसरे सुसमाचार का ही प्रचार किया जा रहा होता है।
  2. ''दूसरे यीशु,'' ''दूसरे आत्मा'' और ''दूसरे सुसमाचार'' से सम्बन्धित ख़तरा केवल पहली सदी में नहीं था।
- ख. ''दूसरे यीशु'' वाला ''दूसरे'' ''*allos*'' है, जबकि ''कोई और आत्मा'' ''और कोई सुसमाचार'' वाला ''दूसरा'' ''*heteros*'' है।
  1. ''*Allos* ... 'उसी किस्म का कोई और' का संकेत देता है, जबकि *heteros*

'अलग किस्म का कोई और' का संकेत देता है'' (वाइन'स)

2. कुरिन्थियों के यीशु के ही जैसे किसी यानी नकली या उसकी जगह दूसरे मसीहा को ग्रहण करने का खतरा था।
3. रॉबर्टसन की टिप्पणी है: ''... कोई भी दूसरा 'यीशु' प्रतिद्वंद्वी ही है और इस कारण गलत है। यह पहचान को नकार देगा।''
4. ''द इंग्लिश रिवाइज़्ड वर्ज़न (1885): 'दूसरा' यीशु, 'अलग' आत्मा। ... 'दूसरा' 'पहचान' को नकारता है; 'दूसरा' 'स्वभाव की समानता को नकारता है' (विंस्टन)। (ASV; NKJV भी देखें।)
5. कुरिन्थुस के लोग किसी अलग प्रकार के आत्मा तथा सुसमाचार अर्थात वास्तविक से मिलते जुलते उसी नाम वाले किसी दूसरे को जो कि नकली है, स्वीकार कर लेने के खतरे में थे।

ग. संदर्भ से तय होता है कि वचन में ''आत्मा'' का इस्तेमाल किस अर्थ में हुआ है।

1. बार्नस का विचार था कि इस आयत में ''आत्मा'' शब्द का इस्तेमाल पवित्र आत्मा के लिए हुआ है।
2. परन्तु अंग्रेज़ी के किसी भी मानक संस्करण में 2 कुरिं. 11:4 में ''आत्मा'' (spirit) के लिए बड़े S का इस्तेमाल नहीं किया गया है, जो इस बात का संकेत है कि अनुवादकों का मानना था कि इस आयत में पवित्र आत्मा के सीधे हवाले की कोई बात नहीं है।

   यह पवित्र आत्मा की बात नहीं है। ... सुसमाचार की आज्ञा मानने से मिलने वाली आत्मा सोच का वह ढांचा होता है जो यह जानता है कि वह परमेश्वर का बालक है और परमेश्वर को ''पिता'' कहकर बुलाने के इस ज्ञान को अभिव्यक्ति दे सकता है। ... तो फिर, वह अलग आत्मा क्या थी जो उन्हें झूठे गुरुओं की मान लेने पर मिली? यह गुटबाज़ी, ईर्ष्या और छल की आत्मा थी जो कि शैतान के बच्चों की पहचान है (एपलबरी)।

3. 1 यूह. 4:6 में ''सत्य की आत्मा और भ्रम की आत्मा'' की अवधारणा को बताया गया है, जो कि उसी अर्थ में हो सकता है जिसमें, 2 कुरिं. 11:4 में ''आत्मा'' शब्द का इस्तेमाल हुआ है।

घ. ''माना'' शब्द का अर्थ यहां पर ''स्वीकार करना, पेश की गई चीज़ को जानबूझकर और खुले मन से स्वीकार करना'' है (वाइन'स)।

1. कुरिन्थुस के लोग झूठे सुसमाचार को, उसी उत्साह के साथ मान सकते थे, जिससे थिस्सलुनीके के लोगों ने असली सुसमाचार को सुनाना था (1 थिस्स. 2:13)।
2. पौलुस ने लिखा कि पहली सदी में सिखाई जाने वाली शिक्षा की गलती ने ''कितनों के विश्वास रूपी जहाज़ को उल्टा'' देना था (2 तीमु. 2:18)।

ङ. ''सह लेते'' शब्दों का अर्थ ''बर्दाश्त करना'' है (बाइबलसॉफ़्ट)

1. याद रखें कि वास्तविक यीशु, यथार्थ आत्मा था प्रमाणित सुसमाचार में फ़र्क है, कुरिन्थुस के लोगों के इन सच्चाइयों से अलग-अलग बातों को ऐसे ''सह लेने'' का ख़तरा था, जैसे इससे कोई बड़ा फ़र्क न पड़ता हो या यह कोई बहुत बड़ी बात न हो।

2. पौलुस तथा परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए पहली सदी के लेखकों ने दृढ़ता से माना कि ईश्वरीय सच्चाई से थोड़ा सा बदलाव लोगों की अनन्तकालिक स्थिति को बदलने के लिए प्रभावित करने या ''विश्वास रूपी जहाज़ डुबोने'' (1 तीमु. 1:19; 2 यूह. 9–11) के लिए बहुत बड़ा है।
3. हम जो कलीसिया के लोग हैं, बहुत बार कलीसिया के अंदर इन समस्याओं को इतना गौर नहीं करते और कई बार हम उन्हें तब तक ''प्रसन्नतापूर्वक सह लेते हैं जब तक बहुत देर न हो चुकी हो'' (मार्टिन)।

II. किसी भी युग के धार्मिक लोग, जिसमें आज के लोग भी शामिल हैं, इतने कमज़ोर हैं कि उनके किसी दूसरे यीशु, किसी दूसरे आत्मा तथा किसी और सुसमाचार के ग्रहण करने का ख़तरा है।

क. उस धूर्तता के कारण जिससे कुरिन्थियों में गलत शिक्षाएं बताई गई थीं, उनमें ईश्वरीय सत्य से भिन्नताओं का महत्व नहीं रहा था।
   1. झूठी शिक्षा देने वाले लोग अपनी ''चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे साधे मन के लोगों को बहका देते हैं'' (रोमि. 16:17–18)।
   2. ''छल से काम करने वाले'' अपने आपको वह दिखाते हैं, जो वे वास्तव में हैं नहीं (2 कुरिं. 11:13–15)।
   3. झूठे गुरु बड़ी चतुराई से, ''लुभाने वाली बातों से धोखा'' देते हैं (कुलु. 2:4)।
   4. ''झूठे भविष्यद्वक्ता'' ''बातें गढ़कर तुम्हें अपने लाभ का कारण'' बनाते हैं (2 पत. 2:3)।
   5. झूठे गुरु ''व्यर्थ घमण्ड की बातें करकर फंसा'' लेते हैं (2 पत. 2:18) या ''अपने मुंह से घमण्ड की बातें बोलते हैं, और लाभ के लिए मुंह देखी बुराई किया करते हैं'' (यहू. 16)।
   6. आज की कलीसिया पर भी कपटपूर्ण ढंगों के द्वारा (कलीसिया के बाहर या कलीसिया के अंदर से) बिगाड़ का खतरा कम नहीं हुआ है।

ख. मसीह के साथ सगाई हुई (दुल्हन), कुरिन्थुस की कलीसिया पर आत्मिक व्यभिचार का ख़तरा था (2 कुरिं. 11:2)।
   1. परमेश्वर के लोगों के उसके साथ ब्याहे होने का रूपक पूरे पुराने नियम में मिलता है (यशा. 54:5; 62:4–5; होशे 2:19–20)।
   2. परमेश्वर के पुराने नियम के लोग बार–बार आत्मिक व्यभिचार किया करते थे (यहे. 16:15–16)।
   3. इसी प्रकार से, नया नियम भी परमेश्वर के साथ परमेश्वर के लोगों के ब्याहे होने के रूपक का इस्तेमाल करता है (मत्ती 9:15; रोमि. 7:4; प्रका. 21:9)।
   4. सो कलीसिया किसी भी युग में, जिसमें आज का युग भी शामिल है, हमारे प्रभु के लिए व्यभिचारणी पत्नी के जैसी हो सकती है।

ग. प्राचीनकाल के कुछ उदाहरण ''दूसरे यीशु,'' ''दूसरे आत्मा'' और ''दूसरे सुसमाचार'' को समझने की हमारी समझ को बढ़ाते हैं।

1. ''नॉस्टिकवाद (ज्ञानवाद) में मसीह के मनुष्य होने का इनकार किया जाता था, यहां तक कि उसके मानवीय देह की वास्तविकता का इनकार तक किया जाता है'' (न्यू अंगर'स) देखें कुलुस्सियों 2:18; 1 तीमु. 6:20-21 एएसवी, एनकेजेवी; 1 यूह. 2:22-23; 2 यूह. 7.
2. यीशु मसीह से सम्बन्धित एक और गलत शिक्षा एबियोनिज़्म की थी, जिसमें यीशु मसीह के मनुष्य होने को तो माना जाता था, परन्तु उसके परमेश्वर होने को नकारा जाता था।

   एबियोनिज़्म या यहूदी सम्प्रदाय एबियोनियों की शिक्षा प्रेरितों के समय में भी थी। यह गलत शिक्षा मसीहा से सम्बन्धित गलत यहूदी पूर्व कल्पनाओं के कारण निकली और इसमें मसीह के ईश्वरीय स्वभाव को नकारा जाता है (न्यू अंगर'स)

3. एबियोनिज़्म का एक लक्षण आज प्रिमिलेनियलिज़्म (हज़ार वर्ष के राज्य) की झूठी शिक्षा के रूप में मिलता है (जक. 6:13: इब्रा. 7:12-14; 8:4)।

   एबियोनिज़्म की एक और बात ... उनका ... हमारे प्रभु का यहूदी मसीहा के रूप में 1,000 वर्ष तक निजी शासन का ... विचार है (ISBE)

घ. कुछ समकालीन उदाहरणों से आज किसी ''दूसरे यीशु,'' ''दूसरी आत्मा,'' ''दूसरे सुसमाचार'' को मानने की सम्भावना की हमारी समझ में बढ़ोतरी होती है।

1. ''दूसरे सुसमाचार'' का प्रचार करने का अच्छा उदाहरण बुक ऑफ़ मॉरमन (कथित रूप से यीशु मसीह का एक और नियम) के साथ मॉरमन चर्च है।

   मॉरमन लोग किसी ''दूससे यीशु'' (2 कुरिं.11:4) को मानते हैं, और उन्हें यीशु मसीह के सुसमाचार से बाइबल के संदेश का पता नहीं है, चाहे वे उसी के नाम का इस्तेमाल करते रहते हैं।

2. लगभग सभी डिनोमिनेशनों के लोग, जिनमें बिली ग्राहम क्रूसेड आदि जैसी मूवमेंट के लोग भी हैं, यीशु मसीह को अपने सुनने वालों के सामने पेश करने से पहले उसका मेकअप करते हैं।

   ऐसी खराब बातें सिखाकर, क्या ये प्रतिज्ञाओं को मानने वाले लोग सचमुच में हम से कैथोलिक, मुस्लिमों, मॉरमन लोगों तथा अन्य धार्मिक गुटों के साथ संगति रखने की उम्मीद करते हैं? पौलुस ने अपनी चिंता जताई कि कुरिन्थुस के लोग किसी ऐसे व्यक्ति को स्वीकार कर सकते हैं जो आकर ''किसी दूसरे यीशु'' का प्रचार करे (2 कुरिं. 11:3-4)। उसे शिक्षा यानी डॉक्ट्रिन की परवाह थी। ज़बानी दावा करके यह कहना कि खरी शिक्षा उनके लिए बहुमूल्य है, हर जगह ही एक पहचान बन गई है। परन्तु जब वास्तव में व्यवहार की बात आती है तो वे खरी शिक्षा के प्रति वचनबद्धता से कहीं लचीले होते हैं (क्लार्क)

3. यीशु मसीह में बड़े बदलाव (उद्धार की बात) करने वाले धार्मिक समूह का बड़ा उदाहरण यहोवा विटनस वाले हैं।

द न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन ऑफ़ होली स्क्रिप्चर ने यीशु मसीह के अनन्तकालिक होने को निकाल दिया है। वे दूसरे यीशु मसीह का प्रचार करते हैं, जो कि बाइबल वाला मसीह नहीं है (टेयलर)।

4. नये नियम की मसीहियत से (जिसकी अलग पहचान है) किसी भी प्रकार से दूर होना, जो कि अलग अलग शिक्षाओं वाली अलग अलग कलीसियाओं (डिनोमिनेशनों) में मिलता है, 2 कुरिं. 11:4 में लिखी बात को दिखाता है।

   यह इस बात को दिखाता है कि लोग मसीही धर्म की कई प्रमुख सच्चाइयों को मानते तो हो सकते हैं, पर फिर भी वे इतने गुमराह हो सकते हैं कि इन शिक्षाओं को किसी दूसरे सुसमाचार में बदल दें। ... आज बहुत से लोग वही करते हैं जो इन झूठी शिक्षा देने वालों ने किया था। वे यीशु को और आत्मा को और सुसमाचार को परमेश्वर की ओर से तो मानते हैं, परन्तु फिर भी शिक्षा को बदलकर बिगाड़ देते हैं। इन आरिम्भक सिखाने वालों की तरह ही पौलुस ने उन्हें अदन में हव्वा को भरमानेवाले सर्प के साथ रखा है। (लिप्सकॉम्ब)

निष्कर्ष:

1. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने एक बार अपने कुछ चेलों को यीशु से यह पूछने को भेजा कि वे किसी दूसरे यीशु की राह देखें या न। परन्तु यीशु के आश्चर्यकर्मों ने यह साबित कर दिया था कि वह वही और एकमात्र है, जिसकी पुराने नियम में भविष्यद्वाणियां हुई थीं (मत्ती 11:2-6; यूह. 20:30-31)।
2. ''दूसरे यीशु,'' ''दूसरी आत्मा,'' या ''दूसरे सुसमाचार'' का प्रचार करने की हिम्मत तो किसी में नहीं, पर फिर भी बहुतों ने किया है और कर भी रहे हैं (1 तीमु. 1:3-7; 4:1-3; 6:3-5; 2 तीमु. 2:16-18; 4:3)।

निमन्त्रण:

1. यीशु मसीह, अर्थात देहधारी हुआ परमेश्वर, मसीह क्रूस पर मर गया, और पापों के लिए उपयुक्त बलिदान केवल यीशु मसीह है (इब्रा. 10:26)।
2. कोई दूसरा यीशु किसी के पाप नहीं उठा सकता है (प्रेरि. 4:12; मर. 16:16)।
3. कोई दूसरा यीशु भटके हुए मसीहियों के पाप नहीं उठा सकता है (इब्रा. 10:26; प्रेरि. 8:22)।

ठोकर का पत्थर

यशायाह 8:14-15

प्रसंग: यशा. 8:14-15 के उदाहरण तथा बाइबल के दोनों नियमों में इससे मेल खाते वचनों पर विचार करते हुए आज्ञा मानने वाले और आज्ञा न मानने वाले दोनों लोगों के प्रति यीशु मसीह की दोहरी भूमिका पर ध्यान देना।

परिचय:

1. आज्ञा मानने वालों के लिए यीशु मसीह उद्धारकर्त्ता है (इब्रा. 5:9)।
2. साथ ही, यीशु मसीह आज्ञा न मानने वालों को कड़ा दण्ड देने वाला जल्लाद भी है (2 थिस्स. 1:7-9)।
3. यशा. 8:14-15 में यीशु मसीह की सेवकाई से लगभग 700 साल पहले मनुष्यजाति के प्रति हमारे प्रभु की उस दोहरी भूमिका को बताने के लिए, इस उदाहरण का इस्तेमाल किया गया।
4. हमारे प्रभु के वह पत्थर होने का उदाहरण, आज्ञा न मानने वालों को तो दण्ड देता है, परन्तु आज्ञा मानने वालों को बचा लेता है, बाइबल के दोनों ही नियमों में मिलता है।

मुख्य भाग:

I. आइए यशायाह 8:14-15 को और ग़ौर से देखते हैं।

क. पहले तो परमेश्वर मनुष्यजाति के लिए उद्धार उपलब्ध करवाने को तैयार है।

1. यशा. 8:14 में, ''शरण स्थान'' शब्द ''का अर्थ वह शरण, आश्रय है, जिसमें ख़तरा होने पर भागकर सुरक्षित रहा जा सकता है'' (क्लार्क)।
2. परमेश्वर सदा से मनुष्य का गढ़ बनने को तैयार रहा है (नीति. 18:10: भजन 46:1)।
3. हमारे वर्तमान युग में परमेश्वर के धीरज को परमेश्वर की इस इच्छा से जोड़ा जाता है कि मनुष्यजाति अनन्तकाल के लिए नाश न हो बल्कि बचाई जाए (2 पत. 3:9 -11)।

ख. बाइबल में चट्टान, पहाड़ आदि का इस्तेमाल बार-बार परमेश्वर को दर्शाने के लिए हुआ है (दानि. 2:34, 45)।

1. परमेश्वर मनुष्यजाति की वह चट्टान बल्कि ''उसके उद्धार की चट्टान'' है, जिस पर बचाव के लिए वह निर्भर हो सकता है (व्यवस्था. 32:4, 15, 18, 30-31; भजन 28:1; 31:2; 42:9)।
2. दु:ख की बात है कि परमेश्वर के अपने लोगों ने अपने उद्धार की चट्टान पर जो कि ''ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान'' है, बार-बार ठोकर खाई (तुलना, 1 पत. 2:8; रोमि. 9:32-33)।

ग. परमेश्वर प्राचीनकाल से, इस्राएलियों (यानी इस्राएल के उत्तरी राज्य या यहूदा के दक्षिणी राज्य) के उद्धार या आश्रय का माध्यम बनने के बजाय, उनके लिए ''फंदा और जाल'' बन गया।

घ. यशायाह 8:15 आज्ञा न मानने वाले इस्राएलियों की मृत्यु पर ज़ोर देता है और बताता है कि वे ''फंसेंगे।''

1. 721 ई.पू. में अश्शूरियों ने, इस्राएल के उत्तरी राज्य को पराजित कर दिया और बच जाने वाले बहुत से लोगों को दूसरे देश में कैदी बनाकर ले गए।
2. 587 ई.पू. में बेबीलोनियों ने, यहूदा के दक्षिणी राज्य को पराजित कर दिया और बच जाने वाले बहुत से लोगों को बंदी बनाकर बेबीलोन में ले गए।

II. पहली सदी के ही नहीं, पुराने नियम के यहूदियों ने भी परमेश्वर को नकारा और इसके कारण उन्हें पराजय मिली (यशा. 28:16; मत्ती 21:42-44)।

क. यशा. 28:16 मसीहा या उद्धारकर्त्ता के नींव का पत्थर या ''कोने का सिरा'' होने के उदाहरण का इस्तेमाल करता है।

1. यह उदाहरण पत्थर का भवन बनाने के सामान्य व्यवहार की बात है (1 राजा 5:17; 7:9; अय्यूह. 38:6)।
2. यशा. 28:16 वाले उदाहरण का अर्थ है कि यीशु मसीह को ठुकराए जाने के बावजूद, जो कि हमारी नींव या कोने का पत्थर है, वह हमारा मसीहा और अपने राज्य या कलीसिया का संस्थापक है (मत्ती 21:42-44)।
3. प्रेरित पौलुस ने भी यीशु मसीह को, नये नियम के राज्य या कलीसिया का ''कोने का पत्थर'' बताया (इफि. 2:20)।

ख. मसीहा के राज्य की स्थापना का परमेश्वर का ईश्वरीय प्रबन्ध यशायाह के समय में ही आरम्भ हो गया था।

1. बटलर ने यशा. 28:16 में ''रखा है'' के लिए इब्रानी शब्द पर टिप्पणियां की हैं:

   इब्रानी शब्द *यिशाद* (रखा है) भूत काल है। परमेश्वर ने नींव रखे जाने का काम पहले ही आरम्भ कर दिया था। यह मसीहा से जुड़ी प्रतिज्ञा था। इसके आरम्भ का काम कम से कम दाऊद के समय से ही हो गया (तुलना 2 शमू. 7:12से)। नींव का पूरा होना मसीहा में ही होना था (मत्ती 21:42, 44; लूका 20:17: प्रेरि. 4:11: रोमि. 9:33; इफि. 2:20; 1 पत. 2:4-6)। (69)

2. परमेश्वर के लिए भविष्यद्वाणी की बात करना वैसा ही है जैसे हमारे लिए वर्तमान या अतीत की बात करना।
3. उस नींव की देखभाल और एकजुटता की कल्पना करें जो उस बड़े भवन को बनाए जाने से लगभग 1,000 साल पहले रखी गई (यानी राजा दाऊद के समय से लेकर पहली सदी ईसवी तक)।

ग. मज़बूत भवन के निर्माण के लिए रेत के जैसा नरम आधार नहीं, बल्कि छोटे छोटे टुकड़ों में कटा पत्थर बिछाकर नींव को पक्का किया जाता है (मत्ती 7:24-27)।

1. पहली सदी में यहूदी लोग यीशु नासरी को परमेश्वर का पुत्र और अपना उद्धारकर्त्ता मानने से इनकार करके रेत पर ही बना रहे थे (प्रेरि. 4:11-12)।
2. पहली सदी के यहूदी परमेश्वर द्वारा दिए गए यहूदी धर्म में सुधार करके अपना ही धर्म बनाकर पक्की नींव के बिना बनाने के लिए काम करने लगे थे (मत्ती 15:9, 13; रोमि. 10:1-3)।

घ. यशा. 28:16 मसीहा को ''परखा हुआ पत्थर'' भी बताता है, जिसका अर्थ यह है कि

इस बात के कोई संदेह नहीं था कि पक्की नींव (यानी उस समय के लिए नये नियम के आने वाले राज्य या कलीसिया की स्थापना के लिए) के रूप में मसीहा टिकाऊ है

1. एल्बर्ट बार्नस ने लिखा है कि ऐसा हवाला बिल्कुल कड़ी के साथ मेल खाता है। पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का टिका रहना मसीहा पर निर्भर है।''
2. विक्लिफ़ ने लिखा है कि ''परखा हुआ पत्थर'' वह होता था, ''जिसमें न कोई खोट और न दरार मिले,'' इसलिए वह नींव बनने के लिए पूरी तरह से उपयुक्त होता था।
3. *द जेमियेसन, फॉउस्सेट एण्ड ब्राउन कमैंटरी* में कहा गया है कि यीशु मसीह ''शैतान का (लूका 4:1-13) और लोगों का (लूका 20:1-38), और यहां तक कि परमेश्वर का भी (मत्ती 27:46)'' परखा हुआ पत्थर था यानी ''मनुष्य के छुटकारे के विशाल भवन का भार सहन करने के लिए पत्थर की मज़बूती को परखा गया।''

ङ: हमारे उद्धारकर्त्ता को ''कोने का अनमोल पत्थर'' भी कहा गया है।

1. तुलनात्मक रूप में, सनातन राज्य अर्थात कलीसिया को नींव के अनमोल या कीमती पत्थरों में भव्य बताया गया है (प्रका. 21:19)।
2. यीश मसीह नींव है (1 कुरिं. 3:11)।
3. विश्वासी मसीहियों को परमेश्वर के ''आत्मिक घर'' में ''जीवते पत्थरों'' के रूप में दर्शाया गया है (1 पत. 2:5)।

च. यहूदियों का मसीहा पर ठोकर खाना, अन्यजातियों के लिए सुसमाचार सुनाए जाने का कारण बना।

1. प्रेरित पौलुस ने यहूदियों पर अपने उद्धारकर्त्ता को ही ठुकराने के अपराध का आरोप लगाया, जिस कारण वह सुसमाचार को अन्यजातियों के पास ले गया (प्रेरि. 13:45-48)।
2. प्रेरित पतरस ने समझाया कि यहूदियों की यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार करने में हिचक बहुत से अन्यजातियों द्वारा हमारे प्रभु को उद्धारकर्त्ता मानने का कारण बनी (1 पत. 2:4-10)।

III. संसार की अधिकतर अबादी के लिए यीशु मसीह आज भी ठोकर का पत्थर है।

क. मसीहियत को छोड़ यीशु मसीह संसार के अन्य धर्मों, जैसे यहूदी धर्म के प्रस्तावकों के लिए ठोकर का पत्थर है।

1. दु:ख की बात है कि यहूदी कुल के अधिकतर लोगों ने कभी नहीं माना कि यीशु नासरी परमेश्वर का पुत्र है।
2. अधिकतर यहूदियों की जो आज के समय में, धर्म में कोई भी दिलचस्पी बिल्कुल वैसे ही है जिसका आरोप पौलुस ने अपने समय के अपने देशवासियों पर लगाया था (रोमि. 10:1-3)।
3. सांसारिक यहूदी मत या केवल यहूदी विरासत (उनकी नस्ल की पहचान) को जान लेने से ही, आज के समय के अधिकतर यहूदियों की समझ आ जाती है।

ख. यीशु मसीह मसीहियत को छोड़, अन्य बहुत से धर्मों को बढ़ावा देने वालों के लिए ठोकर का पत्थर है।

1. मसीहियत को छोड़ संसार के अन्य सभी धर्मों में हिंदु धर्म, बुद्ध धर्म, इस्लाम, ताओवाद, जादूटोना, कन्फयूशियसवाद, जैन धर्म, शिंतो, सिख धर्म, तंत्र मंत्र, बहाई तथा अन्य कई और धर्म हैं।
2. मसीहियत को छोड़ संसार के अन्य सभी धर्म चाहे अपने मानने वालों के लिए आत्मिक रूप में हानिकारक हैं, विशेषकर इस्लाम इसके न मानने वाले अन्य सब लोगों के लिए एक वास्तविक ख़तरा है (उदाहरण, गत तीस वर्ष से अधिक से चल रही आतंकवाद की वर्तमान किस्म को केवल हाल ही में संसार के लिए गम्भीर खतरे के रूप में पहचाना गया है)।

ग. यीशु मसीह ठोकर का पत्थर है, जिसका प्रमाण अलग-अलग डिनोमिनेशनों से मिलता है।
1. एक दूसरे से अलग सैकड़ों बड़ी-बड़ी डिनोमिनेशनें हैं जिनके अपने अंदर आगे अलग-अलग शिक्षाओं वाली हज़ारों शाखाएं हैं।
2. इन हज़ारों कथित मसीही कलीसियाओं के यीशु मसीह के अपने-अपने संस्करण, अपने-अपने धर्मसार हैं, विशेषकर अपने-अपने परमेश्वर और अनन्तकाल की अपनी-अपनी विलक्षण पूर्वधारणा है।

घ. अफ़सोस की बात है कि यीशु मसीह आज प्रभु की कलीसिया के बहुत से लोगों यानी मसीही लोगों के लिए भी ठोकर का पत्थर है।
1. कइयों के लिए यीशु मसीह ठोकर का पत्थर इसलिए है क्योंकि हमारा प्रभु मनुष्यजाति की सभी जातियों को अपनी कलीसिया में ग्रहण करता है (मर. 16:15-16)।
2. कइयों के लिए यीशु मसीह ठोकर का पत्थर उस कारण से है जो वह विवाह, तलाक, तथा पुर्नविवाह के बारे में सिखाता है (मत्ती 19:9)।
3. कइयों के लिए यीशु मसीह ठोकर का पत्थर इसलिए है क्योंकि वह चाहता है कि हम हर सप्ताह के पहले दिन (रविवार) अन्य मसीहियों के साथ आराधना करें (1 कुरिं. 11:23-26; प्रेरि. 20:7; 1 कुरिं. 16:1-2)।
4. कइयों के लिए यीशु मसीह ठोकर का पत्थर इसलिए है क्योंकि वह चाहता है कि हम भक्तिपूर्ण मसीही जीवन जीएं (रोमि. 12:1-2; तीतु. 2:12: फिलि. 4:8)।
5. कइयों के लिए यीशु मसीह ठोकर का पत्थर इसलिए है क्योंकि वह चाहता है कि हम भक्तिपूर्ण मसीही सेवा करें (तीतु. 2:14; याकू. 2:17, 20, 26)।
6. कइयों के लिए यीशु मसीह ठोकर का पत्थर इसलिए है क्योंकि वह चाहता है कि हम उसकी आज्ञा मानें (रोमि. 6:17)।

निष्कर्षः

1. हमारे युग में यीशु मसीह, आज्ञा मानने वालों का उद्धाकर्त्ता है (इब्रा. 5:9)।
2. इसके साथ ही यीशु मसीह आज्ञा न मानने वालों के लिए कड़ा दण्ड देने वाला जल्लाद भी होगा (2 थिस्स. 1:7- 9)

निमन्त्रण:

1. एक ओर जहां यीशु मसीह संसार के अधिकतर लोगों के लिए ठोकर का पत्थर बना हुआ है, वहीं हमारी प्रार्थना है कि हमारा उद्धारकर्त्ता हमारे लिए ठोकर का पत्थर न बने।
2. फिर भी, यीशु मसीह उनके लिए जो मनुष्यजाति को पेश पाप की समस्या के लिए उसके समाधान को नकारते हैं, ठोकर का पत्थर है (मर. 16:16)।
3. उन भटके हुए मसीहियों के लिए भी जो मन फिराकर क्षमा के लिए प्रार्थना करने के बजाय, अपने पापों में बने रहते हैं, यीशु मसीह ठोकर का पत्थर है (प्रेरि. 8:22)।

यीशु से घृणा क्यों की गई

यूह. 15:18-25

प्रसंग: यह पता लगाना कि कुछ लोगों द्वारा यीशु से घृणा क्यों की गई और तय करना कि क्या कलीसिया को मसीह का अनुसरण वैसे ही करना चाहिए या नहीं, चाहे इसका अर्थ यह हो कि संसार कलीसिया से और मसीही लोगों से घृणा करेगा।

परिचय:

1. साधारण लोग चाहे यीशु से प्रेम करते थे, पर बहुत से लोग उससे बुरी तरह से घृणा भी करते थे, जो उसके क्रूसारोहण का कारण बना।
2. यीशु से घृणा मुख्यतया इसलिए की जाती थी क्योंकि वह बताता था कि धर्म में मतभेद से सचमुच में फ़र्क पड़ता है।
3. जिस कलीसिया के लिए यीशु मरा और जिसका उसे सिर बनाया गया है उससे भी पहली सदी में घृणा की जाती थी।
4. कलीसिया से घृणा मुख्यतया इसलिए की गई कि यह सिखाती थी कि धर्म में मतभेदों से सचमुच में फ़र्क पड़ता है।

मुख्य भाग:

I. यीशु से घृणा इसलिए की गई क्योंकि वह सिखाता था कि धर्म में मतभेदों से वास्तव में फ़र्क पड़ता है।

क. इन दोनों घटनाओं में जब यीशु ने मन्दिर को लेन-देन करने वालों से शुद्ध किया के पक्ष में अधिकतर लोग नहीं थी (यूह. 2:13-17; मत्ती 21:12-13)।

ख. यीशु को धार्मिक गुट के अगुओं में कोई प्रसिद्धि नहीं मिली जब उसने उन्हें उनके पापी होने के लिए दोषी ठहराया (शास्त्री और फ़रीसी) (मत्ती 15:1-14; 23)।

ग. संसार ने यीशु से घृणा की क्योंकि सुसमाचार की उस रोशनी में जिसे वह लेकर आया था संसार के पाप के अंधकार को दिखा दिया (यूह. 3:19-20; 15:18-25),

II. आरम्भिक कलीसिया से घृणा की गई क्योंकि यह सिखाती थी कि धर्म में मतभेदों से सचमुच में फ़र्क पड़ता है।

क. पहले मसीही शहीद स्तिफनुस से घृणा यह सिखाने पर की गई कि यहूदी मत तथा मसीहियत के बीच के फर्कों से सचमुच में फ़र्क पड़ता है (प्रेरि. 6:8-7:60)।

ख. आरम्भिक कलीसिया से घृणा की गई क्योंकि यह सिखाती थी कि मूर्तिपूजा तथा मसीहियत के बीच अंतरों से सचमुच में फ़र्क पड़ता है (प्रेरि. 19:18-41)।

ग. पहली सदी में कुछ मसीही लोग कलीसिया तथा साथी मसीहियों से घृणा करते थे क्योंकि प्रेरितों से सिखाया कि सुसमाचार की सच्चाई तथा गलत शिक्षा के बीच अंतरों को सचमुच में फ़र्क पड़ता है (गला. 1:6-9; 4:16; रोमि. 16:17-18; 2 थिस्स. 3:6; 1 यूह. 4:1; 3 यूह. 9-10)।

घ. आरम्भिक कलीसिया से घृणा की गई क्योंकि सुसमाचार की उस ज्योति से जिसकी घोषणा यह कहती थी संसार के पाप का अंधकार सामने आ जाता था (यूह. 17:14)।

निष्कर्ष:

1. यीशु ने अपने प्रेरितों को सीमित आज्ञा पर भेजने से पहले चेतावनी दी कि संसार उनसे घृणा करेगा (मत्ती 10:22-25)।
2. इसी प्रकार से आरम्भिक कलीसिया को अच्छी तरह से मालूम था कि संसार इससे घृणा करेगा (2 तीमु. 3:12, 1 पत. 4:16)।
3. फिर भी आरम्भिक कलीसिया ने बार-बार कड़े सताव के बावजूद संसार में सुसमाचार सुनाने की ज़िम्मेदारी को सहर्ष स्वीकार कर लिया (प्रेरि. 8:1-4; प्रका. 2:10)।
4. हमारे परिवार के लोग हमारा विरोध कर सकते हैं, फिर भी हमारे लिए सुसमाचार की आज्ञा को मानकर विश्वासी बने रहना आवश्यक है (मत्ती 10:34-39)।

निमन्त्रण:

1. संसार समचुच में उद्धार की परमेश्वर की योजना या शर्तों से घृणा करता है जिनके आधार पर वह लोगों का उद्धार कर सकता है और करेगा।
2. संक्षेप में, परमेश्वर आज्ञा मानने वालों का उद्धार करेगा और आज्ञा न मानने वालों को दण्ड देगा (इब्रा. 5:8-9; 2 थिस्स. 1:7-9; 2 पत. 2:9)।

परमेश्वर की कृपा और उसकी कड़ाई

रोमि. 11:22

प्रसंग: परमेश्वर के दोहरे गुणों बनाम केवल परमेश्वर के प्रेम की घोषणा करने की प्रवृति पर ज़ोर देना।

परिचय:

1. हमारा परमेश्वर केवल आतंक, दण्ड और न्याय का परमेश्वर ही नहीं है।
2. न ही हमारा परमेश्वर केवल प्रेम, अनुग्रह और करुणा का परमेश्वर है।
3. इसके बजाय हमारा परमेश्वर प्रेम, अनुग्रह और करुणा का परमेश्वर होने के साथ-साथ आतंक, दण्ड और न्याय का परमेश्वर है।

मुख्य भाग:

I. बाइबल परमेश्वर को, कृपालु और कड़ाई दोनों के परमेश्वर के रूप में दिखाती है।

क. रोमि. 11:22 के संदर्भ में परमेश्वर की कृपा और कड़ाई यहूदियों के परमेश्वर की प्रजा के रूप में पहचान से निकाले जाने और परमेश्वर द्वारा अन्यजातियों को परमेश्वर की प्रजा के रूप में पहचाने जाने के अवसर से सम्बन्धित है।

1. परमेश्वर की कड़ाई आज्ञा न मानने वाले यहूदियों को परमेश्वर के राज्य से निकाले जाने के द्वारा दिखाई गई है।
2. परमेश्वर की कृपा अन्यजातियों के परमेश्वर के राज्य में मिलाए जाने के द्वारा दिखाई गई है।
3. ऐल्बर्ट बार्नस ने अन्यजातियों के प्रति परमेश्वर की कृपा के सम्बन्ध में लिखा है, ''तुम्हें अपने पक्ष में मानने में तुम्हारे साथ भी परमेश्वर की **उदारता** या करुणा।''
4. अन्यजातियों के प्रति भी परमेश्वर की कृपा या उदारता शर्त सहित है और इसकी जगह मनुष्य के आज्ञा न मानने के जवाब में परमेश्वर की कड़ाई ले सकती है।

ख. परमेश्वर आज्ञा न मानने वालों के प्रति हमेशा ईर्ष्यालु और बदला लेने वाला रहा है।

1. प्रसिद्ध दस आज्ञाएं परमेश्वर के इन गुणों को दिखाती हैं (निर्ग. 20:5)।
2. छोड़ देने वाले को परमेश्वर आज भी दण्ड देता है (इब्रा. 10:22-31)।
3. परमेश्वर आज भी आज्ञा न मानने वाले को दण्ड देता है (2 थिस्स. 1:1- 9)।

ग. परन्तु परमेश्वर ने मनुष्यजाति के लिए हमेशा अपने अद्वितीय प्रेम को दिखाया है।

1. हमारे परमेश्वर की दिलचस्पी मनुष्यजाति की आत्मिक और अनादि भलाई की थी तब भी जब मनुष्यजाति को अपने पापी होने और खोए होने की स्थिति के बारे में कुछ भी पता नहीं था या उसे कोई परवाह नहीं थी (रोमि. 5:8; यूह. 3:16; 1 यूह. 4:9-10)
2. परमेश्वर ने मनुष्यजाति के साथ प्रेम किया (1 यूह. 4:19)।
3. परमेश्वर आज भी आज्ञा मानने वालों को प्रतिफल देता है (इब्रा. 5:8-9)।

II. परमेश्वर के सेवकों केलिए परमेश्वर का संदेश सुनाना आवश्यक है। जिसमें परमेश्वर की भलाई और उसकी कड़ाई दोनों को बताया गया है।

क. परमेश्वर के प्रचारकों तथा शिक्षकों की ज़िम्मेदारी है कि वे परमेश्वर के सारे वचन को बताएं।

1. सुसमाचार को सुनाने वालों के लिए आवश्यक है कि वे कुछ भी छुपाएं न, बल्कि ''परमेश्वर की सारी मंशा'' को बताएं (प्रेरि. 20:20, 27 ASV)।
2. प्रचारकों तथा शिक्षकों के लिए आवश्यक है कि हर मौसम में और जब इसके सुनने वाले सुनने को तैयार हों या जब वे सुनने को तैयार न हों तब भी परमेश्वर के वचन को सुनाएं (2 तीमु. 4:1-4)।

ख. कई बार परमेश्वर का वचन तीखा होता है।

1. इसे दो धारी तलवार के रूप में बताया गया है जो दोनों तरफ से काटती थी (इब्रा. 4:12)
2. परमेश्वर का वचन मनुष्य के मन को चीर देता है या अंदर तक चुभता है (प्रेरि. 2:37; 7:51-54)।

ग. फिर भी परमेश्वर का वचन तसल्ली दे सकता है।

1. परमेश्वर का वचन विश्वासियों के लिए हमारे प्रभु की वापसी और अनन्तकाल के आरम्भ होने के सम्बन्ध में आशा देने वाला है (1 थिस्स. 4:13-18)।
2. परमेश्वर का वचन आत्माओं के उद्धार की बात को ध्यान में रखते हुए अंतिम आशा देता है (मत्ती 28:18-20)।
3. दोनों ही नियमों में परमेश्वर के विश्वासी बालक के लिए तसल्ली और उम्मीद मिलती है (रोमि. 15:4)।

III. परमेश्वर की कृपा को माता-पिता के बच्चों के व्यवहार के द्वारा दिखाया गया है।

क. कई बार अपने बच्चों के साथ अपने माता-पिता के व्यवहार को परमेश्वर की कड़ाई के रूप में दिखाया गया है।

1. मनुष्यों के परमेश्वर के अनुशासन के साथ-साथ माता-पिता द्वारा बच्चों के अनुशासन दोनों को व्यक्ति की भलाई के लिए माना जाता है (इब्रा. 12:5-11)।
2. अनुशासन अपराध के अनुरूप हो न कि उससे कड़ा (इफि. 6:4)।
3. फिर भी दण्ड कई बार, विशेषकर पुराने नियम के यहूदी मत के तहत कड़ा होता था (व्यव. 21:18-20)।

ख. कई बार माता-पिता को अपने बच्चों के साथ व्यवहार को परमेश्वर की कृपा और उदारता के रूप में दिखाया जाता है।

1. प्रेरित पौलुस ने थिस्सलुनीके के मसीहियों के लिए अपने प्रेम को दूध पिलाने वाली माता के अपने बच्चे के प्रति प्रेम से मिलाया (1 थिस्स. 2:7)।
2. प्रेरित ने उन मसीहियों को एक पिता की तरह जो अपने बच्चों को समझाता या प्रोत्साहित करता है, समझाया या प्रोत्साहित किया (1 थिस्स. 2:11)।

ग. परिवार में, बच्चे के व्यवहार से यह तय होता है कि किसी बच्चे के साथ किसी विशेष परिस्थिति में कैसा व्यवहार किया जाए।

1. इसी प्रकार से, परमेश्वर की कृपा या उदारता आज्ञा मानने वालों को आशीषित करती है (रोमि. 6:17)।

2. परमेश्वर की कड़ाई आज्ञा न मानने वालों के लिए है (2 थिस्स. 1:7- 9)।
3. इसका अर्थ यह हुआ कि सच्चाई से परमेश्वर के वचन का प्रचार करने वालों तथा सिखाने वालों के लिए आवश्यक है कि वे परमेश्वर की कृपा और कड़ाई दोनों का यानी ''परमेश्वर की सारी मंशा'' का प्रचार करें।

सारांशः

1. उदाहरण के लिए, सच्चाई से प्रचार करने वाले परमेश्वर के क्रोध भरे, बदला लेने वाले न्याय का प्रचार करने के बाद यह नहीं कहते कि उन्हें क्षमा किए जाए।
2. न ही सच्चाई से प्रचार करने वाले परमेश्वर के प्रेम, अनुग्रह तथा करुणा का प्रचार करने के लिए क्षमा मांगते हैं।
3. सच्चे प्रचारक सुसमाचार को सुनाने के लिए जिससे कई बार सुनने वालों को ठोकर लगती है, क्षमा नहीं मांगते (गला. 6:16)।
4. न ही सच्चाई से प्रचार करने वाले तसल्ली देने वाले सुसमाचार को सुनाने के लिए क्षमा मांगते हैं।
5. *सच्चे प्रचारक परमेश्वर की सारी मंशा का प्रचार करते हैं, यह सुनने वालों को अच्छी लगे या न!*

निमन्त्रणः

1. परमेश्वर के सच्चाई से प्रचार करने वाले नये नियम में विशेष तौर पर जाए जाने वाले उद्धार के बाइबल की योजना को बताने के लिए कोई क्षमा नहीं मांगते।
2. केवल परमेश्वर के वचन को सुनना, विश्वास करना, मन फिराना, मसीह को मानना, पापों की क्षमा के लिए डुबकी देना और मसीही आज्ञा पालन मिलकर उद्धार के लिए काम करते हैं (रोमि. 10:17; यूह. 8:24; प्रेरि. 17:30; रोमि. 10:9-10; प्रेरि. 22:16; प्रका. 2:10)।
3. भटके हुए मसीहियों के लिए मन फिराकर प्रार्थना करना आवश्यक है (प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

परमेश्वर ... है

यूह. 4:24

प्रसंग: परमेश्वर के आस-पास ऐसे चलना, जैसे यह सम्भव हो, और उसे अलग-अलग कोनों से देखना।

परिचय:

1. एक पल के लिए कल्पना करें कि हम पूरी तरह से परमेश्वर के आस-पास हो सकते हैं।
2. फिर कल्पना करें कि परमेश्वर को अलग-अलग कोनों से देखने के लिए उसके आस-पास चलना सम्भव है।
3. हमें परमेश्वर के बारे में क्या पता चल सकता है?
4. बेशक हम पूरी तरह से परमेश्वर के आस-पास नहीं चल सकते। परन्तु हम परमेश्वर के वचन यानी बाइबल के पहियों द्वारा उसकी समीक्षा कर सकते हैं।
5. इस प्रकार से हम यह पता जान सकते हैं कि परमेश्वर आत्मा है, बेबदल है, सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञानी है, सब जगह है, आदि है, पवित्र है, धर्मी है, प्रेम है, सच्चाई है, बुद्धि और वफ़ादारी है।

मुख्य विषय:

I. परमेश्वर आत्मा है।

क. यीशु ने दावे से कहा कि परमेश्वर पूरी तरह से एक आत्मिक जीव है (यूह. 4:24)।

ख. इसका अर्थ यह हुआ कि परमेश्वर का न तो भौतिक रूप है और न ही वह दिखाई देता है।

ग. परमेश्वर का पुत्र कुंवारी से जन्म के माध्यम से शरीर के द्वारा शारीरिक रूप में देहधारी होने के कारण भी दिखाई दिया था (यूह. 1:1, 14)।

II. परमेश्वर बेबदल है।

क. परमेश्वर वही है चाहे मनुष्यजाति के साथ उसकी बातचीत प्रगतिशील है (उदाहरण, पितृ-तंत्र, यहूदी मत और मसीहियत इब्रा. 1:12)।

ख. इसलिए यीशु का ईश्वरीय स्वभाव भी बेबदल है, चाहे मनुष्यजाति के साथ उसकी बातचीत प्रतिगतिशील हो सकती है (उदाहरण, देहधारी होना) (इब्रा. 13:8)।

III. परमेश्वर सर्वशक्तिमान है।

क. ''परमेश्वर की शक्ति असीमित है। वह कुछ भी जो उसके स्वभाव, व्यवहार, परमेश्वर के साथ मेल न खाता हो, कर सकता है (उत्पत्ति 17:1; 18:14)। परमेश्वर की शक्ति पर सीमाएं केवल उसकी अपनी लगाई हुई है (उत्पत्ति 18:25)'' (नैल्सन),

ख. परमेश्वर ने संसार रचे, और उसी शक्ति के द्वारा संसार अस्तित्व में बने हुए हैं। (और सारी कायनात भी) (कुलु. 1:16-17; 1 कुरिं. 8:6; इफि. 3:9)।

IV. परमेश्वर सब कुछ जानता है।

क. कोई भी परमेश्वर से बढ़कर नहीं जानता है, उदाहरण के लिए, जैसे कि कोई परमेश्वर को सलाह दे सकता (रोमि. 11:33-34)।

ख. सच्चाई से किए गए वैज्ञानिक मूल्यांकन के बावजूद, मनुष्यजाति को उतना ज्ञान नहीं है जितना परमेश्वर को: मनुष्य अपने लिए इस भौतिक संसार में नई नई सच्चाइयों की खोज करता रहता है।

ग. परमेश्वर का ज्ञान हर प्रकार से उसकी तरह ही असीम है (भजन 147:5)।

V. परमेश्वर हर जगह है।

क. दाऊद ने माना कि संसार में कोई ऐसी जगह नहीं है जहां जाकर वह या कोई और छुप जाए और परमेश्वर की उपस्थिति से दूर हो (भजन 139:7-12)।

ख. परमेश्वर ने अपने लिए कहा कि वह स्वर्ग और पृथ्वी दोनों उससे भरे हुए हैं (यिर्म.23:23-24)।

VI. परमेश्वर अनादि है।

क. अतीत, वर्तमान और भविष्य जिसे हम समय कहते हैं, उसका परमेश्वर के साथ कोई सम्बन्ध नहीं (2 पत. 3:8)।

ख. दाऊद ने लिखा कि 1,000 वर्ष का समय परमेश्वर के लिए सिपाही की चार घण्टे की घड़ी से बढ़कर नहीं है (भजन 90:4)।

ग. ''यह उस प्रेड की तरह है जिसे कोई एक समय के खण्ड के रूप में देखता है। परन्तु परमेश्वर समय से उसकी सम्पूर्णता में देखता है'' (नैल्सन)।

घ. परमेश्वर ''युगानयुग'' है (इब्रा. 1:8)

VII. परमेश्वर पवित्र है।

क. यशायाह भविष्यद्वक्ता ने स्वर्ग में स्वर्गदूतों के एक विशेष दर्शन में उन्हें ऊंचे स्वर में ''सेनाओं का यहोवा पवित्र, पवित्र, पवित्र है'' पुकारते हुए सुना (यशा. 6:1-3)।

ख. परमेश्वर के लोगों के लिए परमेश्वर की पवित्रता की नकल करना आवश्यक है (इब्रा. 3:1; 1 पत. 1:15-16; 2:5, 9)।

VIII. परमेश्वर धर्मी है।

क. परमेश्वर के रूप में परमेश्वर यह तय करता है कि धार्मिकता क्या है, उसी के अनुसार मनुष्यजाति को निर्देश देना, आज्ञा मानने वालों को प्रतिफल, और अधर्मियों को दण्ड देना (रोमि. 1:16-17; 3:24-26; 6:16)।

ख. मनुष्यजाति जब जब परमेश्वर की धार्मिकता को अपनाने में नाकाम होती है या धार्मिकता के अपने खोखले मापदण्ड बनाने लगती है तब तब यह अपने लिए गम्भीर और अनन्त क्षति पहुंचाती है (रोमि. 10:3)।

ग. पापियों और पवित्र लोगों (संतों) के लिए आवश्यक है कि ''धर्म के लिए जाग उठो और

पाप न करो'' (1 कुरिं. 15:34)।

IX. परमेश्वर प्रेम है।

क. वचन साफ़-साफ़ बताता है कि ''परमेश्वर प्रेम है'' (1 यूह. 4:8, 16)।

ख. ''पूरी बाइबल में ईश्वरीय प्रेम सुनहरी डोरी की तरह निकलता है'' (नैल्सन) और अदन की वाटिका से लेकर अंतिम छुटकारे तक मनुष्य के प्रति परमेश्वर के हर उद्धार भाव से साफ़ पता चलता है (उत्प. 1:26-31: इफि. 3:3-11)।

X. परमेश्वर सच्चाई है।

क. सीधी सी बात है, ''परमेश्वर सच्चा है'' (2 कुरिं. 1:18)।

ख. बिना परमेश्वर के सही और गलत, सच और झूठ के मानक ठहराने में कोई सच्चाई नहीं है (रोमि. 1:25; 15:8; यूह. 14:6, 17; 2 कुरिं. 11:10; 1 यूह. 5:6)।

ग. इसी प्रकार से परमेश्वर का दूसरा व्यक्तित्व सच्चाई लेकर आया जो सचमुच में पृथ्वी के लिए आवश्यक है (यूह. 1:17; 18:37; गला. 2:5; इफि. 1:13, कुलु. 1:5; 1 थिस्स. 2:13; 2 तीमु. 2:15)।

घ. यह सच्चाई व्यक्ति को पाप से मुक्त कर सकती है (यूह. 8:32; 17:19; रोमि. 2:8)।

ङ. हम सब को सच्चाई और बुद्धि की बातें चाहिए (प्रेरि. 26:25)।

XI. परमेश्वर बुद्धि है।

क. परमेश्वर मनुष्यजाति से असीम रूप में बुद्धिमान है (1 कुरिं. 1:25)।

परमेश्वर की बुद्धि उसके बेहतरी काम करने में, बेहतरी उद्देश्य के लिए बेहतरीन समय पर पता चलती है। कुछ लोगों के पास ज्ञान होता है, परन्तु समझ बहुत कम होती है, जबकि अधिकतर बुद्धिमान लोगों के पास बहुत बार बहुत कम ज्ञान होता है परन्तु परमेश्वर ''एकमात्र समझदार परमेश्वर'' है (1 तीमु. 1:17)। सृष्टि, इतिहास, मानवीय जीवों, छुटकारे और मसीह में, उसकी ईश्वरीय समझ पता चलती है (नैल्सन)।

ख. सुलैमान या उन मसीही लोगों की तरह जिन्हें याकूब ने लिखा, हमें केवल परमेश्वर से बुद्धि मांगना (अपने व्यवहार में उस पर चलना) आवश्यक है (1 राजाओं 3:9; याकू. 1:5)।

XII. परमेश्वर वफ़ादार है।

क. परमेश्वर भरोसे के योग्य या वफ़ादार है जिस पर हम भरेसा कर सकते हैं कि उसके मन में हमारी बेहतर आत्मिक और सनातन दिलचस्पी है (1 कुरिं. 1:9)।

ख. परमेश्वर वफ़ादार है और वह मनुष्यजाति को सहने की उसी क्षमता के बढ़कर परीक्षा में नहीं पड़ने देगा (1 कुरिं. 10:13)।

ग. परमेश्वर पश्चात्तापी मनुष्य को उसके पाप क्षमा करने के लिए वफ़ादार है (1 यूह. 1:9)

निष्कर्ष:

1. बाइबल परमेश्वर के अस्तित्व और परमेश्वर के स्वभाव को दिखाती है।
2. मनुष्यजाति परमेश्वर को बाइबल से जान सकती है।
3. अंत में हर व्यक्ति परमेश्वर को और पूरी तरह से जान जाएगा, परन्तु अभी के लिए हमें उसी से संतुष्ट होना आवश्यक है जो बाइबल परमेश्वर के बारे में बताती है।
4. *नैल्सनस इलस्ट्रेटड बाइबल डिक्शनरी* में परमेश्वर के गुणों को उसी में दिखाया गया है जिन्हें हमने स्वाभाविक गुणों और नैतिक गुणों के रूप में देखा है।
5. स्वाभाविक गुणों में शामिल हैं: आत्मा, बेबदल होना, सर्वशक्तिमान होना, सर्वज्ञानी होना और हर जगह और अनादि होना।
6. नैतिक गुणों में शामिल है: पवित्र, धर्मी, प्रेम, सच्चाई और बुद्धि।

निमन्त्रण:

1. मनुष्यजाति यीशु मसीह के सुसमाचार की आज्ञा मानकर और मसीही बनकर परमेश्वर के नैतिक गुणों की नकल करती है (रोमि. 1:16; 6:17; प्रेरि. 11:26)।
2. पापियों के लिए, पवित्र, धर्मी बनना, प्रेम करना, सच बोलना, ईश्वरीय बुद्धि पर निर्भर होना और वफ़ादार होना आवश्यक है (1 पत. 1:15–16; 2 कुरिं. 5:21; रोमि. 13:8; इफि. 4:25; 1 कुरिं. 1:21, 24; 1 कुरिं. 15:58; प्रका.; 2:10)।
3. मसीही लोगों के लिए पवित्र, धर्मी, प्रेम में, सच्चाई में समझदारी से चलना आवश्यक है (प्रका. 22:11; इफि. 5:2; कुलु. 4:5)।

प्रमाण कि
परमेश्वर है
भजन संहिता 14:1

प्रसंग: सही ढंग से निष्कर्ष निकालने के लिए कि परमेश्वर है, बाइबल तथा संसार पर विचार करने के द्वारा विवेक और सामान्य-बुद्धि का इस्तेमाल करना।

गीत: *प्रभु महान विचारूं कार्य तेरे*

परिचय:

1. भजन लिखने वाले ने कहा है कि केवल कोई मूर्ख ही यह निष्कर्ष निकालेगा कि परमेश्वर नहीं है, भजन 14:1
2. प्रेरित पौलुस ने लिखा है कि सृजित संसार परमेश्वर के अस्तित्व की पर्याप्त साक्षी देता है (रोमि. 1:19-20)।
3. बेशक, परमेश्वर को मानने के साथ अपने निर्देशों वाला ईश्वरीय प्रकाशन भी आता है जिसके लिए मनुष्यजाति परमेश्वर को जवाबदेह है।
4. इसका अर्थ यह हुआ कि इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि मनुष्य यह निष्कर्ष निकालने को तत्पर है कि कोई परमेश्वर है ही नहीं।
5. परन्तु भौतिक संसार के प्रमाण को यदि सही ढंग से और ईमानदारी से देखा जाए तो यह परमेश्वर के अस्तित्व की पुष्टि करता है।
6. हम इसके प्रमाणों पर कि परमेश्वर है, संक्षेप में विचार करते हैं।
   - क. संसार का होना।
   - ख. नैतिकताओं का होना।
   - ग. संसार में डिज़ाइन का होना।

मुख्य भाग:

I. संसार का होना साबित करता है कि परमेश्वर है।

- क. संसार के अस्तित्व पर विचार किए जाने से निकले विचार को कि परमेश्वर है, *Cosmological Argument* (सृष्टि-कारण युक्ति) कहा जाता है।
  1. ''कॉस्मोलोजी'' की शब्दकोष की एक परिभाषा ''संसार के प्राकृतिक क्रम का वर्णन करती थ्योरी या डॉक्ट्रिन'' है (मर्रियम)।
  2. ''कॉस्मोलोजी'' की एक और परिभाषा ''संसार का सम्पूर्ण अध्ययन, और इसके विस्तार में, मनुष्यजाति के स्थान का अध्ययन'' है (Cosmology)।
- ख. संसार के अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए [इसके आरम्भ के] केवल तीन विकल्प हैं: (1) यह सदा से है; (2) यह शून्य से बना; या (3) इसे सृजा गया (हरूब 15)।
- ग. यह संसार कीचड़ में पत्थर फेंकने की जगह से आगे पानी में तरंगों के फैल जाने की तरह फैल रहा है।

1. यह इस बात का संकेत है कि संसार का आरम्भ हुआ था।
2. इसलिए *संसार अविनाशी नहीं है*!
3. विकासवादी वैज्ञानिक भी तुरंत मान लेते हैं कि संसार अविनाशी नहीं है।
4. जिस प्रकार से किसी छोटे लड़के के कीचड़ में पत्थर फेंकने पर पानी में तरंगें बनने लगीं, उसी प्रकार से बुनियादी तौर पर फैल रहे संसार के फैलने के किसी केन्द्र से बाहरी फैलाव को समझाने के आवश्यक *कारण* का होना आवश्यक है।

घ. इसी प्रकार से थर्मोडायनामिक (यानी ऊष्मागतिकी) का दूसरा नियम हर जगह माना जाने वाला वैज्ञानिक तथ्य है, जिसमें यह संकेत है कि हर चीज़ का कभी न कभी आरम्भ हुआ था।

1. थर्मोडायनामिक (ऊष्मागतिकी) के दूसरे नियम में उस सब का जो अस्तित्व में है खराब होना और गड़बड़ी का बढ़ना आता है।

   थर्मोडायनामिक (ऊष्मागतिकी) का दूसरा नियम दैनिक जीवन में पाए जाने वाले बुनियादी नियमों को वर्णित करता है। आंशिक रूप में यह विघटन का सामान्य नियम है, जो कि इस बात का अंतिम कारण है कि समय बीतने पर अंत में हर चीज़ बिखरकर विघटित क्यों हो जाती है। *भौतिक वस्तुएं अविनाशी नहीं हैं।* ... हर चीज़ पुरानी हो जाती है और घिस जाती है यहां तक कि मृत्यु भी इसी नियम को दिखाती है। दूसरे नियम के प्रभाव सब जगह पाए जाते हैं, जो संसार की हर चीज़ को प्रभावित करते हैं। ... यह सर्वविदित है कि यौगिक पदार्थों को अपने आप पर छोड़ दिए जाने पर अंत में वे छोटी-छोटी वस्तुओं में बिखर जाते हैं जिस कारण अंत में वे और जटिल नहीं बनते। ... जटिल, सुव्यवस्थित पद्धतियों तथा प्रवृतियों की स्वाभाविक प्रवृति समय के साथ सरल और अधिक गड़बड़ वाली हो जाती है। इस कारण, लम्बी अवधि में पूरे संसार की प्रवृति, ढलान की ओर जाने की है (टेयलर)।

2. फिर भी विकासवाद की थ्योरी में सुस्पष्ट, वैज्ञानिक तथ्य के बिल्कुल विपरीत कहा जाता है।

   इसे आसान शब्दों में कहें तो *वास्तविक संसार में, लम्बी अवधि में समग्र बहाव ढलान की ओर होता है, न कि चढ़ाई की ओर।* हर प्रयोगात्मक और भौतिक विचार इसी की पुष्टि करता हुआ लगता है कि यह नियम वास्तव में विश्वव्यापी है, जो लम्बी अवधि में सभी प्राकृतिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है। प्रकृतिवादी विकासवाद में कहा जाता है कि भौतिक नियम अपने आप को जटिल और फिर और जटिल और लाभकारी बनाते हुए, सुव्यवस्थित प्रबन्धों में संगठित कर देते हैं। समय बीतने पर अरबों वस्तुएं ऊपर की ओर बढ़ती हुई और व्यवस्थित व जटिल हो जाती हैं। परन्तु विज्ञान का यह बुनियादी (ऊष्मागतिक या थर्मोडायनामिक का दूसरा) नियम इसके बिल्कुल विपरीत बताता है। समय बीतने के साथ लम्बे और जटिल और सुव्यवस्थित प्रबन्ध वास्तव में और अधिक सरल और अव्यवस्थित होने लगते हैं। पूरे संसार में अंत में ढलान की ओर बहाव वाली अपरिर्वतनीय प्रवृति काम कर रही होती

है। अपने बढ़ते रहने वाले प्रबन्ध तथा जटिलता के साथ प्राकृतिक संसार में विकासवाद असम्भव लगता है (टेयलर)।

3. जिस कारण, कुछ विकासवादियों ने, ऊष्मागतिक के दूसरे नियम को समझते हुए विकास की शिक्षा को बेतुका और अवैज्ञानिक मानकर छोड़ दिया है।

   सचमुच में समझ आ जाने पर, कई वैज्ञानिकों का मत होता है कि दूसरा नियम विकास की थ्योरी के खण्डन के लिए काफी है। वास्तव में यह कई विकासवादियों के सृष्टिवाद के पक्ष में इस थ्योरी को छोड़ देने के सबसे महत्वपूर्ण कारणों में से एक है (टेयलर)।

4. इसलिए ऊष्मागतिक का दूसरा नियम यह कहता है कि सब कुछ पुराना पड़ गया है, इसलिए सब बातों का, जिसमें संसार भी शामिल है, आरम्भ था (यशा. 51:6; भजन 102:25-26; 2 पत. 3:10)।
5. भाई एडवर्ड बेनेश ने बिल्कुल सही कहा है ''प्रमाण की बुनियादी बात ऊष्मागतिक का दूसरा नियम है कि संसार का आरम्भ हुआ था।''
6. इसका अर्थ यह हुआ कि संसार का कभी न कभी आरम्भ हुआ था और यह कि यह अविनाशी नहीं है।

ङ: यदि संसार का आरम्भ हुआ था, तो क्या यह अपने आप बन गया?

1. लातीनी अभिव्यक्ति ''Ex nihilo nihil fit'' (एक्स निहिलो निहिल फिट) का अर्थ है, ''शून्य से कुछ नहीं आता यानी हर कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है'' (''निहिलो'')।
2. हम प्रसिद्ध लेखक चार्ल्स हॉज के साथ सहमत होते हैं:

   यह अपने आप में प्रमाणित सच्चाई है कि अस्तित्व, बिना अस्तित्व से अपने आप नहीं हो सकता। इस अर्थ में *एक्स निहिलो निहिल फिट* सब जगह माना जाना वाला सिद्धांत है। इसलिए वे लोग जो लौकिक दिमाग के होने का इंतजार करते हैं, उन्हें यह मानना पड़ता है कि संसार जैसा अब है, वैसा ही हमेशा रहेगा। परन्तु यह तो बदलता रहने वाला है, जो हमेशा से वैसा नहीं था जैसा आज है (411)।

3. एक और ने लिखा है:

   एक्स निहिलो निहिल फिट वाक्यांश इस अर्थ में सच है कि हर सीमित वस्तु का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। और शून्य से कभी कुछ नहीं आ सकता चाहे वह (क) सीमित शक्ति से हो; (ख) भौतिक स्रोत के रूप में; या फिर (ग) निर्गम, संतान और विकास के द्वारा (हॉल)।

4. हर कीमत पर पहले कारण (जिसका बहुत से लोग बुरी तरह से इनकार करते हैं, परमेश्वर हो सकता है) के तर्कसंगत और निश्चित निष्कर्ष से बचने की कोशिश करने के बेतुकेपन को लोगों के विवेकहीन हो जाने में देखा जा सकता है।

   विज्ञान के सबसे अनुल्लंघनीय और पुराने नियमों में से एक एक्स निहिलो

निहिल फिट अर्थात ''शून्य से कुछ नहीं होता है'' है। जब वैज्ञानिक शून्य को शक्तिशाली मान लेते हैं तो वे मिथ बना रहे होते हैं। यहां पर चांस ''न केवल खरगोशों को बल्कि पूरे संसार को शून्य में से बनाने के लिए जादू की छड़ी'' है (एंकलरबर्ग ऐंड वेलडन)

च. संसार अपने आप नहीं बना, इसलिए एक ही सम्भावना रह जाती है।

1. संसार के अस्तित्व की एकमात्र तर्कसंगत व्याख्या यह है कि इसे सृजा गया या इसे अस्तित्व में लाया गया।
2. सीधी सी बात है कि *आदि कारण* का होना आवश्यक है, और यह कि शून्य में अपने आप में कारण बनने की योग्यता नहीं है (बेनेश 68)।
3. बाइबल वह *आदि कारण* परमेश्वर को बताती है (उत्प. 1:1; नहे. 9:6, भजन 8:3; 33:6; 102:25; नीति. 3:19; इब्रा. 3:4; 11:3)।
4. परन्तु, सच में परमेश्वर ही अनादि होना आवश्यक है और *बिना आदि कारण के* वही सदा से अस्तित्व में है।

   परन्तु कोई पूछ सकता है कि यदि संसार में हर चीज़ के लिए कारण का होना आवश्यक है, तो परमेश्वर के होने का क्या कारण है। बहुत से लोगों ने यह प्रश्न पूछा है और उनमें से सब ने यही गलती की है। यहां पर दोष वर्ग का है। घटनाएं बिना कारण के नहीं घटती हैं। परन्तु परमेश्वर न तो घटना है और न ही अनावश्यक आकस्मिक जीव, इसलिए उसे कारण की कोई आवश्यकता नहीं है। हमारे संसार और अस्तित्व की तरह परमेश्वर का न तो कोई आरम्भ है और न कोई अंत (बेनेश 82)।

छ. आदि कारण व्यक्तिगत जीवन है, इसलिए संसार में नैतिकताओं और समझदार डिज़ाइन के अस्तित्व की समझ से स्पष्ट हो जाता है।

II. नैतिकताओं का होना साबित करता है कि परमेश्वर है।

क. इस तर्क को कि परमेश्वर का होना नैतिकताओं के अस्तित्व को ध्यान में रखने से है *Anthropological Argument* (एंथ्रोपोलोजिकल आर्गुमेंट अर्थात मानवशास्त्रीय तर्क) के नाम से जाना जाता है।

1. मेर्रियम वैब्स्टर'स कॉलेजिएट डिक्शनरी में ''एंथ्रोपोलोजी'' अर्थात ''मानवशास्त्र'' की परिभाषा ''मानवीय जीवों के विज्ञान: विशेषकर जातियों के वितरण, मूल, वर्गीकरण और सम्बन्ध, शारीरिक व्यवहार, परिवेश तथा सामाजिक सम्बन्धों और संस्कृति के सम्बन्ध में मानवीय जीवों के अध्ययन'' के रूप में की गई है।
2. एक और परिभाषा इस प्रकार है: ''मनुष्यों के मूल, व्यवहार, तथा भौतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का वैज्ञानिक अध्ययन।'' (एंथ्रोपोलोजी)।

ख. आरम्भ की व्याख्या के रूप में विकास की शिक्षा मनुष्य की नैतिकता के आरम्भ को बताने में अक्षम है।

1. हम भाई हारूब के साथ सहमत हैं:

तत्व के लिए स्वयं को ''सही'' और ''गलत'' की नैतिक प्रणाली को विकसित करना असम्भव है। फिर भी मनुष्य सही और गलत को पहचानता है। प्रश्न यह उठता है कि सदाचार या नैतिकता का आरम्भ कब हुआ? ... किसी चीज़ के ''सही'' या ''गलत'' होने के लिए आवश्यक है कि नैतिकता का कोई पक्का मानक है। ... (1) या तो वे [नैतिकताएं] जादू से प्रकट हो गईं और मनुष्य ने उन्हें बना दिया; (2) या उनका आरम्भ परमेश्वर की ओर से हुआ (हारूब 15)।

2. सर्वश्रेष्ठ की उत्तर जीविता की विकासवादी शिक्षा अनिवार्य रूप में ''जिसकी लाठी उसकी भैंस,'' ''यदि मैं इसे ले सकता हूं तो तेरी चीज़ मेरी है'' और ''हर व्यक्ति अपने लिए नियम है'' है (न्यायियों 17:6; 21:25)।
3. सर्वश्रेष्ठ की उत्तर जीविता के सिस्टम में केवल एक रोक, अपने से बलवान किसी को न ललकारने की आत्मरक्षा है।
4. सर्वश्रेष्ठ की उत्तर जीविता में पूरी तरह से करुणा, सदाचार नहीं है।

ग. संसार में सब जगह मनुष्यों के बीच नैतिकता का होना, किसी भी मनुष्य से आगे नैतिकता के अकेले स्रोत की बात करता है।

मनुष्यजाति में नैतिकता का बोध पाया जाता है जो तुलना किए जाने पर सारे संसार में सब जगह एक सा होता है। यह स्वयं किए गए अविष्कार से नहीं हो सकता, इसलिए नैतिकता का स्रोत अवश्य ही मनुष्यजाति के बाहर से होगा (फिलिप्स 191)।

1. ''नैतिकताओं के विश्व्यापी सिस्टम का होना इस बात का अच्छा प्रमाण है कि परमेश्वर है'' (हारूब 15)।
2. केवल कोई अलौकिक जीव (परमेश्वर) ही कोई विश्वव्यापी नैतिक नियम बनाकर इसे सारी मनुष्यजाति में डाल सकता है।

घ. आदमी का विवेक नैतिक न्याय का वाहन या तंत्र या नैतिकता का बोध होता है।

1. भौतिक या विकासवादी व्याख्या पूरी तरह से विवेक की क्षमता का उत्तर नहीं दे सकती।
2. विवेक केवल इतनी समझ देता है कि कोई बात ''आवश्यक है'' या नैतिक दायित्व क्या है।
3. विवेक को गलत जानकारी देकर उससे वह करवाया जा सकता है जो इसे नहीं करना चाहिए और वह करने से रोका जा सकता है जो इसे करना चाहिए, परन्तु इसके बावजूद विवेक फिर भी होता है।
4. विवेक की उपेक्षा की जा सकती है जब तक यह कठोर नहीं होता और इसकी आवाज़ नहीं सुनी जाती, परन्तु विवेक मनुष्य में पाया जाने वाला सहज भाग है (1 तीमु. 4:2)।
5. हो सकता है कि किसी को विवेक को नापसंद हो या वह नैतिकता को नकारना चाहता हो, परन्तु मनुष्य की हर बात, चाहे वह अनिच्छा से ही हो, उसके अपने विचार से बढ़कर, नैतिकताओं के अनकहे नैतिक नियम के साथ होती है।

ङ: चीज़ों के आरम्भ की व्याख्या के रूप में, बाइबल में बताए सृष्टि के विवरण के बजाय

विकासवाद में विश्वास करने के कारण बुराई बहुत बढ़ी है (रोमि. 1:19-32)।

1. ''यह तो बिल्कुल साफ़ है कि सृष्टि की विकासवादी व्याख्या, नैतिकता का कारण नहीं बता पाएगी।... दूसरी ओर, ऐसा लगता है कि विकासवादी व्याख्या वचनबद्धता को नैतिकता के सामने खोखला कर देगी।'' (किल्कुलन)।
2. अमेरिकी सामाज से परमेश्वर को निकाल देने का नतीजा नैतिकता की जगह, किसी नैतिक नियम का न होना हुआ है जिसके प्रति कोई जवाबदेह हो।
3. परमेश्वर को क्लासरूम से, अपनी विधानसभाओं से और फिर अपनी अदालतों में से निकाल देना, विकासवादी विचार की स्वयं पूरी होने वाली भविष्यद्वाणी (सर्वश्रेष्ठ की उत्तरजीविता) को पूरा करता है।
4. हम ने स्कूलों में परमेश्वर और उसकी बाइबल को निकालकर उसकी जगह बंदूकें और कंडोम आदि रख दिए हैं।
5. हम बंदरों के वंशज नहीं हैं, जिसका दावा विकासवादी लोग करते हैं, बल्कि विकासवादी लोग मनुष्यजाति को बंदरों और पशुओं के झुंडों में बदल रहे हैं।

III. संसार में डिज़ाइन का होना साबित करता है कि परमेश्वर है।

क. इस तर्क को कि परमेश्वर है, संसार में डिज़ाइन के होने विचार से *Teleological Argument* (टेलियोलोजिकल आर्गुमैंट) यानी उद्देश्यपरक युक्ति कहा जाता है।

1. *Merriam Webster's Collegiate Dictionary* की परिभाषा प्रकृति में डिज़ाइन के प्रमाणों के अध्ययन के रूप में दी गई है।
2. टेलियोलोजिकल आर्गुमैंट की परिभाषा ''प्रकृति में क्रम, उद्देश्य, डिज़ाइन और/या दिशा के लगने वाले प्रमाण पर आधारित परमेश्वर या एक सृष्टिकर्त्ता के लिए तर्क'' (''टेलियोलोजिकल'')।
3. डिज़ाइन के लिए तर्क केवल इतना कहता है कि जहां डिज़ाइन उद्देश्य से बना है, वहां डिज़ाइन बनाने वाले का होना आवश्यक है (बोर्ड 288)।

ख. तारों भरे संसार का डिज़ाइन यह साबित करता है कि परमेश्वर है।

1. इतने बड़े संसार में जो समझ से बाहर है हमारी पृथ्वी एक छोटा सा कण है।

   हम एक बहुत ही विशाल संसार में रहते हैं। इसकी बाहरी सीमाओं को चाहे मापा नहीं गया है, परन्तु इसका व्यास अनुमानत: 20 बिलियन (2 करोड़) प्रकाशवर्ष तक मापा जाता है। [प्रकाश वर्ष उस दूरी को कहा जाता है जो 18 6,000 मील प्रति सेकंड से थोड़ा सा अधिक गति से एक वर्ष में प्रकाश द्वारा तय की जाती है। ... संसार में लगभग एक करोड़ आकाशगंगाओं (लॉटन, 1981) और 25 अंक (25 सेक्स्टिलियन) तारों के होने का अनुमान लगाया जाता है। जिस आकाशगंगा में हम रहते हैं उसमें 100 बिलियन (10 खरब) से अधिक तारे हैं और यह इतनी बड़ी है कि प्रकाश की गति से चलने पर भी इसके व्यास को पार करने के लिए 100,000 वर्ष लग जाएंगे (थॉम्पसन)।

2. हमारे सूर्य के सम्बन्ध में पृथ्वी की स्थिति बिल्कुल वहां पर है जहां से यह राख बनने या बर्फ़ बनने से बची रहती है।

यदि हम सूर्य के 10 प्रतिशत थोड़ा और निकट हो जाएं (लगभग 1 करोड़ मील), अत्यधिक रेडिएशन (और गर्मी) सोख ली जाएगी। यदि पृथ्वी सूर्य से ज़रा 10 प्रतिशत पीछे हट जाए, तो बिल्कुल कम गर्मी सोखी जाएगी। दोनों में से कोई भी दृश्य से पृथ्वी पर जीवन का अंत हो जाएगा। ... पृथ्वी भूमध्य रेखा पर अपनी धुरी पर 1,000 मील (1 मील=1.6 कि.मी.) प्रति घंटा की गति से घूम रही है, और 70,000 मील प्रति घंटा (लगभग 19 मील प्रति सेकंड), सूर्य के गिर्द घूम रही है जबकि सूर्य तथा इसकी सौर्य प्रणाली इतने बड़ी परिक्रमा में 600,000 मील प्रति घंटा की गति से इसमें से चल रही है कि केवल एक परिक्रमा पूरी करने के लिए इसे 226 मिलियन वर्ष लग जाएंगे। इनके इस चक्र से प्रकाश और अंधकार के समय मिलते हैं जैसा कि हम जानते हैं कि जीवन को बनाए रखने के लिए एक आवश्यक तथ्य है। यदि पृथ्वी अधिक गति से घूमती, तो रसोई में इस्तेमाल होने वाली मिक्सी की तरह पृथ्वी पर भयानक तूफ़ान आते रहते। यदि पृथ्वी बहुत धीमे घूमती, तो दिन और रात असम्भव रूप में गर्म या सरद होते। ... परन्तु पृथ्वी की परिक्रमा पूरी तरह से गोल नहीं है बल्कि यह अण्डाकार है। इसका अर्थ यह है कि पृथ्वी कई बार अन्य समयों की तुलना में सूर्य के अधिक निकट होती है। जुलाई में, पृथ्वी सूर्य के सबसे निकट होती है; जनवरी में, यह सबसे दूर होती है। जब यह निकट होती है, तो पृथ्वी सूर्य में खिंच जाने से बचने के लिए ''गति तेज कर देती है''; जब यह थोड़ी दूर होती है तो यह ''धीमी हो जाती'' है ताकि यह अंतरिक्ष में उसी स्थिति में बनी रही जो बिल्कुल सही है। ... दिलचस्प बात यह है कि सूर्य के गिर्द अपनी परिक्रमा में घूमते हुए पृथ्वी हर अठारह मील के केवल नौवें भाग से सीधी रेखा से दूर हाती है। यदि यह एक इंच का आठवां भाग दूर हो जाए, तो हम सूर्य के इतना निकट आ जाएं कि हम भस्म हो जाएं। यदि यह एक इंच का दसवां भाग दूर हो जाए तो हम सूर्य से अपने आपको इतना दूर पाएंगे कि हम सब बर्फ़ बन जाएं। ... पृथ्वी अपनी धुरी पर बिल्कुल सही 23.5 डिग्री झुकी हुई है। यदि यह झुकी न होती, बल्कि सूर्य के गिर्द अपनी परिक्रमा में सीधी होती, तो मौसम नहीं होने थे। (थॉम्पसन)।

3. पृथ्वी पर समुद्रों तथा महाद्वीपों की स्थिति एक दूसरे के साथ अपने-अपने अनुपातों में पृथ्वी पर उपयोगी मौसम देने के लिए बिल्कुल सही है।

   पृथ्वी के महासागर बिल्कुल सही डिज़ाइन का एक और अच्छा उदाहरण है। पानी पृथ्वी की 72 प्रतिशत सतह पर है जो कि अच्छा है क्योंकि महासागरों से नमी का वह भण्डार मिलता है जिसमें से भाप बनती रहती है और द्रविकरण होता रहता है। अंत में इससे पृथ्वी पर वर्षा होती है। यह बात सुपरिचित है कि जब पानी ठोस भूमि से कहीं कम गति से गर्म और ठण्डा होता है, तो यह इस बात का पता देता है कि मरुस्थल के इलाके दिन के समय में झुलसाने वाली गर्मी और रात के समय जमाने वाली ठण्ड क्यों होती है। परन्तु पानी अपने तापमान को लम्बे समय तक बनाए रखता है और पृथ्वी की भूमि वाले क्षेत्रों के लिए

एक तरह का प्राकृतिक गर्म करने/ठण्डा करने का सिस्टम उपलब्ध करवाता है। पृथ्वी का वार्षिक औसतन तापमान (56°F; 13.3°C)। महासागरों के जल में पाए जाने वाले गर्मी के बड़े भण्डार को बनाए रखा जाता है। तापमान का बढ़ना उससे कहीं अधिक अनियमित होता जितना वह है, यदि ऐसा न होता कि पृथ्वी का लगभग अस्सी प्रतिशत भाग पानी से न ढका होता (थॉम्पसन)।

संसार के किसी भी मानचित्र को सरसरी तौर पर देखने से उत्तरी गोलार्द में पृथ्वी की भूमि का अधिक भाग दिखाई देता है। स्वाभाविक रूप से यह दक्षिणी गोलार्द के अधिक भाग को पानी से ढका हुआ रहने देता है। पानी में गर्मी की बड़ी क्षमता होती है जबकि भूमि में नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि पानी बहुत सी गर्मी को सोखकर धीरे-धीरे छोड़ता है। दूसरी ओर सूखी भूमि इसके बिल्कुल विपरीत है। इसलिए जब दक्षिणी गोलार्ध सूर्य के निकट होता है, तो सूर्य की अत्यधिक गर्मी पानी के ऊपर पड़ने पर छितर जाती है। कुछ गर्मी जो पानी सोख लेता है वह महासागर की लहरों से ठण्डे उत्तरी गोलार्द में चली जाती है। यदि दक्षिणी गोलार्ध में पानी न इकट्ठा हुआ होता तो यह छितरने और बदलने का सिस्टम काम न करता। पृथ्वी के झुके हुए धुरे के साथ मेल में काम करते हुए ये दोनों गुण संस के तापमान को सीमित रखने में सहायता करते। उत्तरी भूमि का क्षेत्र अधिकतम सौर्य ऊर्जा से सोख लेता है जब पृथ्वी सूर्य से सबसे दूर होती है, जबकि पृथ्वी के सबसे निकट होने पर दक्षिणी जल गर्मी को इकट्ठा करके इसे प्रतिबिम्बित करते हैं (क्लेटन और जैनमा 26)।

ग. पशु और वनस्पति जगत में डिज़ाइन साबित करता है कि परमेश्वर है।

1. जानवरों और पौधों के बीच कार्बनडाइऑक्साइड और ऑक्सीजन के एकदम आवश्यक और अनिवार्य अदल बदल पर विचार करें।

   इसके अलावा मनुष्य तथा पशु ऑक्सीजन अंदर लेते हैं तथा कार्बनडाइऑक साइड बाहर निकालते है। जबकि दूसरी ओर पौधे कार्बनडाइऑक्साइड अंदर लेते हैं और ऑक्सीजन बाहर निकालते हैं। अपनी ऑक्सीजन की पूर्ति के लिए हम वनसपति जगत पर निर्भर हैं, फिर भी हम आम तौर पर यह नहीं समझ पाते कि हमारी ऑक्सीजन का लगभग 90 प्रतिशत, समुद्र के बहुत छोटे पौधों में से आता है (देखें असिमोव, 1975, 2:116)। यदि हमारे महासागर काफी छोटे हों, तो जल्द ही हमारे पास सांस लेने के लिए हवा नहीं होगी (थॉम्पसन)।

2. दूसरा, इस असामान्य जंतु बम्बार्डियर बीटल (प्रक्षेपी भृंग) पर विचार करें।

   बम्बार्डियर बीटल के पेट में दो ग्रंथियां होती हैं जिनका इस्तेमाल यह हाइड्रोकुइनोन और हाइड्रोजन पैराक्साइड नामक रसायन को बनाने और जमा करने के लिए करता है। .... किसी मेंढक, चूहे या किसी अन्य कीट का आक्रमण होने पर वह जल्दी से उस मिश्रण की फुहार दोहरी जलन नलियों में पिचकारी मारता है जिसका लक्ष्य 360° का घेरा हो सकता है। ये नलियां दो

विशेष रसायणों में निकलती हैं जिन्हें अंज़ाइम कहा जाता है और इससे मिश्रण में बदलाव हो जाता है। ... यह रासायणिक क्रिया अंत में विस्फोट बन जाती है। इस प्रतिक्रिया के होने से निकलने वाली गर्मी से यह तरल 212° फॉर्नहीट (100° सेल्सियस) पर उबल कर बहुत बड़ा दबाव बनाता है। दहन नली के ऊपर वाल लगे होते हैं जो बंद होते हैं परन्तु इस तरल के ''तड़ाक'' की आवाज़ से खुल जाते हैं। यही मिश्रण आक्रमण करने वाले के मुंह में और चेहरे पर पड़ता है। ... यहां सवाल पूछा जाना आवश्यक है, ''इस भृंग को आत्मरक्षण का इतना बड़ा तंत्र कैसे मिला? विकासवाद की शिक्षा को मानने वाले व्यक्ति को इस तंत्र के मिलने के लिए लाखों करोड़ों छोटी छोटी दुर्घटनाओं तथा बदलावों को मानना पड़ेगा। फिर भी, यदि पहली बार उपयोगी परिणाम न निकलने पर इस भृंग ने ऐसा तंत्र क्यों बनाना था? बिना अंज़ाइमों के यह मिश्रण किसी काम का नहीं है। बिना मिश्रण के अंज़ाइम किसी काम के नहीं हैं। दिशा और दबाव बनाने के लिए वालों के बिना दहन नली किसी काम की नहीं है। इस पर और बात की जा सकती है परन्तु वास्तव में इसका अर्थ यह है कि ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे रक्षात्मक तंत्र अपने आप बन पाता जब तक यह सब एक ही बार न हुआ हो। विकासवाद की एक असम्भावना, बड़े डिज़ाइनर की एक सीधी सी बात है! मूर्ख ने अपने मन में कहा है, ''कोई परमेश्वर है ही नहीं'' (भजन 14:1)। (एवरसन, ''बम्बार्डियर'')।

3. तीसरा, इस असाधारण पौधे वीनस फ्लाई ट्रैप (कीट पतंगों के उस पर बैठने पर जकड़ लेने वाला पत्ता) पर विचार करें।

[यह पौधा मुख्य रूप से अमरीका के कैरोलिना क्षेत्रों में पाया जाता है। इसके पत्ते दो भागों में बँटे होते हैं और दोनों के मध्य एक उभार होता है, वह दरवाजे के कब्ज़े की तरह कार्य करता है। पत्ते के दोनों भागों की सतह पर संवेदनशील बाल जैसे रेशे होते हैं। इनमें से किसी को कोई छू ले तो पत्ते के दोनों भाग तुरन्त बन्द हो जाते हैं और कीट को अपने भीतर कैद कर लेते हैं। कीट को पूरा पचाने के पश्चात पत्ते के दोनों भाग पुनः खुल जाते हैं और अन्य शिकार की प्रतीक्षा करने लगते हैं। **अनुवादक द्वारा गूगल से ली गई जानकारी**]

जिस ढांचे का यह इस्तेमाल करता है वह पत्ते का बदला हुआ रूप होता है। फंदा बनाने के लिए यह बीच में लटका होता है। फंदे का बाहरी भाग बर्छीनुमा फैलाव से पंक्तिबद्ध होता है जो पत्ते के पूरी तरह से बंद होने से बहुत पहले बहुत बढ़िया बंद पिंजरे के आकार का होता है। फंदे के अंदर वाला भाग बड़े आवश्यक सक्रिय बालों के साथ पंक्तिबद्ध हो जाता है। ये बाल फंदे की ''आंखें'' होते हैं। पत्ते को पंक्तिबद्ध करने वाली कोशिकाओं में पचाने के विशेष अंज़ाइम हैं जिन्हें शिकार के पकड़े जाने पर निकाला जा सकता है। ... अब, चारे के लिए यह जटिल तंत्र केवल फंदा नहीं है जो अचानक हमला कर देता है या जब कोई अभागा कीट इसमें गिर जाता है। उन कोशिकाओं से यह

शिकार दुनिया भर के सड़े मांस सी गंध देने वाले एक रसायन के साथ आकर्षित करता है। ... उचित सिग्नल भेज दिया जाने पर पत्ते की बाहरी कोशिकाएं बड़ी तेज़ गति से बढ़ने लगती हैं। बाहर की ओर से बढ़ने पर, परन्तु अंदर से नहीं, वास्तव में पत्ता अंदर से कसते हुए बंद हो जाता है। फंदे के खुलने पर इसके बिल्कुल विपरीत होता होगा। अंदर की कोशिकाएं बढ़कर फंदे को खोल देती हैं। ... पत्ते के कीट को फंसा लेने पर, पौधा अपने शिकार को पत्ते की दोनों साइडों में दबा लेता है। इसके बाद पाचक अंज़ाइमों के छूटने से शिकार खत्म हो जाता है। कीट के खत्म हो जाने पर, पत्ता फिर से किसी और अभागे शिकार की राह देखने के लिए अपने आपको खोल देता है। वास्तव में यह एक अद्‌भुत सिस्टम है जिसे बनाया गया है और सृष्टि के चमत्कारों पर हम में से हर किसी को चकित होना चाहिए। वीनस फ़्लाइट ट्रैप इस बात का एक और उदाहरण है कि विकास के हज़ारों लाखों वर्षों के संयोग से होने के ढंग की कल्पना करना कितना कठिन है (एवर्सन, *ऐंड गॉड क्रियेटड*)

घ. मनुष्यजाति में डिज़ाइन का होना साबित करता है कि परमेश्वर है।

1. मानवीय देह में दीन सी कोशिका पर इसकी जटिलता और डिज़ाइन के लिए विचार करें, जिसे आधुनिक यंत्रों के आने से पहले केवल ''ब्लैक बॉक्स'' जैल-ओ के छींटे के तुल्य माना जाता था।
2. ''ब्लैक बॉक्स'' का इस्तेमाल 'किसी यंत्र के लिए जो कुछ करता है परन्तु उसके भीतरी काम करने के ढंग रहस्यम हैं' प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के लिए इस्तेमाल किया जाता था (जैक्सन, ''साइंस'')।
3. परन्तु कोशिका के कई रहस्यों का पता चल सकता है, उन खोजों से प्रकृति में डिज़ाइन या जटिलता को ध्यान में रखते हुए *रास्ता खत्म हो जाता है।*

   ... क्योंकि अपरिवर्तनीय जटिलता जैव रसायनिक स्तर पर होती है, जैव रसायनिक विश्लेषण के स्तर का कोई और बुनियादी विश्लेषण नहीं है जिसे जैव रसायनिक पद्धतियों की अपरिवर्तनीय जटिलता कहा जा सके। ...
   (Behe qtd. in thompson and Harrub, "Molecular")

4. सरल भाषा में कहें कि अब कोई ब्लैक बॉक्स नहीं है यानी हम अपरिवर्तनीय जटिलता या डिज़ाइन तक पहुंच चुके हैं जो बुद्धिमान डिज़ाइनर के होने को साबित करता है।
5. ''जो हम ढूंढ़ रहे हैं ... वह केवल भागों का जटिल प्रबन्ध नहीं, बल्कि अपरिवर्तनीय जटिलता है। हम तब तक ख़ुदाई करते रहना चाहते हैं जब तक हमें यह पता नहीं चल जाता कि कोई और ब्लैक बॉक्स नहीं है'' (मेजर)।
6. अपरिवर्तनीय जटिलता या डिज़ाइन में बुद्धिमान डिज़ाइनर के होने बड़ा प्रमाण यह है कि अविवादित रूप से, शरीर के सारे अंग विलक्षण हैं (कोई और उद्देश्य पूरा नहीं करते) और अनिवार्य हैं (सभी भागों के पूरी तरह से एक लय में काम किए बिना अस्तित्व नहीं हो सकता)।

अपरिवर्तनीय जटिलता से मेरे कहने का मतलब बुनियादी काम में योगदान देने वाले एक दूसरे को प्रभावित करने वाले भाग, अच्छी तरह से मेल खाते भागों का एक अकेला सिस्टम है, जिसमें किसी भी एक भाग के हट जाने से पूरा सिस्टम इतना प्रभावित होता है कि वह काम करना बंद कर देता है। (Behe qtd. in thompson and Harrub, "Molecular")

रसायन वैज्ञानिकों जैसे विशेष प्रकार के वैज्ञानिक लोग जब आण्विक मशीनों, लहू के जमाव तथा मेल खाते मार्ग के ब्लैक बॉक्सों को खोल देते हैं। ... तो वे उससे भी छोटे ब्लैक बॉक्सों को ढूंढ़ नहीं पाते हैं। कहीं आकर वे ''अपरिवर्तनीय जटिलता'' यानी उस अकेले सिस्टम में आ जाते हैं जिसमें किसी एक भी भाग को हटा दिया जाए या वह काम करना बंद कर दे, तो उसका पूरा फंक्शन भी काम करना बंद कर देगा।

7. जिस कारण, वास्तविक विज्ञान बुद्धिमान डिज़ाइनर अर्थात परमेश्वर के होने को साबित करता है।

आधुनिक विज्ञान ने जहां प्राकृतिक संसार में गहरे से गहरे स्थानों में देखने की क्षमता पा ली है, विकासवाद की अलोप होती थ्योरी के समर्थकों को कष्ट होता है। प्राकृतिक, जैविक पद्धतियों की बहुतायत उस जटिलता को दिखाती है जो प्राकृतिक, विकासवादी प्रक्रियाओं से नहीं मिल सकती थी। इन खोजों के उत्तर, अकादमिक दायरों में बड़ी पकड़ हासिल करने के लिए बुद्धिमान डिज़ाइन की मूवमैंट शुरू हो चुकी है। संक्षेप में कहें तो बुद्धिमान डिज़ाइन यह सुझाव देता है कि कई प्राकृतिक सिस्टम इतने जटिल हैं कि उन्हें सुलझाया नहीं जा सकता।

निष्कर्ष:

1. तर्क की अलग परन्तु एक दूसरे से मेल खाती कई बातें उसी प्रमाण के सही व्यवहार के आधार पर निष्कर्ष निकालती हैं कि परमेश्वर है।
   - क. सामूहिक रूप में, तर्क की अलग-अलग बातें जो निष्कर्ष निकालती हैं कि परमेश्वर है, वे परमेश्वर के अस्तित्व की बड़ी गवाही हैं।
   - ख. संसार का अस्तित्व ही अपने आप में परमेश्वर के अस्तित्व की गवाही देता है।
   - ग. संसार भर में नैतिकताओं का होना इस का सबसे बढ़िया प्रमाण है कि परमेश्वर है (हरूब 15)।
   - घ. संसार में डिज़ाइन का होना साबित करता है कि परमेश्वर है।
2. संसार के सबसे अधिक पढ़े-लिखे लोगों में से कुछ लोग, कई बार न चाहते हुए, यह मान लेते हैं कि संसार साफ़-साफ़ इस बात का सबूत देता है कि इसे किसी समझदार डिज़ाइनर या बनानेवाले ने ही बनाया।

ऑस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध एस्ट्रोफिज़िसिस्ट (तारा भौतिकविद) पॉल डेविस ने द कॉस्मिक बल्यू प्रिंट नामक अपनी पुस्तक में समझाया है: मेरे लिए इसमें ज़बर्दस्त प्रमाण है कि इस सब के पीछे कुछ न कुछ है। ... ऐसा प्रतीत होता

है जैसे किसी ने संसार को बनाने के लिए प्रकृति के अंकों को अच्छी तरह से लगा दिया हो। ... *द इंप्रेशन ऑफ़ डिज़ाइन इज़ ओवरवेल्मिंग* (Behe qtd. in thompson and Harrub, "Our Finely Tuned")

बर्तानवी कॉस्मोलोजिस्ट (सृष्टि विज्ञानी) सर फ्रेड होयल ने लिखा: तथ्यों की सहजबुद्धि से की गई व्याख्या यह सुझाव देती है कि महा अकलमंद ने रसायन विज्ञान तथा जीव विज्ञान के साथ-साथ भौतिक विज्ञान के साथ खेल खेला है और प्रकृति में इस पर बोलने वाला कोई अंधा नहीं है। तथ्यों से अंदाज़ा लगाने वाला मुझे लगता है कि इस निष्कर्ष को बिना किसी संदेह के ज़बर्दस्त है (1982, 20:16)।

क. प्रख्यात कॉस्मोटॉलोजिस्ट फ्रैंक टिप्लर ने लिखा है:

बीस वर्ष पहले जब मैंने कॉस्मोटॉलोजिस्ट का अपना कैरियर आरम्भ किया था तब मैं पक्का नास्तिक था। मैंने सपने में भी यह कल्पना नहीं की थी कि यह बताने के लिए कि यहूदी-मसीही थियोलोजी के मुख्य दावे वास्तव में सच हैं, कि ये दावे साफ़ तौर पर भौतिक विज्ञान के नियमों के हैं, जैसा कि अब हमें उसकी समझ आती है, एक दिन मैं कोई किताब लिखूंगा। मैं भौतिक विज्ञान की अपनी विशेष शाखा के कठोर तर्क से ही इन निष्कर्षों पर पहुंचा हूं (1994)।

1995 में नासा के एस्ट्रोनोमर (खगोलज्ञ) जॉन ओ'कीफ ने एक साक्षात्कार में कहा, खगोलीय मापदण्डों से हम जीवों के सिरचढ़े, लाडले, दुलारे समूह हैं ... यदि संसार सबसे कठोर शुद्धता के साथ न बना होता तो हमारा कभी अस्तित्व न होता। मेरा अपना विचार है कि ये परिस्थितियां इस बात का संकेत देती हैं कि संसार को मनुष्य के रहने के लिए बनाया गया था (हेरेन, 1995, पी. 200 में उद्धृत)।

ख. 1998 में, *नेचर'स डेस्टिनी* नामक अपनी पुस्तक में बर्तानवी आण्विक जीव वैज्ञानिक (मोलिक्यूलर बायोलोजिस्ट) माइकल डेंटन ने लिखा:

कोई डिज़ाइन की अवधारणाओं को स्वीकार करे या इन्हें नकार दे ... इस निष्कर्ष से बचने का कोई तरीका नहीं है कि संसार वैसा ही दिखता है जैसा जीवन के लिए इसे बनाया गया है; इसे *डिज़ाइन किया गया लगता है।* हर प्रकार की वास्तविकता अपने उद्देश्य और लक्ष्य के रूप में जीवन और मनुष्यजाति के साथ पूरी तरह से विशाल, सुसंगत, उद्देश्यवादी लगती है।

ग. माइकल जे. मुर्रे ने वैज्ञानिकों के संसार के डिज़ाइन और जटिलता में बुद्धिमान डिज़ाइनर के होने को मानने की अनिच्छा को संक्षिप्त किया है:

संसार के बुनियादी ढांचे की लगभग हर चीज़, उद्धार के लिए, भौतिक विज्ञान के बुनियादी नियम और मापदण्ड और तत्व तथा ऊर्जा का आरम्भिक विकरण जीवन के होने के लिए उस्तरे की धार पर संतुलित है। ... वैज्ञानिक भौतिक विज्ञान

के मापदण्डों तथा संसार की आरम्भिक परिस्थितियों के असाधारण संतुलन को ''संसार को सही करना'' कहते हैं (1999, पी. 48, सीएमपी। जोड़ा)। (qtd. in Thompson and Harrub, "Our Finely Tuned")

घ. ''प्रकृति का 'डिज़ाइन' इतना दमदार लगता है जितना किसी को पता चलता है कि चीज़ें कैसे 'इकट्ठा हुई' उतना ही इसके लिए बुद्धिमान डिज़ाइन के तर्क को नकारना कठिन हो जाता है।'' (जैक्सन, ''स्केपटिसिज़्म'')

ङ. इन प्रमुख विचारकों में से कइयों को इतनी हिम्मत जुटाने के लिए यह मानने के लिए कि वह बुद्धिमान डिज़ाइनर परमेश्वर है, एक छोटा सा कदम उठाना आवश्यक है।

च. सृजित संसार में परमेश्वर के अस्तित्व का प्रमाण भरपूर है (भजन 19:1; रोमि. 1:19-20)

निमंत्रण:

1. जिस परमेश्वर ने इस संसार को बनाया है वह आपको और मुझे अपने साथ सदा तक रहने के लिए निमन्त्रण देता है।
2. सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ उसके स्वर्गीय घर में सदा तक वास करना सशर्त है (प्रेरितों 17:24-31; 2:38; 8:22)।

पवित्र आत्मा के बपतिस्मे

का वादा

यूह. 14:26

प्रसंग: संक्षेप में उन वचनों पर विचार करना जो मसीह के प्रेरितों द्वारा पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को पाने की पेशनगोई करते हैं।

परिचय:

1. नीचे मसीह के प्रेरितों द्वारा पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के पाने के नबूवती पेशनगोइयों की एक समीक्षा है।
   - क. हम प्रेरितों द्वारा पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने की सामान्य और विशेष, दोनों पेशनगोइयों की समीक्षा करेंगे।
   - ख. जिन भविष्यद्वक्ताओं के संदेशों पर हम विचार करेंगे उनमें योएल, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, यीशु मसीह, मसीह, मरकुस, लूका और यूहन्ना शामिल हैं।
2. भविष्यद्वाणी के ये संदेश आंशिक तौर पर या पूर्ण रूप में मसीह के प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलने में पूरा होते हैं।
   - क. बाइबल के ये वचन पुराने और नये दोनों नियमों में मिलते हैं।
   - ख. प्रेरितों को पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की भविष्यद्वाणी और उसके पूरा होने के बीच सम्बन्ध किसी के परमेश्वर, उसके वचन और मनुष्य के लिए उसकी योजना में विश्वास को सही ठहराता है।
   - ग. प्रेरितों को पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की भविष्यद्वाणी और उसका पूरे होने का वही काम है जो मसीहियत की अन्य बुनियादी शिक्षाओं के लिए है (उदाहरण, यीशु मसीह का जन्म, मसीह की सेवकाई, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान), जो ईश्वरीय पूर्वज्ञान, पूर्वप्रबन्ध तथा हस्तक्षेप से पूरे हुए।
3. हम यीशु मसीह द्वारा अपने प्रेरितों को पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की विशेष प्रतिज्ञाओं पर बल दिए जाने की उम्मीद करते हैं।
   - क. हम बात करेंगे कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से सम्बन्धित प्रेरितों से विशेष तौर पर किए गए वादे हर पीढ़ी के मसीही लोगों के लिए प्रासंगिक अन्य वादों के साथ उसी संदर्भ में कैसे मिल सकते हैं।
   - ख. हम प्रेरितों के पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के बाद उनके साथ काम करते हुए पवित्र आत्मा की विशेष भूमिका पर भी ध्यान देंगे।

मुख्य भाग:

I. मसीह के प्रेरितों द्वारा पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के पाए जाने के नबूवती और पेशनगाईयों वाले हवालों की इस समीक्षा पर विचार करें।

- क. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को मिलाकर योए. 2:28-32 एक सामान्य भविष्यद्वाणी है।
  1. यह कि योएल की भविष्यद्वाणी मसीह के प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की

पेशनगोई है स्पष्ट है, क्योंकि परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा प्रेरित पतरस ने इसकी पुष्टि की (प्रेरि. 2:1-4, 16-21)।

क. प्रेरि. 2:1-4 में बारह प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने की बात दर्ज है (प्रेरि. 1:26)।

ख. प्रेरि. 2:16 का आरम्भ "परन्तु यह वह बात है जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा की गई थी" के साथ होता है।

2. परन्तु यह स्पष्ट है कि योएल की भविष्यद्वाणी में प्रेरितों के पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के हवालों से बढ़कर है।

क. जैसा कि योएल में है और पतरस द्वारा इसे उद्धृत किया गया (और लूका द्वारा लिखा गया), भविष्यद्वाणी के अनुसार चमत्कारी सामर्थ उन लोगों को मिली जिन्हें प्रेरि. 2 में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिला (उदाहरण, "सब मनुष्य" जवान, बूढ़े और स्त्रियां)।

ख. इसलिए प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा योएल 2:28-32 में की गई भविष्यद्वाणी का आंशिक तौर पर पूरा होने का आरम्भ था।

ग. प्रेरितों के अलावा स्त्रियों और अन्यजातियों सहित और लोगों को भी चमत्कारी सामर्थ मिल जाने पर, योए. 2:28-32 पूरी तरह से पूरा हो गया (प्रेरि. 8:14-17; 21:9; 10:45)।

ख. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे सहित मत्ती 3:11 एक सामान्य भविष्यद्वाणी है।

1. मत्ती 3:11 में तीन अलग-अलग बपतिस्मों की बात की गई है।

क. यूहन्ना का बपतिस्मा, जिसे वह स्वयं दे रहा था।

ख. फिर भविष्य में यीशु मसीह द्वारा दिया जाने वाला पवित्र आत्मा का बपतिस्मा।

ग. फिर भविष्य में दिया जाने वाला दण्ड का बपतिस्मा, जो कि यीशु मसीह द्वारा विनाशकारी आग में डुबकी दिया जाना है।

2. मत्ती 3 में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जिन लोगों के साथ बात कर रहा था, उनमें तीन अलग-अलग प्रकार के लोग थे, जिन्हें वे बपतिस्मे अलग-अलग मिलने वाले थे।

क. वहां पर यरूशलेम और यहूदिया के आस-पास के लोगों के आम लोग थे, जिन्हें यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला बपतिस्मा दे रहा था (मत्ती 3:5-6)।

ख. दुष्ट फ़रीसी और सदूकी भी वहीं थे (मत्ती 3:7-8)।

ग. मसीह के कुछ भावी प्रेरित भी वहां थे, जो उस समय यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेले थे (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के कम से कम कुछ चेले बाद में यीशु मसीह के चेले बन गए थे, यूह. 1:35-42)।

3. संयोग से, आग का बपतिस्मा वैसे ही दण्डात्मक और विनाशात्मक है जैसे मत्ती 3:11 के आगे पीछे की आयतों में आग के हवाले हैं।

क. आयत 10 में, फलहीन वृक्षों को जिनके द्वारा यूहन्ना ने फरीसियों और सदूकियों का वर्णन किया, जला दिया जाना था यानी उन्हें आग से नष्ट कर दिया जाना था।

ख. आयत 12 में, कटनी के बाद बचने वाली भूसी को अनाज से अलग करने के बाद उसे आग में जला दिया जाना था।

ग. इसलिए आयत 11 में आग का हवाला भी विनाशकारी और दण्डात्मक है। यह फ़रीसियों और सदूकियों जैसे अपश्चात्तापी लोगों के लिए है।

घ. इसका अर्थ यह हुआ कि उसी प्रकार से आग का बपतिस्मा शैतान के नरक की उस अनन्त आग से जुड़ा है जो बड़े न्याय के समय के लिए दुष्टों के लिए रखी हुई है यानी यह बपतिस्मा अभी भविष्य में होने वाला है।

ग. मर. 9:1 पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की विस्तृत सामान्य भविष्यद्वाणी है।

1. यह आयत समुचित रूप में प्रेरितों 2 में कलीसिया के जन्मदिन का वर्णन करती है, जिसका आरम्भ मसीह के प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के साथ हुआ।

   क. यह वचन यीशु को बोलता सुनने वालों के जीवनकालों के अंदर-अंदर कलीसिया की स्थापना की समयसारिणी भी बताता है।

   ख. वह सामर्थ जिसके द्वारा प्रभु का राज्य स्थापित होना था उन असामान्य परिस्थितियों से अलग थी जिनसे पृथ्वी के राज्य बनते और बने रहते हैं।

2. उनके पूरा होने के भविष्यद्वाणी के अन्य वचन तथा बाइबल के हवाले मर. 9:1 में वर्णित सामर्थ का अर्थ बताते हैं।

   क. इसमें यह पहचान नहीं दी गई है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा किसे मिलेगा।

   ख. यहां उल्लेख नहीं है कि यह ''सामर्थ'' की कैसी होगी, इसका उद्देश्य क्या है और यह कैसे दिखाई जाएगी।

घ. यूह. 14-16 मसीह के प्रेरितों को मिलने वाले पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की विशेष भविष्यद्वाणी है।

1. यीशु ने अपने प्रेरितों को विशेष रूप से विस्तार से पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का वायदा दिया।

2. इस बातचीत का मुख्य विषय इन तीन अध्यायों से जुड़ा है इसलिए हम मसीह के प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने की कुछ अतिरिक्त भविष्यद्वाणियों पर ध्यान देने के बाद इस संदर्भ पर और विचार करेंगे।

ङ. लूका 24:49 मसीह के प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने की विशेष भविष्यद्वाणी है।

1. यहां पर यीशु ने विशेष रूप से अपने प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने का वादा किया।

   क. यह अपने प्रेरितों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मे के उसके वादे का विस्तार और दोहराव है, जिसे हम यूह. 14-16 में पढ़ते हैं।

   ख. यह वचन प्रेरि. 1:8 में इसी बातचीत के विवरण के लूका के आगे बातचीत करने के साथ जोड़ा है।

2. लूका 24:49 के आधार पर बाइबल का कोई छात्र प्रेरितों को छोड़ किसी और के पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने की उम्मीद नहीं करेगा।

   क. इसलिए इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि प्रेरि. 2:1-4 में केवल प्रेरितों को ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला।

   ख. फिर भी इस पर हैरानी होनी चाहिए कि प्रेरितों 10-11 में कुरनेलियुस के घर

में होने वाली घटना को ''पवित्र आत्मा का बपतिस्मा'' नाम दिया गया।

ग. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से जुड़े पेशनगोई वाले वचनों को और कुरनेलियुस के घर की घटना को ध्यान से देखने पर यह कहने से रोकेगी कि कुरनेलियुस, उसके परिवार तथा मित्रों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिले।

च. प्रेरि. 1:8 मसीह के प्रेरितों को पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की विशेष भविष्यद्वाणी है।

1. यह आयत हमारे प्रभु के अपने ऊपर उठाए जाने के तुरन्त पहले अपने प्रेरितों को कही गई हमारे प्रभु की बाते हैं।

   क. आवश्यक रूप में प्रेरितों के काम में ये शब्द लूका और प्रेरितों के काम पुस्तक में स्तिफनुस के नाम लूका के विवरण को आगे बढ़ाने की बात है।

   ख. यहां पर यीशु ने विशेष तौर पर अपने प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने का वादा किया।

   ग. यह अपने प्रेरितों को पवित्र आत्मा के लिए बपतिस्मे के उस वादे के विस्तार का दोहराव है जिसे हम यूह. 14-16 में पढ़ते हैं।

2. प्रेरितों 1 के आधार पर बाइबल का कोई छात्र प्रेरितों को छोड़ किसी दूसरे के लिए पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने की उम्मीद नहीं करेगा।

   क. इसलिए इस पर हैरानी नहीं होती है कि प्रेरि. 2:1-4 में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने वाले केवल प्रेरित थे।

   ख. चाहे जिस बात पर हैरानी होनी चाहिए वह प्रेरितों 10-11 में कुरनेलियुस के घर होने वाली घटना को ''पवित्र आत्मा का बपतिस्मा'' नाम दिया जाना है।

   ग. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा और कुरनेलियुस के घर की घटना से जुड़े पेशनगोई वाले वचन यह कहने से रोकेंगे कि कुरनेलियुस, उसके परिवार और मित्रों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला।

3. प्रेरितों 1:8 भी पवित्र आत्मा द्वारा दी गई उस सामर्थ का संकेत करता है जिसमें प्रेरित मसीह के प्रेरितों के रूप में प्रभावशाली ढंग से काम कर सकते थे।

   क. प्रेरित बिल्कुल सही गवाह थे क्योंकि वे यीशु के साथ उसकी निजी सेवकाई के दौरान इतना लम्बा समय रहे थे।

   ख. प्रेरित मसीह के पुनरुत्थान के सुसमाचार के सही दूत थे क्योंकि उन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा उनसे कही गई यीशु की बातों को याद करवाया गया था और उन्हें सारी सच्चाई में अगुआई दी गई थी।

   ग. पवित्र आत्मा से सामर्थ पाकर, प्रेरितों ने विश्वव्यापी सुसमाचार को सारे संसार में ले जाना था (मर. 16:15-16)।

II. यूहन्ना अध्याय 14-16 पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का वादा विशेष तौर पर मसीह के प्रेरितों के साथ करते हैं।

क. चाहे इस वचन में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का वादा केवल प्रेरितों से किया गया था, परन्तु इन तीन अध्यायों के और वादे हर पीढ़ी जिसमें आज की पीढ़ी भी शामिल है कि मसीहियों के लिए हैं।

1. यूहन्ना 14-16 में होने वाली बातचीत के समय केवल प्रेरित वहां थे (यूह. 13:1से)।
2. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का विशेष वादा विशेष तौर पर प्रेरितों को दिया गया।
   क. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का ऐसा कोई वादा नहीं है जिसमें वह बपतिस्मा और इसके पाने वालों के संकेत में मसीह के प्रेरितों को छोड़ कोई और शामिल हो।
   ख. प्रेरितों के साथ किए गए इस वादे की विशेष प्रासंगिकता से यूहन्ना 14-16 के संदर्भ के बाद किसी अन्य वचन से सुधारा नहीं गया।
   ग. इसलिए, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल प्रेरितों को मिलने वाला था।
   घ. इसलिए, पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के एकमात्र निर्विवाद, लिखित पूरा होने में केवल मसीह के प्रेरित शामिल हैं (प्रेरि. 2:1-4)।
3. यूह. 14:1-3 वादा करता है कि यीशु मसीह के प्रेरितों के लिए एक अनन्त निवास के रूप में स्वर्ग को तैयार कर रहा है।
   क. अनन्त स्वर्ग के प्रबन्ध में प्रेरितों को शामिल किया गया, परन्तु स्वर्ग केवल उन्हीं के लिए नहीं है।
   ख. बेशक यह सच है कि केवल प्रेरित ही थे जिनके साथ इस अवसर पर स्वर्ग का वादा किया गया था।
   ग. परन्तु अन्य वचनों में स्वर्ग का वादा केवल प्रेरितों तक सीमित नहीं है बल्कि परमेश्वर के सभी विश्वासी बालकों के लिए है (कुलु. 1:5; फिलि. 3:20; 1 पत. 1:3-4)।
   घ. इसलिए यह स्पष्ट है कि यूहन्ना 14-16 का एक भाग (पवित्र आत्मा का बपतिस्मा) विशेष तौर पर प्रेरितों के लिए हो सकता है जबकि उसी संदर्भ में अन्य भाग आज के मसीही लोगों के लिए हो सकते हैं।

ख. यूह. 14:13-14 केवल प्रेरितों के लिए है।
1. कई तरह की विनतियों को पूरा करने के इस वादे में विशेष तौर पर प्रेरितों के लिए है और प्रेरितों को दिए पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के विशेष वादे से मेल खाता है।
   क. विनतियां, जो किए जाने पर, यीशु ने पूरा करना था प्रेरितों के काम से सम्बन्धित और उसके क्रियान्वन से सम्बन्धित थी।
   ख. संदर्भ में इस प्रतिज्ञा में प्रार्थना भरी अन्य जायज विनतियां नहीं थीं जो परमेश्वर के बालक आज कर सकते हैं।
   ग. इस प्रतिज्ञा का दायरा प्रेरितों को पर्याप्त रूप से उस मिशन को पूरा करने के योग्य बनाना था जिसके लिए यीशु ने उन्हें चुना था।
   घ. ''यह प्रतिज्ञा विशेष रूप से प्रेरितों द्वारा सुसमाचार के प्रसार के काम किए जाने से सम्बन्धित थी'' (बार्नस)
2. प्रेरितों से की गई यह प्रतिज्ञा मत्ती 18:18-19 प्रेरिताई की विशेष ज़िम्मेदारियों जैसी है।
   क. दोनों वचनों में ईश्वरीय सहायता की प्रतिज्ञा की गई है जिसमें प्रेरित प्रेरिताई की अपने दायित्वों को पूरा करना था।
   ख. दोनों वचनों में इसके मिलने और उपयोग की पूर्व शर्त प्रेरितों द्वारा विशेष सहायता के परमेश्वर की ओर से होने को मानना था।

ग. यूह. 14:16-17, 26 केवल प्रेरितों पर लागू होता है।

1. आयत 26 में ''सहायक'' की पहचान पवित्र आत्मा के रूप में करवाई गई है।
   क. यूनानी शब्द जिससे ''सहायक'' अनुवाद हुआ है बाइबल में पांच बार मिलता है, और पांचों बार इसे प्रेरित यूहन्ना ने लिखा है (यूह. 14:16, 26; 15:26; 16:7; 1 यूह. 2:1)।
   ख. पहले चार बार पवित्र बाइबल में इसे पवित्र आत्मा के लिए इस्तेमाल किया गया है जबकि अंतिम बार इसे यीशु मसीह के लिए इस्तेमाल किया गया है।
   ग. यूनानी शब्द के अर्थ के कई गूढ़ भेद हैं जिसमें इसका अर्थ ''सांत्वनादाता'' (comfort) या ''वकील'' (advocate) भी हो सकता है।

   मध्यस्थता की भूमि में कुछ कानूनी पहलू हैं और इसी कारण *parakletos* को उचित रूप में कानूनी प्रक्रियाओं से जोड़ा जाता है। ... पैराक्लेट के अर्थ में आने वाली सबसे बड़ी कठिनाई यह तथ्य है कि इस शब्द में अर्थ का इतना बड़ा क्षेत्र समा लेने की क्षमता है। ''सहायक'' का परम्परागत अर्थ विशेष तौर पर भ्रमित करने वाला है क्योंकि यह केवल उसका जो पवित्र आत्मा करता है केवल बहुत सीमित पहलू का सुझाव देता है। ''सहायक'' जैसा शब्द बड़ा ही सामान्य है। ... कानूनी वकील की अवधारणा पर आधारित एक अर्थ अधिकतर मामलों में बहुत ही प्रतिबंधक लगता है। (लोव ऐंड नाइडा)

   यह विचार कि वकालत स्वर्ग में और पृथ्वी में दोनों जगह होती है भी पुराने नियम और यहूदी मत में आम है। संतुलित रूप में यह लगता है कि नये नियम का इस्तेमाल मैंडियन जगत की ''सहायक'' की अवधारणा के बजाय पुराने नियम की ''वकील'' की अवधारणा से अधिक निकटता से जुड़ा लगता है। (किट्टल ऐंड फ्रैड्रिक)

   घ. ''पैराक्लिट'' का शब्दश: अर्थ है ''अपनी ओर बुलाना।''
   ङ. यूहन्ना द्वारा इसके इस्तेमाल किए जाने से, यह स्पष्ट है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर के कठघरे के पापी के लिए वकील या कानूनी सलाहकार है, जैसा कि रोमि. 8:26 भी बताता है।
2. यीशु मसीह और पवित्र आत्मा की एक ही भूमिका है जैसा कि ''एक और सहायक'' वाली आयत बताती है।
   क. ''एक और'' के लिए यूनानी शब्द ''*allon*'' है जिसका अर्थ है ''वैसा ही एक और।''
   ख. इसलिए यीशु मसीह और पवित्र आत्मा परमेश्वर के वफ़ादार बच्चों के लिए ''पैराक्लिट'' या वकील दोनों है।
   ग. 1 यूह. 2:1 में प्रेरित यूहन्ना ने संक्षेप में यह बात बताई जब उसने ''पैराक्लिट'' का इस्तेमाल किया, वहां इसका अनुवाद ''सहायक'' के लिए अंग्रेज़ी में (''Advocate'') हुआ है। वहां मनुष्य के पाप के साथ परमेश्वर के कठघरे के सामने मसीही व्यक्ति के कानूनी सलाहकार के रूप में मसीह के सम्बन्ध में।
   घ. जैसा कि शब्द में संकेत है, 1 यूहन्ना 2:1 में यीशु और सुसमाचार के यूहन्ना

के विवरण और रोमि. 8:26 में पवित्र आत्मा पिता के सामने हमारा मुकदमा लड़ते हैं।

ङ. इसी प्रकार, पवित्र आत्मा केवल एक प्रभाव नहीं बल्कि यीशु मसीह की तरह ही एक व्यक्ति है और परमेश्वरत्व का सदस्य है।

3. सब बातें सिखाना और उन्हें यीशु की कही बातों को याद दिलाना प्रेरितों की सेवकाई से सम्बन्धित है।

क. यह प्रेरितों को अपनी विलक्षण सेवकाई के लिए तैयार करने के लिए था।

ख. पवित्र आत्मा की यह गतिविधि केवल प्रेरितों के लिए थी और किसी भी मसीही से सम्बन्धित नहीं हैं।

ग. ''सब बातें'' जैसे भी हो प्रेरितों के मिशन तक सम्बन्धित है और किसी भी अंत्रिम मामले में आगे नहीं बढ़ा या प्रेरितों को सर्वशक्तिमान नहीं बनाया।

घ. पवित्र आत्मा को उत्कृष्ट रूप से परमेश्वर के दिमाग को दिखाने की योग्यता है। क्योंकि वह ''परमेश्वर की गूढ़ बातें'' जानता है (1 कुरिं. 2:10)।

ङ. यह आयत प्रेरितों के लिए ईश्वरीय प्रेरणा की घोषणा की बात करती है, जैसा कि मत्ती 10:19-20 में यीशु पहले प्रतिज्ञा की थी।

घ. यूह. 15:16 केवल प्रेरितों पर लागू होता है।

1. यीशु द्वारा विशेष रूप से चुने हुओं और विशेष दायित्वों को निभाने के लिए नियुक्त किए गए लोगों की बात साफ़ संकेत देती है कि यह आयतें और इसके साथ का संदर्भ विशेष तौर पर प्रेरितों पर लागू होता है।

2. उनका फल इस अर्थ में बना रहना था क्योंकि उनके परिश्रमों का प्रभाव मसीही धर्म पर पक्के तौर पर रहना था।

क. एक बार फिर से जैसा कि मत्ती 18:18 में दिखाया गया है, प्रेरितों के अधिकार की बात ध्यान में आती है।

ख. मत्ती 19:28 में यीशु के शब्दों से यह संकेत मिला कि प्रेरितों के मर जाने के बाद भी उनकी भूमिका बनी रहनी थी।

ग. धर्म में आज प्रेरितों का अधिकार उतना ही है जितना उनके जीते जी है, और इसलिए हमारी ज़िम्मेदारी ''प्रेरितों की शिक्षा'' में बने रहने की है (प्रेरि. 2:42)।

3. यूह. 14:13-14 के सम्बन्ध में जैसा हम ने पहले कहा है, ये विनतियां और इनका पूरा होना इस संदर्भ में विशेषकर प्रेरितों तथा आरम्भिक कलीसिया में उनकी सेवकाई के लिए विशेष तौर पर लागू होता है।

ङ. यूह. 15:26-27 केवल प्रेरितों पर लागू होता है।

1. आयत 26 में यीशु यह पुष्टि करता है कि उसने प्रेरितों के पास पवित्र आत्मा को भेजना था (बपतिस्मा)।

क. यूह. 14:16 और 26 में यीशु ने कहा था कि पिता प्रेरितों के पास पवित्र आत्मा भेजेगा।

ख. विरोधाभास के बजाय यह आयत परमेश्वर के उद्देश्य में एक होने के साथ-साथ, परमेश्वरत्व की एकता और एक होने का संकेत देती है।

2. पवित्र आत्मा को ''सत्य का आत्मा'' कहा गया है क्योंकि मनुष्य यानी प्रेरितों के प्रति आत्मा का मिशन परमेश्वर की सच्चाई को प्रकट करना था।
   क. नाशवान मनुष्य को परमेश्वर के मन की बात को पहुंचाने वाले माध्यम, जिसका वादा यीशु ने किया कि उसके प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने के द्वारा प्रकट होना था, कलीसिया की उन्नति के लिए बिल्कुल आवश्यक थी।
   ख. मनुष्य के लिए परमेश्वर के मन के प्रकाशन के लिए एक ईश्वरीय व्यवस्था के बिना, अविश्वसनीय, नाशवान मानवीय जीव को परमेश्वर का दोष-रहित और सम्पूर्ण प्रकाशन नहीं दिया जा सकता होगा।
   ग. उस ईश्वरीय प्रेरणा के बिना जो इन आयतों में पाई जाती है, किसी को मनुष्यजाति के लिए रखी गई परमेश्वर की आशिषें या दण्डों का पता नहीं चल सकता; किसी को यह पता नहीं चल सकता था कि सही ढंग से परमेश्वर की आराधना या सेवा कैसे करें। किसी को यह पक्का पता नहीं चल सकता था कि अपने छुटकारे में कैसे योगदान दे और नहीं तो मृत्यु और न्याय के लिए तैयार रहे; किसी को यह नहीं पता चल सकता था कि मसीही जीवन कैसे जीएं।
   घ. यूह. 14-16 में प्रेरितों से की गई प्रतिज्ञाएं पुराने नियम की परमेश्वर की प्रेरणा के नये नियम के संस्करण के तुल्य हैं जिसकी पुष्टि 2 पत. 1:20 में की गई है।
3. ''पिता की ओर से निकलता है'' शब्दों का शाब्दिक अर्थ है कि आत्मा ने ''पिता के पास'' से आना था, जो कि पवित्र आत्मा को परमेश्वरत्व के अन्य व्यक्तियों के साथ समानता में किसी भी प्रकार से कम करने के किसी भी स्थान या स्थिति के विपरीत है ।
   क. बाइबल बताती है कि एक परमेश्वरत्व में तीन व्यक्ति हैं (मत्ती 3:16-17; 28:18-20)।
   ख. त्रिएकता की शिक्षा और कहीं भी इतने ज़ोरदार तरीके से नहीं बताई गई जितनी यूह. 14-16 में बताई गई है।
   ग. यूहन्ना 14-16 में स्पष्ट और अविवादित रूप से बताया गया है कि पिता, पुत्र और आत्मा तीन अलग-अलग व्यक्ति हैं और मनुष्य के छुटकारे में तीनों की भूमिका अलग अलग, परन्तु परमेश्वरत्व के दो अन्य व्यक्तियों के साथ एक स्वर में है।
4. प्रेरितों के प्रति पवित्र आत्मा के मिशन को आगे और बताया गया है।
   क. पवित्र आत्मा ने किसी नई सेवकाई या धर्म की पद्धति या अलग सुसमाचार को नहीं बताना था (गला. 1:6-9)।
   ख. प्रेरितों के प्रति पवित्र आत्मा का मिशन यीशु मसीह की सेवकाई की पुष्टि करना और उसे आगे बढ़ाना था।
5. ''तुम आरम्भ से मेरे साथ रहे हो'' वाक्यांश और पुष्टि कर देता है कि (पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की प्रतिज्ञा के सम्बन्ध में) विशेष रूप से मसीह के प्रेरितों के लिए कहा गया था।

च. यूह. 16:7–8 केवल प्रेरितों के लिए है।

1. यीशु का ''जाना'' कई कारणों से ''अच्छा'' था।

यदि इसका मुखिया सांसारिक परिस्थितियों में सीमित होता, शारीरिक रूप में एक समय में केवल एक ही जगह में रह पाता, उस तक पहुंचने के लिए दूसरे लोग न होते तो, पाप से उद्धार और सारी मनुष्यजाति के लिए अनंत जीवन के लाभों वाले विश्वव्यापी धर्म की स्थापना असम्भव हो जानी थी ... (कॉफ़मैन)।

उनकी आंखों के सामने उसके जाने, उसकी मृत्यु, और ऊपर उठाए जाने से इन बड़े तथ्यों के होने से पवित्र आत्मा ने उसके अपने वहां होने के बजाय उन्हें उसके आने की योजना को और अच्छे ढंग से बता पाना था। ... *छुटकारे की बड़ी योजना में यह एक स्पष्ट प्रबन्ध था कि त्रिएकता में से हर कोई अपना अपना योगदान दे* (बार्नस)।

यीशु के सांसारिक राजनैतिक राज्य के राजा होने की उनकी गलत धारणाओं के साथ, इससे बढ़कर कठिन कुछ और नहीं लगना था। उन्होंने आवश्यक बातों को मान लेना था, परन्तु यीशु के जाने को आवश्यक, वांछनीय होना मान पाना बहुत कठिन था (लिप्सकॉम्ब 252)।

उस समय जो बहुत बड़ा दु:ख लग रहा था, वही वास्तविक आशीष थी (जॉनसन 241)।

मूल में ''जाना'' के लिए किसी *उद्देश्य* के लिए जाने का विचार है (विंसेंट)।

2. आयत 8 में, प्रेरितों के लिए पवित्र आत्मा का मिशन उनके द्वारा ''संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर'' करना था।

नये नियम में [यूह. 16:8 वाले 'निरुत्तर'] का उपयोग सीमित है। इसका अर्थ आरोप लगाने के साथ *''लोगों को उनके पापों को दिखाना और उन्हें मन फिराने के लिए कहना ...''* है (किट्टल ऐंड फ्रैड्रिक)।

क. हर युग में परमेश्वर के नबियों को पाप से भरे संसार पर दोष लगाने, क्षमा की पेशकश करने और दृढ़ता से यह कहने की ईश्वरीय प्रेरणा दी जाती थी कि परमेश्वर का न्याय आने वाला है।

ख. केवल मानवीय अधिकार के आधार पर परमेश्वर का कोई भी सेवक इतना बहादुर नहीं था, परन्तु ईश्वरीय अधिकार से, पाप को गलत बताते हुए वे लोगों को मन फिराने को कहते थे!

ग. प्रभु की कलीसिया के आरम्भ के दिन नये नियम में प्रेरितों 2:36–38, इसी पैट्रन को मानते हुए दिखाता है।

च. यूह. 16:13–14 केवल प्रेरितों के लिए लागू होता है।

1. जैसा कि पहले कहा गया है, प्रेरितों के लिए पवित्र आत्मा के मिशन में सुसमाचार

की सच्चाई की घोषणा करना शामिल है।

क. यह याद रखना आवश्यक है कि ये आयतें विशेष तौर पर प्रेरितों के लिए थीं और आज पवित्र आत्मा सारी सच्चाई में मसीही लोगों की अगुआई, नये नियम को छोड़ और किसी और तरीके से नहीं करता।

''वह बताएगा ...'' प्रकाशन के एक स्तर से ऊंचे स्तर तक आगे बढ़ने का संकेत देता है; और इस प्रकार भविष्य की अपनी भविष्यद्वाणियों के साथ प्रकाशन उससे जो प्रेरितों को पहले से पता था, आगे बढ़ जाता है। (कॉफ़मैन)

पहेलियां हल होनी थीं, भेद खोले जाने थे (जॉनसन)।

ख. ''सब सत्य'' परमेश्वर के वचन के उपदेश के पर्याप्त होने की पुष्टि करते हैं जो कि यहां पर नया नियम को कहा गया है।

ग. फिर से, बल इस पर दिया गया लगता है कि विश्वास की एक पद्धति है ''जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था'' जिसके लिए पवित्र आत्मा ने अपनी अभिव्यक्ति को सीमित करना था (यहू. 3)।

घ. पवित्र आत्मा ने मसीह की सेवकाई की पुष्टि की और उसे बढ़ाया, परन्तु उसने वैकल्पिक या ''कोई और सुसमाचार'' नहीं दिया (गला. 1:6-9)।

2. ''आने वाली बातें'' वाक्यांश मसीही धर्म के लिए प्रासंगिक प्रसारणों से सीमित है।

क. प्रेरितों को भविष्य की घटनाओं का ज्ञान देने की प्रतिज्ञा नहीं की गई जो नये नियम की मसीहियत के बढ़ने से सम्बन्धित है।

ख. ''यानी, सच्चाई जो कि मसीही पद्धति आरम्भ से सम्बन्धित थी ...'' (बार्नस)

छ. यूह. 16:23-24 केवल प्रेरितों के लिए कहा गया है।

1. प्रेरितों ने पहले की तरह, कई कारणों से यीशु से वे प्रश्न नहीं पूछने थे।

क. विनसंट के अनुसार ''पूछना'' के लिए क्रिया शब्द जो आयत 23 में पहले आता है, ''बार-बार पूछे जाने'' के लिए है।

ख. प्रेरितों ने यीशु के चले जाने पर उससे शारीरिक रूप में नहीं पूछ पाना था, जैसे उसकी सेवकाई के दौरान उसके साथ रहने पर वे पूछ लिया करते थे।

ग. इसके अलावा पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लेने के बाद प्रेरितों को परमेश्वर का ज्ञान, और सम्पूर्ण और अचूक ढंग से मिल जाना था जिससे उन्हें वैसे प्रश्न पूछने की आवश्यकता नहीं होनी थी जैसे वे पहले पूछा करते थे।

2. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पा लेने के बाद, प्रेरितों की विनतियां पिता के सामने हो जानी होंगी।

क. इस संदर्भ में, यह वचन केवल प्रेरितों पर लागू होता है।

ख. प्रेरितों ने स्वर्ग के अधिकार से, सिखाया और बताया (मत्ती 10:19-20; 18:18-19; प्रेरि. 2:42)।

यह इस बात का भी संकेत है कि प्रेरितों को बड़ी आत्मिक सच्चाइयों को समझ आ जानी थी और अब उन्हें यह पूछने की आवश्यकता नहीं होनी थी कि ''तू कहां जाता है?'' (13:36), या ''हम मार्ग को कैसे जानें?'' (14:5), या

''पिता को हमें दिखा दे?'' (14:8), या ''हे प्रभु, क्या हुआ कि तू अपने आपको हम पर प्रकट करना चाहता है और संसार पर नहीं?'' (14:22), या '' 'यह' थोड़ी देर जो वह कहता है क्या बात है?'' (16:18)। उन घटनाओं के प्रकाश में जो कुछ ही घंटों बाद पता चल जानी थीं, ऐसी अनिश्चितताएं खत्म हो जानी थीं (कॉफ़मैन)

ग. विंसेंट का कहना है कि ''पूरा हो जाए'' का अर्थ है ''पूरा हो जाना'' है।

निष्कर्ष:

1. प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की प्रतिज्ञा की पेशनगाई की भविष्यद्वाणी दोनों नियमों में मिलती है।
   - क. पेशनगोई की किसी भी भविष्यद्वाणी का पूरा होना इस तथ्य की पुष्टि करता है कि बाइबल परमेश्वर की ओर से है और यह कि इस पर विश्वास किया जा सकता है।
   - ख. प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की प्रतिज्ञा से सम्बन्धित पेशनगाई की भविष्यद्वाणियां, अब जबकि बहुत पहले पूरी हो चुकी हैं, बाइबल में परमेश्वर के बालकों के उन प्रतिज्ञाओं के लिए जो अभी पूरी नहीं हुईं (स्वर्ग में अनन्त जीवन), विश्वास और परमेश्वर की सब प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करने के लिए योगदान देती हैं।
   - ग. पेशनगाई की कई गवाहियां इन भविष्यद्वाणियों के पूरा होने के साथ-साथ पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की प्रतिज्ञा की पुष्टि करती हैं।
2. सामान्य और विशेष भविष्यद्वाणियों में मसीह के प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की बातें शामिल हैं।
   - क. सामान्य भविष्यद्वाणियां, जिनमें पवित्र आत्मा के बपतिस्मे को विशेष रूप से पाने वालों के नाम नहीं, योएल 2:28-32, मत्ती 3:11 और मर. 9:1 हैं।
   - ख. विशेष भविष्यद्वाणियों में जिनमें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने वालों के नाम हैं, लूका 24:49, प्रेरि. 1:8 और यूह. 14-16 शामिल हैं।
3. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल मसीह के प्रेरितों को मिला।
   - क. पवित्र आत्मा का भावी बपतिस्मा पाने वालों में केवल मसीह के प्रेरितों से सम्बधित भविष्यवाणियां की गईं।
   - ख. भविष्यद्वाणियों के पूरा होने में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के पाने का एकमात्र निर्विवाद, लिखित अवसर यह दिखाता है कि आत्मा का बपतिस्मा केवल प्रेरितों को मिला।
   - ग. पहली सदी में या उसके बाद किसी को भी, यानी किसी दूसरे को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।
   - घ. कुछ अर्थ में, कुरनेलियुस के घर की घटना से प्रेरितों 2 में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की विशेष प्रतिज्ञाओं से तथा उसके बाद पूरा होने के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
4. यूह. 14-16 के कुछ विषय आज मसीही लोगों के लिए हैं।
   - क. केवल यूह. 14-16 वाले विषय जो यूह. 14-16 के संदर्भ से बाहर भी लागू होते हैं, आज मसीही लोगों के लिए हैं।
   - ख. यूह. 14-16 में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की प्रतिज्ञा और उससे मिलने वाली शक्तियां

और अधिकार विशेष रूप से मसीह के प्रेरितों के लिए हैं।

5. यीशु मसीह और पवित्र आत्मा दोनों ही परमेश्वर के कठघरे के सामने परमेश्वर के विश्वासी बच्चों के लिए विनतियां करते हैं।
   क. पवित्र आत्मा मसीही व्यक्ति का ''एडवोकेट'' (सहायक) या कानूनी सलाहकार है (यूह. 14–16; रोमि. 8:26)।
   ख. यीशु मसीह भी मसीही व्यक्ति का ''एडवोकेट'' या कानूनी सलाहकार है (1 यूह. 2:1)।
6. पवित्र आत्मा (का बपस्मिा) नये नियम की प्रेरणा देने के लिए परमेश्वर की ठहराई व्यवस्था था।
   क. प्रेरितों को मुख्यतया मनुष्यजाति के पास मनुष्य के लिए परमेश्वर की इच्छा को अचूक ढंग से देने का ज़िम्मा सौंपा गया।
   ख. पवित्र आत्मा के ईश्वरीय हस्तक्षेप के बिना हमें धर्म में सम्पूर्ण, मुकम्मल मानक नहीं मिलना था; मसीह के प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और उनके विशेष मिशन के कारण हमें धर्म में अंतिम, सम्पूर्ण मानक यानी बाइबल (और हमारे लिए नया नियम) मिला है (मत्ती 19:28)।
7. परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों के बीच पूरा तालमेल या एकजुटता पाई जाती है।
   क. जिसके कारण तीनों ने और अंत में पवित्र आत्मा ने मनुष्यजाति के लिए एक ही संदेश दिया।
   ख. त्रिएकता की शिक्षा यूहन्ना 14–16 में पक्की की गई।
   ग. परमेश्वरत्व के हर व्यक्ति ने पाप में गिरे मनुष्य को छुड़ाने के मिशन में योगदान दिया।
8. परमेश्वर के सेवकों की ज़िम्मेदारी परमेश्वर के अधिकार पर आधारित जो अपना संदेश देकर उन सेवकों को भेजता है, पाप को निरुत्तर करने और मन फिराने के लिए कहने की है।
   क. प्रेरितों का अधिकार जिसने पहली सदी की कलीसिया में जोश भरा, आज भी उतना ही प्रभावी है (मत्ती 19:28)।
   ख. ''प्रेरितों की शिक्षा'' हम पर पाप के संसार को निरुत्तर करने की, धार्मिकता और न्याय के प्रति हमारी उन्हीं ज़िम्मेदारियों को दिखाती है।
9. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पहली सदी की कलीसिया की बढ़ोतरी और हर पीढ़ी में जिसमें आज की पीढ़ी भी शामिल है, बाइबल के अधिकार के लिए आवश्यक था।
   क. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के पहले वास्तविक घटना घटी थी।
   ख. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का वादा परमेश्वर के बालक को विश्वास दिलाने की कुंजी है।
   ग. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के वादा का परमेश्वर की इच्छा में अपना महत्व, बड़े आरे में सही जगह में सही टुकड़े को रखने की तरह है।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

मत्ती 3:11

प्रसंग: यह जानने के लिए कि आज यह बपतिस्मा मिल सकता है या नहीं, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने वालों को, इसकी प्रकृति तथा प्रदर्शनों को पहचानना।

परिचय:

1. पुराना नियम प्रेरितों 2 अध्याय वाले पिन्तेकुस्त की ओर आगे को देखता था, जबकि मसीहियत अपने आरम्भ के लिए उस पिन्तेकुस्त के दिन की ओर पीछे को देखती है।
   - क. पुराने नियम में प्रेरितों 2 वाले पिन्तेकुस्त से जुड़ी घटनाओं की पेशनगोइयां थीं (यिर्म. 31:31-34; यशा. 2:2-4; मीका 4:1-3)।
   - ख. प्रभु यीशु की कलीसिया प्रेरितों 2 वाले पिन्तेकुस्त के दिन अस्तित्व में आई (प्रेरि. 2:47)।
2. पिन्तेकुस्त पुराने नियम का यहूदी पर्व था जो परमेश्वर द्वारा यहूदियों द्वारा मनाए जाने के लिए ठहराया गया था।
   - क. इसके अलावा अठवारों के पर्व के रूप में जाना जाने वाला पिन्तेकुस्त, उन तीन वार्षिक पर्वों में से एक था जिनमें यहूदी पुरुषों का भाग लेना अनिवार्य होता था (निर्ग. 34:22-23)।
   - ख. पिन्तेकुस्त फसह के सब्त के बाद सात सप्ताह और एक दिन (कुल 50 दिन) तक मनाया जाता था (लैव्य. 23:4-21)।
   - ग. इसलिए पिन्तेकुस्त सप्ताह के पहले दिन ही आता था।
   - घ. यरूशलेम में आने वाले और वहां पर रहने वाले मिलकर, पिन्तेकुस्त के दिन आम तौर पर दस लाख से ऊपर हो जाते थे।
   - ङ. प्रेरितों 2 अध्याय वाले पिन्तेकुस्त के दिन प्रभु की कलीसिया के जन्मदिन के समय यरूशलेम में ऐसा ही नज़ारा होगा।
3. प्रेरितों 2 अध्याय वाला पिन्तेकुस्त इस बात में अलग था कि प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया गया था, जिसके बाद वे परमेश्वर की प्रेरणा से प्रचार करने लगे थे और जब प्रभु की कलीसिया स्थापित हुई (प्रेरि. 2:1-47)।
   - क. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल 12 प्रेरितों को मिला था (प्रेरि. 1:26; 2:1-4, 7, 14)।
   - ख. प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा बड़े शोर के साथ दिया गया था (प्रेरि. 2:2)।
   - ग. प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने के समय कुछ दिखाई दिया था (प्रेरि. 2:3)।
   - घ. प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने के बाद कुछ हुआ था; पवित्र आत्मा से भरे होने के बाद प्रेरितों ने अन्य भाषाओं या उन ज़बानों में जो उन्होंने सीखी नहीं थी परमेश्वर की सच्चाई बताई थी।
4. बाइबल में से यह तय करने के लिए कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा आज मिलता है या नहीं, आइए पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की कुछ बातों पर विचार करते हैं।
   - क. यदि हमें बाइबल की जांच से यह पता चल जाए कि आज पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं होता है, तो आज पवित्र आत्मा का बपतिस्मा जिसे भी कहा जाता है, वह कुछ और है न कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा।

ख. बाइबल जब भी पवित्र आत्मा के बपतिस्मे (या किसी अन्य विषय) पर कुछ कहती है तो यह निर्णायक या पक्का होता है। और बाइबल के हर छात्र के लिए उसे बिना संदेह के या बहाना किए उसे मान लेना चाहिए।

मुख्य विषय:

1. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने वाला केवल परमेश्वर है।

क. बाइबल में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देने वाले के रूप में केवल यीशु मसीह अधिकृत है (लूका 24:49; यूह. 16:7; प्रेरि. 1:4; 2:33)।

ख. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा भेजने में पिता परमेश्वर का योगदान था (यूह. 14:16; 15:26)।

ग. बाइबल में कहीं पर भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा परमेश्वर को छोड़ किसी और को देते नहीं दिखाया गया (मत्ती 3:11)।

2. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने वाले केवल मसीह के प्रेरित होने थे (प्रेरि. 1:5)।

क. योए. 2:28-32 वाली भविष्यद्वाणी में कलीसिया के जन्म दिन के साथ चमत्कारी शक्ति देने का वादा किया गया।

1. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाकर प्रेरित पतरस ने कलीसिया के आरम्भ के लिए, योएल की भविष्यद्वाणी का इस्तेमाल किया (प्रेरि. 2:16-21)।
2. योएल की भविष्यद्वाणी पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और पवित्र आत्मा द्वारा दी गई अन्य चमत्कारी सामर्थ के बीच अंतर नहीं करती (इब्रा. 2:4; 1 कुरिं. 12:4-2)।
3. प्रेरितों को जहां पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला, वहीं पहली सदी में दूसरों को उन पर प्रेरितों के हाथ रखने और प्रार्थना करने के बाद चमत्कारी शक्ति मिली (प्रेरि. 8:15-17; 19:6)।

ख. मत्ती 3:11 में यीशु ने जिन्हें पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलना था, उन के सम्बन्ध में ''तुम्हें'' सर्वनाम से, उन्हें अपने प्रेरितों के रूप में पहचाना (प्रेरि. 1:2-5)।

ग. केवल यीशु के प्रेरितों को ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया जाने की विशेष प्रतिज्ञा की गई थी।

1. यीशु के पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का वादा किए जाने पर केवल प्रेरित ही वहां थे (यूह. 14:26; 15:26-27; 15:16-15, 13)।
2. इसी प्रकार प्रेरितों 2 में कलीसिया के जन्मदिन पर केवल प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था (प्रेरि. 1:26; 2:1-4, 7, 14)।

घ. इसके अलावा ग्रेट कमीशन के बपतिस्मे की तरह, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लेने की आज्ञा नहीं बल्कि प्रतिज्ञा है (लूका 24:49; प्रेरि. 1:4; 2:33, 39; 10:48)।

3. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का उद्देश्य क्या था?

क. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का मुख्य उद्देश्य प्रेरितों को उनकी विशेष सेवकाई के लिए अच्छी तरह से तैयार करना था।

1. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा, प्रेरितों को परमेश्वर की इच्छा और उन्हें वह याद

करवाया गया जो यीशु ने उन्हें पहले से बताया था (यूह. 14:26)।

2. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा, प्रेरितों को सारी सच्चाई में अगुआई की गई (यूह. 16:13)।

ख. पवित्र आत्मा के बपतिस्मा का एक और मुख्य काम परमेश्वर के वचन की पुष्टि करना और इसे सुनाने वाले, उसके पवित्र प्रेरितों को प्रामाणिक बनाना था।

1. आश्चर्यकर्मों का उद्देश्य परमेश्वर के पुत्र अर्थात मसीहा के रूप में यीशु मसीह को मान्यता देना था (यूह. 20:30-31)।
2. परमेश्वर के वचन की पुष्टि करने और यह प्रमाण देने के लिए कि वे परमेश्वर की ओर से परमेश्वर के प्रवक्ता थे, आश्चर्यकर्मों का इस्तेमाल किसी भी और व्यक्ति से पहले प्रेरितों ने करना था (मर. 16:17-20)

ग. परमेश्वर का वचन अर्थात नया नियम उन आश्चर्यकर्मों के द्वारा जो प्रेरितों को मिले पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और आश्चर्यकर्म करने की शक्ति देने के लिए, जिनके ऊपर प्रेरितों ने हाथ रखे थे, उनके द्वारा पहले ही पक्का हो चुका है (इब्रा. 2:3-4)।

IV. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की अवधि थोड़ी देर की थी।

क. परमेश्वर ने यह ठाना कि आश्चर्यकर्मों के उस उद्देश्य को पूरा कर लेने के बाद जिसके लिए वे दिए गए थे, बंद कर दिए जाएं।

1. आश्चर्यकर्म थोड़ी देर के लिए थे और प्रभु की कलीसिया की स्थापना के समय और उसके थोड़ी देर बाद तक विशेष तौर पर उपयोगी थे (1 कुरिं. 13:8-13)।
2. आश्चर्यकर्मों से कलीसिया के आरम्भ में और दशकों बाद तक कलीसिया को परमेश्वर की इच्छा में अगुआई देने के लिए कलीसिया के आरम्भिक अगुओं को योग्य बनाया (इफि. 4:11-14)।

ख. आश्चर्यकर्म बंद हो गए, जब वह उद्देश्य पूरा हो गया, जिसके लिए वे दिए गए थे।

1. नया नियम लिखे जाने और इकट्ठा किए जाने के बाद आश्चर्यकर्मों की कोई आवश्यकता नहीं रही (1 कुरिं. 13:8-13; इफि. 4:11-14)।
2. प्रेरितों के मर जाने, और उस अंतिम व्यक्ति की मृत्यु के बाद जिस पर प्रेरितों ने आश्चर्यकर्म करने की शक्ति देने के लिए हाथ रखे थे, कोई आश्चर्यकर्म नहीं हुआ

ग. इफिसियों की पुस्तक लिखे जाने तक, प्रेरित पौलुस ने लिखा कि मसीहियत में केवल एक बपतिस्मा था जो अभी भी मान्य है (इफि. 4:5)।

1. वह एक बपतिस्मा ग्रेट कमीशन वाला बपतिस्मा है (मत्ती 28:18-20; मर. 16:20)।
2. वह बपतिस्मा पानी का बपतिस्मा है, जो बचाता है (1 पत. 3:20-21; प्रेरि. 22:16)।

निष्कर्ष:

1. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल प्रेरितों को मिला।

क. इसे देने का वादा विशेष तौर पर प्रेरितों के साथ किया गया था (यूह. 14-16)।

ख. कलीसिया के जन्मदिन पर केवल प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिला था (प्रेरि. 1:26; 2:1-4, 7, 14)।

ग. कलीसिया के जन्म दिन पर 3,000 विश्वासी बनने वाले लोग प्रेरितों की शिक्षा में बने

रहे, न कि 120 इत्यादि की शिक्षा में (प्रेरि. 2:42)।

घ. 120 या किसी और के पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने का कोई दस्तावेज़ नहीं है।

ङ. प्रेरितों 2 में पश्चात्तापी लोगों ने उद्धार के बारे में जानने के लिए 120 या अन्यों के बजाय प्रेरितों से कहा (प्रेरि. 2:37)।

च. प्रेरितों 2 में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने वालों को गलीली बताया गया, जो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने वालों की पहचान को सीमित कर देता है।

छ. लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक 120 के कामों को ध्यान में रखते हुए नहीं बल्कि प्रेरितों के कामों को ध्यान में रखते हुए लिखी।

2. अंतिम प्रेरित तथा उस अंतिम व्यक्ति की मृत्यु के साथ ही जिस पर किसी प्रेरित ने आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ देने के लिए, हाथ रखे थे, आश्चर्यकर्म होने बंद हो गए।
3. मसीह का प्रेरित बनने का पात्र होने के लिए आज कोई भी व्यक्ति जीवित नहीं है, क्योंकि आज कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो यीशु की पृथ्वी पर की सेवकाई के समय उसके साथ रहा हो और उसने जी उठे प्रभु को देखा हो (प्रेरि. 1:21-22; 9:3-6; 1 कुरिं. 15:8)।
4. पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उसकी भूमिका पूरी हो चुकी है (1 कुरिं. 13:8-13; इफि. 4:11-14; याकू. 1:25; मरकुस 16:20; इब्रा. 2:3-4; यूह. 20:30-31)।
5. बाइबल में से पता चलता है कि आज न तो पवित्र आत्मा के बपतिस्मे और न ही आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता है या वे होते हैं।

निमन्त्रण:

1. फिर भी, आज लोगों को जिस बपतिस्मे की चिंता होनी चाहिए वह ग्रेट कमीशन वाला बपतिस्मा है (मर. 16:16)।
2. बपतिस्मा पाया हुआ विश्वासी बन जाने के बाद, यदि कोई पाप करता है, तो उसे पापों की क्षमा के लिए दोबारा से बपतिस्मा लेने की नहीं, बल्कि मन फिराकर प्रार्थना करने की आवश्यकता है (प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

असाधारण दृष्टांत

मत्ती 13:10

प्रसंग: यह देखने के लिए कि हमारे प्रभु ने परवलय (पैराबोल) का इस्तेमाल व्यापक रूप में क्यों किया, परवलयिक (पैराबोलिक) शिक्षा के महत्व पर विचार करना।

परिचय:

1. दृष्टांत क्या है ?
   - क. दृष्टांत कोई नैतिक शिक्षा देने वाली लघु कथा है।
   - ख. ठीक ठीक कहें तो यूनानी भाषा में दृष्टांत का अर्थ ''किसी दूसरी चीज़ के साथ-साथ फेंकना'' है।
   - ग. इसलिए बाइबली दृष्टांत किसी ऐसी चीज़ के साथ मेल खाता है जिससे मनुष्य अच्छी तरह परिचित होता है कि उसे उस आत्मिक सच्चाई के बारे में बताया जा सकता है जिसका उसे कम या बिल्कुल पता नहीं होता।
   - घ. कहा जा सकता है कि दृष्टांत ''स्वर्गीय अर्थ वाली सांसारिक कहानी'' है।
2. इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे प्रभु ने दृष्टांत ईश्वरीय सच्चाइयों को समझाने के लिए दिए थे।
   - क. दृष्टांत मानसिक तस्वीर को बनाते हैं।
   - ख. दृष्टांतों की बातों से हमें आत्मिक बातों को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिलती है।
   - ग. दृष्टांतों को कहानी बताना केवल उपदेश देने से अधिक उपयोगी है।

मुख्य विषय:

I. दृष्टांत स्वर्गीय सच्चाई को समझाने के लिए दैनिक जीवन के सरल पहलुओं की ओर ध्यान दिलाते हैं।

क. कई दृष्टांतों में खेती की बात है:

1. *बीज बोने वाले का दृष्टांत* राज्य के बढ़ने को ध्यान में रखते हुए सुसमाचार और लोगों के मनों के बीच के सम्बन्ध की समीक्षा करता है (मत्ती 13:1-23; मर. 4:1-20; लूका 8:4-18)।
2. *बीज का दृष्टांत* परमेश्वर के वचन के बारे में है (मर. 4:26-29)।
3. *जंगली बीज का दृष्टांत* सावधान रहने के लिए कहते हुए झूठे गुरुओं तथा झूठी शिक्षा के बारे में चौकस करता है (मत्ती 13:24-30, 36-43)।
4. *राई के बीच का दृष्टांत* विश्वास पर बल देता है (मत्ती 13:31-32)।
5. *फल-रहित अंजीर के पेड़ का दृष्टांत* धोखे के बारे में चेतावनी देता है (लूका 13:6-9)
6. *बारी के मज़दूरों का दृष्टांत* राज्य के कई दृष्टांतों में से एक है (मत्ती 20:1-16)।
7. *दाख की बारी और दुष्ट किसानों का दृष्टांत* वफ़ादारी की शिक्षा देता है (मत्ती 21:33-46; मरकुस 12:1-12; लूका 20:9-18)
8. *अंजीर के पेड़ का दृष्टांत* समयों के चिह्नों की बात करता है (मत्ती 24:32-35; मर. 13:28-31; लूका 21:29-33)।

9. *दाखलता और टहनियों का दृष्टांत* प्रभु की सेवा करने की शिक्षा देता है (यूह. 15:1-8)।
10. *खोई हुई भेड़ का दृष्टांत* नाश हो रहे लोगों को बचाने की धुन की शिक्षा देता है (मत्ती 18:12-14; लूका 15:1-7)।
11. *भेड़शाला का दृष्टांत* राज्य में प्रवेश की शिक्षा देता है (यूह. 10:1-18)।

ख. कुछ दृष्टांत भण्डारीपन तथा धन से सम्बन्धित हैं।

1. *दो देनदारों का दृष्टांत* क्षमा किए जाने की शिक्षा देता है (लूका 7:36-50)।
2. *छिपे हुए ख़ज़ाने का दृष्टांत* कलीसिया या राज्य के अत्यधिक महत्व पर बल देता है (मत्ती 13:44)।
3. *अनमोल मोती का दृष्टांत* भी कलीसिया या राज्य के अत्यधिक महत्व पर बल देता है (मत्ती 13:45-46)।
4. *धनवान मूर्खा का दृष्टांत* सांसारिक धन की अनिश्चितता को दिखाता है (लूका 12:13-21)।
5. *हिसाब लगाने का दृष्टांत* चेला बनने पर फोकस करता है (लूका 14:25-33)।
6. *खोए हुए सिक्के का दृष्टांत* नाश होने वालों को बचाने की आवश्यकता और आनन्दपूर्ण धुन पर बल देता है (लूका 15:8-10)।
7. *अधर्मी भण्डारी का दृष्टांत* वफ़ादारी को प्रोत्साहित करता है (लूका 16:1-13)।
8. *धनी मनुष्य और लाज़र का दृष्टांत* न्याय के बारे में है (लूका 16:19-31)।
9. *बेकार सेवक का दृष्टांत* वफ़ादारी से चेले बनने के बारे में है (लूका 17:5-10)।
10. *मोहरों और तोड़ों के दृष्टांत* न्याय में प्रतिफल और दण्ड की बात करते हैं (लूका 19:11-27, मत्ती 25:14-30)।
11. *स्वर्गीय धन का दृष्टांत* यीशु के चेलों को पृथ्वी पर भौतिक धन के बजाय स्वर्गीय धन की तलाश करने के लिए प्रोत्साहित करता है (मत्ती 6:19-21)।
12. *निर्दयी सेवक का दृष्टांत* क्षमा की शिक्षा देता है (मत्ती 18:21-35)।
13. *उड़ाऊ पुत्र का दृष्टांत* बेदीनी (विश्वास त्याग) और मन फिराव के बारे में बताता है (लूका 15:11-32)।

ग. कई दृष्टांत विवाहों या विवाह की बात करते है।

1. *दस कुंवारियों का दृष्टांत* वफ़ादारी की शिक्षा देता है (मत्ती 25:1-13)।
2. लूका 12:35-41 में जागते रहने का दृष्टांत हमारे प्रभु की वापसी की राह देखते हुए वफ़ादारी को समझाता है।
3. *विवाह के भोज का दृष्टांत* परमेश्वर के निमन्त्रण को स्वीकार करने के बारे में है (मत्ती 22:1-14)।
4. *मुख्य मुख्य जगहों का दृष्टांत* दीनता की शिक्षा देता है (लूका 14:7-11)।

घ. और दृष्टांत दैनिक जीवन की अलग-अलग परिस्थितियों की बात करते हैं।

1. *आधी रात को मित्र का दृष्टांत* प्रार्थना में बने रहने की शिक्षा देता है (लूका 11:5-13)।
2. *खमीर का दृष्टांत* दिखाता है कि राज्य कैसे बढ़ता है (मत्ती 13:33)।
3. *धन्य सामरी का दृष्टांत* किसी साथी के प्रति ज़िम्मेदारी को दिखाता है (लूका 10:25-37)।
4. *जाल का दृष्टांत* न्याय के बारे में है (मत्ती 13:47-50)।

5. *बहानों का दृष्टांत* परमेश्वर के निमन्त्रण को स्वीकार करने के बारे में है (लूका 14:15-24)।
6. *फ़रीसी और चुंगी लेने वाला का दृष्टांत* दीनता को सिखाता है (लूका 18:9-14)।
7. *दो पुत्रों का दृष्टांत* मन फिरा की शिक्षा देता है (मत्ती 21:28 32)।
8. *न्याय का दृष्टांत* (बकरियां और भेड़ें) न्याय के बारे में है (मत्ती 25:31-46)
9. *फाटकों और मार्गों का दृष्टांत* भी न्याय के बारे में हैं (मत्ती 7:13-14)।
10. *नमक का दृष्टांत* चेला बनने के सम्बन्ध में है (मत्ती 5:13)।
11. *ज्योति का दृष्टांत* चेला बनने के सम्बन्ध में है (मत्ती 5:29-30)।
12. *ठोकर खिलाने वाली आंख का दृष्टांत* और आत्मानुशासन की शिक्षा देता है (मत्ती 5:29-30)।
13. *अशुद्ध मनुष्य* और *अंधे का अंधे को राह दिखाने का दृष्टांत* दुष्टता के बारे में है (मत्ती 15:10-20)।
14. पुराने वस्त्र को कोरे कपड़े के पैबंद और पुरानी मश्कों में नया दाखरस का दृष्टांत परमेश्वर की वाचाओं के बारे में सिखाता है (मत्ती 9:16-17; मर. 2:18-22; लूका 5:36-39)।

II. दृष्टांत कई प्रकार से सिखाते हैं।

क. यीशु ने प्रश्नों को उत्तर देने के लिए दृष्टांतों का इस्तेमाल किया: धन्य सामरी का दृष्टांत ''मेरा पड़ोसी कौन है?'' के प्रश्न का हमारे प्रभु का उत्तर था (लूका 10:25-37)।

ख. यीशु ने निष्कपट मनों को ईश्वरीय सच्चाई बताने जबकि भ्रष्ट मनों को जिन्होंने इसका दुरुपयोग करना था उसी सच्चाई को छिपाने के लिए दृष्टांतों का इस्तेमाल किया (मत्ती 13:10-17)।

ग. लोगों को यह समझ आने से पहले कि यह उन पर लागू होता है सच्चाई को मान लेने के लिए दृष्टांतों का इस्तेमाल किया गया।
1. यीशु ने इस प्रकार से धन्य सामरी के दृष्टांत का इस्तेमाल किया।
2. किसी को यह समझ आने से पहले कि यह उसी पर लागू होता है सिखाने वाले दृष्टांत का श्रेष्ठ उदाहरण भेड़ की छोटी बच्ची का दृष्टांत था (2 शमूएल 12:1-14)।

घ. दृष्टांतों का इस्तेमाल ईश्वरीय सच्चाई को सिखाना आसान बनाने के लिए किया जाता है।
1. यीशु ने दैनिक जीवन की कहानियों में से लिया जो वास्तविक विवरण हो सकते हैं।
2. यीशु ने ऐसी बातें बताकर जिनसे मनुष्य परिचित है ईश्वरीय सच्चाई को समझाया जिसके बारे में मनुष्य को या तो थोड़ा पता है या बिल्कुल नहीं।
3. परमेश्वर के वचन को बड़े बड़े शब्दों या जटिल व्याख्याओं के साथ सजाने की कोई आवश्यकता नहीं है।
4. परमेश्वर के वचन को प्रभावी होने के लिए जितना हो सके उतना सहज ढंग से बताया जाना आवश्यक है ताकि इसके सुनने वालों के जीवनों में काम कर सके।

निष्कर्ष:

1. दृष्टांत इसे ग्रहण करने वालों को सच्चाई बताते हैं।
2. दृष्टांतों में सच्चाई की गंध होती है और यह सच्चाई को और आसानी से याद रखने का कारण बनते हैं।
3. दृष्टांत पुराने नियम और नये नियम दोनों में मिलते हैं।
4. यीशु की लगभग सारी शिक्षा परवलयिक (पैराबोलिक) है।
5. यीशु के दृष्टांत उन विषयों को छेड़ते हैं जो आज भी उद्धार, मसीही जीवन, मसीही दायित्व तथा न्याय के सम्बन्ध में मसीही लोगों के लिए महत्वपूर्ण है।

निमन्त्रण:

1. नये नियम की साधारण शिक्षाएं उद्धार के रहस्य को इतनी स्पष्ट भाषा में बताती हैं कि हर जवाबदेह व्यक्ति इसे समझ सकता है।
2. उद्धार का मानवीय पहलू विश्वास, मन फिराव, परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु को मानना और पापों की क्षमा के लिए पानी में डुबकी लेना है (रोमि. 10:17; लूका 13:3; रोमि. 10:9–10; प्रेरि. 2:38)।
3. भटके हुए मसीहियों के लिए मन फिराकर प्रार्थना करना आवश्यक है (प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

अधर्मी न्यायाधीश

का दृष्टांत

लूका 18:1-8

प्रसंग: प्रार्थना में बने रहने पर ज़ोर देना।

परिचय:

1. अधर्मी न्यायाधीश के दृष्टांत या सबक इसके संदर्भ की पहली ही आयत में साफ़-साफ़ दिया गया है (लूका 18:1)।
2. इस दृष्टांत के छात्रों को इस समझ के साथ कि परमेश्वर अपने बच्चों की प्रार्थनाओं के प्रति उदासीन नहीं है, समझाया जाता है।
3. इस दृष्टांत के मुख्य पात्रों में एक न्यायाधीश एक विद्रोह और उसका विरोधी है।
   - क. प्राचीनकाल के इस्राएल को परमेश्वर ने लोगों के बीच झगड़े निपटाने के लिए न्यायी ठहराने को कहा था, और इन न्यायियों से घूस स्वीकार न करते हुए सावधान रहने की अपेक्षा की जाती थी (व्यव. 16:18-20; निर्ग. 23:6-9; 2 इतिहास 19:5-7)।
   - ख. विशेषकर न्यायियों से यह समीक्षा की जाती थी कि वे निर्धनों के साथ ईमानदारी और सच्चाई के साथ पेश आएं (व्यव. 1:16-17)।
   - ग. निर्धनों में न्यायियों को विशेषकर यह सुनिश्चित करना आवश्यक था कि वे विधवाओं के साथ न्यायसंगत रूप से पेश आते हैं (निर्ग. 22:22-24; व्यव. 24:17)।

मुख्य भाग:

I. आइए दृष्टांत वाले न्यायाधीश पर विचार करते हैं।

- क. दृष्टांत वाला न्यायाधीश ''परमेश्वर से नहीं डरता था'' (लूका 18:2, 4)।
  1. परमेश्वर का डर या आदर ज्ञान और बुद्धि का मूल है (नीति. 1:7; 15:33; भजन 119:98)
  2. दृष्टांत वाला न्यायाधीश अपने अहूदे की पवित्रता को भूल गया था। और ईश्वरीय समझ के अनुसार न्याय करने को तैयार नहीं था।
- ख. दृष्टांत वाला न्यायाधीश अपने किसी साथी की परवाह नहीं करता था (लूका 18:2, 4),
  1. इसमें कोई हैरानी की बात नहीं कि वह परमेश्वर से नहीं डरता था, जिसका अर्थ यह हुआ कि वह किसी से भी नहीं डरता था।
  2. इस्राएल के इस न्यायाधीश ने परमेश्वर और मनुष्य दोनों के सामने अपने नागरिक ज़िम्मेदारियों को छोड़ दिया था।
  3. यह न्यायाधीश भ्रष्ट और निंदनीय था।
- ग. न्यायाधीश अनिच्छा से सही न्याय करता था।
  1 वह न तो ईश्वरीय और न नागरिक ज़िम्मेदारी को मानता था।
  2. उसे तरस भी नहीं आता था।
  3. परन्तु विधवा के उसे बार-बार परेशान करने वाली याचना के कारण, वह कार्यवाही करने को तैयार था।

घ. दृष्टांत वाला अधर्मी न्यायाधीश परमेश्वर को दर्शाता है।

1. साफ़ तौर पर अधर्मी न्यायाधीश परमेश्वर के स्वभाव को नहीं दर्शाता है।
2. अधर्मी न्यायाधीश परमेश्वर का प्रतीक है जो अपने बच्चों की याचना भरी प्रार्थनाओं को सुनता और उनका उत्तर देता है (लूका 18:7-8)।
3. संयोग से यह दृष्टांत इस का श्रेष्ठ उदाहरण है कि हमें इस बात में कितना चौकस होना आवश्यक है कि बाइबल का इस्तेमाल उस प्रासंगिकता से बढ़कर न करें जो इसमें दी गई है (यानी यहां परमेश्वर को अधर्मी समझ लिया जाएगा यदि दृष्टांत इसकी नियत प्रासंगिकता से आगे मान लिया जाए)।

II. आइए दृष्टांत वाली विधवा पर विचार करते हैं।

क. दृष्टांत वाली विधवा के साथ बुरा हुआ था।

1. उसे न्याय चाहिए था।
2. विधवा न्याय न्याय के उपयुक्त अधिकारी से न्याय मांग रही थी।
3. उसके पास कोई और कानूनी सहारा नहीं था और कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसके पास वह अपील कर पाती।
4. हो सकता है कि विधवा इतनी कंगाल थी कि वह घूस न दे पा रही हो, जिससे अधर्मी न्यायाधीश की दिलचस्पी जाग उठती।

ख. विधवा बार-बार याचना करती रही।

1 बार-बार निवेदन करने से न्यायाधीश को वह करना पड़ा जो उसे करना चाहिए था।
2. बार-बार की जाने वाली याचनाओं से वह प्रभाव पड़ा जो अकेली याचनाओं से नहीं हो पाया था

घ. विधवा परमेश्वर के बच्चों का प्रतीक है जो बार-बार की जाने वाली प्रार्थनाओं से परमेश्वर को प्रभावित करते हैं।

1. प्रार्थनाएं बकबक (रट्टा मारी हुई प्रार्थना, मत्ती 6:7-8) नहीं होनी चाहिए।
2. फिर भी मसीही लोगों की प्रार्थनाएं बार-बार (1 थिस्स. 5:17; कुलु. 4:2; इफि. 6:18; रोमि. 12:12) होनी चाहिए।

III. अब दृष्टांत के निष्कर्ष पर विचार करते हैं (लूका 18:8)

क. बाइबल अलग-अलग प्रकार के विश्वासों की जांच कराती है जा मनुष्यजाति में हो सकती हैं।

1. कमज़ोर विश्वास (रोमि. 14:1)।
2. मरा हुआ विश्वास (याकू. 2:17, 20, 26)।
3. स्थिर विश्वास (मत्ती 24:13; प्रका. 2:10)।
4. कोई विश्वास नहीं (2 थिस्स. 3:2)।
5. थरथराता विश्वास (याकू. 2:19)।
6. अल्प विश्वास (मत्ती 6:30; 8:26; 17:17-21)।
7. सरल विश्वास (2 तीमु. 1:5)।
8. बड़ा विश्वास (लूका 7:9)।
9. काम करने वाला विश्वास (2 थिस्स. 1:11; याकू. 2:18)।
10. लड़ने वाला विश्वास (1 तीमु. 6:12)।
11. ढाल वाला विश्वास (इफि. 6:16)।

12. अटल विश्वास (याकू. 1:6)।

ख. परमेश्वर भक्ति का विश्वास पहली आवश्यकता है जो लगातार, धीरज से प्रार्थना करने के लिए आवश्यक है।

1. संतोषजनक प्रार्थनाएं विश्वास से भरी प्रार्थनाएं हैं, जो परमेश्वर के पश्चात्तापी बालक को उसके पापों से बचा लेती है (याकू. 1:5-8; 5:15)।
2. धर्मी जन की प्रार्थनाएं जोश से भरी हुई प्रभावी हैं, जिनसे बड़ा भला होता है (याकू. 5:16)

ग. विश्वास परमेश्वर के लिखित वचन से आता है।

1. यह विश्वास सदा-सदा के लिए पहले ही दिया जा चुका है (यहू. 3)।
2. विश्वास परमेश्वर के वचन के प्रमाण पर आधारित है (रोमि. 10:17)।

निष्कर्ष:

1. परमेश्वर प्रार्थनाओं को शर्तों के आधार पर सुनता है।
   - क. वह उनकी सुनता है जो उसकी सुनते हैं (मत्ती 7:21; लूका 6:46-49)।
   - ख. वह उनकी सुनता है जो सही सोच के साथ प्रार्थना करते हैं (यूह. 4:24)।
   - ग. परमेश्वर उनकी सुनता है जो विश्वास से प्रार्थना करते हैं (याकू. 1:5-8)।
   - घ. परमेश्वर उनकी सुनता है जो उसकी इच्छा के अनुसार प्रार्थना करते हैं (1 यूह. 5:14)।
   - ङ परमेश्वर धर्मियों की प्रार्थनाएं सुनता है (1 पत. 3:12)।
   - च. परमेश्वर उनकी सुनता है जो दूसरों के लिए प्रार्थनाएं करते हैं (मत्ती 6:9-15)।
   - छ. परमेश्वर हठीले पापी की प्रार्थना सुनने से इनकार कर देता है (यूह. 9:31; भजन 66:18; 1 पत. 3:12)
   - ज. परमेश्वर दूसरों की आज्ञाओं के बदले में (यानी आज्ञा मानने के बदले में, इब्रा. 5:8-9) नहीं सुनता।
2. परमेश्वर अपने बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति अनजान या उदासीन नहीं है।
   - क. परमेश्वर को गिरने वाली चिड़िया का भी पता होता है (मत्ती 10:29; लूका 12:6)।
   - ख. परमेश्वर को मैदान की घास की भी जानकारी है (मत्ती 6:28-34)।
   - ग. परमेश्वर प्रार्थना में हमारे मांगने से पहले जानता है कि हमारी क्या आवश्यकता है (मत्ती 6:8)
3. हमारी प्रार्थनाओं में धीरज और दृढ़ता होनी चाहिए।
   - क. *आधी रात को मित्र के दृष्टांत* में भी प्रार्थना में बने रहने पर ज़ोर दिया गया (लूका 11:5-13)
   - ख. हमें प्रार्थना में धीरज से लगे रहना चाहिए क्योंकि परमेश्वर मनुष्यजाति के साथ धीरज धरता है (2 पत. 3:9)।
   - ग. कई बार परमेश्वर प्रार्थनाओं का उत्तर देता है, और हम उत्तरों को समझ नहीं पाते: ''नहीं,'' ''हां,'' ''चलो देखते हैं,'' ''थोड़ी देर बार'' या ''पर शर्त है।''

निमन्त्रण:

1. प्रेरित पौलुस की अपने देशवासियों के लिए उद्धार के सम्बन्धित एक प्रार्थना थी, जो कि आज हम मनष्यजाति के लिए करते हैं (रोमि. 10:1)।
2. ऐसी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलता है जब गैर-मसीही लोगों को उनकी पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह में डुबकी दी जाती है (प्रेरि. 2:38)।
3. ऐसी प्रार्थनाओं का उत्तर तब मिलता है जब भटके हुए मसीही अपने पापों से मन फिराकर परमेश्वर से क्षमा मांगते हैं (प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

भेड़शाला

का दृष्टांत

यूह. 10:1-18, 26-27

प्रसंग: दृष्टांत का विवरण।

परिचय:

1. *भेड़शाला का दृष्टांत* किसान के जीवन की बात करता है।
   क. यीशु के कई दृष्टांत कृषि से भी जुड़े हैं: *बीज बोने वाला, बीज, जंगली बीज, राई का बीज, फल-रहित और खिलते अंजीर के वृक्ष, दाख की बारी में मज़दूर, खोई हुई भेड़,* आदि।
   ख. भेड़शाला के दृष्टांत का उद्देश्य यह बताना नहीं था कि भेड़ों का पालन-पोषण अच्छी तरह कैसे किया जाए।
   ग. बल्कि यीशु ने ईश्वरीय सच्चाई को सिखाने और समझाने के लिए सामान्य परिस्थिति की बात की जिससे उसके सुनने वाले परिचित थे।
2. *भेड़शाला का दृष्टांत* पलिश्तीन में भेड़ों को पालने की कुछ अनोखी विशेषताओं का प्रमाण देता है।
   क. रात के समय भेड़ों को बाड़े के अंदर रखा जाता था जिसे भेड़शाला कहा गया है, और चरवाहा भेड़शाला के द्वार में सोता था ताकि वह ध्यान रख सके कि कोई भेड़ बाहर निकलने की कोशिश तो नहीं कर रही या कहीं चोर तो भेड़शाला में घुसने की कोशिश नहीं कर रहा।
   ख. हर भेड़ का नाम रखा जाता था और चरवाहा उन्हें नाम से पहचानता था।
   ग. भेड़ अपने चरवाहे की आवाज़ की पहचानती थी।
   घ. दिन के समय चरवाहा अपनी भेड़ों को चरागाहों में ले जाता था।
3. पौलुस और पतरस ने प्रेरितों की आत्मिक सच्चाइयां बताने के लिए चरवाहों और भेड़ों के उदाहरणों का इस्तेमाल किया।
   क. पौलुस ने समझाया कि प्राचीन (या ऐल्डर्स, बहुवचन रूप में) उन मण्डलियों के झुंडों के चरवाहे हैं, जिनकी वे सेवा करते हैं (प्रेरि. 20:28)।
   ख. पतरस ने यही बात बताई और यीशु मसीह को प्रधान चरवाहा और प्राचीनों (ऐल्डरों) को उसके अधीन चरवाहे कहा (1 पत. 5:1-4)।

मुख्य भाग:

I. आयतें 1-6

क. आयत 1.

1. द्वार में से और चरवाहे से छिपकर आने के छोड़, भेड़शाला में आने का दूसरा हर प्रकार का प्रयास अवैध था।
2. यीशु मसीह चरवाहा और वह द्वार है जिसमें से उसके झुण्ड में शामिल होने के लिए जाना आवश्यक है (यूह. 10:7, 9, तुलना यूह. 14:6)।

3. हमारे चरवाहे के माध्यम को छोड़ प्रभु की भेड़शाला के सदस्य बनने का कोई और भी प्रयास अवैध है, उदाहरण उद्धार की गैरबाइबली योजनाएं, मनुष्यों की बनाई कलीसियाएं आदि।

ख. आयत 2

1. चरवाहा होने के कारण यीशु मसीह असली नबी और अगुआ है, इस कारण उसे द्वार में से प्रवेश करते हुए दिखाया गया है।
2. इसके विपरीत अन्य सभी नबियों को चोर डाकू बताया गया है (1 यूह. 4:1)।

ग. आयतें 3-4.

1. ''द्वारपाल'' ''चौकीदार'' या ''गेट वार्डन'' है (स्ट्रॉन्ग)
2. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला अयिवार्य रूप में ''द्वारपाल'' था, जिसने यीशु मसीह का परिचय चरवाहे के रूप में करना था (मत्ती 3:3; यूह. 1:29-34)।
3. जिस प्रकार से भेड़ों असली चरवाहे को जानती हैं, उसी प्रकार परमेश्वर की संतान को झूठे चरवाहों या नबियों से मूर्ख नहीं बनती।
4. हमारे चरवाहे ने अपनी भेड़ों के नाम रखे हुए हैं (यशा. 62:2; प्रेरि. 11:26) और इनमें बकरियों को आने की अनुमति नहीं है (मत्ती 25:31-46)।
5. यीशु मसीह अपनी भेड़ों को हांकने के बजाय उनकी अगुआई करने वाले चरवाहे के रूप में, लोगों को अपने पीछे चलने के लिए ज़बर्दस्ती नहीं करता बल्कि वह मनुष्यजाति को अपने पीछे चलने का निमन्त्रण देता है (मत्ती 11:28-30)।

घ. आयत 5.

1. नकली चरवाहे की आवाज़ सुनकर उसके पीछे न चलना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना चरवाहे की आवाज़ को सुनकर उसके पीछे चलना।
2. उदाहरण: तब की बात है, जब मैं बूट कैम्प में होता था। मेरा ड्रिल इंस्ट्रक्टर अपनी टुकड़ियों को आवाज़ के आदेशों से आगे मार्च करवा रहा था जबकि एक और ड्रिल इंस्ट्रक्टर आकर आवाज़ के विपरीत आदेश देने लगा। नतीजा यह हुआ कि टुकड़ियों की कतारें अलग-अलग होने पर उथल-पुथल मच गई और सिपाही एक दूसरे से भिड़ गए। अपने ड्रिल इंस्ट्रक्टर की आवाज़ को सुनना और दूसरे किसी को नज़रअंदाज़ करना सिखाया जा रहा था।
3. असली मसीहियों को झूठे मसीहियों या झूठे गुरुओं द्वारा मूर्ख नहीं बनाया जा सकता (मत्ती 24:23-27; प्रका. 1:7)।

ङ: आयत 6.

1. दृष्टांतों को आत्मिक सबकों की समझ को बढ़ाने के लिए दिया गया है।
2. जिन्होंने दृष्टांत को सुना उन्हें दृष्टांत को सुनकर आत्मिक सच्चाई नहीं समझी, परन्तु उन्होंने दृष्टांत के उदाहरण की सच्चाई को माना।
3. इसलिए जब यीशु ने दृष्टांत की प्रासंगिकता समझाई, तो दृष्टांत को सुनने वालों को आत्मिक शिक्षा की समझ भी आ गई।

II. आयतें 7-10.

क. आयत 7.

1. जिस प्रकार से चरवाहा वह द्वार है जिस पर से होकर भेड़शाला में प्रवेश करना भेड़ के लिए आवश्यक है, यीशु मसीह वह चरवाहा है जिसमें से होकर कलीसिया में प्रवेश करना आवश्यक है।
2. पहली सदी के यहूदियों को यीशु मसीह के द्वारा मसीहियत में यहूदी मत से जाना आवश्यक था।
3. आज के हर व्यक्ति को, जिसे सही और गलत में अंतर पता है, उद्धार पाने के लिए कलीसिया में से होकर जाना आवश्यक है।

ख. आयत 8.

1. अन्य द्वार यानी भविष्यद्वक्ता, मसीह और धार्मिक अगुवे झूठे हैं (प्रेरि. 4:12)।
2. चौकस भेड़ों को चरवाहे और छलियों में अंतर मालूम है।
3. कलीसिया के अस्तित्व के पहले 10 वर्षों तक, इसमें खास तौर पर धर्मी यहूदी हुआ करते थे, जो चरवाहे को पुराने नियम के नबूवती चित्रण से पहचानते थे।

ग. आयत 9.

1. यीशु मसीह उद्धार की कुंजी है, जिसे अन्य साधन या व्यक्ति के द्वारा नहीं पाया जाता।
2. उद्धार के लिए यीशु मसीह ''में'' बपतिस्मा लेना आवश्यक है (रोमि. 6:3; गला. 3:27; 2 तीमु. 2:10)।
3. ''चरागाह'' राज्य या कलीसिया की आशिषें हैं जो ''मसीह में'' मिलती हैं (इफि. 1:3)।

घ. आयत 10.

1. पहली सदी के फलस्तीन (या पलिश्तीन) में, फ़रीसी, सदूकी और यहूदी महासभा (सन्हेद्रिन) भ्रष्ट धार्मिक अगुवे थे।
2. कोई भी धार्मिक अगुआ जो आरम्भिक मसीहियत से कम है वह खतरनाक झूठा गुरु है (रोमि. 16:17-18)।
3. अनन्त जीवन का स्रोत केवल यीशु मसीह है (यूह. 6:68; 1 कुरिं. 11:1)।

III. आयतें 11-18.

क. आयत 11.

1. जैसे चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए मरने को तैयार होता है, वैसे ही यीशु मसीह ने मनुष्यजाति के लिए कलवरी के क्रूर क्रूस के ऊपर अपनी इच्छा से अपना प्राण दे दिया (1 तीमु. 2:6)।
2. हमारा चरवाहा यीशु मसीह अपनी भेड़ों का वफ़ादार है।

ख. आयतें 12-13.

1. अपना उद्धारकर्त्ता होने के लिए हम केवल यीशु मसीह पर निर्भर हो सकते हैं।
2. यीशु अपने झुण्ड (कलीसिया) को किसी विरोधी का अहेर नहीं बनने देगा।

ग. आयत 14.

1. हमारा चरवाहा, यीशु मसीह और हम जो उसका झुण्ड है, एक दूसरे को पूरी तरह से जानते हैं।
2. हमारे प्रभु की भेड़ों के नाम जीवन की पुस्तक में मिलते हैं (प्रका. 20:12-15)।

घ. आयत 15

1. स्वर्गीय पिता के साथ हमारा सम्बन्ध अपने चरवाहे यीशु के साथ है।
2. चरवाहे के लिए वफ़ादारी की अंतिम परीक्षा अपनी भेड़ों के लिए मर जाना है, जैसे यीशु मरा।

ङ. आयत 16.

1. यह डिनोमिनेशनों को नहीं कहा गया है, जैसा कि कई बार साम्प्रदायिक और भ्रमित भाई मानना चाहते हैं।
2. इसके विपरीत यीशु ने यहूदियों को बताया कि अन्यजातियों को भी भेड़शाला में मिलाए जाना था, जो कि कलीसिया के आरम्भ होने के लगभग 10 वर्षों के बाद हुआ (यशा. 62:2; प्रेरितों 10-11)।
3. यीशु मसीह ने कलीसिया में अपने आप में यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को एक बना दिया (इफि. 2:11-22)।
4. मसीह की कलीसिया एक बाड़ा या एक देह है (इफि. 4:4; 1:22-23; कुलु. 1:18)।

च. आयतें 17-18.

1. यीशु मसीह की बात उसके परमेश्वर होने को दर्शाती है।
2. हमारा प्रतिनिधिक बलिदान यानी हमारी जगह बलिदान होने के लिए यीशु मसीह में होकर परमेश्वर स्वयं पृथ्वी पर आया (यूह. 1:17; 2 कुरिं. 5:21)।

निष्कर्ष:

1. अब एक चरवाहा और एक बाड़ा है।
   - क. उस एक बाड़े में मनुष्यजाति के सब वर्ग आते हैं (अथार्त, यहूदी और अन्यजातियों, रोमि. 1:16)।
   - ख. उस एक बाड़े में मनुष्यों की बनाई हुई कलीसियाएं और उनके सदस्य नहीं आते (मत्ती 15:13)।
2. यीशु मसीह एक झुण्ड पर एक चरवाहा है।
   - क. यीशु उद्धार पाए हुए लोगों को कलीसिया या झुण्ड में मिला देता है (प्रेरि. 2:47)।
   - ख. केवल यीशु मसीह में ही लोग उद्धार पाते हैं (रोमि. 6:3; गला. 3:27)।
   - ग. यीशु मसीह के बाहर लोग खोए हुए हैं!

निमन्त्रण:

1. हर कोई जो सही और गलत में अंतर जानता है उसे अपने आप से यह पूछना आवश्यक है, ''क्या यीशु मसीह मेरे जीवन का चरवाहा है?''
2. यीशु उन लोगों का चरवाहा नहीं है जिन्होंने उसके निर्देशों को नहीं माना है (मर. 16:16)।
3. यीशु भटके हुए मसीहियों का चरवाहा नहीं है जिन्होंने अपने पापों को नहीं माना है (1 यूह. 1:9)।

दस कुंवारियों का दृष्टांत

मत्ती 25:1-13

प्रसंग: दृष्टांत की व्याख्या।

परिचय:

1. इस दृष्टांत के विस्तृत संदर्भ में मत्ती 24:36-51 भी आता है जिसमें संसार के अंत और यीशु मसीह के द्वितीय आगमन का वर्णन है।
   - क. दस कुंवारियों का दृष्टांत मत्ती 25 में बताए तीन दृष्टांतों में से एक है जो कि मत्ती 24 के पिछले भाग के आगे आता है।
   - ख. मत्ती 25 में और दो दृष्टांत *तोड़ों का दृष्टांत और बड़े न्याय का दृष्टांत हैं।*
2. दस कुंवारियों के दृष्टांत में प्राचीनकाल के विवाह का सुन्दर चित्रण है।
   - क. दु:खद अनन्तकाल के विरुद्ध चेतावनी देने के लिए जीवन के इस सुखद चित्रण का इस्तेमाल किया गया है।
   - ख. बारात में दस कुंवारियों के जाने की कल्पना करें। दुल्हन की सहेलियों की तुलना में विवाह की यह परम्परा संसार में लगभग हर जगह पाई जाती है।
   - ग. दूल्हे के दुल्हन का हाथ पकड़कर उसे अपने घर ले जाने की कल्पना करें, जहां शादी की दावत होनी है।
   - घ. दूल्हे के साथी उसके साथ हैं, और मित्र दुल्हन के साथ हैं और दूसरे लोग रास्ते में मिल जाते हैं या दूल्हे के घर में प्रतीक्षा करते हैं।
   - ङ. इस दृष्टांत में दुल्हन और दूल्हे का विवाह तभी तय हो गया होगा जब वे बच्चे थे; कई महीने या साल भर पहले उनकी मंगनी हो गई होगी, जिससे वे केवल तलाक या मृत्यु होने पर ही अलग हो सकते थे (मत्ती 1:18-19)।
   - च. शादी की दावत खास तौर पर रात को होती थी और थोड़ी देर तक चलती थी (तुलना, याकूब और लिया, उत्प. 29:21-25)।
3. यीशु के दस कुंवारियों के दृष्टांत के मूल श्रोता प्रेरित ही थे।
   - क. दृष्टांत सबसे पहले उन्हीं पर लागू होता था।
   - ख. एक अर्थ में यह दृष्टांत हर पीढ़ी के हमारे प्रभु के सब चेलों पर लागू होता है।
   - ग. दस कुंवारियों का दृष्टांत गैर-मसीहियों पर लागू नहीं होता।
4. दृष्टांत का उद्देश्य आयत 13 में मिलता है, ''इसलिए जागते रहो क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, और न उस घड़ी को।''
   - क. दृष्टांत का मुख्य शब्द ''घड़ी'' है।
   - ख. यह दृष्टांत उपदेश दिए जाने वाले समय से प्रभु की वापसी में देर होने का संकेत देता है, परन्तु यदि यीशु ने साफ़-साफ़ बता दिया होता कि वह कई सदियों तक नहीं लौटेगा, तो यह जागते रहो, और हर समय तैयार रहो के दृष्टांत के उद्देश्य के विपरीत हो जाता।
5. द्वितीय आगमन तो होना ही है, चाहे यीशु की वापसी के समय का (मनुष्यों को) पक्का पता नहीं है (मत्ती 24:36)।

क. इसका अर्थ यह हुआ कि दिन तय करने वाले लोग बहुत बुरी तरह से गलत हैं।

ख. इसलिए मसीही लोगों के लिए आवश्यक है कि वे **जागते रहें!**

मुख्य भाग:

I. व्याख्या

क. आयत 1.

1. कई बाइबलों में ''फिर'' शब्द इस दृष्टांत से को पिछले अध्याय के साथ जोड़ता है।
2. ''स्वर्ग का राज्य'' समय के अंत तथा अनन्तकाल के आरम्भ में कलीसिया/राज्य को दर्शाता है।
3. यहूदी लोग दस के अंक को पूर्णता का अंक मानते थे (उदाहरण, आराधनालय बनाने के लिए 10 यहूदी पुरुषों का होना आवश्यक था; एल्काना ने अपनी बांझ पत्नी हन्ना को बताया कि वह उसके लिए वह उसके बेटों से बढ़कर है, 1 शमू. 1:8)।
4. कुंवारियां पवित्र, अछूती और नैतिक तौर पर शुद्ध होती थीं, जो गुण परमेश्वर की संतान की विशेषता होनी चाहिए (2 कुरिं. 11:2)।
5. दस कुंवारियां उन सब को दर्शाती हैं जो सुसमाचार की आज्ञा मानते हैं।
6. मशालें विशेष तौर पर लम्बे डंडों पर रखे मिट्टी के ढके हुए बर्तन होती होंगी।
7. दृष्टांत वाला दूल्हा यीशु मसीह को दर्शाता है।

ख. आयतें 2-4

1. कुंवारियों में देखा गया एकमात्र अंतर यह था कि उनमें से कुछ समझदार थीं, और कुछ मूर्ख। उन में से किसी पर भी चरित्रहीन, कपटी आदि होने का आरोप नहीं था।
2. कुछ में समझदारी और अन्य में समझदारी की कमी का होना समझदारों द्वारा की गई तैयारी और नासमझों द्वारा तैयारी न करने के द्वारा दिखाया गया।
3. सभी कुंवारियों ने अपनी अपनी मशालों में तेल भरकर आरम्भिक तैयारी की थी, परन्तु मूर्ख कुंवारियों ने देरी की सम्भावना के लिए तैयार नहीं की थी और अपने साथ अतिरिक्त तेल नहीं लिया था।
4. सो, ''तेल'' की गई या न की गई तैयारी को दिखाते हुए, संसार के अंत और द्वितीय आगमन के लिए की गई तैयारी या तैयारी न करने को दिखाता है।

ग. आयत 5.

1. दूल्हे के आने का समय का पता नहीं था, जिस कारण वे राह देखती रहीं। राह देखना द्वितीय आगमन का राह देखने को दर्शाता है।
2. सभी कुंवारियां थक गईं और सो गईं; इस से अनजान कि दूल्हा कब आएगा, वे थक गईं और स्वाभाविक ही है कि उनकी आंख लग गई। मसीही लोगों को भी आज इसी प्रकार से काम करते रहना है जैसे कि वे आम तौर पर करते हैं, परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं है कि प्रभु कब वापस आएगा (मत्ती 24:36-39)।

घ. आयत 6.

1. ''आधी रात'' दूल्हे के अचानक आने को और आंख लग जाने को दर्शाता है।
2. यह घोषणा कि दूल्हा आ रहा है किसी कुंवारी ने नहीं की। बिल्कुल इसी प्रकार,

कलीसिया यह तय नहीं कर सकती कि प्रभु कब लौटेगा।

3. अतिरिक्त तैयारी का और अवसर नहीं था क्योंकि जिस घटना की वे प्रतीक्षा कर रही थीं वह हो रही थी।

ङ: आयतें 7–9.

1. तेल के कम होने का पता आंख खुलने पर ही चला।
2. आरम्भिक तैयारी करने के बावजूद पांच कुंवारियों ने पर्याप्त तैयारी नहीं की, विशेषकर देर हो जाने पर।
3. समझदारों के पास दूसरों को देने के लिए तेल नहीं था।
4. बेशक मूर्ख कुंवारियों की मंशा अच्छी थी, परन्तु बिना पर्याप्त तैयारी के सही अच्छी किसी काम की नहीं थी।

च. आयतें 10–13.

1. आयत 10 का मुख्य शब्द ''तैयार'' है; केवल उन्हें ही विवाह के भोज में भाग लेने की अनुमति दी गई जो तैयार थीं।
2. द्वार बंद हो गया, जिससे जो अंदर उन सब को विवाह के भोज में शामिल कर लिया गया और जो बाहर थे, उन सब को विवाह के भोज से निकाल दिया गया। (तुलना, जब परमेश्वर ने नूह के जहाज़ का द्वार बंद कर दिया, उत्प. 7:16)।
3. प्रभु ने देरी से आने वालों अर्थात मूर्ख कुंवारियों को पहचानने से इनकार कर दिया, चाहे इसका अर्थ यह है कि उसे मालूम था कि वह कौन है और पहले उसने उन्हें पहचाना था (तुलना, मत्ती 7:21–23)।
4. मूर्ख कुंवारियां निकट ही थीं, परन्तु वे बाहर थीं!
5. दृष्टांत का उद्देश्य आयत 13 से पता चलता है: यीशु मसीह के द्वितीय आगमन के लिए जागते रहो, धीरज से राह देखते रहो और तैयार रहो।

II. सबक।

क. स्वर्ग में अनन्तकाल तक रहने के इच्छुक हर व्यक्ति की पहली प्राथमिकता मसीह के द्वितीय आगमन के लिए आरम्भिक और निरन्तर निजी तैयारी होनी आवश्यक है।

ख. खोए हुए अवसरों को वापस नहीं लाया जा सकता।

ग. न्याय के समय खोए हुओं की पीड़ा परमेश्वर पर कोई दबाव नहीं डालेगी।

घ. स्वर्गीय तटों पर पहुंचने के लिए कर्मों के साथ-साथ विश्वास का होना आवश्यक है (याकू. 2:17, 20, 24, 26)।

ङ: समय हाथ से निकल जाने पर बिना तैयारी के लोगों को कोई बचा नहीं सकता; उद्धार हर व्यक्ति की अपनी ज़िम्मेदारी है।

च. समय के अंत में अच्छे नैतिक जीवन जीना अकेले स्वर्ग में जाने का रास्ता नहीं देगा।

छ. विश्वास त्याग की सम्भावना बहुत ही वास्तविक ख़तरा है (1 कुरिं. 10:12)।

ज. यीशु की वापसी के समय, द्वार बंद कर दिए जाएंगे; स्वर्ग के अंदर केवल उद्धार पाए हुए ही होंगे, जबकि अन्य सब को स्वर्ग से निकाल दिया जाएगा।

झ. उद्धार पाए हुओं में शामिल होने का दावा अपने आप में स्वर्ग के राज्य में होने की गारंटी

नहीं है (प्रेरि. 5:1-10)।

ण. परमेश्वर की संतान के लिए यह तय करना आवश्यक है कि अंत के दिन में प्रवेश करने के लिए उनकी पर्याप्त तैयारी है या नहीं (2 कुरिं. 13:5)।

निष्कर्ष:

1. अफ़सोस कि कुछ मसीही यीशु के दोबारा आने पर नाश होंगे (2 पत. 2:20-22; लूका 8:6-7, 13-14)।
2. सांसारिकता मसीहियत से ध्यान हटाती है। और परमेश्वर की संतान के कई लोगों के अनन्तकाल के नाश का कारण बनेंगी (याकू. 4:4)।
3. परमेश्वर के हर बालक के लिए पहले परमेश्वर के राज्य को ढूंढ़ते रहना आवश्यक है (मत्ती 6:33)।
4. इसलिए मसीही लोगों को भी बाइबल की रोशनी में अपनी जांच करनी आवश्यक है (1 कुरिं. 11:31)

निमन्त्रण:

1. यदि कोई स्वर्ग के फाटक के बाहर अनन्तकाल तक रहता है तो उसका यह पास होना इतना पास नहीं है।
2. भटके हुए मसीहियों के लिए मन फिराना आवश्यक है, नहीं तो अनन्तकाल तक उन्हें बाहर रहना पड़ेगा (प्रका. 2-3)।
3. यह संदेश सुसमाचार के प्रवचन के पहली बार लिखे जाने के समय के बाद से अब तक बदला नहीं है; गैर-मसीहियों लिए पापों की क्षमा के लिए मन फिराकर डुबकी लेना आवश्यक है (प्रेरि. 2:38)

दाख की बारी में मज़दूरों का दृष्टांत

मत्ती 20:1-16

प्रसंग: दाख की बारी में मज़दूरों के दृष्टांत से सबक सीखना जिसका हम इस्तेमाल कर सकते हैं।

परिचय:

1. यह दृष्टांत सीधे तौर पर प्रेरितों को पिछली दो घटनाओं को ध्यान में रखते हुए दिया गया।
   - क. पहले, धनवान, जवान, हाकिम अभी अभी उदास होकर यीशु के पास से गया था, जिसके बाद हमारे प्रभु ने यह घोषणा की थी कि किसी धनवान के लिए स्वर्ग में प्रवेश करना कठिन होगा (मत्ती 19:16-26; लूका 18:18-27)।
   - ख. दूसरा, प्रेरित पतरस ने अभी अभी दूसरे प्रेरितों और अपने आपको धनवान और उसके जैसे और लोगों से अलग बताया (मत्ती 19:27-30)।
2. यह दृष्टांत विशेष तौर पर मत्ती 19:30 और 20:16 की व्याख्या है, इसके अलावा यह सिखाता है कि अचानक की परिस्थितियां वह कसौटी नहीं हैं जिससे परमेश्वर लोगों का उद्धार करता है (रोमि. 2:11)।
   - क. दृष्टांत में सबसे पहले मज़दूरी पर रखे गए मज़दूर इसलिए विशेष मज़दूरी पाने के हक्कदार नहीं थे कि उन्होंने अधिक देर तक काम किया था।
   - ख. इसी प्रकार यहूदी लोग केवल इसलिए विशेष ईनाम के हक्कदार नहीं थे कि वे मनुष्य को परमेश्वर के प्रकाशन के संरक्षक थे।
   - ग. इसके अलावा प्रेरित अपने आप में इसलिए विशेष ईनाम के हक्कदार नहीं थे कि वे यीशु के विशेष चेलों में से थे।
3. इस दृष्टांत से कई अतिरिक्त समानताएं और सबक लिए जा सकते हैं।
   - क. गृहस्वामी यीशु मसीह को दर्शाता है।
   - ख. बाज़ार संसार (लोगों) को दर्शाता है।
   - ग. मज़दूरी पर लगाए जाने से पहले मज़दूर खोए हुए लोगों को दर्शाते हैं।
   - घ. दाख की बारी कलीसिया को दर्शाता है।
   - ङ. मज़दूरी अनन्त उद्धार को दर्शाता है।
   - च. यह राज्य के दृष्टांतों में से एक है।

मुख्य भाग:

I. मत्ती 20:1-7 पर विचार करें।

- क. गृहस्वामी बाज़ार में गया और उसने वहां मिले सब मज़दूरों को काम पर लगा दिया।
  1. बाज़ार एक खुला क्षेत्र था जिसमें दूसरे लोगों के बीच बेरोज़गार लोग थे, जो किसी के उन्हें काम पर ले जाने की राह देखते थे।
  2. यहूदी लोग दिन के घण्टों को लगभग 6 से सांय 6 के 12 भागों में बांटते थे।
  3. इसलिए यह दृष्टांत दिन के अलग-अलग घण्टों की बात करता है (यानी 6ठा घण्टा दूसरा पहर=दोपहर और 11वां घण्टा, एक घण्टा रहे=पांच बजे सांय)

ख. पहले मज़दूरी पर लगाए गए मज़दूर गृहस्वामी के साथ विशेष मज़दूरी के लिए सहमत हो गए और उन्हें दाख की बारी में भेज दिया गया।

1. गृहस्वामी उनके साथ धोखा केवल इसी सूरत में कर सकता था जो उसने उन्हें एक दिन की मज़दूरी देने के लिए ठहराया था वह न देता।
2. गृहस्वामी उनके साथ धोखा केवल एक सूरत में कर सकता था कि वह उन्हें तय की गई दिन की मज़दूरी न दे। अन्य मज़दूर जिन्हें दिन के अन्य समयों में लगाया गया था उनके साथ गृहस्वामी का विशेष मज़ूदरी देने की कोई सहमति नहीं हुई थी, परन्तु उन्हें भरोसा था कि वह उनके साथ बेईमानी नहीं करेगा।

II. मत्ती 20:8-16 पर विचार करें।

क. सभी मज़दूरों को दिन की समाप्ति पर मज़दूरी दी गई।

1. यहूदी मत में काम देने वालों के लिए अपने कर्मचारियों को हर रोज काम खत्म होने पर मज़दूरी देना आवश्यक था (व्यव. 24:15; लैव्य. 19:13)
2. पहले वाले मज़दूरों को वही मज़दूरी मिली जो दिन की मज़दूरी के लिए गृहस्वामी ने उसके साथ तय किया था।
3. बाकी के मज़दूरों को गृहस्वामी की बात पर भरोसा था कि वह ''जो भी ठीक ठीक हो वह उन्हें देगा।''
4. परन्तु पहले वाले मज़दूरों ने गृहस्वामी के विरुद्ध बड़बड़ाना शुरू कर दिया क्योंकि वह दूसरे मज़दूरों के साथ अनुग्रहकारी और दयालु था।

ख. गृहस्वामी ने अपनी कार्यवाही का बचाव अलग-अलग ढंग से किया।

1. पहले, तो उसने कहा कि उसने अपने और शिकायत करने वाले मज़दूरों के बीच हुए अनुबंध के अनुसार किया।
2. दूसरा, गृहस्वामी ने घोषणा की कि उसे इस बात की छूट है कि वह अपनी भौतिक सम्पत्ति जैसे उसे ठीक लगे वैसे उसे इस्तेमाल करे।
3. तीसरा, उसने दावा किया कि ईनाम केवल सेवा में समय की लम्बाई से तय नहीं किया जाता।

III. दृष्टांत की कुछ समानताओं और प्रासंगिकताओं पर विचार करें।

क. यीशु मसीह अपनी दाख की बारी यानी कलीसिया में काम करने के लिए मनुष्यजाति के बाज़ार में सब लोगों को बुलाता है।

1. यीशु ने मनुष्यजाति को स्वयं बुलाया है (मत्ती 11:2-30-30; प्रका. 22:17)।
2. ग्रेट कमीशन के द्वारा यीशु संसार को सुसमाचार की आज्ञा मानने के लिए बुलाता है (मत्ती 28:19-20; मर. 16:15-16; लूका 24:46-47; रोमि. 6:17; इब्रा. 5:8-9; 2 थिस्स. 1:7-9)।
3. यीशु बेकार और आलसी लोगों को काम पर नहीं लगाता यानी वह बाज़ार में काम की तालाश में हर ऐरे-गैरे को परमेश्वर की दाख की बारी में काम करने के लिए नहीं भेजता।

ख. इसके अलावा यीशु मसीह विशेष दाख की बारी में काम करने के लिए अपने मज़दूरों को बुलाता है।

1. दृष्टांत में गृहस्वामी के लिए आवश्यक नहीं था कि वह उन मज़दूरों को वेतन दे जिन्होंने किसी दूसरे गृहस्वामी की दाख की बारी में काम किया था।
2. इसी प्रकार से यीशु मसीह मानव निर्मित किसी कलीसिया में अपनी कलीसिया के बाहर काम करने के लिए लोगों को नहीं बुलाता है (मत्ती 15:13; 16:18)।
3. इसलिए यीशु हर ऐरे-गैरे को ईमान नहीं देगा चाहे वे संजीदा हो सकते हैं, कलीसिया जिसके लिए वह मरा और जिसका वह सिर है, के बजाय डिनोमिनेशनों में काम करते हैं (इफि. 3:21; मत्ती 7:13-14; प्रेरि. 20:28; कुलु. 1:18; 1 यूह. 4:1)।

ग. दृष्टांत वाले गृहस्वामी की तरह हमारा प्रभु (सुसमाचार के द्वारा) इतिहास में या लोगों के जीवनों में अलग-अलग समयों पर उन्हें बुलाता है।

1. सुसमाचार की बुलाहट हमेशा परमेश्वर के प्रकट किए गए और लिखित वचन बाइबल में से होती है।
2. परन्तु जवान, अधेड़ उम्र के और बूढ़े लोग अपने-अपने जीवनों में अलग-अलग समयों पर सुसमाचार को सुनकर उसे मानते हैं।
3. जिस प्रकार से दृष्टांत वाले मज़दूर दिन के किसी भी समय पर उन्हें मज़दूरी पर लगाए जाने के साथ ही दाख की बारे में चले गए, वैसे ही आज लोगों को कलीसिया में यीशु की सेवा करना आरम्भ कर देना चाहिए, उन्होंने चाहे जीवन में सुसमाचार को सुनकर उसकी आज्ञा जिस भी उम्र में मानी।

घ. जिस प्रकार से गृहस्वामी ने दिन की समाप्ति पर अपने मज़दूरों के साथ हिसाब किया, यीशु मसीह भी समय के अंत में अपने सेवकों के साथ हिसाब करेगा।

1. हिसाब या ईनाम पूरी तरह से सेवा में वरिष्ठता या अधिक समय तक काम करने के अनुसार नहीं होगा, चाहे परमेश्वर चाहता है कि हम जीवन भर उसकी सेवा करें।
2. अनन्त प्रतिफल, अच्छा हो या बुरा, उन तरीकों पर निर्भर होगा जिनमें कोई परमेश्वर की सेवा करता है (रोमि. 6:23, सभो. 12:13-14; मत्ती 16:27; 2 कुरिं. 5:10; प्रका. 20:11-15)।
3. एक समय आएगा जिससे आगे प्रभु की सेवा करना नामुमकिन है, इसलिए हर किसी के लिए प्रभु की सेवा अब करना आवश्यक है (इब्रा. 9:27; 2 कुरिं. 6:2)।

निष्कर्ष:

1. प्रभु कलीसिया यानी अपनी दाख की बारी में आज मज़दूरों को काम के लिए बुलाता है, परन्तु उनके लिए योग्य होना आवश्यक है।

क. उन्हें प्रभु के निर्देशों को सुनने के योग्य और तैयार होना आवश्यक है (रोमि. 10:17)

ख. उन्हें यीशु पर विश्वास लाना या उसकी आज्ञा मानना आवश्यक है (मर. 16:16; गिन. 20:7-12)।

ग. उन्हें अपने पापों से मन फिराना आवश्यक है (प्रेरि. 10:30; लूका 13:3; 2 पत. 3:9)।

घ. उन्हें यह मानना आवश्यक है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है (रोमि. 10:9-10; प्रेरि. 8:37)।

ङ. उन्हें पापों की क्षमा के लिए पानी में दफ़नाए जाना आवश्यक है (प्रेरि. 22:16; 2:38; 1 पत.

3:21; रोमि. 6:3–5; कुलु. 2:12)।

2. दाख की बारी यानी कलीसिया में आने के बाद आपने आपको उपयोगी सेवक साबित करना शामिल है (यूह. 15:1–6)।
3. यदि प्रेरितों को यीशु से इस प्रकार की ताड़ना की आवश्यकता थी, तो आज हमें भी वैसे ही ताड़ना की आवश्यकता है।

निमन्त्रण:

1. आप अपने आपको किससे अधिक मेल खाता हुआ पाते हैं, खोए हुओं से, जवान धनवान हाकिम से या प्रेरितों से जो विश्वास से यीशु की मानते थे?
2. बिना बपतिस्मा पाए विश्वासियों और भटके हुए मसीही दोनों ही प्रभु की दाख की बारी में उपयोगी मज़दूर हो सकते हैं, केवल तभी यदि वे यीशु के पास उसकी शर्तों के साथ आएं (मर. 16:16; प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

जंगली बीज का दृष्टांत

मत्ती 13:24-30, 36-43

प्रसंग: विश्वासी मसीहियों को प्रभु की कलीसिया के शत्रुओं का ध्यान रखते हुए चौकस रहने के लिए समझाना।

परिचय:

1. ''जब लोग सो रहे थे'' वाक्यांश राज्य के *जंगली बीज का दृष्टांत* में मिलता है (मत्ती 13:24-30, 36-43)।
   - क. राज्य या कलीसिया शैतान के प्रयासों से दूषित हो जाता है।
   - ख. बुरा बीज बो दिया गया था जब कोई बचाव नहीं किया गया (यानी ''जब लोग सो रहे थे'')।
   - ग. किसी ने शैतान का सामना नहीं किया (याकू. 4:))!
2. पूरे इतिहास में हमारे प्रभु की कलीसिया को बहुत नुक्सान हुआ है इसे अधिकतर मसीही यह सुनिश्चित करने के लिए कि शैतान हमला करके कलीसिया को बिगाड़ न दे अधिक चौकस रहे हैं।
   - क. विशेषकर नया नियम परमेश्वर के लोगों को सुसमाचार की कलीसिया का बचाव करने के लिए कहने वाली बातों से भरा पड़ा है।
   - ख. इसी प्रकार से पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को आत्मिक नुकसान के विरोध में चौकस रहने को कहा गया था।

मुख्य भाग:

I. प्राचीनों (ऐल्डरों) को कलीसिया के बचाव का ज़िम्मा दिया गया।

- क. प्राचीनों (ऐल्डरों) का काम सुसमाचार और सुसमाचार की कलीसिया के बचाव में अगुआई करना था।
  1. प्रेरित पौलुस ने इफिसुस के प्राचीनों (ऐल्डरों) को यही चेतावनी और ज़िम्मा दिया था (प्रेरि.20:28-31)।
  2. ऐल्डरों की कम से कम एक योग्यता कलीसिया को आत्मिक हानि से बचाना है (तीतु. 1:9-11)।
- ख. मसीह की कलीसियाएं बार-बार बर्बाद हुई थीं क्योंकि ऐल्डर सो गए थे, जबकि उन्हें जागते रहना चाहिए था।
  1. झूठे शिक्षक बहुत हैं और उनकी पहचान की जानी आवश्यक है (1 यूह. 4:1)।
  2. इसके अलावा झूठे शिक्षक कभी अपने आपको झूठे शिक्षक नहीं कहते, बल्कि वे धर्मी होने का दिखावा करते हैं जबकि वे होते नहीं (2 कुरिं. 11:13-15)।
  3. आम तौर पर झूठे शिक्षक मण्डली में ही से होते हैं (प्रेरि. 20:29-30)
- ग. नया नियम कलीसिया और इसके अगुओं को इस बात में अगुआई करता है कि कलीसिया में बुराई के साथ कैसे पेश आना है।
  1. पहले तो असली सुसमाचार को पहचाना जाए और यीशु मसीह के सुसमाचार से

थोड़े से भी बदलाव को नकार दिया जाए (गला. 1:6-9)।

2. यह पता लगाने के लिए कि जानवर की किधर हैं गले में बंधी घंटी या देखने में सुरक्षित पर खतरनाक चट्टानों से चौकसी के लिए पानी पर तैरने वाले चिह्नों की तरह झूठे शिक्षकों को पहचानना आवश्यक है (रोमि. 16:17-18)।
3. पास आने वाले झगड़ालू भाई और आत्मिक गड़बड़ को उस मंच से रोका जाना आवश्यक है जिससे यह प्रभु की कलीसिया पर विपरीत प्रभाव डालता रहता हो (तीतु. 3:10; 2 थिस्स. 3:6, 14)।

II. फिर भी हर मसीही को कलीसिया के बचाव का ज़िम्मा दिया गया है।

क. प्रचारकों को सुसमाचार के बचाव और सुसमाचार की कलीसिया के बचाव का ज़िम्मा दिया गया है (फिलि. 1:17)।

1. प्रचारकों को सुसमाचार की सारी मंशा बताना आवश्यक है (प्रेरि. 20:2))।
2. प्रचारकों को ताक़ीद के साथ कहा गया कि सुसमाचार सुनाते रहें (2 तीमु. 4:2)।
3. अफ़सोस कि प्रभु की कलीसिया के बहुत से प्रचारक खोए हुए हैं!

ख. हर मसीही के लिए सुसमाचार और सुसमाचार की कलीसिया का बचाव करना आवश्यक है।

1. मसीही लोग सुसमाचार का बचाव करने वाले दूसरों के हाथ थामकर सुसमाचार और सुसमाचार की कलीसिया का बचाव करने के लिए योगदान देते रह सकते हैं।
2. मसीही लोग परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते रहकर और इससे अपने जीवनों पर लागू करके सुसमाचार और सुसमाचार की कलीसिया के बचाव में योगदान दे सकते हैं (2 तीमु. 2:15)।

III. अंत में परमेश्वर कलीसिया में गेहूं के बीच जंगली बीज को ध्यान में रखते हुए कलीसिया को किस बात के लिए ज़िम्मेदार ठहराएगा?

क. परमेश्वर कलीसिया से उम्मीद करता है कि जब यह सही और गलत के बीच पहचान कर सकती है तो यह अपनी चौकसी करे।

1. जांच का पहला नियम यही है (मत्ती 7:20)।
2. मसीही लोगों को निर्विरोध ढंग से साथी मसीहियों को उनके पापों में बने रहने और पाप को सहन करने के लिए अपने आपको पाप के दोषी बनाने की अनुमति नहीं है (1 कुरिं. 5:6)।
3. मसीही लोगों की ज़िम्मेदारी है कि वे अपने आपको अनुशासन में रखे जब वे सही और गलत में साफ़-साफ़ फ़र्क देख सकते हैं (1 कुरिं. 5:12-13)।

ख. परन्तु जंगली बीज के दृष्टांत की तरह मसीही लोगों के बीच ऐसे पाप हैं जिनके लिए चौकसी के लिए ज़िम्मेदार विश्वासी मसीही नहीं हैं।

1. कलीसिया से उन पाप से भरे सदस्यों को अनुशासित करने की उम्मीद नहीं की जा सकती जिनके पाप सामने न आते हों (1 कुरिं. 4:5)।
2. गुप्त बातों का न्याय यीशु मसीह ही अपने सुसमाचार के अनुसार करेगा (रोमि. 2:16; 1 कुरिं. 3:13)।
3. न्याय में परमेश्वर की नज़र से कुछ भी बच नहीं पाएगा (लूका 12:2; इब्रा. 4:13)।

निष्कर्ष:

1. प्रभु की कलीसिया शैतान के हमलों के बावजूद कायम रह सकती है, यदि हम शैतान का सामना कर सकें (याकू. 4:7)।
2. प्रभु की कलीसिया शैतान के हमलों के बावजूद कायम रह सकती है यदि मसीही लोग परमेश्वर के सारे हथियार पहन लें (इफि. 6:10–1 6)।
3. प्रभु की कलीसिया शैतान द्वारा दिए गए अधिकतर परेशानी से बच सकती है यदि यह पुराने ज़माने के चौकीदार की तरह शैतान की चालों पर नज़र रखे (यहेजकेल 3:17)।

निमन्त्रण:

1. नहीं तो विश्वासी मसीही आम तौर पर सो जाते हैं और शैतान के शिकार बनने के लिए ज़िम्मेदार बन जाते हैं।
2. गैर–मसीही लोग पाप में सोए हुए हैं जिससे उन्हें मसीह के सुसमाचार के साथ जगाया जाना आवश्यक है (मर. 16:16)।
3. इसी प्रकार से भटके हुए मसीही पाप में सोए हुए हैं जिससे यदि उन्हें जगाया न जाए, तो वे नाश हो जाएंगे (रोमि. 6:23; 1 यूह. 1:9)।

बीज बोने वाले का दृष्टांत

मत्ती 13:1-23; मर. 4:1-20; लूका 8:4-15

प्रसंग: सुसमाचार सुनने वाले हर व्यक्ति को पहचानना।

परिचय:

1. यदि यह दृष्टांत सही सही उन लोगों का प्रतिशत दिखाता है जो सुसमाचार को मानते हैं (संख्या वास्तविकता से मेल खाती हुई लगती है)।
   - क. सुसमाचार को सुनने वाले 25 प्रतिशत लोग इसे तुरन्त नकार देते हैं।
   - ख. सुसमाचार को सुनने वाले 25 प्रतिशत लोग आरम्भ में इसे मान लेते हैं परन्तु जल्द ही छोड़ देते हैं।
   - ग. सुसमाचार को सुनने वाले 25 प्रतिशत लोग सुसमाचार को मान तो लेते हैं परन्तु कभी बड़े नहीं होते या उन्हें इसका लाभ नहीं मिलता।
   - घ. सुसमाचार को सुनने वाले 25 प्रतिशत लोग सुसमाचार को मानकर परमेश्वर के बड़े उपयोगी होते हैं।
   - ङ. 75 प्रतिशत या सुसमाचार को सुनने वाले 3/4 लोग सदा के लिए नाश होंगे।
   - च. सुसमाचार के द्वारा उद्धार पाए हुए 1/3 लोग कलीसिया छोड़ देते हैं।
   - छ. 50 प्रतिशत या आधे लोग जो विश्वासी होने का दावा करते हैं वे भी खोए हुए हैं।
   - ज. सुसमाचार को सुनने वाले केवल 1/4 लोग ही उद्धार पाएंगे।
2. हम में से हर किसी को दृष्टांत की मिट्टी की इन किस्मों में से एक से दिखाया गया है।
   - क. मार्ग के किनारे की मिट्टी आज हमारे साथ नहीं है क्योंकि यह नहीं आनी थी।
   - ख. पथरीली भूमि तो है पर यह अधिक देर तक नहीं रहेगी (कुछ पहले ही छोड़ चुके हैं)।
   - ग. झाड़ियों वाली भूमि है परन्तु यह किसी काम की नहीं है और इसमें कटाई नहीं होगी (कुछ पहले ही छोड़ चुके हैं)।
   - घ. अच्छी भूमि है, और यही भूमि है जो बनी रहेगी और फल देगी।
3. अफ़सोस, कि तुलनात्मक तौर पर बात करें तो कुछ ही लोगों पर अनन्तकाल के लिए उद्धार होगा, फिर भी स्वर्ग में बहुत बड़ी सेना है (मत्ती 9:13-14; प्रका. 7:9)।
4. दृष्टांत में हर भूमि में वही बीज लगाए जाने को दिखाया गया है, भूमि के अलग होने को छोड़ बीज में वही क्षमता है (लूका 8:11)।
   - क. इसलिए पिन्तेकुस्त वाले दिन पतरस के प्रचार से लगभग 3,000 लोगों को मसीही बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया था, जबकि 9,97,000 के लगभग लोग मसीही नहीं बने थे (प्रेरि. 2:37, 41)।
   - ख. स्तिफनुस के सुनने वालों के मन मार्ग के किनारे वाले हैं और इस कारण उस अवसर पर सुसमाचार के सुनने वालों ने परमेश्वर के प्रचारक का कत्ल कर दिया (प्रेरि. 7:54, 58-60)
   - ग. बीज, जो कि परमेश्वर का वचन है, दोनों जगह वही था, परन्तु भूमि अलग-अलग थी।
5. बीज बोने वाले के दृष्टांत की संक्षेप में समीक्षा करते हुए याद रखें कि सर्वश्रेष्ठ गुरु यीशु मसीह है और बीज परमेश्वर का वचन है।

क. परमेश्वर के हर बालक के लिए बोने वाला होना भी आवश्यक है (इब्रा. 5:12-14; प्रेरि. 8:4)

ख. बीज में जीवन का मूल है और यह अपनी ही किस्म के अनुसार फल देता है (उत्प. 1:11; गला. 6:7)

मुख्य भाग:

I. मार्ग के किनारे वाली भूमि, उस पर विचार करें या जिसे शैतान रख लेता है (लूका 8:5, 12)।

क. यहां पर, बीज चाहे बोया गया, परन्तु न तो यह अंकुरित हुआ और न बढ़ा।

ख. इस मन ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास नहीं किया और इसका उद्धार नहीं हुआ।

ग. शैतान परमेश्वर के वचन की जगह झूठ दे देता है (उत्प. 3:4-5; यूह. 8:44)।

घ. शैतान के झूठ आज कुछ इस तरह हैं:

1. अपनी पंसद की कलीसिया में आराधना, मसीह की कलीसिया की पसंद में आराधना करने के बजाय (मत्ती 16:18; रोमि. 16:16)।
2. एक कलीसिया दूसरी कलीसिया से अच्छी है, इसके बावजूद कि यीशु ने अपनी कलीसिया को अपने स्वयं के लहू से खरीदा (प्रेरि. 20:2))।
3. किसी का उद्धार प्रभु की कलीसिया से अलहिदा हो सकता है और वह चरागाह में पेड़ की छाया के नीचे आराधना कर सकता है, आदि (इब्रा. 10:25-31)।

ङ शैतान पुरुषों, स्त्रियों, लड़कों और लड़कियों के मनों में से परमेश्वर के वचन को छीनने के लिए सुसमाचारीय अध्ययन, बाइबल क्लास, किसी सभा या किसी भी अन्य अवसर को हाथ से नहीं जाने देता (1 पत. 5:8)।

च. शैतान के पास हमेशा कोई बेहतर विचार होता है, या वह ऐसा होने का दावा करता है (इब्रा. 11:25)

II. पथरीली भूमि या मन पर विचार करें जो परीक्षाओं में दब जाता है (लूका 8:6, 13)।

क. बीज बो दिया गया और वह तुरन्त बढ़ने लगता है पर यह सूख जाता है क्योंकि इसमें जड़ नहीं है।

ख. इस प्रकार के मन ने विश्वास किया और उसका उद्धार हो गया, परन्तु वह परीक्षाओं के द्वारा दूर हो गया कष्ट या सताव या कलेश, तुलना मत्ती और मर.)।

ग. शैतान बेदीनी (अर्थात विश्वास त्याग) में योगदान देता है (1 पत. 5:8)।

घ. बेदीनी का परिणाम खोए होने से भी बुरा बताया जाता है (2 पत. 2:20-22)।

ङ: बेदीनी से बचने के लिए परमेश्वर के बल के लिए हर प्रकार की बुराई से बचना और अपने जीवन को जीवित बलिदान के रूप में प्रवेश करना आवश्यक है (1 थिस्स. 5:22; रोमि. 12:1-2)

च. परमश्वेर के बालक को मसीह विश्वास में जड़ पकड़कर मज़बूत होना आवश्यक है (कुलु. 2:6-7)

छ. शैतान ने पहले दम्पत्ति को और यहूदा को खींच लिया; उसने अय्यूब को चाहा और वह आपको और मुझे भी चाहता है।

ज. शैतान कभी मण्डली में जाना नहीं छोड़ता, परन्तु उसके बहुत से चेले छोड़ देते हैं।

झ. याद रखो कि असली बेल की सूखी हुई टहनियों को इकट्ठे करके आग में डाल दिया जाता है (यूह. 15:6)

III. झाड़ियों वाली भूमि या उस मन पर विचार करो जो चिंताओं, धन और जीवन के सुख विलास में फंस जाता है (लूका 8:7, 14)।

क. बी बोया जाता है और उगता है, परन्तु बड़ा नहीं होता।

ख. ऐसे मन ने विश्वास किया और उसका उद्धार हुआ, परन्तु यह बेकार सेवक का मन है।

ग. बेकार सेवकों को निकाल दिया जाएगा (मत्ती 25:30)।

घ. असली बेल की बेकार टहनियों को काट दिया जाएगा (यूह. 15:2)।

ङ परन्तु परमेश्वर का वचन हमारे जीवनों में मसीहियत को सिद्ध कर सकता है यदि हम इसे करने दें (2 तीमु. 3:16-17; लूका 8:11)।

च. मसीही लोगों को पहले आत्मिक कामों की खोज करने और संसार को पहल न देने में चौकस रहना आवश्यक है, ताकि कहीं ऐसा न हो कि संसार की चिंताएं हम पर हावी हो जाएं (मत्ती 6:33; याकू. 4:4)।

छ. आत्मिक मूल्यों पर आर्थिक मामलों को बढ़ावा देने की चिंता मसीही लोगों को बर्बाद कर देती है (1 तीमु. 6:6-12; मत्ती 6:24)।

IV. अच्छी भूमि या उस मन पर विचार करें जो विश्वास में सुरक्षित है (लूका 8:8, 15)।

क. बीज बोया जाता है और बड़ा होने के लिए बढ़ता है।

ख. इस प्रकार कि मन ने विश्वास किया, उसका उद्धार हुआ और वह बढ़ता रहता है, बहुत सा आत्मिक फल लाता है।

ग. तुलनात्मक तौर पर मनों का केवल यह छोटा सा समूह ही स्वर्ग में जा पाएगा (मत्ती 7:21-23)

घ. सुसमाचार के पहले लिखित प्रवचन में लगभग 10,00,000 लोगों में से 3,000 के लगभग लोगों ने ही माना।

ङ: यीशु ने केवल ऐसे मन वाली भूमि को ही ''भले और उत्तम मन'' कहा (लूका 8:15)।

निष्कर्ष:

1. बीज बोने वाले के दृष्टांत का लूका का विवरण सुसमाचार के तीन विवरणों में से सबसे छोटा है
2. इस दृष्टांत के मत्ती और मरकुस के विवरणों में कुछ अतिरिक्त जानकारी है।
3. यह याद रखना आवश्यक है कि हम में से हर कोई चारों भूमियों में से एक को दर्शाता है, परन्तु वह कौन सी है ?
4. शैतान ने चार में से तीन लोगों को जिन्हें सुसमाचार सुनाया गया है बदल दिया है या बदल देगा।
5. अच्छी भूमि वाला मन चाहे उद्धार तक टिका रहता है, परन्तु इसे झाड़ियों वाली भूमि वाले मनों तथा विश्वास के बाहर के लोगों द्वारा सताया जाता है।

निमन्त्रण:

1. हमें यह समझना होगा कि हम खोए हुए हैं यदि हम मार्ग के किनारे की भूमि, पथरीली भूमि या झाड़ियों वाली भूमि हैं।
2. बपतिस्मा-रहित विश्वासी यीशु के वचनों को मानकर साबित कर सकता है कि उसका ''भला और उत्तम मन'' है (मर. 16:16)।
3. मन फिराकर और क्षमा मांगकर परमेश्वर का भटका हुआ बालक साबित कर सकता है कि उसमें ''भला और उत्तम मन'' है (प्रेरि. 8:22; 1 यूह. 1:9)।

तोड़ों का दृष्टांत

मत्ती 25:14-30

प्रसंग: यह दिखाना कि परमेश्वर के बालक प्रभु के प्रति वफ़ादारी दिखाएं और काम करें, कोई स्वर्ग के अनन्त राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

परिचय:

1. तोड़ों का दृष्टांत पहली सदी के व्यापारी के हवाले देकर जो अपना कारोबार अपने सेवकों या कर्मचारियों को सौंप देता है, स्वर्ग की तैयारी से जुड़ी ईश्वरीय सच्चाई को दिखाता है।
2. यह दृष्टांत स्वर्ग के अनन्त राज्य में प्रवेश करने के बारे में हैं।
   - क. प्रदेश जाने वाला व्यक्ति यीशु मसीह है (यूह. 14:1-3)।
   - ख. दास या भण्डारी परमेश्वर के बालक हैं।
   - ग. दृष्टांत में तोड़े चांदी या सोने की मात्रा थे और यीशु मसीह की सेवा करने के लिए मसीही लोगों की योग्यताओं या अवसरों को दर्शाते हैं।
   - घ. पहली सदी में चांदी का हर तोड़ा लगभग 1642.50 डॉलर का और सेने का हर तोड़ा लगभग 26,280 डॉलर का होता था।

मुख्य प्रश्न:

I. तोड़े भण्डारियों के बीच अलग-अलग बांटे गए थे।

- क. हर भण्डारी को अपने मालिक से कुछ न कुछ मिला था।
  1. कोई भी दास ऐसा नहीं रहा था जिसे कुछ न मिला हो या उसे कोई ज़िम्मेदारी न दी गई हो।
  2. कोई भी ऐसा दास नहीं था जिसे तोड़ा न मिला हो।
- ख. हर भण्डारी को उसकी योग्यता के अनुसार तोड़े दिए गए थे।
  1. मालिक को अपने दासों से उनकी योग्यता से बढ़कर करने की उम्मीद नहीं थी।
  2. परन्तु मालिक को हर दास से यह उम्मीद अवश्य थी कि वे जो कर सकते हैं वे करें।

II. तोड़ों का इस्तेमाल भण्डारियों द्वारा अलग-अलग किया गया।

- क. दो भण्डारियों ने उन्हें सौंपा गया धन निवेश में लगा दिया।
  1. इन दोनों ने अपने-अपने प्रयासों से 100 प्रतिशत लाभ कमाया।
  2. भण्डारियों का 100 प्रतिशत जिन्होंने भण्डारियों के रूप में काम किया उससे लाभ हुआ।
- ख. एक भण्डारी ने अपने मालिक का पैसा भूमि में गड़हा भरने के लिए इस्तेमाल किया।
  1. उसने इसे निवेश नहीं किया।
  2. उसने अपने मालिक के लिए कुछ नहीं कमाया और वह नाकाम भण्डारीपन का उदाहरण था।

III. भण्डारियों का मालिक वापस आया उसने अपने भण्डारियों को उनकी वफ़ादारी के अनुसार ईनाम दिया।

क. ''शाबाश'' और मालिक का मन खुश करने वाला ईनाम वफ़ादार भण्डारियों के लिए था।
   1. उन्होंने अपने आपको वफ़ादार और ईमानदार भण्डारी साबित कर दिया था।
   2. उन्होंने ऐसे भण्डारियों के रूप में काम किया था जैसे उन्हें करना चाहिए था।

ख. बेईमान भण्डारी को दण्ड दिया गया।
   1. मालिक को यह उम्मीद करने का हक था कि उसके भण्डारी ईमानदारी से उसकी सेवा करें।
   2. बेईमान भण्डारी ने भण्डारीपन करने से इनकार कर दिया था।
   3. ''शाबाश'' के बजाय उसे ''दुष्ट और आलसी दास'' कहा गया।
   4. इस आदमी ने भण्डारी के रूप में अपना फर्ज बिल्कुल नहीं निभाया था।

IV. तोड़ों के इस दृष्टांत को हम अपने ऊपर कैसे लागू कर सकते हैं?

क. यीशु का कोई बेकार दास स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा (मत्ती 25:29-30)।
   1. बेकार या फल-रहित मसीहियों को स्वर्ग में प्रवेश की अनुमति नहीं होगी (यूह. 15:1-6; मत्ती 7:19)।
   2. केवल ईमानदार या फलदायक मसीहियों को ही स्वर्ग में प्रवेश की अनुमति होगी।

ख. हर मसीही में वह क्षमता और योग्यता है और वे अवसर हैं जो दृष्टांत में ''तोड़ों'' के द्वारा दर्शाए गए हैं।
   1. यीशु मसीह मसीही लोगों से क्षमता को बढ़ाने, उस योग्यता का इस्तेमाल और अवसरों का लाभ उठाने की उम्मीद करता है।
   2. यीशु हमें ''धन्य'' या शाबाश केवल तभी कहेगा।
   3. जहां तक परमेश्वर की बात है यीशु मसीह की सेवा करने की कोशिश करने वाला कोई भी व्यक्ति नाकाम नहीं होगा (1 कुरिं. 3:6)।

ग. मसीही लोग सेवा के यीशु मसीह के बनते अधिकार को छीन लेते हैं जब वे सरगर्मी से उसकी सेवा नहीं करते।
   1. असली मसीहियत निष्क्रिय धर्म नहीं है!
   2. जैसे कर्मचारियों का उनका काम देने वाला निकाल देता है जब वे कोई काम नहीं करते। यीशु मसीह यीशु मसीही लोगों को भी जो उसके लिए कभी काम नहीं करते अनन्त आग में भेज देगा।
   3. मसीही व्यक्ति का विश्वास जीवित और सरगर्म होना आवश्यक है (याकू. 2:14-26)।

घ. यीशु मसीह के अच्छे भण्डारियों के रूप में हमें इन तोड़ों का इस्तेमाल करना आवश्यक है?
   1. पहले तो, हर कोई एक ही काम नहीं कर सकता, परन्तु हर कोई कुछ न कुछ कर सकता है (1 कुरिं. 12:12-27)।
   2. समृद्धि मसीहियों की ज़िम्मेदारी है कि वे अपनी समृद्धि का कुछ भाग इस्तेमाल करें।
   3. स्वस्थ मसीहियों की ज़िम्मेदारी है कि वे किसी न किसी रूप में यीशु मसीह की सेवा के लिए अपनी स्वस्थ देहों का इस्तेमाल करें।
   4. मसीही लोगों में ऐसी योग्यताएं हैं जो विश्वोष तौर पर उन्हें सार्वजनिक रूप में या अकेले में दूसरों को सुसमाचार बताने के योग्य बनाती हैं, उनका इस्तेमाल होना

आवश्यक है।

5. हर मसीही जिसे किसी न किसी प्रकार का कोई अवसर या योग्यता मिली हो उसे उसी के अनुसार यीशु मसीह की सेवा करना आवश्यक है।
6. कोई मसीही ऐसा नहीं है जो ''बिना तोड़े'' के हो!

निष्कर्षः

1. यह दृष्टांत मुख्य रूप में परमेश्वर के बालकों के लिए है।
2. दृष्टांत वाले तोड़े उनके इस्तेमाल या इस्तेमाल न किए जाने के अनुसार घटे पड़े हैं भण्डारियों के लिए आवश्यक था कि या तो इसे इस्तेमाल करें या खो दें!
3. दृष्टांत वाले भण्डारियों की तरह हर किसी को मसीह के न्याय के सिंहासन के सामने हिसाब देना होगा (2 कुरिं. 5:10; इब्रा. 9:27)।
4. कइयों को ईनाम दिया जाएगा (2 तीमु. 4:8)।
5. कइयों को दण्ड मिलेगा (प्रका. 20:15)।

निमन्त्रणः

1. हर कोई इस आधार पर कि वह इस जीवन में सुसमाचार का किस प्रकार का भण्डारी रहा, अनन्तकाल के लिए निजी तौर पर ज़िम्मेदार होगा।
2. इससे पहले कि कोई अच्छा भण्डारी बनने, उसे पहले परमेश्वर का बालक बनना आवश्यक है (प्रेरि. 2:38)।
3. भटके हुए मसीहियों के लिए भी अच्छे भण्डारी बनने से पहले मन फिराकर परमेश्वर अंगीकार करना आवश्यक है (प्रेरि. 8:22)।

विवाह के भोज का दृष्टांत

मत्ती 22:1-14

प्रसंग: उस तैयारी के बारे में बताना जिससे परमेश्वर के बालकों को अनन्त स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए अपने आपको तैयार करना आवश्यक है।

परिचय:

1. *विवाह का दृष्टांत* बड़ा स्पष्ट है ताकि उस आत्मिक सब को जो यीशु ने दिया देखना कठिन न हो कि
   - क. विवाह का भोज स्वर्ग के राज्य को दर्शाता है।
   - ख. दृष्टांत में राजा परमेश्वर पिता को दर्शाता है।
   - ग. दृष्टांत में पुत्र यीशु मसीह अर्थात परमेश्वर के पुत्र को दर्शाता है।
   - घ. पहले बुलाए गए मेहमान यहूदियों को दर्शाते हैं, जिन्हें यहूदी धर्म के तहत परमेश्वर के वचन के रक्षकों के रूप में सदियों तक परमेश्वर के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध का आनन्द मिला था।
   - ङ: अपमानित किए गए और मार डाले गए सेवक सदियों तक परमेश्वर के नबियों (जिसमें यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला भी है) को दर्शाता है, जिन्हें परमेश्वर की विद्रोही प्रजा ने अपमानित करके मार डाला।
   - च. दूसरा निमन्त्रण ग्रेट कमीशन को दर्शाता है, जिसमें लोगों का वह समूह (यानी अन्यजाति) था जो पहले निमन्त्रण में शामिल नहीं था।
   - छ. विवाह में बिना तैयारी वाले अतिथि का निकाला जाना न्याय के समय में कलीसिया में से परमेश्वर के उन बालकों के निकाले जाने को दर्शाता है जो तैयार नहीं हैं।
2. *विवाह के भोज का दृष्टांत* और बड़े भोज का दृष्टांत दोनों में एक ही आत्मिक सबक है (लूका 14:15-24)
   - क. बड़े भोज के दृष्टांत को कई बार बहानों का दृष्टांत कहा जाता है।
   - ख. *पहला बहाना* यह था कि किसी ने खेत मोल लिया है और उसका मूल्यांकन करने के लिए उसे बाहर जाना पड़ा, परन्तु आदर्श रूप में लोग खेत को खरीदने से पहले उसका मूल्यांकन करते हैं।
   - ग. *दूसरा बहाना* था कि किसी ने पांच जोड़ी बैल मोल लिए हैं और उसे उन्हें परखना आवश्यक था, परन्तु आदर्श रूप में लोग बिना देखे पशु नहीं खरीदते।
   - घ. *तीसरा बहाना* था कि किसी ने पत्नी ब्याही थी और उसके पास आने का कोई अधिकार नहीं था, परन्तु खास तौर पर प्राचीनकाल के लोग आज भी वही करते हैं जो वे करना चाहते हैं।
   - ङ: यह तो ऐसा ही कहना था कि वह इसलिए आ नहीं सकता, क्योंकि उसकी टांग में हड्डी है।
   - च. उचित कारण और बहाना बनाने में अंतर होता है।
   - छ. यह दृष्टांत दिखाता है कि सुसमाचार के निमन्त्रण को मनुष्यजाति के द्वारा आमतौर पर ठुकरा दिया जाता है।
   - ज. दोनों ही दृष्टांतों में, दूसरे निमन्त्रण में अन्यजातियों को परमेश्वर की संतान बनने का परमेश्वर का निमन्त्रण दिखाया गया।

3. विवाह के भोज वाले दृष्टांत की ओर पीछे को ध्यान करने पर हमें पता चलता है कि विवाह का भोज मध्यपूर्व में प्राचीनकाल के लोगों की परम्परा थी।
   क. अतिथियों को आम तौर पर विवाह के भोज से पहले ही निमन्त्रण भेज दिया जाता और भोज के समय में आना याद दिलाया जाता था।
   ख. यहूदियों को चाहे आत्मिक निमन्त्रण दिया गया था और विवाह के भोज की तरह ही इसके बाद उन्हें फिर बुलाया गया, परन्तु उन्होंने परमेश्वर के निमन्त्रण को ठुकरा दिया।
   ग. दृष्टांत का उद्देश्य यहूदियों की इस गलत धारणा को दुरुस्त करना था कि वे यहूदी होने के कारण स्वर्ग के राज्य के पहले ही सदस्य बन चुके हैं (मत्ती 21:42-46; 3:7-10)।
   घ. यहूदी लोग गलती से स्वर्ग के आत्मिक राज्य के बजाय सुलैमान के राज्य के साथ मिलाते हुए सांसारिक राज्य की उम्मीद करते हैं।
   ङ. कठोर चित यहूदियों लिए यह दृष्टांत किसी काम का नहीं है परन्तु यह उन यहूदियों और अन्यजातियों के लिए काम का होना था, जिनके मन अच्छे थे।

मुख्य भागः

I. मत्ती 22:2-3 किसी राजा के अपने पुत्र के लिए विवाह का भोज देने की बात करता है।

क. विवाह का भोज स्वर्ग के राज्य को दर्शाता है (आयत 2)।
   1. स्वर्ग का राज्य पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रचार का विषय है (मत्ती 3:1-3)।
   2. खास तौर पर विवाह का भोज परमेश्वर के पुत्र, मेमने के आत्मिक विवाह और कलीसिया अर्थात मसीह की बेदाग दुल्हन को दर्शाता है (प्रका. 21:2; 22:17)।
   3. कलीसिया, ''स्वर्गीय यरूशलेम'' (इब्रा. 12:22-23)।

ख. पहले बुलाए गए लोग यहूदियों को दर्शाते हैं (आयत 3)।
   1. पुराने नियम के संरक्षकों के रूप में, कलीसिया के लोग बनने और स्वर्ग से अनन्त निवास में एक दिन प्रवेश करने की उम्मीद रखने के लिए परमेश्वर का पहला निमन्त्रण यहूदियों को मिला (रोमि. 1:16; प्रेरि. 13:46)।
   2. सदूकियों और बहुत से याजकों, खास तौर पर फ़रीसियों ने सुसमाचार के निमन्त्रण को स्वीकार नहीं करना था।
   3. अधिकतर यहूदियों ने पहली सदी में स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने से इनकार कर दिया, और तुलनात्मक रूप में आज भी बहुत कम यहूदी सुसमाचार की आज्ञा मानते हैं (रोमि. 10:1-3)।

II. मत्ती 22:4-7 पहले बुलाए गए अतिथियों को न केवल निमन्त्रण का तिरस्कार करके बल्कि राजा के दूतों को गाली गलौच करके उन्हें मार डालते हुए दिखाया है।

क. यहूदियों को बार-बार स्वर्ग के राज्य में निमन्त्रण दिया गया (1.4)।
   1. पुराने नियम के नबियों, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, बारह प्रेरितों, 70 चेलों और यीशु मसीह ने यहूदियों को परमेश्वर के राज्य में बुलाया (मत्ती 10:5-7; लूका 10:1-9; मत्ती 4:17)।
   2. अपने सेवकों के द्वारा परमेश्वर ने भोज की अच्छी तैयारी की और सब कुछ तैयार था।

3. मनुष्य के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश के सम्बन्ध में परमेश्वर ने अपने हिस्से का काम कर दिया है!
4. स्वर्ग के राज्य में प्रवेश के सम्बन्ध में अब मनुष्य ने ही जो कुछ भी करना है वह करना है।

ख. यहूदी बेपरवाह थे, परन्तु परमेश्वर के निमन्त्रण में वे बेपरवाह ही नहीं, इससे भी बढ़कर थे (आयतें 5-6)।
1. यहूदियों ने परमेश्वर के निमन्त्रण की परवाह नहीं की।
2. यहूदियों ने परमेश्वर के दूतों को नुकसान पहुंचाकर या उनकी हत्या करके राज्य में परमेश्वर के निमन्त्रण को अपने ठुकराए जाने पर ज़ोर दिया।
3. इसी प्रकार से आज संसार परमेश्वर के निमन्त्रण के प्रति केवल बेपरवाह ही नहीं है बल्कि वह परमेश्वर के सेवकों को मार डालता है।

ग. परमेश्वर लाचार नहीं है और वह उन लोगों को या तो उसके निमन्त्रण को ठुकराते या उसके गुणों को अपाहिज बना देते या मार डालते हैं, कम बदला नहीं लेना (आयत 7)।
1. परमेश्वर हर किसी के मन को जानता है (रोमि. 2:16; 1 कुरिं. 4:5)।
2. न्याय के समय परमेश्वर अधर्म और धर्म के बीच फ़र्क करेगा (सभो. 12:13-14; 2 कुरिं. 5:10; प्रका. 20:12)।
3. सब अधर्मियों को शैतान के नरक में भेज दिया जाएगा (मत्ती 25:46; प्रका. 20:15; 21:8)

III. दृष्टांत वाले राजा ने विवाह का निमन्त्रण हर किसी को दे दिया (आयतें 8-10)।

क. अतिथियों की एक और सूची बनाई गई जिसमें विवाह में हर किसी को भाग लेने की अनुमति दी गई।
1. इसे ग्रेट कमीशन से मिलाया जा सकता है (मर. 16:15-16)।
2. इस निमन्त्रण को सबसे पहले देने वाले मसीह के प्रेरित थे (प्रेरि. 1:8)।
3. यहूदियों ने यह दिखाया कि वे नालायक हैं, इसलिए निमन्त्रण अन्यजातियों को दे दिया गया (प्रेरि. 13:46; 2:39)।

ख. दूसरा निमन्त्रण आनन्द से मान लिया गया।
1. कुल मिलाकर अन्यजाति लोग मसीह के सुसमाचार को यहूदियों से बढ़कर मानने वाले रहे हैं (प्रेरि. 13:46-49)।
2. जिस कारण अन्यजातियों को स्वर्ग के राज्य में साटा गया (कलम लगा दी गई) (रोमि. 11:17-24)।
3. अब यहूदियों को एक समान या सारी मनुष्यजाति को परमेश्वर का निमन्त्रण दिया गया है (रोमि. 1:16)।
4. जाति, रंग या राष्ट्रीयता चाहे जो भी हो, ''जो चाहे'' वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकता है (प्रका. 22:17)।

IV. मत्ती 22:11-14 किसी के भी जो आत्मिक रूप में स्वर्ग के अनन्तकालिक राज्य में प्रवेश करने के लिए तैयार नहीं है न्याय के समय कलीसिया में से निकाले जाने को दर्शाता है।

क. स्वर्ग के राज्य को मनुष्य की अपनी तैयारी के बिना पाया नहीं जा सकता (लूका 1:17)।

1. स्वर्ग तैयार लोगों के लिए तैयार की गई जगह है (यूह. 14:1-3)।
2. जिन्होंने यीशु मसीह के समाचार को कभी नहीं माना था या नहीं मानते हैं उनका स्वागत अनन्तकाल में न्याय की आग के साथ होगा (2 थिस्स. 1:7-9)।
3. ''रोना और दांत पीसना'' नरक की दर्दनाक हालत को दर्शाता है जिसमें आज्ञा न मानने वालों को अनन्तकाल के लिए डाला जाएगा (आयत 13; मत्ती 8:12; 24:51; 25:30; लूका 13:28)।
4. तुलनात्मक रूप में स्वर्ग के अनन्तकालिक राज्य में बहुत कम लोग प्रवेश करेंगे (आयत 14; मत्ती 7:13-14; 20:16; लूका 13:23-24)।

ख. परमेश्वर पापी मनुष्य के साथ सदा झगड़ता नहीं रहेगा।

1. भविष्य में किसी तरह परमेश्वर का धीरज जवाब दे देगा (2 पतरस 3:9-10)।
2. पहले मनुष्य के साथ परमेश्वर का धीरज नूह के समय के विश्वव्यापी प्रलय से पहले जवाब दिया था (उत्पत्ति 6:3)।

निष्कर्ष:

1. यहूदी लोग जिन्होंने परमेश्वर के निमन्त्रण को ठुकराकर परमेश्वर के पुत्र को मार डाला था उन्हें दोहरा दण्ड देना था।
   - क. बेशक वे यीशु की मृत्यु के दोषी थे (प्रेरि. 2:36-38)।
   - ख. इसके अलावा, अपने ईश्वरीय प्रबन्ध के द्वारा परमेश्वर ने यरूशलेम नगर को नष्ट करवा दिया (मत्ती 23:37-38; 24:1-35)।
2. सारी मनुष्यजाति सुसमाचार को मानने के लिए जवाबदेह है और उसे इसके लाभ आज्ञा मानने के द्वारा होते हैं (इब्रा. 5:8-9)।
3. न्याय के समय उन सब लोगों के पास जो तैयार नहीं हैं या खोए हुए हैं कोई बहाना नहीं होगा।
   - क. सारी मनुष्यजाति (आनन्द से या न चाहते हुए) परमेश्वर के सिंहासन के सामने झुकना पड़ेगा (यशा. 45:23; रोमि. 14:11)।
   - ख. कुछ लोग अपने अनन्तकालिक विषय को बदलवाने की बेकार कोशिश करते हुए बहस करेंगे (मत्ती 7:21-23)।
   - ग. और लोग परमेश्वर से छिपने की कोशिश करेंगे, परन्तु सब बेकार होगा (प्रका. 6:16)।
   - घ. दस कुंवारियों का दृष्टांत न्याय के समय लोगों के बिना तैयारी के परमेश्वर से मिलने की त्रासदी को दिखाता है (मत्ती 25:1-13; आमोस 4:12)।

निमन्त्रण:

1. आज भी कलीसिया का सदस्य बनना अनन्तकालिक राज्य में प्रवेश करने की ठोस रीस दिलाता है। या एक दिन स्वर्ग के निवासी होने की उम्मीद लाता है।
2. कोई भी जो थोड़ा बहुत गणित को समझता हो वह आसानी से समझ सकता है कि परमेश्वर का बालक कैसे बना जा सकता है जिससे यीशु उसे कलीसिया में मिला ले (मर. 16:16; प्रेरितों 2:38, 41, 47)।
3. हर पाठक पापों की क्षमा पाने के पतरस द्वारा भटके हुए मसीहियों को दिए निर्देशों को आसानी से समझ सकता है (प्रेरि. 8:22)।

दाखलता और डालियों का दृष्टांत

यूहन्ना 15:1-15

प्रसंग: व्याख्या।

परिचय:

1. यूहन्ना 15:1-8 नये नियम के उन कई संदर्भों में से एक है जिनमें फल लाने के मसीहियत के ईमानदारी से काम करने की तुलना की गई है।
2. पहली सदी में फलस्तीन (या पलिश्तीन) में रहने वाले लोग दाख की बारी से परिचित थे और आज के लोगों के लिए भी इसे समझना काफ़ी आसान है।
3. प्रसिद्ध विचार के विपरीत हम देखेंगे कि यूहन्ना 15:1- 8 अलग अलग डिनोमिनेशनों के लिए नहीं बल्कि निजी लोगों के लिए है।

मुख्य भाग:

I. आयतें 1-2 में उदाहरण और आत्मिक सच्चाई का परिचय मिलता है।

क. आयत 1 में यीशु ने घोषणा की कि ''सच्ची दाखलता मैं हूं।''

1. उसने अपने आपको दाख के साथ मिलाया जो कि दाख की बारी में मिलती थी, यह दाखलता डालियों के लिए जीवन का स्रोत है (यूह. 14:6)।
2. यीशु ने अपने आपको नकली दाखलता के विपरीत असली दाखलता से मिलाया (यूह. 4:1)
3. असली दाखलता का होना सुझाव देता है कि नकली दाखलता भी होती है (मत्ती 24:23-24)
4. कोई भी, चाहे कितनी भी ईमानदारी से क्यों न हो, नकली दाखलता के पीछे चलकर उस अनन्त लक्ष्य को खो देगा (मत्ती 7: 21-23)।
5. नकली दाखलताएं आदि जड़ से उखाड़ दी जाएंगी (मत्ती 15:13)।

ख. आयत 1 में यीशु ने घोषणा की कि स्वर्गीय पिता किसान है।

1. यीशु पिता को दाख की बारी से देखभाल करने वाले किसान के रूप में दिखाता है।
2. किसान या माली की ज़िम्मेदारी दाखलता और टहनियों या डालियों की देखभाल करना होता है।
3. किसान के पास यह अधिकार या शक्ति होती है कि वह उस फसल को जो उसके ज़िम्मे है पालन-पोषण करे या उसमें हल चलाए।
4. फसल के लिए किसान के खेत में हल चलाने के अधिकार से होने से इनकार करने या उसका विरोध करना बेतुका होगा।

ग. आयत 2 में ''जो डाली मुझ में है'' वाक्यांश मिलता है।

1. ''मुझ में है'' का अर्थ यीशु मसीह में होना है (रोमियों 6: 3; गलतियों 3:27) है।
2. डिनोमिनेशनों में यह बताया जाता है कि डालियां डिनोमिनेशनों को कहा गया है, परन्तु संदर्भ से पता चलता है कि डालियां निजी लोगों को कहा गया है (यूह. 15:5-6)।

घ. आयत 2 में यह वाक्यांश भी है, जो डाली ''नहीं फलती, उसे वह काट डालता है।''

1. साफ़ है कि मसीहियत काम करते रहने वाला धर्म है (याकूब 4:17; मत्ती 7:21)!

2. तोड़ों के दृष्टांत में यीशु मसीह ने फल न देने वाले सेवक को दुष्ट, आलसी और निकम्मा कहा था (मत्ती 25:26, 30)।
3. पहले, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने फ़रीसियों और सदूकियों को फल न लाने वाले बताया था (मत्ती 3:7-8)।
4. अच्छे किसान की दाख की बारी में, सूखी, फल-रहित टहनियां नहीं मिलेंगी, और फल-रहित मसीही भी स्वर्ग के राज्य में नहीं मिलेंगे।

ङ आयत 2 में यह वाक्यांश है, ''जो फलती है उसे वह और छांटता है ताकि और फले।''

1. किसान या माली फल देने वाली डालियों को छांटता है ताकि वह और फल दें।
2. यहां पर किसान जो कि परमेश्वर है, को फल देने वाली डालियों पर भी अधिकार है कि वह उन पर काम करें।
3. इसलिए मसीह अपने जीवनों में परमेश्वर की दिलचस्पी पर नाराज़ नहीं होने चाहिएं।
4. फल देने वाले होना ही काफ़ी नहीं है बल्कि परमेश्वर के बालक के लिए परमेश्वर को भाते रहने के लिए उसके लिए फल देते रहना आवश्यक है।
5. जब कोई फल देने की कोशिश करना बंद कर देता है तो वह फलहीन हो जाता है और उसे नष्ट किया जाना आवश्यक है।
6. नये नियम के कई वचन वफ़ादारी बने रहने की आवश्यकता जोर देते हैं (प्रका.2:10; 1 कुरिं. 15:58; तीतु. 2:14)।

II. आयत 3 सच्ची दाखलता की डाली होने की मुख्य बात के रूप में शब्द दिखाती है।

क. आयत 3 में वाक्यांश है, ''तुम शुद्ध हो।''

1. यहां ''शुद्ध'' में उद्धार पाए होने का अर्थ है, न कि दूषित होने, या आत्मिक रूप में अशुद्ध या गंदा होने का।
2. मसीही लोग शुद्ध क्यों थे क्योंकि उन्हें नहलाया गया (1 कुरिं. 6:11; प्रेरि. 22:16; प्रका. 1:5; तीतु. 3: 5)।

ख. आयत 3 में इस वाक्यांश को देखें, ''उस वचन के कारण जो मैंने तुम से कहा है।''

1. यीशु मसीह के वचन में आत्मिक शुद्धता लाने की शक्ति है (यूह. 8:32: 17:17: इफि. 5:26)
2. परमेश्वर का वचन परमेश्वर के बालक का एकमात्र हथियार है जिसके साथ वह पाप की लालसाओं का सामना करता है (इब्रा. 4:12; इफि. 6:10-17; मत्ती 4: 1-11)
3. हमारे प्रभु का वचन आज हमारे साथ सुसमाचार के द्वारा बात करता है (यूह. 12:48; रोमि.1:16)

III. आयतें 4-6 घोषणा करती हैं कि फल देते रहना शर्त के आधार है है जिससे परमेश्वर का बालक परमेश्वर की स्वीकृति पाता रहे।

क. आयत 4 में, यीशु ने कहा, ''मुझ में बने रहो।''

1. फल देने वाला होना वह शर्त है जिससे डाली दाखलता के साथ बनी रहती है।
2. याद रखें कि फल न देने वाली डालियों को दाखलता से काट लिया जाता है।

3. हमारे प्रभु के वचन को जब माना जाता है तो यह व्यक्ति को दाखलता पर डाली के जैसे लगा देता है और वचन को मानते रहने से वह दाखलता के साथ जुड़ा रहता है।

ख. आयत 4 में यह भी है, ''और मैं तुम में।''

1. डाली और दाखलता दोनों का एक दूसरे के साथ परस्पर सम्बन्ध है।
2. मसीही लोग यीशु मसीह के वचन और मसीही व्यक्ति के फल देने के आधार पर एक दूसरे के साथ बने रहते हैं।
3. और आयतें यीशु मसीह और परमेश्वर के बालाकों के एक दूसरे के साथ बने रहने को भी बताती है (यूह. 17:21-23)।

ग. आयत 4 यह भी कहती है कि यदि दाखलता को अपने आप से नहीं फल सकती, वैस भी यदि तुम भी ''मुझ में बने न रहो''।

1. ''बने'' क्रिया शब्द वर्तमानकाल में है जो दिखाता है कि बने रहना और फल देना चलने रहना आवश्यक है।
2. एक मसीही व्यक्ति जब तक फल देता रहता है जब तक वह यीशु मसीह के निवास का आनन्द लेता है।
3. यह बने रहना और वास करना वचन के द्वारा होता है (यूह. 15: 3; 1 यूह. 2:6)।
4. यीशु मसीह में बने रहने को एक मसीह के ज्योति में चलते रहने के साथ मिलाया गया है (1 यूह. 1:7; इफि. 5: 8)।
5. पिता तक हमारी पहुंच केवल यीशु मसीह के द्वारा होती है (यूह. 14: 6)।
6. कोई भी शिक्षा जो यीशु मसीह को सच्ची दाखलता नहीं मानती वह समीहियत की शिक्षा नहीं है।

घ. आयत 5 अनविार्य रूप में ज़ोर देने के लिए आयत 4 को दोहराती है।

1. इसके अलावा ''व्यक्तिवाचन'' एक वचन सर्वनाम ''वह'' संकेत देता है कि डाली व्यक्ति है, न कि कलीसिया।
2. यीशु मसीह के बाहर होकर फल सम्भवत ही नहीं है (इफि. 1:3)।

ङ: आयत 6 और कहती है, ''यदि मुझ में कोई बना न रहे।''

1. इस आयत में ''कोई'' शब्द का दोबारा मिलना इस बात का पक्का सबूत है कि डाली निजी मसीही को कहा गया है।
2. ''यदि'' शब्द उद्धार के शर्त पर आधारित और बेदीनी की सम्भावना का संकेत है जो अनन्तकालिक हानी का कारण बन सकती है।

च. आयत 6 यह भी कहती है, ''सो वह डाली के समान फेंक दिया जाता और लोग उन्हें जला देते हैं।''

1. फलहीन मसीहियों को बेकार झाड़ू के साथ मिलाया गया है जो केवल जलाए जाने के लिए ही है।
2. यह उदाहरण बेकार मसीहियों के लिए नरक की आग के अनन्तकालिक विनाश को दर्शाता है।
3. एक अन्य अवसर पर, यीशु ने ही इसी उदाहरण का इस्तेमाल किया (मत्ती 7:19)।

IV. आयतें 7-8 में फल देते रहने या फलदायक होने की उदाहरण का निष्कर्ष मिलता है।

क. आयत 7 बताती है कि ''यदि तुम मुझ में बने रहा'' शर्त सहित उद्धार का सुझाव देते हुए जिससे फल देने वालों को प्रतिफल दिया जाएगा।

ख. आयत 7 यह भी कहती है, ''और मेरा वचन तुम में बना रहे।''

1. यीशु मसीह के वचन ने पहले डाली को शुद्ध किया था।
2. परमेश्वर का वचन परमेश्वर के बालक को बनाए रखता और दिशा देता है (2 कुरिं. 5: 5)।
3. परमेश्वर के वचन के साथ मरना व्यक्ति को आत्मिक प्रतिफल के योग्य बनाता है।

ग. आयत 7 आगे बताती है, ''तुम जो चाहे मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।''

1. यूहन्ना 14-16 में केवल प्रेरितों से बात हो रही थी और यह प्रेरिताई में प्रेरितों के मिशन में केवल उन्हीं पर लागू होता है (यूह. 14:14; 16:23)।
2. परन्तु परमेश्वर अपने विश्वासी बच्चों की प्रार्थनाओं का उत्तर देने का वादा करता है यदि दाखलताएं उसकी इच्छा से मेल खाती हैं (1 यूह. 3:22; प्रेरि. 21:14)।
3. बेईमान मसीही और गैर-मसीहियों को परमेश्वर के साथ प्रार्थना का द्वार नहीं मिलता (यूह. 9:31; नीति. 15:29)।

घ. आयत 8 बताती है, ''मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ।''

1. थोड़ा सा थपकी देना काम नहीं आएगा!
2. विश्वासी मसीही लोग परमेश्वर की सेवा करने के लिए अपनी पूरी क्षमता और योग्यताओं का हर अवसर पर इस्तेमाल करेंगे।
3. यदि मसीही लोग अपने फलों से परमेश्वर की महिमा नहीं करते, तो कोई परमेश्वर की महिमा नहीं है।

ङ. आयत 8 इस बात के साथ खत्म होती है, ''तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।''

1. फल देने वाले होना परमेश्वर के बालक की मुख्य विशेषता है।
2. किसी इलाके में मसीही लोगों का इकट्ठ यानी मण्डली का होना हर विश्वासी मसीही के संयुक्त फल देने वाला होने से होना चाहिए।

निष्कर्ष:

1. जैसे डालियों के लिए जीवित रहने के लिए दाखलता है, वैसे ही मसीहियत का केन्द्र ओर जीवन शक्ति यीशु मसीह है।
2. परमेश्वर के वचन के बिना लोग शुद्ध नहीं होते।
3. सब सूखी लकड़ियां जला दी जाएंगे!
4. फल देने वाली सब डालियों को छांटा जाएगा, ताकि वे और फल दें।

निमन्त्रण:

1. बिना यीशु मसीह में हुए कोई सच्ची दाखलता से जुड़ी टहनी नहीं हो सकता।
2. दो आयतें बताती हैं कि यीशु मसीह में कैसे आया जाए (रोमि. 6:3; गला. 3:27)।
3. फिर से फल देने वाली टहनियों के लिए सच्ची दाखलता के साथ जुड़ने के लिए भटके हुए मसीहियों को वापस आना आवश्यक है (गला. 6:1; मत्ती 3:8)।